BATINI BEEMARIYON KI MALOOMAT (HINDI)

बाति़नी बीमारियों की ता'रीफ़ात, अस्बाब व इलाज व दीगर मुफ़ीद मा'लूमात पर मब्नी एक रहनुमा किताब

बाति़नी बीमारियों की मा'लूमात

- ख़ुद पसन्दी किसे कहते हैं ? 36
- ह़सद के चौदह इलाज 50
- मुदाहनत किसे कहते हैं ? 107
- बद गुमानी के ह़राम होने की दो[2] सूरतें 143
- तकब्बुर के आठ अस्बाब व इलाज 279
- शमातत किसे कहते हैं ? 293

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(शो'बए बयानाते दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخِ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

बातिनी बीमारियों की मा'लूमात

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** ने येह किताब "उर्दू" ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का **"हिन्दी"** रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (TRANSLATION) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (TRANSLITERATION) या'नी ज़बान तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail या Whats App ब शुमूल सफ़ह़ा व सत़र नम्बर) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = ء
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
ु = ُ	ू = ٗ	ि = ِ	– = َ	ी = ئ	ु = ؤ	ा = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

बातिनी बीमारियों की ता'रीफ़ात, अस्बाब व इलाज व
दीगर मुफ़ीद मा'लूमात पर मब्नी
एक रहनुमा किताब

बातिनी बीमारियों की मा'लूमात

पेशकश

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

शो'बए बयानाते दा'वते इस्लामी

नाशिर

मक्तबतुल मदीना, देहली

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَا رَسُوۡلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصۡحٰبِکَ یَا حَبِیۡبَ اللّٰہ

नाम किताब : बातिनी बीमारियों की मा'लूमात
पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो'बए बयानाते दा'वते इस्लामी)
सिने तबाअत : रजबुल मुरज्जब, सि. 1436 हि.
ता'दाद :
नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली (हिन्द)

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 4 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म, 1435 हि. हवाला नम्बर : 194

الحمد للّٰہ رب العٰلمین و الصلوٰۃ و السلام علٰی سید المرسلین وعلٰی اٰلہ و اصحا بہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

"बातिनी बीमारियों की मा'लूमात" (उर्दू)

(मत्बूआ : मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे मतालिब व मफ़ाहिम के ए'तिबार से मक्दूर भर मुलाहज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)
03-06-2014

E - mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा

www.dawateislami.net

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"गुनाहों से बचा या रब !" के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "15 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِه मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (معجم کبیر، یحیی بن قیس، ج ٦، ص ١٨٥، حدیث: ٥٩٤٢)

दो मदनी फूल

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार ह़म्द व (2) सलात और (3) तअ़व्वुज़ व (4) तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़ा पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)। (5) रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। (6) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और (7) क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा (8) क़ुरआनी आयात और (9) अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा (10) जहां जहां "अल्लाह" का नामे पाक आएगा वहां "عَزَّوَجَلَّ" और (11) जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां "صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" पढ़ूंगा। (12) (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) "याद दाश्त" वाले सफ़ह़ा पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। (13) दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। (14) फ़र्ज़ उ़लूम सीखूंगा। (15) किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा। (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

इजमाली फ़ेहरिस्त

मौज़ूअ	सफ़्हा	मौज़ूअ	सफ़्हा
अल मदीनतुल इल्मिय्या का तआरुफ़	7	(23) ग़फ़्लत, ता'रीफ़, तम्बीह	179
बातिनी गुनाहों की तबाहकारियां	9	(24) क़स्वत या'नी दिल की सख़्ती, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	183
47 बातिनी मोहलिकात की ता'रीफ़ात	17	(25) तमअ, ता'रीफ़, तम्बीह	190
(1) रियाकारी या'नी दिखावा, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	27	(26) तमल्लुक़ (चापलूसी) ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	193
(2)उज्ब या'नी ख़ुद पसन्दी, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	36	(27) ए'तिमादे ख़ल्क़, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	199
(3) हसद, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	43	(28) निस्याने ख़ालिक़, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	202
(4) बुग़्ज़ो कीना, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	53	(29) निस्याने मौत, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	209
(5) हुब्बे मद्ह, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	57	(30) जुरअत अ़लल्लाह, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	213
(6) हुब्बे जाह, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	62	(31) निफ़ाक़, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	219
(7) महब्बते दुन्या, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	71	(32) इत्तिबाए शैतान, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	224
(8) तलबे शोहरत, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	85	(33) बन्दगिये नफ़्स, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	231
(9) ता'ज़ीमे उमरा, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	92	(34) रग़बते बतालत, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	237
(10) तहक़ीरे मसाकीन, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	97	(35) कराहते अ़मल, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	243
(11) इत्तिबाए शहवात, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	101	(36) क़िल्लते ख़शिय्यत, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	248
(12) मुदाहनत, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	107	(37) जज़्अ, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	256
(13) कुफ़्राने नेअ़म ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	112	(38) अद्मे ख़ुशूअ, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	260
(14) हिर्स, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	116	(39) ग़ज़ब लिन्नफ़्स, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	264
(15) बुख़्ल, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	128	(40) तसाहुल फ़िल्लाह, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	271
(16) तूले अमल, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	133	(41) तकब्बुर, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	275
(17) सूए ज़न (बद गुमानी), ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	140	(42) बद शुगूनी, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	284
(18) इनादे हक़, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	153	(43) शमातत, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	293
(19) इस्रारे बातिल, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	157	(44) इस्राफ़, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	302
(20) मक्रो फ़रेब, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	163	(45) ग़मे दुन्या, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	312
(21) ग़द्र, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	170	(46) तजस्सुस, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	318
(22) ख़ियानत, ता'रीफ़, अस्बाब व इलाज	175	(47) (रह़मते इलाही से) मायूसी, ता'रीफ़ अस्बाब व इलाज	327

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : *बानिये दा'वते इस्लामी, आशिक़े आ'ला हज़रत, शैखे़ तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल* ***मुहम्मद इल्यास अ़त्तार*** *क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, इह़्याए सुन्नत और **इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त** को दुन्या भर में आ़म करने का **अ़ज़्मे मुसम्मम** रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब
﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

www.dawateislami.net

"**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह सरकारे आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिदअत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, **हज़रते** अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अहमद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को असरे हाज़िर के तक़ाज़ों के मुताबिक़ हत्तल वस्अ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तहक़ीक़ी और इशाअती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआवुन फ़रमाएं और मजलिस की तरफ़ से शाएअ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुतालआ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अता फ़रमाए और हमारे हर अमले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

बातिनी गुनाहों की तबाहकारियां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम में से हर एक को इस दुन्या में अपने अपने हिस्से की ज़िन्दगी गुज़ार कर जहाने आख़िरत के सफ़र पर रवाना हो जाना है। इस सफ़र के दौरान हमें क़ब्रो हश्र और पुल सिरात के नाज़ुक मर्हलों से गुज़रना पड़ेगा, इस के बा'द जन्नत या दोज़ख़ ठिकाना होगा। इस दुन्या में की जाने वाली नेकियां दारे आख़िरत की आबादी जब कि गुनाह बरबादी का सबब बनते हैं। जिस तरह कुछ नेकियां ज़ाहिरी होती हैं जैसे नमाज़ और कुछ बातिनी मसलन इख़्लास। इसी तरह बा'ज़ गुनाह भी ज़ाहिरी होते हैं जैसे क़त्ल और बा'ज़ बातिनी जैसे तकब्बुर। इस पुर फ़ितन दौर में अव्वल तो गुनाहों से बचने का ज़ेहन बहुत ही कम है और जो ख़ुश नसीब इस्लामी भाई गुनाहों के इलाज की कोशिशें करते भी हैं तो उन की ज़ियादा तर तवज्जोह ज़ाहिरी गुनाहों से बचने पर होती है। ऐसे में बातिनी गुनाहों का इलाज नहीं हो पाता हालांकि येह ज़ाहिरी गुनाहों की निस्बत ज़ियादा ख़तरनाक होते हैं क्यूंकि एक बातिनी गुनाह बे शुमार ज़ाहिरी गुनाहों का सबब बन सकता है। मसलन क़त्ल, ज़ुल्म, ग़ीबत, चुग़ली, ऐबदरी जैसे गुनाहों के पीछे कीने और कीने के पीछे गुस्से का हाथ होना मुमकिन है। चुनान्चे, अगर बातिनी गुनाहों का तसल्ली बख़्श इलाज कर लिया जाए तो बहुत से ज़ाहिरी गुनाहों से बचना اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बेहद आसान हो जाएगा।

www.dawateislami.net

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى लिखते हैं : "**ज़ाहिरी आ'माल का बातिनी अवसाफ़** के साथ एक ख़ास तअ़ल्लुक़ है। अगर बातिन ख़राब हो तो ज़ाहिरी आ'माल भी ख़राब होंगे और अगर बातिन हसद, रिया और तकब्बुर वगै़रा उ़यूब से पाक हो तो **ज़ाहिरी आ'माल** भी दुरुस्त होते हैं।" (منهاج العابدين، ص ١٣ ملخصًا) बातिनी गुनाहों का तअ़ल्लुक़ उ़मूमन दिल के साथ होता है। लिहाज़ा दिल की इस्लाह़ बहुत ज़रूरी है। इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं : "जिस की हिफ़ाज़त और निगहदाश्त बहुत ज़रूरी है वोह दिल है क्यूंकि येह तमाम जिस्म की अस्ल है। येही वजह है कि अगर तेरा दिल ख़राब हो जाए तो तमाम आ'ज़ा ख़राब हो जाएंगे और अगर तू इस की इस्लाह़ कर ले तो बाक़ी सब आ'ज़ा की इस्लाह़ ख़ुद ब ख़ुद हो जाएगी। क्यूंकि दिल दरख़्त के तने की मानिन्द है और बाक़ी आ'ज़ा शाख़ों की तरह़, और शाख़ों की इस्लाह़ या ख़राबी दरख़्त के तने पर मौक़ूफ़ है। तो अगर तेरी आंख, ज़बान, पेट वगै़रा दुरुस्त हों तो इस का मत़लब येह है कि तेरा दिल दुरुस्त और इस्लाह़ याफ़्ता है और अगर येह तमाम आ'ज़ा गुनाहों की त़रफ़ राग़िब हों तो समझ ले कि तेरा दिल ख़राब है। फिर तुझे यक़ीन कर लेना चाहिये कि दिल का फ़साद और संगीन है। इस लिये **इस्लाहे़ क़ल्ब** की त़रफ़ पूरी तवज्जोह दे ताकि तमाम आ'ज़ा की इस्लाह़ हो जाए और तू रूह़ानी राह़त मह़सूस करे। फिर **क़ल्ब की इस्लाह़** निहायत मुश्किल और दुश्वार है क्यूंकि इस की ख़राबी **ख़त़रात व वसाविस** पर मब्नी है जिन का पैदा होना बन्दे के इख़्तियार में नहीं। इस लिये इस की **इस्लाह़ में पूरी** होशयारी, बेदारी और बहुत ज़ियादा जिद्दो जहद की ज़रूरत है।

www.dawateislami.net

इन्ही वुजूहात की बिना पर अस्हाबे मुजाहदा व रियाज़त इस्लाहे क़ल्ब को ज़ियादा दुश्वार ख़याल करते हैं और अरबाबे बसीरत इस की इस्लाह का ज़ियादा एहतिमाम करते हैं।" (منہاج العابدین،ص۱۶۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! हर इस्लामी भाई पर ज़ाहिरी गुनाहों के साथ साथ **बातिनी गुनाहों** के इलाज पर भी भर पूर तवज्जोह देना लाज़िम है ताकि हम अपने दारे आख़िरत को इन की तबाहकारियों से महफ़ूज़ रख सकें। **बातिनी गुनाहों का इल्म हासिल करना भी फ़र्ज़ है।** चुनान्चे, आ'ला हज़रत, अज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत, मौलाना शाह **इमाम अहमद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن "फ़तावा रज़विय्या" जिल्द 23, सफ़्हा 624 पर इरशाद फ़रमाते हैं: "**मुहर्रमाते बातिनिय्या** (या'नी बातिनी ममनूआत मसलन) तकब्बुर व रिया व उज्ब (या'नी गुरूर) व हसद वग़ैरहा और इन के मुआलजात (या'नी इलाज) कि इन का इल्म भी हर मुसलमान पर अहम फ़राइज़ से है।"

बातिनी गुनाहों के इल्म की इसी अहम्मिय्यत व ज़रूरत के पेशे नज़र एक बार शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** के सामने इस ख़्वाहिश का इज़्हार फ़रमाया कि **बातिनी मोहलिकात** पर एक ऐसी किताब मुरत्तब की जाए जिस में हत्तल मक्दूर हर एक की ता'रीफ़, आयते मुबारका, हदीसे पाक, हुक्म और हिकायत हो। जिस से इस्लामी भाई व इस्लामी बहनें इस्तिफ़ादा कर सकें। नीज़ आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने चन्द **मोहलिकात**

www.dawateislami.net

पर इब्तिदाई काम कर के इस का आग़ाज़ फ़रमाया और फिर इस की तक्मील के लिये मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** के सिपुर्द कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **अल मदीनतुल इल्मिय्या** के शो'बए बयानाते दा'वते इस्लामी के तह्त इस अ़ज़ीम काम को आगे बढ़ाया गया और कमो बेश तीन माह के क़लील अ़र्से में सेंतालीस47 मोहलिकात पर मुश्तमिल येह किताब ब नाम **"बातिनी बीमारियों की मा'लूमात"** मुकम्मल की गई। इस किताब पर बिल ख़ुसूस दो मदनी इस्लामी भाइयों अबू फ़राज़ मुहम्मद ए'जाज़ अ़त्तारी अल मदनी और नासिर जमाल अ़त्तारी अल मदनी سَلَّمَهُمَا اللّٰهُ الْغَنِی ने काम करने की सआ़दत ह़ासिल की है। काम की तफ़्सील कुछ यूं है :

(1).....इस किताब में फ़क़त आ'ला ह़ज़रत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के **फ़तावा रज़विय्या शरीफ़** में ज़िक्र कर्दा चालीस40 और आ़रिफ़ बिल्लाह ह़ज़रते अ़ल्लामा **अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی व **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی के ज़िक्र कर्दा कमो बेश **सात (7) इज़ाफ़ी बातिनी मोहलिकात** समेत कुल सेंतालीस47 **बातिनी मोहलिकात और इन के मुतअ़ल्लिक़ात** को ही ज़िक्र किया गया है।

(2)......**मुश्किल ता'रीफ़ात** से एह़तिराज़ करते हुवे मशहूर और **आ़म फ़हम ता'रीफ़ात** पर ही इक्तिफ़ा किया गया है अलबत्ता बा'ज़ जगह ज़रूरतन एक से ज़ाइद ता'रीफ़ात को यक्जा कर के भी बयान किया गया है।

(3)....**ता'रीफ़ात** को भी ह़त्तल मक़्दूर बा ह़वाला ज़िक्र किया गया है। अलबत्ता जहां कोई ता'रीफ़ बा ह़वाला दस्तयाब न हो सकी वहां उस **मोहलिक** की आ़म फ़हम ता'रीफ़ कर दी गई है।

www.dawateislami.net

(4).....बसा अवक़ात किसी चीज़ की ता'रीफ़ में उस की एक मख़्सूस क़िस्म या चन्द अक़्साम का ज़िक्र होता है लेकिन हम ने ता'रीफ़ का फ़क़त़ वोही पहलू ज़िक्र किया है जिस का तअ़ल्लुक़ **मोहलिकात** के साथ है।

(5)......बा'ज़ जगह **मोहलिक** की मुख़्तलिफ़ अक़्साम या मख़्सूस सूरतों को भी अ़लाहि़दा से मुख़्तसरन वाज़ेह़ किया गया है।

(6).....अकसर **मोहलिकात** के तह़्त क़ुरआनी आयत को भी ज़िक्र किया गया है, चूंकि **मोहलिकात** से मुतअ़ल्लिक़ ऐसी आयात बहुत कम हैं जिन में फ़क़त़ हलाकत ख़ैज़ियों का ही बयान हो, इस लिये उस **मोहलिक** से मुतअ़ल्लिक़ जो भी आयत दस्तयाब हुई उसे ज़िक्र कर दिया गया है। अलबत्ता इस बात का लिहाज़ नहीं किया गया कि उस में हलाकत ही के पहलू का ज़िक्र हो बल्कि उस आयत में मुतअ़ल्लिक़ा **मोहलिक** से मुतअ़ल्लिक़ किसी भी पहलू (जैसे फ़क़त़ मोहलिक का ज़िक्र, कुफ़्फ़ार से तअ़ल्लुक़, मख़्सूस क़िस्म, हलाकत का ज़िक्र, दुन्यवी अन्जाम, उख़रवी अन्जाम, फ़िस्क़े ए'तिक़ादी, फ़िस्क़े अ़मली या बचने का हुक्म वग़ैरा) का ज़िक्र था वोह आयत भी उस **मोहलिक** के तह़्त ज़िक्र कर दी गई है।

(7)....बा'ज़ जगह किसी **मोहलिक** की दो मुख़्तलिफ़ अक़्साम से मुतअ़ल्लिक़ा दो दो आयात को भी ज़िक्र किया गया है।

(8)....क़ुरआने पाक की तमाम आयात को क़ुरआनी रस्मुल ख़त़ में लिखने के साथ साथ उन का मुकम्मल ह़वाला भी दिया गया है नीज़ **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** के उसलूब के तह़्त आयाते मुबारका का तर्जमा ह़त्तल मक़्दूर फ़क़त़ "**कन्ज़ुल ईमान**" से ही लिया गया है।

www.dawateislami.net

(9)....आयाते मुबारका की जहां **तफ़्सीर** की हाजत थी वहां ज़रूरतन तफ़्सीर भी दे दी गई है ताकि पढ़ने वालों को उस आयत का शाने नुज़ूल, मख़्सूस हुक्म, मुतअ़ल्लिक़ा **मोहलिक** की अक़्साम वग़ैरा दीगर बातें भी मा'लूम हो जाएं।

(10)......अकसर **मोहलिकात** के तह्त उस से मुतअ़ल्लिक़ कम अज़ कम एक ह़दीसे पाक भी ज़िक्र कर दी गई है, **अह़ादीस** को ज़िक्र करने में इस बात की कोशिश की गई है कि वोही अह़ादीस बयान की जाएं जिन में उस मुतअ़ल्लिक़ा **मोहलिक** की हलाकत ख़ैज़ी का बयान हो, अलबत्ता जहां ऐसी **अह़ादीस** दस्तयाब नहीं हुई वहां मुत़लक़ अह़ादीस को (जिन में मुतअ़ल्लिक़ा **मोहलिक** की ता'रीफ़, मख़्सूस क़िस्म, अक़्साम का बयान, अ़लामात या अस्बाब का बयान, दुन्यवी व उख़रवी अन्जाम या बचने का हुक्म वग़ैरा था) को बयान कर दिया गया है।

(11).....तमाम अह़ादीस की तख़रीज या'नी मुकम्मल ह़वाला भी ज़िक्र कर दिया गया है।

(12).....तख़ारीज में उर्दू अ़रबी कुतुब में इम्तियाज़ के लिये उर्दू कुतुब का फ़ोन्ट "नूरी नस्ता'लीक़" और अ़रबी या दीगर ज़बानों की कुतुब का फ़ोन्ट "अक्बर" रखा गया है, यूं एक ही किताब के दो मुख़्तलिफ़ नुस्ख़ों में भी इम्तियाज़ किया जा सकता है। मसलन इह़याउल उ़लूम की तख़रीज अगर यूं हो "इह़याउल उ़लूम, जि 3, स. 119" तो इस से मुराद "इह़याउल उ़लूम मुतर्जम मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना" होगी और अगर तख़रीज यूं हो "इह़याउल उ़लूम, जि. 3, स. 119" तो इस से मुराद अ़रबी नुस्ख़ा होगा। وَعَلٰی ھٰذَا الْقِیَاس (या'नी इसी त़रह़ दीगर कुतुब को भी देख लीजिये।)

www.dawateislami.net

(13)..... बा'ज़ अहादीस के तह्त ज़रूरतन मुस्तनद कुतुबे शुरूहे ह़दीस से शर्ह़ भी ज़िक्र कर दी गई है ।

(14).....हर **मोहलिक** का मुकम्मल हुक्मे शरई कुतुबे मो'तमदा में मिलना बहुत दुश्वार है, लिहाज़ा जिन मोहलिकात का हुक्मे शरई बा आसानी मिल गया उसे बा ह़वाला ज़िक्र कर दिया गया है, जब कि दीगर **मोहलिकात** के ह़वाले से तम्बीही कलाम डाल दिया गया है । नीज़ जिस **मोहलिक** की चन्द अक़्साम और उन के मुख़्तलिफ़ अह़काम थे वहां उन अह़काम को भी बयान किया गया है ।

(15)......बा'ज़ **मोहलिकात** की अ़लामात को भी बयान किया गया है ।

(16).....अक्सर **मोहलिकात** के मुख़्तलिफ़ **अस्बाब** और उन के **इलाज** भी तफ़्सीलन बयान किये गए हैं ।

(17)....तमाम **मोहलिकात** के तह्त **मोहलिक** से मुतअ़ल्लिक़ा कम अज़ कम एक **हि़कायत** भी बयान की गई है ।

(18)....बा'ज़ **मोहलिकात** से मुतअ़ल्लिक़ उन की अक़्साम, मुख़्तलिफ़ सूरतें, मज़म्मत या किसी भी ख़ास ह़वाले से कोई अहम मवाद दस्तयाब हुवा तो उसे भी ज़रूरतन ज़िक्र कर दिया गया है ।

(19).....बा'ज़ **मोहलिकात** की हि़कायत या अस्बाब व इलाज के तह्त ज़रूरतन तरग़ीबात व तरहीबात भी ज़िक्र की गई हैं ।

(20)......किताब में मौजूद सेंतालीस[47] **मोहलिकात** की ता'रीफ़ात अस्ल किताब से पहले एक साथ इकट्ठी भी दे दी गई हैं ताकि याद करने में आसानी हो ।

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन तमाम कोशिशों के बा वुजूद इस किताब में जो भी ख़ूबियां हैं वोह यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम, उस के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, हम गुनाहगारों के त़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़त़ा, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان, अहले बैते उ़ज़्ज़ाम, औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام की इनायतों और अमीरे अहले सुन्नत मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की शफ़्क़तों का नतीजा हैं और ब तक़ाज़ए बशरिय्यत जो भी ख़ामियां हों इन में हमारी कोताह फ़हमी को दख़्ल है ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी इस सई को अपनी बारगाह में क़बूल फ़रमाए, इस में सरज़द होने वाली ग़लतियों को मुआ़फ़ फ़रमाए, इसे अ़वाम व ख़वास के ह़क़ में नाफ़ेअ़ बनाए, हम सब को इख़्लास के साथ दीन का काम करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की ग़ुलामी में **दा'वते इस्लामी** में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमाए, हुज़ूर **शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से मदीनए मुनव्वरा में शहादत की मौत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमाए ।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

इलाही वासित़ा प्यारे का मेरी मग़फ़िरत फ़रमा
अ़ज़ाबे नार से मुझ को ख़ुदाया ख़ौफ़ आता है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

47 बातिनी मोहलिकात की ता'रीफ़ात

(1) रियाकारी की ता'रीफ़ :

"रिया" के लुग़वी मा'ना "दिखावे" के हैं। "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के इलावा किसी और इरादे से इबादत करना रियाकारी कहलाता है।" गोया इबादत से येह ग़रज़ हो कि लोग उस की इबादत पर आगाह हों ताकि वोह उन लोगों से माल बटोरे या लोग उस की ता'रीफ़ करें या उसे नेक आदमी समझें या उसे इ़ज़्ज़त वग़ैरा दें। (नेकी की दा'वत, स. 66)

(2) उ़ज्ब या'नी ख़ुद पसन्दी की ता'रीफ़ :

अपने कमाल (मसलन इ़ल्म या अ़मल या माल) को अपनी त़रफ़ निस्बत करना और इस बात का ख़ौफ़ न होना कि येह छिन जाएगा। गोया ख़ुद पसन्द शख़्स ने'मत को **मुन्इमे ह़क़ीक़ी** (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ मन्सूब करना ही भूल जाता है। (या'नी मिली हुई ने'मत मसलन सिह़ह़त या हुस्नो जमाल या दौलत या ज़िहानत या खुश इल्ह़ानी या मन्सब वग़ैरा को अपना कारनामा समझ बैठना और येह भूल जाना कि सब, रब्बुल इ़ज़्ज़त ही की इनायत है।) (احیاء العلوم، ج۳، ص۴۵۴، शैत़ान के बा'ज़ हथयार, स.17)

(3) ह़सद की ता'रीफ़ :

किसी की दीनी या दुन्यावी ने'मत के ज़वाल (या'नी इस के छिन जाने) की तमन्ना करना या येह ख़्वाहिश करना कि फ़ुलां शख़्स को येह ने'मत न मिले, इस का नाम ह़सद है। (الحدیقۃ الندیۃ، ج۱، ص۶۰۰)

(4) बुग़्ज़ो कीना की ता'रीफ़ :

कीना येह है कि इन्सान अपने दिल में किसी को बोझ जाने, उस से ग़ैर शरई दुश्मनी व बुग़्ज़ रखे, नफ़रत करे और येह कैफ़िय्यत हमेशा हमेशा बाक़ी रहे।

(احیاء العلوم، ج۳، ص۲۲۳)

(5) हुब्बे मद्ह़ की ता'रीफ़ :

किसी काम पर लोगों की त़रफ़ से की जाने वाली ता'रीफ़ को पसन्द करना या इस बात की ख़्वाहिश करना कि फ़ुलां काम पर लोग मेरी ता'रीफ़ करें, मुझे इ़ज़्ज़त दें **हुब्बे मद्ह़** कहलाता है।

(6) हुब्बे जाह की ता'रीफ़ :

"शोहरत व इ़ज़्ज़त की ख़्वाहिश करना।" हुब्बे जाह कहलाता है।

(नेकी की दा'वत, स. 87)

www.dawateislami.net

(7) महब्बते दुन्या की ता'रीफ़ :

दुन्या की वोह **महब्बत** जो उख़रवी नुक़्सान का बाइस हो (क़ाबिले मज़म्मत और बुरी है।) (احیاء العلوم، ج۳،ص۲۴۹)

(8) तलबे शोहरत की ता'रीफ़ :

अपनी शोहरत की कोशिश करना तलबे शोहरत कहलाता है। या'नी ऐसे अफ़्आल करना कि मश्हूर हो जाऊं। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 7, स. 26 माख़ूज़न)

(9) ता'ज़ीमे उमरा की ता'रीफ़ :

अमीर व कबीर लोगों की वोह ता'ज़ीम जो महूज़ उन की दौलत व इमारत की वजह से हो ता'ज़ीमे उमरा कहलाती है जो क़ाबिले मज़म्मत है।

(10) तहक़ीरे मसाकीन की ता'रीफ़ :

ग़रीबों और मिस्कीनों की वोह तहक़ीर है जो उन की ग़ुरबत या मिस्कीनी की वजह से हो **तहक़ीरे मसाकीन** कहलाती है।

(11) इत्तिबाए शहवात की ता'रीफ़ :

जाइज़ व नाजाइज़ की परवाह किये बिग़ैर नफ़्स की हर ख़्वाहिश पूरी करने में लग जाना **इत्तिबाए शहवात** कहलाता है।

(12) मुदाहनत की ता'रीफ़ :

मुदाहनत के लुग़वी मा'ना नर्मी के हैं। नाजाइज़ और गुनाह वाले काम मुलाहज़ा करने के बा'द (उसे रोकने पर क़ादिर होने के बा वुजूद) उसे न रोकना और दीनी मुआमले की मदद व नुस्रत में कमज़ोरी व कम हिम्मती का मुज़ाहरा करना मुदाहनत कहलाता है या किसी भी दुन्यवी मफ़ाद की ख़ातिर दीनी मुआमले में नर्मी या ख़ामोशी इख़्तियार करना मुदाहनत है।

(الحدیقۃ الندیۃ،ج۲،ص۱۵۴،حاشیۃ الصاوی علی الجلالین،پ۱۲،ھود،تحت الآیۃ:۱۱۳،ج۳،ص۹۳۶)

(13) कुफ़्राने नेअ़म की ता'रीफ़ :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों पर उस का शुक्र अदा न करना और उन से ग़फ़्लत बरतना कुफ़्राने नेअ़म कहलाता है। (الحدیقۃ الندیۃ،،ج۲،ص۱۰۰)

(14) ह़िर्स की ता'रीफ़ :

ख़्वाहिशात की ज़ियादती के इरादे का नाम **ह़िर्स** है और बुरी **ह़िर्स** येह है कि अपना ह़िस्सा ह़ासिल कर लेने के बा वुजूद दूसरे के ह़िस्से की लालच रखे। या किसी चीज़ से जी न भरने और हमेशा ज़ियादती की ख़्वाहिश रखने को **ह़िर्स**, और **ह़िर्स** रखने वाले को **ह़रीस** कहते हैं। (مرقاۃ،ج۹،ص۱۱۹، مراۃ المناجیح،ج۷،ص۸۶ مفصلاً)

www.dawateislami.net

(15) बुख़्ल की ता'रीफ़ :

बुख़्ल के लुग़वी मा'ना कन्जूसी के हैं और जहां ख़र्च करना शरअ़न, आ़दतन या मुरुव्वतन लाज़िम हो वहां ख़र्च न करना बुख़्ल कहलाता है। या जिस जगह माल व असबाब ख़र्च करना ज़रूरी हो वहां ख़र्च न करना येह भी **बुख़्ल** है।

(الحدیقة الندیة، ج۲، ص۲۷، مفردات الفاظ القران، ۱۰۹)

(16) तूले अमल की ता'रीफ़ :

"**तूले अमल**" का लुग़वी मा'ना लम्बी लम्बी उम्मीदें बांधना है। और जिन चीज़ों का हुसूल बहुत मुश्किल हो उन के लिये लम्बी उम्मीदें बांध कर ज़िन्दगी के क़ीमती लम्हात ज़ाएअ़ करना **तूले अमल** कहलाता है। (فیض القدیر، ج۱، ص۲۷۷)

(17) सूए ज़न या'नी बद गुमानी की ता'रीफ़ :

बद गुमानी से मुराद येह है कि बिला दलील दूसरे के बुरे होने का दिल से ए'तिक़ादे जाज़िम (या'नी यक़ीन) करना। (शैतान के बा'ज़ हथयार, स. 32)

(18) इनादे हक़ की ता'रीफ़ :

किसी (दीनी) बात को दुरुस्त जानने के बा वुजूद हट धर्मी की बिना पर उस की मुख़ालफ़त करना **इनादे हक़** कहलाता है। (الحدیقة الندیة، ج۲، ص۱۶۲)

(19) इस्रारे बातिल की ता'रीफ़ :

नसीहत क़बूल न करना, अहले हक़ से बुग़्ज़ रखना और नाहक़ या'नी बातिल और ग़लत़ बात पर डट कर अहले हक़ को अज़िय्यत देने का कोई मौक़अ़ हाथ से न जाने देना **इस्रारे बातिल** कहलाता है। (الحدیقة الندیة، ج۲، ص۱۶۴ ملتقطاً)

(20) मक्रो फ़रेब की ता'रीफ़ :

वोह फ़े'ल जिस में उस फ़े'ल के करने वाले का बातिनी इरादा उस के ज़ाहिर के ख़िलाफ़ हो **मक्र** कहलाता है। (فیض القدیر، ج۲، ص۳۵۸)

(21) बद अ़हदी की ता'रीफ़ :

मुआ़हदा करने के बा'द इस की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करना **ग़दर** या'नी **बद अ़हदी** कहलाता है। (فیض القدیر، ج۲، ص۱۲۵)

(22) ख़ियानत की ता'रीफ़ :

इजाज़ते शरइय्या के बिग़ैर किसी की अमानत में तसर्रुफ़ करना **ख़ियानत** कहलाता है। (عمدة القاري، ج۱، ص۳۲۸)

(23) ग़फ़्लत की ता'रीफ़ :

यहां दीनी उमूर में **ग़फ़्लत** मुराद है या'नी वोह भूल है जो इन्सान पर बेदार मग़ज़ी और एह़तियात की कमी के बाइस त़ारी होती है। (مفردات الفاظ القرآن، ص۶۰۹)

www.dawateislami.net

(24) क़स्वत या'नी दिल की सख़्ती की ता'रीफ़ :

मौत व आख़िरत को याद न करने के सबब दिल का सख़्त हो जाना या दिल का इस क़दर सख़्त हो जाना कि इस्तिताअ़त के बा वुजूद किसी मजबूरे शरई को भी खाना न खिलाए क़स्वते क़ल्बी कहलाता है। (الحدیقۃ الندیۃ،ج۲،ص ۳۸۴)

(25) त़मअ़ (लालच) की ता'रीफ़ :

किसी चीज़ में ह़द दरजा दिलचस्पी की वजह से नफ़्स का उस की जानिब राग़िब होना **त़मअ़** या'नी **लालच** कहलाता है। (مفردات الفاظ القرآن،ص ۵۲۴)

(26) तमल्लुक़ (चापलूसी) की ता'रीफ़ :

अपने से बुलन्द रुत्बा शख़्सिय्यत या साहिबे मन्सब के सामने मह़्ज़ मफ़ाद हासिल करने के लिये आ़जिज़ी व इन्किसारी करना या अपने आप को नीचा दिखाना तमल्लुक़ या'नी **चापलूसी** कहलाता है। (بریقۃ محمودیۃ،ج۲،ص ۲۳۵)

(27) ए'तिमादे ख़ल्क़ की ता'रीफ़ :

मुसब्बिबुल अस्बाब या'नी अस्बाब को पैदा करने वाले रब عَزَّوَجَلَّ को छोड़ कर फ़क़त़ "अस्बाब" पर भरोसा कर लेना या ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ को छोड़ कर फ़क़त़ मख़्लूक़ पर भरोसा कर लेना **ए'तिमादे ख़ल्क़** कहलाता है।

(28) निस्याने ख़ालिक़ की ता'रीफ़ :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त व फ़रमांबरदारी को तर्क कर देना और **हुक़ूक़ुल्लाह** को यक्सर फ़रामोश कर देना "**निस्याने ख़ालिक़**" कहलाता है।

(تفسیر الطبری،ج ۱۲،ص ۵۰،روح المعانی،ج ۲۸،ص ۳۵۴)

(29) निस्याने मौत की ता'रीफ़ :

दुन्यवी मालो दौलत की मह़ब्बत व गुनाहों में ग़र्क़ हो कर मौत को यक्सर फ़रामोश कर देना **निस्याने मौत** कहलाता है।

(30) जुरअत अ़लल्लाह की ता'रीफ़ :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सरकशी व क़स्दन ना फ़रमानी करना या'नी जिन कामों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने करने का हुक्म दिया है उन्हें न करना और जिस से मन्अ़ फ़रमाया है उन से अपने आप को न बचाना **जुरअत अ़लल्लाह** कहलाता है।

(31) निफ़ाक़ (मुनाफ़क़त) की ता'रीफ़ :

ज़बान से मुसलमान होने का दा'वा करना और दिल में इस्लाम से इन्कार करना **निफ़ाक़े ए'तिक़ादी** और ज़बान व दिल का यक्सां न होना **निफ़ाक़े अ़मली** कहलाता है। (बहारे शरीअ़त, जि.1 स.182)

www.dawateislami.net

(32) इत्तिबाए शैतान की ता'रीफ़ :

शैतान के वसाविस व शुब्हात के मुताबिक़ चलना **इत्तिबाए शैतान** कहलाता है। (تفسیر خزائن العرفان، پ۲، البقرۃ تحت الآیہ:۲۰۸)

(33) बन्दगिए नफ़्स की ता'रीफ़ :

जाइज़ व नाजाइज़ की परवा किये बिग़ैर नफ़्स का हर हुक्म मान लेना **बन्दगिए नफ़्स** कहलाता है।

(34) रग़बते बतालत की ता'रीफ़ :

नाजाइज़ व हराम कामों की जानिब दिलचस्पी रखना रग़बते बतालत है।

(35) कराहते अमल की ता'रीफ़ :

नेक और अच्छे आ'माल को नापसन्द करना कराहते अमल कहलाता है।

(36) क़िल्लते ख़शिय्यत की ता'रीफ़ :

अल्लाह तबारक व तआला के ख़ौफ़ में कमी को **क़िल्लते ख़शिय्यत** कहते हैं।

(37) जज़्अ़ की ता'रीफ़ :

पेश आने वाली किसी भी मुसीबत पर वावेला करना, या इस पर बे सब्री का मुज़ाहरा करना **जज़्अ़** कहलाता है। (الحدیقۃ الندیۃ، ج۲، ص۹۸)

(38) अ़दमे ख़ुशूअ़ की ता'रीफ़ :

बारगाहे इलाही में हाज़िरी के वक़्त (या'नी नमाज़ या नेक कामों में) दिल का न लगना **अ़दमे ख़ुशूअ़** कहलाता है। (الحدیقۃ الندیۃ، ج۲، ص۱۷ ا مفهوما)

(39) ग़ज़ब लिन्नफ़्स की ता'रीफ़ :

अपने आप को तक्लीफ़ से दूर करने या तक्लीफ़ मिलने के बा'द इस का बदला लेने के लिये ख़ून का जोश मारना "ग़ज़ब" कहलाता है। अपने ज़ाती इन्तिक़ाम के लिये गुस्सा करना "**ग़ज़ब लिन्नफ़्स**" कहलाता है। (الحدیقۃ الندیۃ، ج۱، ص۶۳۵ ماخوذا)

(40) तसाहुल फ़िल्लाह की ता'रीफ़ :

अह़कामे इलाही की बजा आवरी में सुस्ती और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी में मश्ग़ूलिय्यत "**तसाहुल फ़िल्लाह**" है।

(41) तकब्बुर की ता'रीफ़ :

ख़ुद को अफ़्ज़ल दूसरों को ह़क़ीर जानने का नाम तकब्बुर है। (तकब्बुर, स.16)

(42) बद शुगूनी की ता'रीफ़ :

शुगून का मा'ना है फ़ाल लेना या'नी किसी चीज़, शख़्स, अ़मल, आवाज़

www.dawateislami.net

या वक़्त को अपने ह़क़ में अच्छा या बुरा समझना। (इसी वजह से बुरा फ़ाल लेने को **बद शुगूनी** कहते हैं।) (बद शुगूनी, स.10)

(43) शमातत की ता'रीफ़ :

अपने किसी भी नसबी या मुसलमान भाई के नुक़्सान या उस को मिलने वाली मुसीबत व बला को देख कर खुश होने को शमातत कहते हैं। (الحدیقۃ الندیۃ،ج ۱،ص ۶۳۱)

(44) इस्राफ़ की ता'रीफ़ :

जिस जगह शरअ़न, आ़दतन या मुरुव्वतन ख़र्च करना मन्अ़ हो वहां ख़र्च करना मसलन फ़िस्क़ो फ़ुजूर व गुनाह वाली जगहों पर ख़र्च करना, अजनबी लोगों पर इस त़रह़ ख़र्च करना कि अपने अहलो इ़याल को बे यारो मददगार छोड़ देना **इस्राफ़** कहलाता है। (الحدیقۃ الندیۃ،ج ۲،ص ۲۸)

(45) "ग़मे दुन्या" की ता'रीफ़ :

किसी दुन्यवी चीज़ से मह़रूमी के सबब रन्जो ग़म और अफ़्सोस का इस त़रह़ इज़्हार करना कि उस में सब्र और क़ज़ाए इलाही पर रिज़ा और सवाब की उम्मीद बाक़ी न रहे "**ग़मे दुन्या**" कहलाता है और येह मज़्मूम है।

(46) तजस्सुस की ता'रीफ़ :

लोगों की ख़ुफ़्या बातें और ऐ़ब जानने की कोशिश करना **तजस्सुस** कहलाता है। (احیاء العلوم،ج ۲،ص ۶۴۳،ج ۳،ص ۴۵۹)

(47) मायूसी की ता'रीफ़ :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और उस के फ़ज़्लो एह़सान से ख़ुद को मह़रूम समझना "**मायूसी**" है।

कब गुनाहों से कनारा मैं करूंगा या रब
नेक कब ऐ मेरे अल्लाह बनूंगा या रब
कब गुनाहों के मरज़ से मैं शिफ़ा पाऊंगा
कब मैं बीमार मदीने का बनूंगा या रब
गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी
हाए मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बातिनी मोहलिकात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "मोहलिक" का मा'ना है "हलाकत में डालने वाला अ़मल।" और "मोहलिक" की जम्अ़ "मोहलिकात" है। मोहलिकात के बारे में ज़रूरी अह़कामात का जानना मुसलमान के लिये **फ़र्ज़े ऐन** और न जानना **गुनाह** है। क्यूंकि जो शख़्स इन्हें नहीं सीखेगा तो इन गुनाहों से ख़ुद को किस त़रह़ बचा पाएगा ? मोहलिकात से बचने का एक इलाज येह भी है कि जब किसी मोहलिक के दरपेश होने का अन्देशा हो तो इस के **दुन्यवी नुक़्सानात** व **उख़रवी अ़ज़ाबात** पर ख़ूब ग़ौर करे ताकि उस के अन्दर इस मोहलिक से बचने का जज़्बा पैदा हो। मोहलिकात की दो क़िस्में : (1) ज़ाहिरी **मोहलिकात** या'नी वोह मोहलिकात जिन का तअ़ल्लुक़ आ'ज़ाए ज़ाहिरी हाथ, कान, नाक और पाउं वग़ैरा के साथ है। (2) **बात़िनी मोहलिकात** या'नी वोह मोहलिकात जिन का तअ़ल्लुक़ बात़िनी उ़ज़्व दिल के साथ है। **ज़ाहिरी मोहलिकात** की ता'दाद बात़िनी मोहलिकात के मुक़ाबले में बहुत ज़ियादा है।

वाज़ेह़ रहे कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने अपनी कुतुब में **ज़ाहिरी मोहलिकात** के साथ **बात़िनी मोहलिकात** को भी तफ़्सील के साथ बयान फ़रमाया है, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن **ने फ़तावा रज़विय्या, जि. 21 स. 502** पर तक़रीबन चालीस **बात़िनी मोहलिकात** शुमार फ़रमाए हैं। **आ़रिफ़ बिल्लाह ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिदी अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى व **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى के ज़िक्र

www.dawateislami.net

कर्दा मजीद सात मोहलिकात के इज़ाफ़े के साथ इस किताब में तक़रीबन 47 **मोहलिकात** बयान किये गए हैं जिन में से हर एक की ता'रीफ़, कम अज़ कम एक आयते मुबारका, हदीसे मुबारका, हुक्म या तम्बीह और हिकायत बयान करने की हत्तल मक्दूर सई की जाएगी। नीज़ कई मोहलिकात के अस्बाब व **इलाज** भी बयान किये जाएंगे। मोहलिकात की ता'रीफ़ात, हलाकत खे़ज़ियां और इन के तफ़्सीली **इलाज** जानने के लिये इह्याउल उ़लूम, जिल्द सिवुम का मुतालआ बहुत मुफ़ीद है।

सेंतालीस (47) बातिनी मोहलिकात के नाम :

(1) रियाकारी या'नी दिखावा (2) उ़ज्ब (3) ह़सद (4) बुग़्ज़ो कीना (5) हुब्बे मद्ह़ (6) हुब्बे जाह (7) मह़ब्बते दुन्या (8) त़लबे शोहरत (9) ता'ज़ीमे उमरा (10) तह़क़ीरे मसाकीन (11) इत्तिबाए़ शहवात (12) मुदाहनत (13) कुफ़्राने नेअ़म (या'नी ने'मतों की नाशुक्री) (14) हिर्स (15) बुख़्ल (16) तूले अमल (या'नी लम्बी लम्बी उम्मीदें बांधना) (17) सूए ज़न या'नी बद गुमानी (18) इनादे ह़क़ (19) इस्रारे बात़िल (20) मक्रो फ़रेब (21) गदर (22) ख़ियानत (23) ग़फ़्लत (24) क़स्वत (या'नी दिल का सख़्त होना) (25) त़मअ़ (26) तमल्लुक़ (चापलूसी) (27) ए'तिमादे ख़ल्क़ (28) निस्याने ख़ालिक़ (या'नी रब عَزَّوَجَلَّ को भूल जाना) (29) निस्याने मौत (या'नी मौत को भूल जाना) (30) जुरअत अ़लल्लाह (31) निफ़ाक़ (32) इत्तिबाए़ शैत़ान (33) बन्दगिये नफ़्स (34) रग़बते बत़ालत (35) कराहते अ़मल (36) क़िल्लते ख़शिय्यत (या'नी ख़ौफ़े ख़ुदा का कम होना) (37) जज़अ़ (या'नी बे सब्री का मुज़ाहरा करना) (38) अ़दमे ख़ुशूअ़ (या'नी

www.dawateislami.net

खुशूअ़ का न होना) (39) ग़ज़ब लिन्नफ़्स (या'नी नफ़्स के लिये ग़ुस्सा करना) (40) तसाहुल फ़िल्लाह (41) तकब्बुर (42) बद शुगूनी (43) शमातत (44) इस्राफ़ (45) ग़मे दुन्या (46) तजस्सुस (ऐ़ब जूई) (47) (रह़मते इलाही से) मायूसी।

बातिनी मोहलिकात से बचाव के जुम्ला इलाज :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वैसे तो कई बातिनी अमराज़ के तह़्त इनफ़िरादी तौ़र पर उन का इलाज बयान किया जाएगा लेकिन इजमाली तौ़र पर तमाम बातिनी अमराज़ का भी **इलाज** ज़िक्र किया जा रहा है ताकि इस इजमाली **इलाज** के साथ साथ इनफ़िरादी **इलाज** को भी शामिल कर के मख़्सूस बातिनी मरज़ से नजात की तरकीब बनाई जा सके। तमाम बातिनी अमराज़ के चार **इलाज** पेशे ख़िदमत हैं :

(1).....**कामिल मुर्शिद की सोह़बत इख़्तियार कीजिये :** पीरो मुर्शिद जिन उ़यूब की निशान देही करें उन के मुतअ़ल्लिक़ फ़िक्र करे और जो **इलाज** बताएं उस पर सख़्ती से अ़मल करे।

(2).....**दीन दार दोस्त बनाइये : साह़िबे बसीरत** और दीन दार दोस्त को तलाश कर के अपने नफ़्स पर **निगरान** मुक़र्रर कीजिये ताकि वोह उ़यूब की निशान देही कर सके। इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "पहले दीन दार लोगों की येह ख़्वाहिश हुवा करती थी कि वोह दूसरों के बताने से अपने **उ़यूब** पर मुत्तलअ़ हों लेकिन अब ऐसा दौर आ गया कि हमें **नसीह़त** करने और हमारे **उ़यूब पर मुत्तलअ़** करने वाला हमें सब से ज़ियादा नापसन्द होता है और येह बात **ईमान की कमज़ोरी** की अ़लामत है।"

www.dawateislami.net

मज़ीद फ़रमाते हैं : "अब ह़ालत येह है कि कोई हमें हमारे उ़यूब पर मुत़्त़लअ़ करे तो हमें येह सुन कर ख़ुशी नहीं होती और न ही हम उस के कहने पर उन उ़यूब को दूर करने की कोशिश करते हैं बल्कि हम नसीह़त करने वाले को **तन्क़ीद का निशाना** बनाते हैं और उसे कहते हैं कि "**तुम में भी तो फुलां फुलां ऐ़ब हैं।**" इस त़रह़ हम उस की बात से नसीह़त ह़ासिल करने के बजाए उस की **दुश्मनी मौल** लेते हैं। (बक़ौल)

नासेह़ा मत कर नसीह़त दिल मेरा घबराए है
दुश्मन उस को जानता हूं जो मुझे समझाए है

इस ऐ़ब जूई की वजह दिल की सख़्ती है जिस का नतीजा गुनाहों की कसरत की सूरत में सामने आता है और इन सब की अस्ल **ईमान की कमज़ोरी** है। हम बारगाहे इलाही में दुआ़ करते हैं कि वोह अपने फ़ज़्लो करम से हमें रुश्दो हिदायत अ़त़ा फ़रमाए, हमें हमारे उ़यूब से बाख़बर और इन के **इलाज** में मश्ग़ूल रखे और हमें उन लोगों का शुक्रिय्या अदा करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए जो हमें हमारी बुराइयों पर **मुत़्त़लअ़** करें।

(3).....दुश्मनों की ज़बान से अपने उ़यूब पर **मुत़्त़लअ़** हो कि वोह उ़यूब की तलाश में लगे रहते हैं। इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "शायद इसी वजह से इन्सान अकसर ता'रीफ़ करने वाले चापलूस दोस्त जो उस की ख़ुशामद में लगा रहता है और उस के उ़यूब को छुपा कर रखता है इस के मुक़ाबले में ऐ़ब निकालने वाले दुश्मन से ज़ियादा नफ़्अ़ उठाता है मगर इन्सान फ़ित़री त़ौर पर

www.dawateislami.net

दुश्मन को झूटा क़रार देता और उस की बात को ह़सद पर मह़मूल करता है लेकिन साहिबे बसीरत शख़्स दुश्मनों की बातों से ज़रूर फ़ाइदा उठाता है क्यूंकि बुराइयां लाज़िमन उन की ज़बान पर आ जाती हैं जिन्हें मा'लूम कर के वोह ख़ुद से उन बुराइयों को दूर कर लेता है।"

(4)....**लोगों के साथ मिल जुल कर रहिये** और उन में पाए जाने वाले उ़यूब अपनी ज़ात में तलाश कीजिये। इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अगर तमाम लोग इसी त़रह़ दूसरों को देख कर उन में जो **ना पसन्दीदा बातें** हों उन को अपनी ज़ात से दूर करें तो उन्हें किसी अदब सिखाने वाले की ज़रूरत ही नहीं रहेगी।"[1]

(1)...रियाकारी

"रियाकारी" की ता'रीफ़ :

"रिया" के लुग़वी मा'ना "दिखावे" के हैं। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी माया नाज़ तस्नीफ़ **"नेकी की दा'वत"** स. 66 पर रियाकारी की ता'रीफ़ कुछ यूं करते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के इलावा किसी और इरादे से इबादत करना।" गोया इबादत से येह ग़रज़ हो कि लोग उस की इबादत पर आगाह हों ताकि वोह उन लोगों से माल बटोरे या लोग उस की ता'रीफ़ करें या उसे नेक आदमी समझें या उसे इ़ज़्ज़त वग़ैरा दें।

1 ......احیاء العلوم، ج۳، ص ۱۹۴ تا ۱۹۷ ملخصاً

www.dawateislami.net

आयते मुबारका :

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَ الْاَذٰى ۙ كَالَّذِىْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَىْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَ اللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝﴾

(پ٣، البقرة: ٢٦٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"ऐ ईमान वालो अपने सदक़े बातिल न कर दो एह़सान रख कर और ईज़ा दे कर उस की त़रह़ जो अपना माल लोगों के दिखावे कि लिये ख़र्च करे और* ***अल्लाह*** *और क़ियामत पर ईमान न लाए तो उस की कहावत ऐसी है जैसे एक चट्टान कि उस पर मिट्टी है अब उस पर ज़ोर का पानी पड़ा जिस ने उसे निरा पथ्थर कर छोड़ा अपनी कमाई से किसी चीज़ पर क़ाबू न पाएंगे और* ***अल्लाह*** *काफ़िरों को राह नहीं देता।"*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى इस आयते मुबारका के तह़त "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में फ़रमाते हैं : "या'नी जिस त़रह़ मुनाफ़िक़ को रिज़ाए इलाही मक़्सूद नहीं होती वोह अपना माल रियाकारी के लिये ख़र्च कर के ज़ाएअ़ कर देता है इस त़रह़ तुम एह़सान जता कर और ईज़ा दे कर अपने सदक़ात का अज्र ज़ाएअ़ न करो। येह (या'नी मज़्कूरा आयते मुबारका) मुनाफ़िक़ रियाकार के अ़मल की मिसाल है कि जिस त़रह़ पथ्थर पर मिट्टी नज़र आती है लेकिन बारिश से वोह सब दूर हो जाती है ख़ाली पथ्थर रह जाता है येही ह़ाल मुनाफ़िक़ के अ़मल का है कि देखने वालों को मा'लूम होता है कि अ़मल है और

www.dawateislami.net

रोज़े क़ियामत वोह तमाम अ़मल बातिल होंगे क्यूंकि रिज़ाए इलाही के लिये न थे।

ह़दीसे मुबारका : रिया शिर्के असग़र है :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मुझे तुम पर सब से ज़ियादा शिर्के असग़र रिया या'नी दिखावे में मुब्तला होने का ख़ौफ़ है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन कुछ लोगों को उन के आ'माल की जज़ा देते वक़्त इरशाद फ़रमाएगा कि उन लोगों के पास जाओ जिन के लिये दुन्या में तुम दिखावा करते थे और देखो कि क्या तुम उन के पास कोई जज़ा पाते हो ?"(1)

रियाकार ह़ाफ़िज़ आ़लिम, शहीद और सदक़ा करने वाले का अन्जाम :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों के दरमियान फ़ैसला करने के लिये उन पर (अपनी शान के मुत़ाबिक़) तजल्ली फ़रमाएगा, उस वक़्त हर उम्मत घुटनों के बल खड़ी होगी। सब से पहले जिन लोगों को बुलाया जाएगा उन में एक क़ुरआने करीम का ह़ाफ़िज़, दूसरा राहे ख़ुदा में मारा जाने वाला शहीद और तीसरा मालदार होगा।

★.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ह़ाफ़िज़ से इरशाद फ़रमाएगा : "क्या मैं ने तुझे अपने रसूल पर उतारा हुवा कलाम नहीं सिखाया था ?" वोह

---

1 ......مسند احمد، حدیث محمود بن لبید، ج ۹، ص ۱۶۰، حدیث: ۲۳۶۹۲۔

www.dawateislami.net

अ़र्ज़ करेगा : "क्यूं नहीं, ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "फिर तू ने अपने इ़ल्म पर कितना अ़मल किया ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ मैं दिन रात इसे पढ़ता रहा ।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "तू झूटा है ।" इसी त़रह़ फ़िरिश्ते भी उस से कहेंगे कि "तू झूटा है ।" फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से इरशाद फ़रमाएगा : "तेरा मक़्सद तो येह था कि लोग तेरे बारे में येह कहें कि फ़ुलां शख़्स क़ारिये क़ुरआन है और वोह तुझे दुन्या में कह लिया गया ।"

★......फिर मालदार को लाया जाएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से इरशाद फ़रमाएगा : "क्या मैं ने तुझ पर अपनी ने'मतों को इतना वसीअ़ न किया कि तुझे किसी का मोह़ताज न होने दिया ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "क्यूं नहीं, ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "तू ने मेरे अ़त़ा कर्दा माल का क्या किया ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "मैं उस माल के ज़रीए़ सिलए रेह़्मी करता और तेरी राह में सदक़ा किया करता था ।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "तू झूटा है ।" इसी त़रह़ फ़िरिश्ते भी उस से कहेंगे कि "तू झूटा है ।" फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से इरशाद फ़रमाएगा : तेरा मक़्सद तो येह था कि तेरे बारे में कहा जाए कि फ़ुलां बहुत सख़ी है और वोह तुझे दुन्या में कह लिया गया ।"

★.....फिर राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में मारे जाने वाले को लाया जाएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से इरशाद फ़रमाएगा : "तुझे क्यूं क़त्ल किया गया ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "मुझे तेरी राह में जिहाद करने का हुक्म दिया गया तो मैं तेरी राह में लड़ता रहा और बिल आख़िर अपनी जान दे दी ।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "तू झूटा है ।"

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ फ़िरिश्ते भी उस से कहेंगे कि "तू झूटा है।" फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से इरशाद फ़रमाएगा : "तेरा मक़्सद तो येह था कि तेरे बारे में कहा जाए कि फ़ुलां बहुत बहादुर है और वोह तुझे दुन्या में कह लिया गया।"

फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू हुरैरा ! येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ के वोह पहले तीन अफ़राद हैं जिन से क़ियामत के दिन जहन्नम को भड़काया जाएगा।"(1)

रियाकारी का हुक्म :

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "रिया के बहुत दरजे हैं, हर दरजे का हुक्म अ़लाह़िदा है, बा'ज़ रिया शिर्के असग़र हैं, बा'ज़ रिया ह़राम, बा'ज़ रिया मकरूह, बा'ज़ सवाब, मगर जब रिया मुत़लक़न बोली जाती है तो इस से ममनूअ़ रिया मुराद होती है।"(2)

ह़िकायत : ऐ मालिक ! तुझे अब तौबा करनी चाहिये :

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار दिमश्क़ में रहते थे और जलीलुल क़द्र सह़ाबिये रसूल, कातिबे वह़्य ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की बनाई हुई मस्जिद में ए'तिकाफ़ किया करते थे। एक मरतबा उन के दिल में ख़याल आया कि "कोई ऐसी सूरत पैदा हो जाए कि मुझे इस मस्जिद का मुतवल्ली बना दिया जाए।" चुनान्चे आप ने ए'तिकाफ़ में इज़ाफ़ा कर दिया

1 ......ترمذی، کتاب ابواب الزهد، باب ماجاء فی الریاء والسمعة، ج۴، ص ۱۶۹، حدیث: ۲۳۸۹۔

2 ....मिरआतुल मनाजीह़, जि.7, स. 127।

www.dawateislami.net

और इतनी कसरत से नमाजें पढ़ने लगे कि हर शख़्स आप को हमा वक़्त नमाज़ में ही मश्ग़ूल देखता। लेकिन किसी ने आप की तरफ़ ख़ास तवज्जोह न की, पूरा एक साल इसी तरह गुज़र गया। एक मरतबा आप मस्जिद से बाहर तशरीफ़ लाए तो ग़ैब से निदा आई : "**ऐ मालिक! तुझे अब तौबा करनी चाहिये।**" येह सुन कर आप को एक साल तक अपनी इबादत पर शदीद रन्ज व शर्मिन्दगी हुई और इस दौरान आप अपने क़ल्ब को रिया से ख़ाली कर के खुलूसे निय्यत के साथ सारी रात इबादत में मश्ग़ूल रहते।

फिर एक दिन सुब्ह के वक़्त मस्जिद के दरवाज़े पर लोगों का एक बहुत बड़ा मज्मअ़ मौजूद था और लोग आपस में कह रहे थे कि "मस्जिद का इन्तिज़ाम ठीक नहीं है लिहाज़ा इसी शख़्स को मस्जिद का मुतवल्ली बना दिया जाए और तमाम इन्तिज़ामी उमूर इसी के सिपुर्द कर दिये जाएं।" सारा मज्मअ़ इस बात पर मुत्तफ़िक़ हो कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास पहुंचा और आप के नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बा'द उन्हों ने आप से अ़र्ज़ की, कि "हम मुत्तफ़िक़ा फ़ैसले से आप को मस्जिद का मुतवल्ली बनाना चाहते हैं।"

येह सुन कर आप ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं एक साल तक रियाकाराना इबादत में इस लिये मश्ग़ूल रहा कि मुझे मस्जिद का मुतवल्ली बना दिया जाए मगर ऐसा न हुवा, अब जब कि मैं सिद्क़ दिल से तेरी इबादत में मश्ग़ूल हुवा तो तेरे हुक्म से तमाम लोग मुझे मुतवल्ली बनाने आ पहुंचे और मेरे ऊपर येह बार डालना चाहते हैं। लेकिन मैं तेरी अ़ज़मत की क़सम खा कर कहता हूं कि न तो अब

www.dawateislami.net

तौलिय्यत क़बूल करूंगा और न ही मस्जिद से बाहर निकलूंगा।" येह कह कर फिर इबादत में मश्गूल हो गए।[1]

रियाकारी के दस इलाज :

(1).....**पहला इलाज : "अल्लाह** तआ़ला से मदद त़लब कीजिये।" बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में यूं दुआ़ कीजिये : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे **रियाकारी** की बीमारी से शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा, मेरी ख़ाली झोली को इख़्लास की अ़ज़ीम दौलत से भर दे, मेरा सामना उस दुश्मन (या'नी शैत़ान) से है जो मुझे देखता है मगर ख़ुद दिखाई नहीं देता लेकिन तू तो उस को मुलाह़ज़ा फ़रमा रहा है, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे उस दुश्मन के मक्रो फ़रेब से बचा ले, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं इस बात से तेरी पनाह चाहता हूं कि लोगों की नज़र में तो मेरा ह़ाल बहुत अच्छा हो और वोह मुझे नेक और परहेज़गार भी समझें मगर तेरी बारगाह में सज़ा का ह़क़दार ठहरूं !

(2).....**दूसरा इलाज : "रियाकारी** के नुक़्सानात पेशे नज़र रखिये।" क्यूंकि आदमी का दिल किसी चीज़ को उस वक़्त तक पसन्द करता है जब तक वोह उसे नफ़्अ़ बख़्श और लज़ीज़ नज़र आती है मगर जब उसे उस शै के नुक़्सान देह होने का पता चलता है तो वोह उस से बचता है। रियाकारी के चन्द नुक़्सानात येह हैं : रियाकार का अ़मल ज़ाएअ़ हो जाता है, रियाकार शैत़ान का दोस्त है, जहन्नम की वादी रियाकार का ठिकाना होगी, रियाकार के तमाम आ'माल बरबाद हो जाएंगे, कल बरोज़े क़ियामत उसे शदीद ह़सरत होगी, रियाकार को ज़िल्लत व रुस्वाई का अ़ज़ाब दिया जाएगा, रियाकार पर जन्नत

---

1 ......تذکرۃ الاولیاء، باب چہارم، ذکر مالک دینار، ج ۱، ص ۴۸۔

www.dawateislami.net

हराम है, रियाकार ज़मीनो आस्मान में मलऊन है। वगै़रा वगै़रा

(3)......**तीसरा इलाज :** "अस्बाब का ख़ातिमा कीजिये।" क्यूंकि हर बीमारी का कोई न कोई सबब होता है जब वोह सबब ही ख़त्म हो जाए तो बीमारी भी खुद ब खुद ख़त्म हो जाती है, रियाकारी के तीन अस्बाब हैं : ता'रीफ़ की ख़्वाहिश, मज़म्मत का ख़ौफ़ और मालो दौलत की ह़िर्स।

(4)......**चौथा इलाज :** "इख़्लास अपना लीजिये।" क्यूंकि जिस त़रह़ कपड़े के मैल कुचैल साफ़ करने के लिये आ'ला क़िस्म का साबुन या सर्फ़ इस्ति'माल किया जाता है इसी त़रह़ **रियाकारी** की गन्दगी से अपने दिल को साफ़ करने के लिये **इख़्लास** का साबुन दरकार है, **इख़्लास रियाकारी** की ज़िद है।

(5).....**पांचवां इलाज :** "निय्यत की ह़िफ़ाज़त कीजिये।" क्यूंकि आ'माल का दारोमदार निय्यतों पर है, निय्यत दिल के पुख़्ता इरादे को कहते हैं और शरअ़न इबादत के इरादे को निय्यत कहा जाता है, याद रखिये जितनी निय्यतें ज़ियादा उतना सवाब ज़ियादा, लिहाज़ा हर जाइज़ काम से क़ब्ल अच्छी अच्छी निय्यतें कर लीजिये ताकि अ़मल के साथ साथ सवाब का ख़ज़ाना भी हाथ आ जाए।

(6)....**छटा इलाज :** "दौराने इबादत **शैत़ानी** वस्वसों से बचिये।" क्यूंकि शैत़ान हमारा अज़ली दुश्मन है जो मुसलसल हमारे दिलों में वस्वसे डालने की कोशिश करता रहता है, लिहाज़ा रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से **शैत़ानी वसाविस** से बचते रहने की हर वक़्त दुआ़ करते रहें।

(7).....**सातवां इलाज :** "तन्हाई हो या हुजूम यक्सां अ़मल कीजिये।" या'नी जिस **ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़** के साथ लोगों के सामने

www.dawateislami.net

नमाज़ पढ़ने की कोशिश करते हैं इसी अन्दाज़ को तन्हाई में भी क़ाइम रखें और जिस काम को लोगों के सामने करने से झिजकते हैं तन्हाई में भी वोह काम न किया करें।

(8).....**आठवां इलाज :** "नेकियां छुपाइये।" **हत्तल इम्कान** अपनी नेकियों को इसी त़रह छुपाएं जिस त़रह अपने गुनाहों को छुपाते हैं और इसी पर **क़नाअ़त** करें कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी नेकी को जानता है बिल खुसूस पोशीदा नेकी करने के बा'द नफ़्स की **ख़ूब निगरानी** करें कि उ़मूमन पोशीदा नेकी के बा'द वोह इस को लोगों के सामने ज़ाहिर करने पर ज़ियादा उभारता है।

(9)......**नवां इलाज :** "अच्छी सोह़बत इख़्तियार कीजिये।" हर सोह़बत अपना असर रखती है, अच्छी सोह़बत अच्छा और बुरी सोह़बत बुरा। अच्छी सोह़बत ह़ासिल करने का एक ज़रीआ़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** का मदनी माह़ोल भी है, आप भी इस मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, अपने शहर में होने वाले **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़** में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत कीजिये, **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल की कोशिश कीजिये, **मदनी क़ाफ़िलों** में जदवल के मुत़ाबिक़ सफ़र को अपना मा'मूल बनाइये, اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस मदनी माह़ोल की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों बिल खुसूस रियाकारी से बचने और नेकियों के लिये कुढ़ने का मदनी ज़ेह्न बनेगा। اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

(10)......**दसवां इलाज :** "अवरादो वज़ाइफ़ का मा'मूल बना लीजिये।" रियाकारी की तबाह कारियों से बचने के लिये मज़्कूरा उमूर के साथ साथ रूह़ानी **इलाज** भी कीजिये। मसलन जब भी दिल में रियाकारी का ख़याल आए तो اَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ एक

www.dawateislami.net

बार पढ़ने के बा'द उलटे कन्धे की त़रफ़ तीन बार थू थू कर दीजिये। सूरए इख़्लास ग्यारह बार सुब्ह़ (आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमकने तक सुब्ह़ है) पढ़ने वाले पर अगर शैत़ान मअ़ लश्कर के कोशिश करे कि इस से गुनाह कराए तो भी इस से गुनाह न करा सके जब तक येह खु़द न करे। "**सूरतुन्नास**" पढ़ लेने से भी वस्वसे दूर होते हैं। रियाकारी के इन दस **इलाज** की मज़ीद तफ़्सील के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 165 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**रियाकारी**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2)...उ़ज्ब या'नी खु़द पसन्दी

उ़ज्ब या'नी खु़द पसन्दी की ता'रीफ़ :

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ अपने रिसाले "**शैत़ान के बा'ज़ हथयार**" सफ़्ह़ा 17 पर "उ़ज्ब या'नी खु़द पसन्दी" की ता'रीफ़ करते हुवे फ़रमाते हैं : "अपने कमाल (मसलन इ़ल्म या अ़मल या माल) को अपनी त़रफ़ निस्बत करना और इस बात का ख़ौफ़ न होना कि येह छिन जाएगा। गोया खु़द पसन्द शख़्स ने'मत को **मुनइमे ह़क़ीक़ी** (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ मन्सूब करना ही भूल जाता है।[1] (या'नी मिली हुई ने'मत मसलन सिह़्ह़त

[1] احیاء العلوم، کتاب ذم الکبر والعجب، بیان حقیقۃ العجب، ج ۳، ص ۴۵۴۔

www.dawateislami.net

या हुस्नो जमाल या दौलत या ज़िहानत या खुश इल्हानी या मन्सब वगैरा को अपना कारनामा समझ बैठना और येह भूल जाना कि सब रब्बुल इज़्ज़त ही की इनायत है ।)

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿فَلَا تُزَكُّوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى﴾ (پ۲۷، النجم:۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"तो आप अपनी जानों को सुथरा न बताओ वोह ख़ूब जानता है जो परहेज़गार हैं ।"*

हज़रते सय्यिदुना इब्ने जुरैज رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "इस आयते मुबारका का मा'ना येह है कि जब तुम कोई अच्छा अमल करो तो येह न कहो कि येह काम मैं ने किया है ।" हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अपने आप को नेकूकार क़रार न दो या'नी येह न कहो कि मैं नेक हूं क्यूंकि येह तो उ़ज्ब या'नी खुद पसन्दी है ।"(1)

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा **सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى इस आयते मुबारका के तह्त "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में फ़रमाते हैं : "या'नी तफ़ाख़ुरन अपनी नेकियों की ता'रीफ़ न करो क्यूंकि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों के हालात का खुद जानने वाला है वोह इन की इब्तिदाए हस्ती से आख़िरे अय्याम के जुम्ला अह्वाल जानता है। **मस्अला :** इस आयत में रिया और खुद नुमाई और खुद सराई की मुमानअ़त फ़रमाई गई लेकिन अगर ने'मते इलाही के ए'तिराफ़ और इताअ़त व इबादते पुर मसर्रत और इस के अदाए शुक्र के लिये नेकियों का ज़िक्र किया जाए तो जाइज़ है ।"

---

(1) احیاء العلوم، کتاب ذم الکبر والعجب، ج۳، ص ۴۵۴۔

www.dawateislami.net

हदीसे मुबारका : खुद पसन्दी का नुक़्सान :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : "गुनाहों पर नादिम होने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत का मुन्तज़िर होता है जब कि खुद पसन्दी करने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी का मुन्तज़िर होता है।"(1)

उज्ब या'नी खुद पसन्दी का हुक्म :

उज्ब या'नी खुद पसन्दी नाजाइज़ व ममनूअ़ व गुनाह है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर्चे तुम से कोई गुनाह सरज़द न हो लेकिन मुझे तुम पर गुनाह से भी बड़े जुर्म का खौफ़ है और वोह है उज्ब। उज्ब या'नी खुद पसन्दी।" इस फ़रमाने मुबारक में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उज्ब को बहुत बड़ा गुनाह क़रार दिया।(2)

और किसी भी ज़ाहिरी व बातिनी गुनाह से बचना हर मुसलमान पर लाज़िम है। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ﴾ (پ۸،الانعام:۱۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और छोड़ दो खुला और छुपा गुनाह।"

खुद पसन्दी की अहम वजाहत :

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद **मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی लिखते हैं कि जो शख्स इल्म, अमल और माल के ज़रीए अपने नफ़्स में

1 ......شعب الایمان، باب فی معالجۃ کل ذنب بالتوبۃ، ج۵، ص۴۳۶، حدیث:۷۱۷۸۔

2 ......احیاء العلوم، کتاب ذم الکبر والعجب، باب ذم العجب۔۔۔الخ، ج۳، ص۴۵۳۔

www.dawateislami.net

कमाल जानता हो उस की दो हालतें हैं : (1) इन में से एक येह है कि उसे उस कमाल के ज़वाल का ख़ौफ़ हो या'नी इस बात का डर हो कि इस में कोई तबदीली आ जाएगी या बिलकुल ही सल्ब और ख़त्म हो जाएगा तो ऐसा आदमी "खुद पसन्द" नहीं होता। (2) दूसरी हालत येह है कि वोह इस के ज़वाल (या'नी कम या ख़त्म होने) का ख़ौफ़ नहीं रखता बल्कि वोह इस बात पर खुश और मुत़्मइन होता है कि उस ने मुझे येह ने'मत अ़त़ा फ़रमाई है इस में मेरा अपना कमाल नहीं। येह भी "**खुद पसन्दी**" नहीं है और इस के लिये एक तीसरी हालत भी है जो **खुद पसन्दी** है और वोह येह है कि उसे उस कमाल के ज़वाल (या'नी कम या ख़त्म होने) का ख़ौफ़ नहीं होता बल्कि वोह इस पर मसरूर व मुत़्मइन होता है और उस की मसर्रत का बाइस येह होता है कि येह कमाल, ने'मत व भलाई और सर बुलन्दी है, वोह इस लिये खुश नहीं होता कि येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इनायत और ने'मत है बल्कि उस (या'नी खुद पसन्द बन्दे) की खुशी की वजह येह होती है कि वोह इसे अपना वस्फ़ (या'नी ख़ूबी और खुद अपना ही कमाल समझता है वोह इसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा व इनायत तसव्वुर नहीं करता।(1)

ह़िकायत : खुद पसन्दी में मुब्तला मुरीद की इस्लाह़ :

वलिय्ये कामिल, हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى का एक मुरीद हर रात ख़्वाब में देखता कि फ़िरिश्ते उसे शाही सुवारी पर बिठा कर जन्नत की सैर करा रहे हैं और त़रह़ त़रह़ के मेवे भी खिला रहे हैं। यूं वोह खुद पसन्दी में मुब्तला हो कर खुद को बा

(1) احیاء العلوم، کتاب ذم الکبر والعجب، باب ذم العجب۔۔۔ الخ، ج ۳، ص ۴۵۴۔

www.dawateislami.net

कमाल समझने लगा और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में हाज़िर होना छोड़ दिया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जब काफ़ी दिन उसे मजलिस में ग़ैर हाज़िर पाया तो येह सोच कर कि हो सकता है बीमार हो गया हो, उस की **मिज़ाज पुर्सी** के लिये उस के पास तशरीफ़ ले गए। जब आप वहां पहुंचे तो देखा कि वोह तो निहायत ही शानो शौकत के साथ बैठा हुवा है।

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस से उस की इस कैफ़िय्यत के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाया तो उस ने बड़े फ़ख़्र से अपने बुलन्द मक़ाम व मर्तबे और रोज़ होने वाली जन्नती सैर का ज़िक्र किया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़ौरन समझ गए और उस से इरशाद फ़रमाया : "आज जब जन्नत में जाओ तो मेवे खाने से पहले لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم पढ़ लेना।" उस ने कहा : "बहुत अच्छा।" चुनान्चे, हस्बे मा'मूल जब वोह जन्नत में पहुंचा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का फ़रमान याद आ गया और जैसे ही उस ने لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم पढ़ा तो ऐन उसी लम्हे एक ज़ोरदार चीख़ सुनाई दी और वोह जन्नत कचरे के ढेर में बदल गई जिस में जगह जगह इन्सानी हड्डियां बिखरी पड़ी थीं। येह देख कर उस मुरीद की समझ में आया कि वोह शैतान के जाल **ख़ुद पसन्दी** में फंस चुका था, उसी वक़्त रोते हुवे अपने पीरो मुर्शिद हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى की ख़िदमत में हाज़िर हुवा, अपने रविय्ये पर नादिम हुवा, तौबा की और दोबारा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की तर्बिय्यत में रहने लगा।(1)

1 ......كشف المحجوب، باب آدابهم فى الصحبة، ص ٣٧٧

www.dawateislami.net

ख़ुद पसन्दी का एक मुजर्रब इलाज :

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان अपने ज़ोहदो तक़्वा के बा वुजूद येह तमन्ना किया करते कि काश वोह मिट्टी, भूसा या परन्द होते । तो साहिबे बसीरत शख़्स कैसे अपने अ़मल पर ख़ुद पसन्दी कर सकता है या इतरा सकता है और क्यूंकर अपने नफ़्स से बे ख़ौफ़ हो सकता है ? येह ख़ुद पसन्दी का इलाज है जिस से ख़ुद पसन्दी का माद्दा बिल्कुल जड़ से कट जाता है । जब ख़ुद पसन्दी में मुब्तला शख़्स इस त़रीक़ए इलाज के मुत़ाबिक़ ख़ुद पसन्दी का इलाज करता है तो जिस वक़्त उस के दिल पर ख़ुद पसन्दी ग़ालिब आती है तो सल्बे ने'मत का ख़ौफ़ उसे इतराने से बचाता है बल्कि जब वोह काफ़िरों और फ़ासिक़ों को देखता है कि किसी गुनाह के बिग़ैर उन को ईमान और इत़ाअ़ते इलाही की दौलत से मह़रूमी मिली है तो वोह डरते हुवे येह सोचता है कि जिस ज़ात को इस बात की परवा नहीं कि वोह बिग़ैर किसी जुर्म के किसी को मह़रूम कर दे या बिग़ैर किसी वसीले के किसी को अ़त़ा करे तो वोह दी हुई ने'मत को वापस भी ले सकता है । कितने ही ईमान वाले मुर्तद हो कर और इत़ाअ़त गुज़ार फ़ासिक़ हो कर बुरे ख़ातिमे का शिकार हुवे । जब आदमी इस त़रह सोचेगा तो ख़ुद पसन्दी उस में बाक़ी नहीं रहेगी ।(1)

हुब्बे जाह व ख़ुद पसन्दी की मिटा दे आ़दतें
या इलाही ! बाग़े जन्नत की अ़त़ा कर राह़तें

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّی اللهُ تعالٰی علیه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ......احیاء العلوم، ج۳، ص۱۱۰۶-

www.dawateislami.net

ख़ुद पसन्दी के आठ अस्बाब व इलाज :

हुज्जतुल इस्लाम, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى ने अपनी मायानाज़ तस्नीफ़ "**इह़याउल उ़लूम**" में उ़ज्ब या'नी ख़ुद पसन्दी के आठ अस्बाब और उन के **इलाज** बयान फ़रमाए हैं, उन का इजमाली ख़ाका पेशे ख़िदमत है :

(1).....**पहला सबब : अपनी जिस्मानी ख़ूब सूरती के ह़वाले से ख़ुद पसन्दी में मुब्तला होना है** इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपनी बातिनी गन्दगियों पर ग़ौर करे और अपने आग़ाज़ व अन्जाम के बारे में सोच व बिचार करे ।

(2).....**दूसरा सबब : अपनी ताक़त व कुव्वत पर नाज़ करना है** इस का इलाज येह है कि बन्दा येह सोचे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मा'मूली सी आज़्माइश में मुब्तला फ़रमा कर येह कुव्वत वापस ले सकता है ।

(3).....**तीसरा सबब : अ़क़्ल और ज़हानत के ह़वाले से ख़ुद पसन्दी में मुब्तला होना है** इस का **इलाज** येह है कि बन्दा येह सोचे कि किसी मरज़ या ह़ादिसे के सबब येह ने'मत छीनी जा सकती है ।

(4)......**चौथा सबब : आ़ली नसब होने पर फ़ख़्र का इज़्हार है** इस का **इलाज** येह है कि बन्दा येह सोचे कि "अपने आबा व अज्दाद की मुख़ालफ़त के बा वुजूद उन के दरजे तक पहुंच जाना कैसे मुमकिन है ?"

(5).....**पांचवां सबब : ज़ालिम की ह़िमायत पर इतराना है** इस का **इलाज** येह है कि "बन्दा इन ज़ालिम लोगों के उख़रवी अन्जाम पर नज़र रखे ।"

www.dawateislami.net

(6).....**छटा सबब : अपने नोकर चाकर वगै़रा पर इतराना है** इस का **इलाज** येह है कि अपनी कमज़ोरी पर नज़र रखे और येह ज़ेह्न नशीन कर ले कि तमाम लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के आ़जिज़ बन्दे हैं।

(7).....**सातवां सबब : माल पर इतराना है** इस का **इलाज** येह है कि माल की आफ़ात, इस के हुक़ूक़ और इस से पैदा होने वाले फ़ितनों को पेशे नज़र रखे।

(8).....**आठवां सबब : अपनी ग़लत़ राए पर इतराना है** इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपनी राए की सिह़्ह़त पर हरगिज़ हरगिज़ भरोसा न करे।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(3)...ह़सद

ह़सद की ता'रीफ़ :

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 96 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "ह़सद" सफ़ह़ा 7 पर है : "किसी की दीनी या दुन्यावी ने'मत के ज़वाल (या'नी इस के छिन जाने) की तमन्ना करना या येह ख़्वाहिश करना कि फ़ुलां शख़्स को येह ने'मत न मिले, इस का नाम ह़सद है।"[2]

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿اَمْ یَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰی مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَیْنَاۤ اٰلَ اِبْرٰهِیْمَ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ وَ اٰتَیْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِیْمًا ۝۵۴﴾ (پ۵، النساء: ۵۴)

1 ......احیاء العلوم، ج ۳، ص ۱۱۰۷ تا ۱۱۱۹ ملخصاً۔

2 ......الحدیقۃ الندیۃ، الخلق الخامس عشر۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۶۰۰۔

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"या लोगों से ह़सद करते हैं उस पर जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया तो हम ने तो इब्राहीम की अवलाद को किताब और ह़िक्मत अ़ता फ़रमाई और उन्हें बड़ा मुल्क दिया ।"*

ह़दीसे मुबारका : ह़सद नेकियों को खा जाता है :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ह़सद से दूर रहो क्यूंकि ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जिस त़रह़ आग ख़ुश्क लकड़ी को ।"(1)

ह़सद का हुक्म :

अगर अपने इख़्तियार व इरादे से बन्दे के दिल में ह़सद का ख़याल आए और येह इस पर अ़मल भी करता है या बा'ज़ आ'ज़ा से इस का इज़्हार करता है तो येह ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ।(2)

ह़िकायत : ह़ासिद का इ़ब्रतनाक अन्जाम :

एक शख़्स बादशाह के दरबार में गया और उस से इजाज़त चाही कि मैं कुछ बातें अ़र्ज़ करना चाहता हूं । बादशाह ने इजाज़त देते हुवे उसे अपने सामने कुरसी पर बिठा दिया और कहा : "अब जो कहना चाहते हो कहो ।" उस शख़्स ने कहा : "मोह़सिन या'नी

---

1 ......ابوداود، کتاب الادب، باب فی الحسد، ج ۴، ۳۶۰، حدیث: ۴۹۰۳۔

2 ......الحدیقة الندیة، الخلق الخامس عشر۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۶۰۱۔

www.dawateislami.net

एहसान करने वाले के साथ एहसान करो और जो बुराई करे उस की बुराई का बदला उसे खुद ही मिल जाएगा।" बादशाह उस की येह बात सुन कर बहुत खुश हुवा और उसे इन्आमो इकराम से नवाज़ा। येह देख कर बादशाह के एक दरबारी को उस शख़्स से ह़सद हो गया और वोह दिल ही दिल में कुढ़ने लगा कि इस आ़म से शख़्स को बादशाह के दरबार में इतनी इ़ज़्ज़त और इतना मक़ाम क्यूं ह़ासिल हो गया ! बिल आख़िर वोह ह़सद की बीमारी से मजबूर हो कर बादशाह के पास गया और बड़े खुशामदाना अन्दाज़ में बोला : "ऐ बादशाह सलामत ! अभी जो शख़्स आप के सामने गुफ़्तगू कर के गया है अगर्चे उस ने बातें अच्छी की हैं लेकिन वोह आप से नफ़रत करता है और कहता है कि बादशाह को गन्दा दहनी (या'नी मुंह से बदबू आने) की बीमारी है।"

बादशाह ने येह सुना तो पूछा : "तुम्हारे पास इस बात का क्या सुबूत है कि वोह मेरे बारे में येही गुमान रखता है ?" वोह ह़ासिद बोला : "हुज़ूर ! अगर आप को मेरी बात पर यक़ीन नहीं आता तो आप आज़मा कर देख लें, उसे अपने पास बुलाएं जब वोह आप के क़रीब आएगा तो अपनी नाक पर हाथ रख लेगा ताकि उसे आप के मुंह से बद बू न आए।" येह सुन कर बादशाह ने कहा : "तुम जाओ। जब तक मैं इस मुआ़मले की तह़क़ीक़ न कर लूं उस के बारे में कोई फ़ैसला नहीं करूंगा।"

चुनान्चे, वोह ह़ासिद दरबारे शाही से जाने के बा'द उस शख़्स के पास पहुंचा जिस से वोह ह़सद करता था। उसे खाने की दा'वत दी, उस ने दा'वत क़बूल कर ली और उस के साथ चल दिया। ह़ासिद ने उस के सामने ऐसा खाना पेश किया जिस में बहुत ज़ियादा

www.dawateislami.net

लह्सन डाल दिया गया। अब खाने के बा'द उस शख़्स के मुंह से लह्सन की बद बू आने लगी। बहर ह़ाल वोह अपने घर आ गया, अभी थोड़ी ही देर गुज़री थी कि बादशाह का क़ासिद आया और उस ने कहा : "बादशाह ने आप को अभी दरबार में बुलाया है।" वोह शख़्स क़ासिद के साथ दरबार में पहुंचा। बादशाह ने उसे अपने सामने बिठाया और कहा : "हमें वोही कलिमात सुनाओ जो उस दिन तुम ने सुनाए थे।" उस शख़्स ने कहा : "मोह्सिन या'नी एह्सान करने वाले के साथ एह्सान करो और जो बुराई करे उस की बुराई का बदला उसे खुद ही मिल जाएगा।"

जब उस ने अपनी बात मुकम्मल कर ली तो बादशाह ने उस से कहा : "मेरे क़रीब आओ।" वोह बादशाह के क़रीब गया तो उस ने फ़ौरन अपने मुंह पर हाथ रख लिया ताकि लह्सन की बदबू से बादशाह को तक्लीफ़ न हो।" जब बादशाह ने येह सूरते ह़ाल देखी तो अपने दिल में कहा कि "उस शख़्स ने ठीक ही कहा था कि मेरे मुतअ़ल्लिक़ येह शख़्स गुमान रखता है कि मुझे गन्दा दहनी (या'नी मुंह से बद बू आने की) बीमारी है।" बादशाह उस शख़्स के बारे में बदगुमानी का शिकार हो गया और बिग़ैर तह्क़ीक़ के उस ने येह फ़ैसला कर लिया कि उस शख़्स को सख़्त सज़ा देगा। चुनान्चे, उस ने अपने गवर्नर के नाम एक मक्तूब रवाना किया जिस में लिखा : "ऐ गवर्नर ! जैसे ही येह शख़्स तुम्हारे पास पहुंचे तो इसे ज़ब्ह़ कर के इस की खाल में भूसा भर देना और इसे हमारे पास भिजवा देना। फिर बादशाह ने ख़त़ पर मोहर लगाई और उस शख़्स को देते हुवे कहा : "येह ख़त़ ले कर फ़ुलां अ़लाक़े के गवर्नर के पास पहुंच जाओ।"

www.dawateislami.net

चूंकि बादशाह की आ़दत थी कि जब भी वोह किसी शख़्स को कोई बड़ा इन्आ़म देना चाहता तो अपने किसी गवर्नर के नाम ख़त़ लिखता और उस शख़्स को गवर्नर के पास भेज देता वहां उसे ख़ूब इन्आ़मो इकराम से नवाज़ा जाता और कभी भी बादशाह ने सज़ा के लिये किसी गवर्नर को ख़त़ न लिखा था। आज पहली मरतबा बादशाह ने किसी को सज़ा देने के लिये गवर्नर के नाम ख़त़ लिखा। बहर ह़ाल येह शख़्स ख़त़ ले कर दरबारे शाही से निकला इस बेचारे को क्या मा'लूम कि इस ख़त़ में मेरी मौत का हुक्म है? येह शख़्स ख़त़ ले कर गवर्नर के पास जा रहा था कि रास्ते में इस की मुलाक़ात उसी ह़ासिद से हो गई। उस ने पूछा: "भाई! कहां का इरादा है?"

इस ने कहा: "मैं ने बादशाह को अपना कलाम सुनाया तो उस ने मुझे एक ख़त़ मोहर लगा कर दिया और कहा कि फ़ुलां गवर्नर के पास येह ख़त़ ले जाओ। मैं उसी गवर्नर के पास ख़त़ लिये जा रहा हूं।" ह़ासिद कहने लगा: "भाई! तुम येह ख़त़ मुझे दे दो मैं ही इसे गवर्नर तक पहुंचा दूंगा।" चुनान्चे, उस शरीफ़ आदमी ने ख़त़ ह़ासिद के ह़वाले कर दिया, वोह ह़ासिद ख़त़ ले कर ख़ुशी ख़ुशी गवर्नर के दरबार की त़रफ़ चल दिया, वोह येह सोच कर बहुत ख़ुश हो रहा था कि "इस ख़त़ में बादशाह ने गवर्नर के नाम पैग़ाम लिखा होगा कि जो शख़्स येह ख़त़ ले कर आए उसे इन्आ़मो इकराम से नवाज़ा जाए। मेरी क़िस्मत कितनी अच्छी है! मैं ने उस शख़्स को झांसा दे कर येह ख़त़ ले लिया है अब मैं माला माल हो जाऊंगा।" वोह ह़ासिद इन्हीं सोचों में मगन बड़ी ख़ुशी के आ़लम में झूमता झूमता गवर्नर के दरबार की जानिब जा रहा था। उसे क्या मा'लूम था कि ह़सद की आग ने उसे मौत के मुंह में धकेल दिया है और जाते ही उसे क़त्ल कर दिया जाएगा।

www.dawateislami.net

बहर हाल वोह गवर्नर के पास पहुंचा और बड़े मुअद्दबाना अन्दाज़ में बादशाह का ख़त़ गवर्नर को दिया। गवर्नर ने जैसे ही ख़त़ पढ़ा तो पूछा : "ऐ शख़्स ! क्या तुझे मा'लूम है कि इस ख़त़ में बादशाह ने क्या लिखा है ?" उस ने कहा : "बादशाह सलामत ने येही लिखा होगा कि मुझे इन्आ़मो इकराम से नवाज़ा जाए और मेरी ह़ाजात को पूरा किया जाए।" गवर्नर ने येह सुन कर कहा : ऐ नादान शख़्स ! बादशाह ने इस ख़त़ में मुझे हुक्म दिया है कि "जैसे ही येह शख़्स ख़त़ ले कर पहुंचे इसे ज़ब्ह़ कर देना और इस की खाल उतार कर इस में भूसा भर देना फिर इस की लाश मेरे पास भिजवा देना।" येह सुन कर उस ह़ासिद के तो होश उड़ गए और वोह गिड़ गिड़ा कर कहने लगा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह ख़त़ मेरे बारे में नहीं लिखा गया बल्कि येह तो फ़ुलां शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ है, बेशक आप बादशाह के पास किसी क़ासिद को भेज कर मा'लूम कर लें।"

गवर्नर ने उस की एक न सुनी और कहा : "हमें कोई ह़ाजत नहीं कि हम बादशाह से इस मुआ़मले की तस्दीक़ करें, बादशाह की मोहर इस ख़त़ पर मौजूद है लिहाज़ा हमें बादशाह के हुक्म पर अ़मल करना होगा।" इतना कहने के बा'द उस ने जल्लाद को हुक्म दिया और उस ह़ासिद शख़्स को ज़ब्ह़ कर के उस की खाल उतार कर उस में भूसा भर दिया गया। फिर उस की लाश को बादशाह के दरबार में भिजवा दिया गया। वोह शख़्स जिस से येह ह़सद किया करता था ह़स्बे मा'मूल बादशाह के दरबार में गया और बादशाह के सामने खड़े हो कर वोही अल्फ़ाज़ दोहराए : "मोह़सिन के साथ एह़सान करो और जो कोई बुराई करेगा उसे अ़न क़रीब उस की बुराई का सिला मिल जाएगा।" जब बादशाह ने उस शख़्स को सह़ीह़ व सालिम देखा तो उस से पूछा : "मैं ने तुझे जो ख़त़ दिया था उस का क्या हुवा ?"

www.dawateislami.net

उस ने जवाब दिया : "मैं आप का ख़त़ ले कर गवर्नर के पास जा रहा था कि मुझे रास्ते में फ़ुलां शख़्स मिला और उस ने मुझ से कहा कि येह ख़त़ मुझे दे दो, चुनान्चे, मैं ने उसे ख़त़ दे दिया और वोह ख़त़ ले कर गवर्नर के पास चला गया है।"

बादशाह ने कहा : "उस शख़्स ने तो मुझे तुम्हारे बारे में बताया था कि तुम मेरे मुतअ़ल्लिक़ येह गुमान रखते हो कि मेरे मुंह से बद बू आती है, क्या वाक़ेई ऐसा है ?" उस शख़्स ने कहा : "बादशाह सलामत ! मैं ने तो कभी भी आप के बारे में ऐसा नहीं सोचा।" तो बादशाह ने पूछा : "जब मैं ने तुझे अपने क़रीब बुलाया था तो तू ने अपने मुंह पर हाथ क्यूं रख लिया था ?" उस शख़्स ने जवाब दिया : "बादशाह सलामत ! आप के दरबार में आने से कुछ देर क़ब्ल उसी शख़्स ने मेरी दा'वत की थी और खाने में मुझे बहुत ज़ियादा लह्सन खिला दिया था जिस की वजह से मेरा मुंह बद बू दार हो गया। जब आप ने मुझे अपने क़रीब बुलाया तो मैं ने येह बात गवारा न की, कि मेरे मुंह की बद बू से बादशाह सलामत को तक्लीफ़ पहुंचे इसी लिये मुंह पर अपना हाथ रख लिया था।"

जब बादशाह ने येह सुना तो कहा : "ऐ ख़ुश नसीब शख़्स ! तू ने बिल्कुल ठीक कहा, तेरी येह बात बिल्कुल सच्ची है कि जो किसी के साथ बुराई करता है उसे अ़न क़रीब उस की बुराई का बदला मिल जाएगा। उस शख़्स ने तेरे साथ बुराई का इरादा किया और तुझे सज़ा दिलवानी चाही लेकिन उसे अपनी बुराई का सिला ख़ुद ही मिल गया। सच है कि जो किसी के लिये गढ़ा खोदता है वोह ख़ुद ही उस में जा गिरता है। ऐ नेक शख़्स ! मेरे सामने बैठ और अपनी उसी बात को दोहरा।" चुनान्चे, वोह शख़्स बादशाह के सामने बैठा और कहने

www.dawateislami.net

लगा : "मोह्सिन के साथ एह्सान करो और बुराई करने वाले को अ़न क़रीब उस की बुराई की सज़ा ख़ुद ही मिल जाएगी।"(1)

ह़सद के चौदह इलाज :

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ 96 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "ह़सद" सफ़्ह़ा 68 से ह़सद के चौदह (14) इलाज पेशे ख़िदमत हैं :

(1)......**"तौबा कर लीजिये।"** **ह़सद** बल्कि तमाम गुनाहों से तौबा कीजिये कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे सामने इक़रार करता हूं कि मैं अपने फ़ुलां भाई से **ह़सद** करता था तू मेरे तमाम गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा दे। आमीन

(2).......**"दुआ़ कीजिये।"** कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी रिज़ा के लिये **ह़सद** से छुटकारा ह़ासिल करना चाहता हूं, तू मुझे इस बातिनी बीमारी से शिफ़ा दे और मुझे ह़सद से बचने में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा। आमीन

(3).....**"रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहिये।"** कि रब عَزَّوَجَلَّ ने मेरे इस भाई को जो भी ने'मतें अ़ता फ़रमाई हैं वोह उस की रिज़ा है वोह रब عَزَّوَجَلَّ इस बात पर क़ादिर है कि जिसे चाहे जो चाहे जितना चाहे जिस वक़्त चाहे अ़ता फ़रमा दे।

(4).....**"ह़सद की तबाहकारियों पर नज़र रखिये।"** कि ह़सद, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी

---

(1).....उ़यूनुल ह़िकायात, जि. 1, स. 299।

www.dawateislami.net

का सबब है, हसद से नेकियां ज़ाएअ़ होती हैं, हसद से ग़ीबत, बद गुमानी, चुग़ली जैसे गुनाह सरज़द होते हैं, हसद से रूहानी सुकून बरबाद हो जाता है।" वग़ैरा वग़ैरा

(5)......"**अपनी मौत को याद कीजिये ।**" कि अ़न क़रीब मुझे भी अपनी येह ज़िन्दगी छोड़ कर अन्धेरी क़ब्र में उतरना है। मौत की याद तमाम गुनाहों बिल ख़ुसूस हसद से छुटकारे का बेहतरीन ज़रीआ़ है।

(6)......"**हसद का सबब बनने वाली ने'मतों पर ग़ौर कीजिये ।**" कि अगर वोह दुन्यवी ने'मतें हैं तो आ़रिज़ी हैं और आ़रिज़ी चीज़ पर हसद कैसा ? अगर दीनी शरफ़ व फ़ज़ीलत है तो येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता पर हसद करना अ़क़्लमन्दी नहीं।

(7)....."**लोगों की ने'मतों पर निगाह न रखिये ।**" कि उमूमन इस से एह़सासे कमतरी पैदा होता है जो हसद का बाइ़स है, अपने से नीचे वालों पर नज़र रखिये और बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में शुक्र अदा कीजिये।

(8)....."**हसद से बचने के फ़ज़ाइल पर नज़र रखिये ।**" कि हसद से बचना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा का सबब, जन्नत के हुसूल में मुआ़विन, कल बरोज़े क़ियामत सायए अ़र्श मिलने का सबब बनने वाले आ'माल में से एक है।

(9)....."**अपनी ख़ामियों की इस्लाह़ में लग जाइये ।**" कि जब दूसरों की ख़ूबियों पर नज़र रखेंगे तो अपनी इस्लाह़ से मह़रूम हो जाएंगे और जब अपनी इस्लाह़ में लग जाएंगे तो हसद जैसे बुरे काम की फ़ुरसत ही नहीं मिलेगी।

www.dawateislami.net

(10)....“**हसद की आदत को रश्क में तब्दील कर लीजिये ।**” कि किसी की ने'मत को देख कर येह तमन्ना मत कीजिये कि येह ने'मत उस से छिन कर मुझे मिल जाए बल्कि येह दुआ कीजिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की इस ने'मत में मज़ीद बरकत अता फ़रमाए ।

(11).....“**नफ़रत को महब्बत में बदलने की तदबीरें कीजिये ।**” कि जिस से हसद है उस से सलाम में पहल करे, उसे तहाइफ़ पेश करे, बीमार होने पर ता'ज़ियत करे, खुशी के मौक़अ़ पर मुबारक बाद दे, ज़रूरत पड़े तो मदद करे, लोगों के सामने उस की जाइज़ ता'रीफ़ करे, जिस क़दर उसे फ़ाइदा पहुंचा सकते हो पहुंचाए । वग़ैरा वग़ैरा

(12)......“**दूसरों की खुशी में खुश रहने की आदत बनाइये ।**” क्यूंकि येह रब عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत और निज़ामे क़ुदरत है कि उस ने तमाम लोगों के रहन सहन, उन को दी जाने वाली ने'मतों को यक्सां नहीं रखा तो यक़ीनन इस बात की कोई गॉरन्टी नहीं कि किसी की ने'मत छिन जाने से वोह आप को ज़रूर मिल जाएगी, लिहाज़ा **हसद** के बजाए अपने भाई की ने'मत पर खुश रहें ।

(13).....“**रूहानी इलाज भी कीजिये ।**” कि हर वक़्त बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में **हसद** से बचने के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहिये, शैतान के मक्रो फ़रेब से पनाह मांगिये, जब भी दिल में हसद का ख़याल आए तो اَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ पढ़ कर अपने बाईं तरफ़ तीन बार थू थू कर दीजिये ।

(14).....“**मदनी इन्आमात पर अमल कीजिये ।**” कि आज के इस पुर फ़ितन दौर में शैखे तरीक़त, अमीरे अहले

www.dawateislami.net

सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ के अता कर्दा मदनी इन्आमात पर अमल करने से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ पाबन्दे सुन्नत बनने, नेकियां करने और गुनाहों से बचने का जज़्बा मिलेगा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(4)...बुग़्ज़ो कीना

बुग़्ज़ो कीना की ता'रीफ़ :

कीना येह है कि इन्सान अपने दिल में किसी को बोझ जाने, उस से ग़ैर शरई दुश्मनी व बुग़्ज़ रखे, नफ़रत करे और येह कैफ़िय्यत हमेशा हमेशा बाक़ी रहे।(1)

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿اِنَّمَا یُرِیْدُ الشَّیْطٰنُ اَنْ یُّوْقِعَ بَیْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَآءَ فِی الْخَمْرِ وَ الْمَیْسِرِ وَ یَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ عَنِ الصَّلٰوةِۚ-فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ(۹۱)﴾ (پ۷، المائدۃ: ۹۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"शैतान येही चाहता है कि तुम में बैर और दुश्मनी डलवा दे शराब और जूए में और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज़ से रोके तो क्या तुम बाज़ आए ?"*

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद **मुहम्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ الْھَادِی **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : "इस आयत में शराब और जूए के नताइज और वबाल बयान फ़रमाए गए कि शराब ख़ोरी और जूए

1 ......احیاء العلوم، کتاب ذم الغضب والحقد والحسد، القول فی معنی الحقد۔۔۔الخ، ج۳، ص ۲۲۳۔

www.dawateislami.net

बाज़ी का एक वबाल तो येह है कि इस से आपस में बुग़्ज़ और अ़दावतें पैदा होती हैं और जो इन बदियों में मुब्तला हो वोह ज़िक्रे इलाही और नमाज़ के अवक़ात की पाबन्दी से मह़रूम हो जाता है।"

ह़दीसे मुबारका : बुग़्ज़ रखने वालों से बचो :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (माहे) शा'बान की पन्दरहवीं रात अपने बन्दों पर (अपनी कुदरत के शायाने शान) तजल्ली फ़रमाता है और मग़्फ़िरत चाहने वालों की मग़्फ़िरत फ़रमाता है और रह़्म त़लब करने वालों पर रह़्म फ़रमाता है जब कि **कीना** रखने वालों को उन की ह़ालत पर छोड़ देता है।"(1) एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : "**बुग़्ज़** रखने वालों से बचो क्यूंकि **बुग़्ज़** दीन को मूंड डालता (या'नी तबाह कर देता) है।"(2)

बुग़्ज़ो कीना का हुक्म :

किसी भी मुसलमान के मुतअ़ल्लिक़ बिला वजहे शरई अपने दिल में **बुग़्ज़ो कीना** रखना नाजाइज़ व गुनाह है। सय्यिदुना **अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी** عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "ह़क़ बात बताने या अ़द्लो इन्साफ़ करने वाले से **बुग़्ज़ो कीना** रखना ह़राम है।"(3)

ह़िकायत : क़ब्र काले सांपों से भर गई :

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में कुछ लोग

---

1 ......شعب الایمان، باب فی الصیام، ماجاء فی لیلۃ ۔۔۔ الخ، ج ۳، ص ۳۸۳، حدیث: ۳۸۳۵ ملتقطا۔

2 ......کنزالعمال، کتاب الاخلاق، قسم الاقوال، الجزء: ۳، ج ۲، ص ۲۸، حدیث: ۵۴۸۶۔

3 ......الحدیقۃ الندیۃ، السادس عشر من ۔۔۔ الخ، ج ۱، ص ۶۲۹۔

www.dawateislami.net

घबराए हुवे हाज़िर हुवे और अर्ज़ करने लगे : "हम हज की सआदत पाने के लिये निकले थे, हमारे साथ एक आदमी था, जब हम **ज़ातुस्सिफ़ाह** के मक़ाम पर पहुंचे तो उस का इन्तिक़ाल हो गया। हम ने उस के ग़ुस्ल व कफ़न का इन्तिज़ाम किया फिर उस के लिये क़ब्र खोदी और उसे दफ़्न करने लगे तो देखा कि अचानक उस की क़ब्र काले सांपों से भर गई है। हम ने वोह जगह छोड़ कर दूसरी क़ब्र खोदी तो देखते ही देखते वोह भी काले सांपों से भर गई, बिल आख़िर हम उसे वहीं छोड़ कर आप की बारगाह में हाज़िर हो गए हैं।" येह वाक़िआ सुन कर हज़रते सय्यिदुना अब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "येह उस का कीना है जो वोह अपने दिल में मुसलमानों के मुतअल्लिक़ रखा करता था, जाओ ! और उसे वहीं दफ़्न कर दो।"(1)

बुग़्ज़ो कीना के छे इलाज :

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत्बूआ 84 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले "**बुग़्ज़ो कीना**" सफ़हा 40 से बुग़्ज़ो कीना के छे इलाज पेशे ख़िदमत हैं।

(1)....."**ईमान वालों के कीने से बचने की दुआ कीजिये।**" पारह 28 सूरए हश्र, आयत नम्बर 10 को याद कर लेना और वक़्तन फ़ वक़्तन पढ़ते रहना भी बहुत मुफ़ीद है :

﴿وَلَا تَجْعَلْ فِیْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَاۤ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ۠﴾ ۱۰

*(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हमारे दिल में ईमान वालों की तरफ़ से कीना न रख ऐ रब हमारे ! बेशक तू ही निहायत मेहरबान रहम वाला है।)*

---

1 ......موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب القبور، ج ۶، ص ۸۳، رقم: ۱۲۸۔

www.dawateislami.net

(2)......**"अस्बाब दूर कीजिये ।"** यक़ीनन बीमारी जिस्मानी हो या रूहानी इस के कुछ न कुछ अस्बाब होते हैं अगर अस्बाब को दूर कर दिया जाए तो बीमारी ख़ुद ब ख़ुद ख़त्म हो जाती है, बुग़्ज़ो कीना के अस्बाब में से ग़ुस्सा, बद गुमानी, शराब नोशी, जूआ भी है। इन से बचने की कोशिश कीजिये, एक सबब ने'मतों की कसरत भी है कि इस से भी आपस में बुग़्ज़ो कीना पैदा हो जाता है, ने'मतों का शुक्र अदा कर के और सख़ावत की आ़दत के ज़रीए इस से बचना मुमकिन है।

(3)...."**सलाम व मुसाफ़ह़ा की आ़दत बना लीजिये ।**" कि सलाम में पहल करना और एक दूसरे से हाथ मिलाना या गले मिलना आप के कीने को ख़त्म कर देता है, नीज़ तोह़्फ़ा देने से भी मह़ब्बत बढ़ती और अ़दावत दूर होती है।

(4)...."**बेजा सोचना छोड़ दीजिये ।**" कि उ़मूमन किसी की ने'मतों के बारे में सोचना या किसी की अपने ऊपर होने वाली ज़ियादती के बारे में सोचते रहना भी कीने के पैदा होने का सबब बन जाता है। लिहाज़ा किसी के मुतअ़ल्लिक़ बेजा सोचने के बजाए अपनी आख़िरत की फ़िक्र में लग जाइये कि येही दानिशमन्दी है।

(5)......"**मुसलमानों से अल्लाह की रिज़ा के लिये मह़ब्बत कीजिये ।**" मह़ब्बत कीने की ज़िद है लिहाज़ा अगर हम रिज़ाए इलाही के लिये अपने मुसलमान भाई से मह़ब्बत रखेंगे तो कीने को दिल में आने की जगह नहीं मिलेगी और दीगर फ़ज़ाइल भी ह़ासिल होंगे।

www.dawateislami.net

(6).....**"सोचिये और अ़क़्लमन्दी से काम लीजिये ।"** कीने की बुन्याद उ़मूमन दुन्यावी चीज़ें होती हैं, लेकिन सोचने की बात है कि क्या दुन्या की वजह से अपनी आख़िरत को बरबाद कर लेना दानिशमन्दी है ? यक़ीनन नहीं तो फिर अपने दिल में कीने को हरगिज़ जगह मत दीजिये ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(5)...हुब्बे मद्ह़

हुब्बे मद्ह़ की ता'रीफ़ :

"किसी काम पर लोगों की त़रफ़ से की जाने वाली ता'रीफ़ को पसन्द करना या येह ख़्वाहिश करना कि फ़ुलां काम पर लोग मेरी ता'रीफ़ करें, मुझे इ़ज़्ज़त दें **हुब्बे मद्ह़** कहलाता है ।"

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَاۤ اَتَوْا وَّ يُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۸۸﴾﴾ (پ۴، آل عمران: ۱۸۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"हरगिज़ न समझना उन्हें जो ख़ुश होते हैं अपने किये पर और चाहते हैं कि बे किये उन की ता'रीफ़ हो, ऐसों को हरगिज़ अ़ज़ाब से दूर न जानना और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है ।"*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "येह आयत यहूद के ह़क़ में

www.dawateislami.net

नाज़िल हुई जो लोगों को धोका देने और गुमराह करने पर खुश होते और बा वुजूद नादान होने के येह पसन्द करते कि उन्हें आलिम कहा जाए।

मस्अला : इस आयत में वईद है खुद पसन्दी करने वाले के लिये और उस के लिये जो लोगों से अपनी झूटी ता'रीफ़ चाहे जो लोग बिग़ैर इल्म अपने आप को आलिम कहलवाते हैं या इसी त़रह़ और कोई ग़लत़ वस्फ़ अपने लिये पसन्द करते हैं उन्हें इस से सबक़ हासिल करना चाहिये ।"

ह़दीसे मुबारका : हुब्बे मद्ह़ बरबादिये आ'माल का सबब :

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत को लोगों की ज़बानों से अपनी ता'रीफ़ पसन्द करने के साथ मिलाने से बचो ऐसा न हो कि तुम्हारे आ'माल बरबाद हो जाएं ।"(1) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**हुब्बे मद्ह़** आदमी को अन्धा और बहरा कर देती है ।"(2)

हुब्बे मद्ह़ का हुक्म :

अपनी ता'रीफ़ को पसन्द करना और अपनी तन्क़ीद पर नाराज़ हो जाना येह बड़ी बड़ी गुमराहियों और गुनाहों का सर चश्मा है, क़ाबिले मज़म्मत खुशी येह है कि आदमी लोगों के नज़्दीक अपने मक़ाम व मर्तबे पर खुश हो और येह ख़्वाहिश करे कि वोह इस की ता'रीफ़ व ता'ज़ीम करें, इस की ह़ाजतें पूरी करें, आमदो रफ़्त में इसे अपने आगे करें ।

---

(1) ......فردوس الاخبار، باب الالف، ج ١، ص ٢٢٣، حدیث: ١٥٦٧۔

(2) ......فردوس الاخبار، باب الحاء، ج ١، ص ٣٤٧، حدیث: ٢٥٤٨۔

www.dawateislami.net

आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह **इमाम अहमद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "अगर (कोई आदमी) अपनी झूटी ता'रीफ़ को दोस्त रखे (या'नी पसन्द करे) कि लोग उन फ़ज़ाइल से उस की सना (या'नी ता'रीफ़) करें जो (फ़ज़ीलत व ख़ूबी) उस में नहीं, जब तो सरीह़ ह़रामे क़त़ई है।"

قَالَ اللّٰهُ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

﴿لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَاۤ اَتَوْا وَّ يُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝﴾ (پ۴، آل عمران: ۱۸۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"हरगिज़ न समझना उन्हें जो ख़ुश होते हैं अपने किये पर और चाहते हैं कि बे किये उन की ता'रीफ़ हो ऐसों को हरगिज़ अ़ज़ाब से दूर न जानना और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।"*

हां अगर ता'रीफ़ वाक़ेई हो तो अगर्चे तावीले मा'रूफ़ व मश्हूर के साथ, जैसे **शम्सुल अइम्मा** (इमामों के आफ़्ताब) व **फ़ख़रुल उ़लमा** (अहले इ़ल्म के लिये फ़ख़्र) व **ताजुल आ़रिफ़ीन** (आ़रिफ़ों के ताज) व **अमसालु ज़ालिक** (या'नी इसी क़िस्म और नौअ़ के दूसरे तौसीफ़ी कलिमात जो मद्ह़ की ता'रीफ़ व तौसीफ़ ज़ाहिर करें) कि मक़्सूद अपने अ़स्र (ज़माने) या मिस्र (शहर) के लोग होते हैं और इस पर इस लिये ख़ुश न हो कि मेरी ता'रीफ़ हो रही है बल्कि इस लिये कि इन लोगों की (ता'रीफ़) इन को नफ़्ए़ दीनी पहुंचाएगी सम्ए़ क़बूल से सुनेंगे जो इन को नसीह़त की जाएगी तो येह ह़क़ीक़तन हुब्बे मद्ह़ नहीं बल्कि हुब्बे नस्ह़े मुस्लिमीन है और वोह मह़ज़ ईमान है।"(1)

आज बनता हूं मुअ़ज़्ज़ज़ जो खुले ह़श्र में ऐ़ब
हाए रुस्वाई की आफ़त में फंसूंगा या रब

1 ......फ़तावा रज़विय्या, जि. 21 स. 597।

www.dawateislami.net

हिकायत : हुब्बे मद्ह से बचाव का अनोखा अन्दाज़ :

हज़रते सय्यिदुना अबुल हसन मुहम्मद बिन अस्लम तूसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى हुब्बे मद्ह से बचने के लिये अपनी नेकियां छुपाने का बे हद ख़याल फ़रमाते यहां तक कि एक बार फ़रमाने लगे : "अगर मेरा बस चले तो मैं किरामन कातिबीन (आ'माल लिखने वाले दोनों फ़िरिश्तों) से भी छुप कर इबादत करूं।" हज़रते सय्यिदुना अबू **अ़ब्दुल्लाह** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं बीस बरस से ज़ियादा अ़र्सा सय्यिदुना अबुल हसन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सोहबत में रहा मगर जुमुअ़तुल मुबारक (व दीगर फ़राइज़ व वाजिबात) के इलावा कभी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को दो रक्अ़त नफ़्ल भी पढ़ते नहीं देख सका। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पानी का कूज़ा ले कर अपने कमरए ख़ास में तशरीफ़ ले जाते और अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लेते थे। मैं कभी भी न जान सका कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कमरे में क्या करते हैं ! यहां तक कि एक दिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मदनी मुन्ना ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। उस की वालिदा उसे चुप करवाने की कोशिश कर रही थी। मैं ने पूछा : येह मदनी मुन्ना क्यूं रो रहा है ?" बीबी साहिबा ने फ़रमाया : "इस के अब्बू या'नी हज़रते सय्यिदुना अबुल हसन तूसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस कमरे में दाख़िल हो कर तिलावते कुरआन करते और रोते हैं तो येह भी इन की आवाज़ सुन कर रोने लगता है।" शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना अबुल हसन तूसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (रियाकारी और हुब्बे मद्ह की तबाह कारियों से बचने की ख़ातिर) नेकियां छुपाने की इस क़दर सई फ़रमाते थे कि अपने

www.dawateislami.net

उस कमरए ख़ास से इबादत करने के बा'द बाहर निकलने से पहले अपना मुंह धो कर आंखों में सुर्मा लगा लेते ताकि चेहरा और आंखें देख कर किसी को अन्दाज़ा न होने पाए कि येह रोए थे।''(1)

हुब्बे मद्ह के अस्बाब व इलाज :

(1)......**हुब्बे मद्ह** का पहला सबब **दूसरों के ता'रीफ़ी कलिमात की वजह से ख़ुद को बा कमाल समझना है।** इस का **इलाज** येह है कि बन्दा इस बात पर ग़ौर करे कि येह ता'रीफ़ी कलिमात किसी दुन्यवी ओहदे, मालो दौलत या ज़हानत के सबब से हैं या किसी दीनी ख़ूबी (मसलन तक़्वा वग़ैरा) की वजह से। अगर दुन्यवी ख़ूबियों की वजह से हैं तो वोह फ़ानी हैं और फ़ानी ख़ूबियों पर इतराना कैसा ? और अगर दीनी ख़ूबियों के सबब से हों तो अपने आप को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से डराए और अपने बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़ को हमेशा अपने ऊपर तारी रखे, और रब عَزَّوَجَلَّ से ईमान पर ख़ातिमे की दुआ मांगे।

(2).....**हुब्बे मद्ह** का दूसरा सबब **ता'रीफ़ के ज़रीए दूसरों को अपना अक़ीदत मन्द बनाना** है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा इस बात पर ग़ौर करे कि ''लोगों के दिलों में **मक़ाम बनाने** की ख़्वाहिश कहीं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में **मक़ाम घटाने** का सबब न बन जाए।'' जो बज़ाते ख़ुद यक़ीनन दुन्या व आख़िरत की बरबादी का सबब है।

---

1 ......حلیۃ الاولیاء، محمد بن اسلم، ج۹، ص۲۵۴۔

www.dawateislami.net

(3)……**हुब्बे मद्ह़ का** तीसरा सबब ता'रीफ़ के ज़रीए लोगों पर अपनी **बरतरी और रो'ब व दबदबा** क़ाइम करना है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा बार बार इस बात पर ग़ौर करे कि "ऐसी आ़रिज़ी बरतरी और **रो'ब व दबदबा** जिस में ज़र्रा बराबर पाएदारी नहीं किस त़रह़ मेरी ता'रीफ़ का सबब बन सकती है?"(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(6)…हुब्बे जाह

हुब्बे जाह की ता'रीफ़ :

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं कि **हुब्बे जाह** की ता'रीफ़ येह है : "शोहरत व इ़ज़्ज़त की ख़्वाहिश करना।"(2)

हुब्बे जाह की मज़म्मत करते हुवे **हुज्जतुल इस्लाम इमाम ग़ज़ाली** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "शोहरत का मक़्सद लोगों के दिलों में मक़ाम बनाना है और येह ख़्वाहिश हर फ़साद की जड़ है। हमें चाहिये कि "हुब्बे जाह" या'नी शोहरत की ख़्वाहिश पर क़ाबू पाने के लिये अह़ादीसे मुबारका में वारिद इस के नुक़्सानात पर ग़ौरो फ़िक्र करें।"(3)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1……احیاء العلوم، ج۳، ص۸۵۸، ماخوذا۔

2……नेकी की दा'वत, स. 87।

3……احیاء العلوم، کتاب ذم الجاہ والریاء، بیان فضیلۃ الخمول، ج۳، ص۳۴۲۔

www.dawateislami.net

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَاۤ اَتَوْا وَّ يُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۸۸﴾﴾ (پ۴، آل عمران: ۱۸۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"हरगिज़ न समझना उन्हें जो ख़ुश होते हैं अपने किये पर और चाहते हैं कि बे किये उन की ता'रीफ़ हो ऐसों को हरगिज़ अ़ज़ाब से दूर न जानना और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।"'*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में फ़रमाते हैं : "येह आयत यहूद के ह़क़ में नाज़िल हुई जो लोगों को धोका देने और गुमराह करने पर ख़ुश होते और बा वुजूद नादान होने के येह पसन्द करते कि उन्हें आ़लिम कहा जाए। **मस्अला :** इस आयत में वईद है ख़ुद पसन्दी करने वाले के लिये और उस के लिये जो लोगों से अपनी झूटी ता'रीफ़ चाहे जो लोग बिग़ैर इल्म अपने आप को आ़लिम कहलवाते हैं या इसी त़रह़ और कोई ग़लत़ वस्फ़ अपने लिये पसन्द करते हैं उन्हें इस से सबक़ ह़ासिल करना चाहिये।"

ह़दीसे मुबारका : बुरा होने के लिये इतना ही काफ़ी है :

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "किसी इन्सान के बुरा होने के लिये इतना ही काफ़ी है कि लोग उस के दीन या दुन्या के मुआ़मले में उस की त़रफ़ उंगलियों से इशारे

www.dawateislami.net

करें (या'नी उस की ता'रीफ़ करें) अलबत्ता जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ महफ़ूज़ फ़रमाए।[1]

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे खुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم इरशाद फ़रमाते हैं : "ख़र्च करो लेकिन शोहरत न चाहो, अपनी शख़्सिय्यत को इस त़रह़ बुलन्द न करो कि तुम्हारा ज़िक्र किया जाए और लोग तुम्हें जानें बल्कि अपने आप को छुपा कर रखो और ख़ामोशी इख़्तियार करो कि इस त़रह़ तुम मह़फ़ूज़ रहोगे, नेक लोग तुम से खुश होंगे और बदकारों को गुस्सा आएगा।"[2]

हुब्बे जाह का हुक्म :

हुब्बे जाह (लोगों में नामवरी और शोहरत चाहना) एक क़बीह़ (बहुत बुरा) और निहायत ही मज़मूम (क़ाबिले मज़म्मत) अम्र है, बल्कि गुमनामी या'नी अपने आप को लोगों में मश्हूरो मा'रूफ़ न करवाना क़ाबिले ता'रीफ़ है। अलबत्ता अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अगर किसी शख़्स को अपने दीन को फैलाने के लिये मश्हूर कर दे और इस में उस का कोई दख़्ल न हो तो कोई ह़रज नहीं। **हुब्बे जाह** एक ऐसा अम्र है जो बसा अवक़ात दीन को भी तबाहो बरबाद कर देता है। इस लिये इस से अपने आप को बचाना बहुत ज़रूरी है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं किसी ऐसे शख़्स को नहीं जानता जो अपनी शोहरत चाहता हो और उस का दीन तबाहो बरबाद और वोह खुद ज़लीलो ख़्वार न हुवा हो।"[3]

---

1 ......شعب الایمان، باب فی اخلاص العمل للہ---الخ، ج۵، ص ۳۶۲، حدیث ۶۹۷۷۔

2 ......لباب الاحیاء، ص ۲۷۳۔

3 ......احیاء العلوم، کتاب ذم الجاہ والریاء، بیان ذم الشھرۃ---الخ، ج ۳، ص ۳۲۹۔

www.dawateislami.net

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायानाज़ तस्नीफ़ "**आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात**" सफ़ह़ा 102 पर हुब्बे जाह से मुतअ़ल्लिक़ ह़िकायत मअ़ दर्स पेशे ख़िदमत है :

ह़िकायत : अ़जीब अन्दाज़ में नफ़्स की गिरिफ़्त :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद मुरतइ़श رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं ने बहुत से **ह़ज** किये और इन में से अकसर सफ़रे ह़ज किसी क़िस्म का ज़ादे राह लिये बिग़ैर किये। फिर मुझ पर आशकार (या'नी ज़ाहिर) हुवा कि येह सब तो मेरे नफ़्स का धोका था क्यूंकि एक मरतबा मेरी मां ने मुझे पानी का घड़ा भर कर लाने का हुक्म दिया तो मेरे नफ़्स पर इन का हुक्म गिरां (या'नी बोझ) गुज़रा, चुनान्चे, मैं ने समझ लिया कि **सफ़रे ह़ज** में मेरे नफ़्स ने मेरी मुवाफ़क़त फ़क़त अपनी लज़्ज़त के लिये की और मुझे धोके में रखा क्यूंकि अगर मेरा नफ़्स फ़ना हो चुका होता तो आज एक ह़क़्क़े शरई पूरा करना (या'नी मां की इत़ाअ़त करना) इसे (या'नी नफ़्स को) बेह़द दुश्वार क्यूं मह़सूस होता !"(1)

हुब्बे जाह की लज़्ज़त इ़बादत की मशक़्क़त आसान कर देती है :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن कैसी **मदनी सोच** रखते और किस क़दर आ़जिज़ी के ख़ूगर होते हैं। बा'ज़ों की आ़दत होती है, कि वोह आ़म लोगों से तो झुक झुक कर मिलते और उन के लिये बिछ बिछ जाते हैं मगर वालिदैन, भाई बहनों और बाल बच्चों के साथ उन का रविय्या जारिह़ाना, ग़ैर अख़्लाक़ी और बसा अवक़ात सख़्त दिल आज़ार होता

(1) الرسالة القشيرية، ص ١٣٥۔

www.dawateislami.net

है। क्यूं ? इस लिये कि अवाम में उम्दा अख़्लाक़ का मुज़ाहरा मक़्बूलिय्यते आम्मा का बाइस बनता है जब कि घर में हुस्ने सुलूक करने से इ़ज़्ज़त व शोहरत मिलने की ख़ास उम्मीद नहीं होती ! इस लिये येह लोग अवाम में ख़ूब मीठे मीठे बने रहते हैं ! इसी त़रह़ जो इस्लामी भाई बा'ज़ मुस्तह़ब कामों के लिये बढ़ चढ़ कर कुरबानियां पेश करते मगर फ़राइज़ व वाजिबात की अदाएगी में कोताहियां बरतते हैं मसलन मां-बाप की इत़ाअ़त, बाल बच्चों की शरीअ़त के मुत़ाबिक़ तरबिय्यत और ख़ुद अपने लिये **फ़र्ज़ उ़लूम** के हुसूल में ग़फ़्लत से काम लेते हैं उन के लिये भी इस **ह़िकायत** में इ़ब्रत के निहायत अहम **मदनी फूल** हैं। ह़क़ीक़त येह है कि जिन नेक कामों में "शोहरत मिलती और वाह वाह ! होती है" वोह दुश्वार होने के बा वुजूद ब आसानी सर अन्जाम पा जाते हैं क्यूंकि **हुब्बे जाह** (या'नी शोहरत व इ़ज़्ज़त की चाहत) **के सबब मिलने वाली लज़्ज़त बड़ी से बड़ी मशक़्क़त आसान कर देती है**। याद रखिये ! "**हुब्बे जाह**" में हलाकत ही हलाकत है। इ़ब्रत के लिये **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों :

(1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़ाअ़त (या'नी इ़बादत) को बन्दों की त़रफ़ से की जाने वाली ता'रीफ़ की महब्बत से मिलाने से बचते रहो, कहीं तुम्हारे आ'माल बरबाद न हो जाएं।(1)

(2) दो भूके भेड़िये बकरियों के रेवड़ में इतनी तबाही नहीं मचाते जितनी तबाही **हुब्बे माल व जाह** (या'नी मालो दौलत और इ़ज़्ज़त व शोहरत की महब्बत) मुसलमान के दीन में मचाती है।(2)

---

1 ......فردوس الاخبار، باب الالف، ج ۱، ص ۲۲۳، حدیث ۱۵۶۷۔

2 ......ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی اخذ المال، ج ۴، ص ۱۶۶، حدیث ۲۳۸۳۔

www.dawateislami.net

हुब्बे जाह के मुतअ़ल्लिक़ अहम तरीन मदनी फूल :

"**हुब्बे जाह**" के तअ़ल्लुक़ से इह़याउल उ़लूम की जिल्द 3, स. 616 ता 617 को सामने रख कर कुछ **मदनी फूल** पेशे ख़िदमत हैं : "(हुब्बे जाह व रिया) नफ़्स को हलाक करने वाले आख़िरी उमूर और बातिनी मक्रो फ़रेब से है, इस में उ़लमा, इबादत गुज़ार और आख़िरत की मन्ज़िल तै करने वाले लोग मुब्तला किये जाते हैं, इस त़रह़ कि येह ह़ज़रात बसा अवक़ात ख़ूब कोशिशें कर के इबादात बजा लाने, नफ़्सानी ख़्वाहिशात पर क़ाबू पाने बल्कि शुबुहात से भी ख़ुद को बचाने में कामयाब हो जाते हैं, अपने आ'ज़ा को ज़ाहिरी गुनाहों से भी बचा लेते हैं मगर अ़वाम के सामने अपने नेक कामों, दीनी कारनामों और नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये की जाने वाली काविशों जैसे कि मैं ने येह किया, वोह किया, वहां बयान था, यहां बयान है, बयानात (करने या ना'त पढ़ने) के लिये इतनी इतनी तारीख़ें "बुक" हैं, मदनी मश्वरे में रात इतने बज गए और आराम न मिलने की थकन है इसी लिये आवाज़ बैठी हुई है ! मदनी क़ाफ़िले में सफ़र है, इतने इतने मदनी क़ाफ़िलों में या मदनी कामों के लिये फ़ुलां फ़ुलां शहरों, मुल्कों का सफ़र कर चुका हूं वग़ैरा वग़ैरा के इज़्हार के ज़रीए अपने नफ़्स की राह़त के त़लबगार होते हैं, अपना इ़ल्मो अ़मल ज़ाहिर कर के मख़्लूक़ के यहां मक़्बूलिय्यत और उन की त़रफ़ से होने वाली अपनी ता'ज़ीम व तौक़ीर, वाह वाह और इ़ज़्ज़त की लज़्ज़त ह़ासिल करते हैं, जब मक़्बूलिय्यत व शोहरत मिलने लगती है तो उस का नफ़्स चाहता है कि इ़ल्मो अ़मल लोगों पर ज़ियादा से ज़ियादा ज़ाहिर होना चाहिये ताकि और भी इ़ज़्ज़त बढ़े लिहाज़ा वोह

www.dawateislami.net

अपनी नेकियों, इल्मी सलाहिय्यतों के तअल्लुक़ से मख़्लूक़ की इत्तिलाअ के मज़ीद रास्ते तलाश करता है और **ख़ालिक़** के जानने पर कि मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मेरे आ'माल से बा ख़बर है और मुझे अज्र देने वाला है क़नाअत नहीं करता बल्कि इस बात पर ख़ुश होता है कि लोग उस की **वाह वाह और ता'रीफ़** करें और ख़ालिक़ की त़रफ़ से ह़ासिल होने वाली ता'रीफ़ पर क़नाअत नहीं करता।

नफ़्स येह बात ब ख़ूबी जानता है कि लोगों को जब इस बात का इल्म होगा कि फ़ुलां बन्दा नफ़्सानी ख़्वाहिशात का तारिक है, शुबुहात से बचता है, राहे ख़ुदा में ख़ूब पैसे ख़र्च करता है, इबादात में सख़्त मशक़्क़त बरदाश्त करता है ख़ौफ़े ख़ुदा और इश्क़े मुस्त़फ़ा में ख़ूब आहो ज़ारी करता और आंसू बहाता है, मदनी कामों की ख़ूब धूमें मचाता है, लोगों की इस्लाह़ के लिये बहुत दिल जलाता है, ख़ूब मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करता कराता है, ज़बान, आंख और पेट का **क़ुफ़्ले मदीना** लगाता है, रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत के इतने इतने दर्स देता है, मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान), सदाए मदीना, अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत का बड़ा ही पाबन्द है तो उन (लोगों) की ज़बानों पर इस (बन्दे) की ख़ूब ता'रीफ़ जारी होगी, वोह इसे इ़ज़्ज़त व एह़तिराम की निगाह से देखेंगे, इस की मुलाक़ात और ज़ियारत को अपने लिये बाइ़से सआ़दत और सरमायए आख़िरत समझेंगे, ह़ुसूले बरकत के लिये मकान या दुकान पर "दो क़दम" रखने, चल कर दुआ़ फ़रमा देने, चाए पीने, दा'वते त़आ़म क़बूल करने की निहायत लजाजत के साथ दरख़्वास्तें करेंगे, इस की राए पर चलने में दो जहां

www.dawateislami.net

की भलाई का तसव्वुर करेंगे। इसे जहां देखेंगे खि़दमत करेंगे और सलाम पेश करेंगे, इस का झूटा खाने पीने की हि़र्स करेंगे, इस का तोह़्फ़ा या इस के हाथ से मस की हुई चीज़ पाने में एक दूसरे पर सबक़त करेंगे, इस की दी हुई चीज़ चूमेंगे, इस के हाथ पाउं के बोसे लेंगे, एह़तिरामन "ह़ज़रत ! हु़ज़ूर ! या सय्यिदी !" वग़ैरा अल्क़ाब के साथ खा़शिआ़ना अन्दाज़ और आहिस्ता आवाज़ में बात करेंगे, हाथ जोड़ कर सर झुका कर दुआ़ओं की इल्तिजाएं करेंगे, मजालिस में इस की आमद पर ता'ज़ीमन खड़े हो जाएंगे, इसे अदब की जगह बिठाएंगे, इस के आगे हाथ बान्ध कर खड़े होंगे, इस से पहले खाना शुरूअ़ नहीं करेंगे, आ़जिज़ाना अन्दाज़ में तोह़्फ़े और नज़राने पेश करेंगे। तवाज़ोअ़ करते हुवे इस के सामने अपने आप को छोटा (मसलन खा़दिम व ग़ुलाम) ज़ाहिर करेंगे, ख़रीदो फ़रोख़्त और मुआ़मलात में इस से मुरव्वत बरतेंगे, इस को चीज़ें उ़म्दा क्वॉलिटी की और वोह भी सस्ती या मुफ़्त देंगे। इस के कामों में इस की इ़ज़्ज़त करते हुवे झुक जाएंगे।

लोगों के इस त़रह़ के अ़क़ीदत भरे अन्दाज़ से नफ़्स को बहुत ज़ियादा लज़्ज़त ह़ासिल होती है और येह वोह लज़्ज़त है जो तमाम ख़्वाहिशात पर ग़ालिब है, इस त़रह़ की अ़क़ीदत मन्दियों की लज़्ज़तों के सबब गुनाहों का छोड़ना उसे मा'मूली बात मा'लूम होती है क्यूंकि "**हुब्बे जाह**" के मरीज़ को नफ़्स गुनाह करवाने के बजाए उल्टा समझाता है कि देख गुनाह करेगा तो अ़क़ीदत मन्द आंखें फेर लेंगे ! लिहाज़ा नफ़्स के तआ़वुन से मो'तक़िदीन में

www.dawateislami.net

अपना वक़ार बर क़रार रखने के जज़्बे के सबब इबादत पर इस्तिक़ामत की शिद्दत में भी उस को नर्मी व आसानी महसूस होती है क्यूंकि वोह बातिनी तौर पर लज़्ज़तों की लज़्ज़त और तमाम शहवतों (या'नी ख़्वाहिशात) से बड़ी शहवत (या'नी अ़वाम की अ़क़ीदत से हासिल होने वाली लज़्ज़त) का इदराक (या'नी पहचान) कर लेता है।

वोह इस ख़ुश फ़हमी में पड़ जाता है कि मेरी ज़िन्दगी अल्लाह तआ़ला के लिये और उस की मरज़ी के मुताबिक़ गुज़र रही है, हालांकि उस की ज़िन्दगी उस पोशीदा (हुब्बे जाह या'नी अपनी वाह वाह चाहने वाली छुपी) ख़्वाहिश के तह़त गुज़रती है जिस के इदराक (या'नी समझने) से निहायत मज़बूत अ़क़्लें भी आ़जिज़ व बेबस हैं, वोह इबादते ख़ुदावन्दी में अपने आप को मुख़्लिस और ख़ुद को महारिम (हराम कर्दा मुआ़मलात) से इजतिनाब (या'नी परहेज़) करने वाला समझ बैठता है ! हालांकि ऐसा नहीं, बल्कि वोह तो बन्दों के सामने ज़ैबो ज़ीनत और तसन्नोअ़ (या'नी बनावट) के ज़रीए़ ख़ूब लज़्ज़तें पा रहा है, उसे जो इ़ज़्ज़त व शोहरत मिल रही है उस पर बड़ा ख़ुश है। **इस त़रह़ इबादतों और नेक कामों का सवाब ज़ाएअ़ हो जाता है और उस का नाम मुनाफ़िक़ों की फ़ेहरिस्त में लिखा जाता है और वोह नादान येह समझ रहा होता है कि उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब हासिल है।**

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास ऐसा अ़ता या इलाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(7)....महब्बते दुन्या

महब्बते दुन्या की ता'रीफ़ :

"दुन्या की वोह महब्बत जो उख़रवी नुक़्सान का बाइस हो (क़ाबिले मज़म्मत और बुरी है) ।"(1)

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿ اِعْلَمُوْۤا اَنَّمَا الْحَیٰوةُ الدُّنْیَا لَعِبٌ وَّ لَهْوٌ وَّ زِیْنَةٌ وَّ تَفَاخُرٌۢ بَیْنَكُمْ وَ تَكَاثُرٌ فِی الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِؕ كَمَثَلِ غَیْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ یَهِیْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ یَكُوْنُ حُطٰمًاؕ وَ فِی الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِیْدٌۙ وَّ مَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانٌؕ وَ مَا الْحَیٰوةُ الدُّنْیَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝۲۰ ﴾ (پ۲۷، الحدید: ۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"जान लो कि दुन्या की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल कूद और आराइश और तुम्हारा आपस में बड़ाई मारना और माल और अवलाद में एक दूसरे पर ज़ियादती चाहना उस मींह की तरह जिस का उगाया सब्ज़ा किसानों को भाया फिर सूखा कि तू उसे ज़र्द देखे फिर रौंदन हो गया और आख़िरत में सख़्त अ़ज़ाब है और अल्लाह की तरफ़ से बख़्शिश और उस की रिज़ा और दुन्या का जीना तो नहीं मगर धोके का माल ।"*

ह़दीसे मुबारका : दुन्या से महब्बत करने वालों की मज़म्मत :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने खुश्बूदार है : "छे चीजें अ़मल को ज़ाएअ़ कर देती हैं :

(1)......احیاء العلوم، کتاب ذم الدنیا، بیان ذم الدنیا، ج۳، ص۲۴۹۔

www.dawateislami.net

(1) मख़्लूक़ के ड़यूब की टोह में लगे रहना (2) दिल की सख़्ती (3) दुन्या की महब्बत (4) हया की कमी (5) लम्बी उम्मीद और (6) हद से ज़ियादा ज़ुल्म।"(1)

महब्बते दुन्या के बारे में तम्बीह :

दुन्या की वोह महब्बत जो उख़रवी नुक़्सान का बाइस हो शरअ़न मज़्मूम व क़ाबिले मज़म्मत है।

हिकायत : दुन्या से महब्बत का अन्जाम :

हज़रते सय्यिदुना जरीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر हज़रते सय्यिदुना लैस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत करते हैं कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सफ़र पर रवाना हुवे, रास्ते में एक शख़्स मिला, उस ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मुझे भी अपनी बा बरकत सोहबत में रहने की इजाज़त अ़ता फ़रमा दें, मैं भी आप عَلَيْهِ السَّلَام के साथ सफ़र करना चाहता हूं।" आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उसे इजाज़त अ़ता फ़रमा दी और दोनों एक साथ सफ़र करने लगे। रास्ते में एक पथ्थर के क़रीब आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : "आओ हम यहां खाना खा लेते हैं," चुनान्चे, दोनों खाना खाने लगे। आप عَلَيْهِ السَّلَام के पास तीन रोटियां थीं, एक एक रोटी दोनों ने खा ली, और तीसरी रोटी बच गई। आप عَلَيْهِ السَّلَام रोटी को वहीं छोड़ कर नहर पर गए और पानी पिया, फिर जब वापस आए तो देखा कि रोटी ग़ाइब है ! आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उस शख़्स से पूछा : "तीसरी रोटी किस ने ली थी ?" उस ने कहा : "मुझे नहीं मा'लूम।"

(1)......كنزالعمال، كتاب المواعظ، قسم الاقوال، الفصل السادس، ج١٦، ص٣٦، حديث: ٤٤٠١٦۔

www.dawateislami.net

फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : "आओ हम अपने सफ़र पर चलते हैं।" वोह शख़्स उठा और आप عَلَيْهِ السَّلَام के साथ चलने लगा, रास्ते में एक हिरनी अपने दो ख़ूब सूरत बच्चों के साथ खड़ी थी, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने हिरनी के एक बच्चे को अपनी त़रफ़ बुलाया तो वोह आप عَلَيْهِ السَّلَام का हुक्म पाते ही फ़ौरन हाज़िरे ख़िदमत हो गया, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उसे ज़ब्ह़ किया, भूना और दोनों ने उस का गोश्त तनावुल किया। फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उस की हड्डियां एक जगह जम्अ़ कीं और फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से खड़ा हो जा।" यकायक वोह हड्डियां दोबारा हिरनी का बच्चा बन गईं और वोह बच्चा अपनी मां की त़रफ़ रवाना हो गया। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उस शख़्स से फ़रमाया : "ऐ शख़्स ! तुझे उस ज़ात की क़सम ! जिस ने तुझे मेरे हाथों येह मो'जिज़ा दिखाया, तू सच सच बता कि वोह तीसरी रोटी किस ने ली थी ?" वोह शख़्स बोला : "मुझे नहीं मा'लूम।"

आप عَلَيْهِ السَّلَام उस शख़्स को ले कर दोबारा सफ़र पर रवाना हो गए। रास्ते में एक दरया आया, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उस शख़्स का हाथ पकड़ा और उसे ले कर पानी पर चलते हुवे दरया पार कर लिया, फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उस से फ़रमाया : "तुझे उस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस ने तुझे मेरे हाथों येह मो'जिज़ा दिखाया, सच सच बता कि तीसरी रोटी किस ने ली थी ?" उस ने फिर वोही जवाब दिया कि "मुझे नहीं मा'लूम।"

आप عَلَيْهِ السَّلَام उस शख़्स को ले कर आगे बढ़े, रास्ते में एक वीरान सह़रा आ गया। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उस से फ़रमाया : "**बैठ**

www.dawateislami.net

जाओ।" फिर आप ने कुछ रैत जम्अ़ की और फ़रमाया : "ऐ रैत ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से सोना बन जा।" तो वोह रैत फ़ौरन सोने में तब्दील हो गई। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उस के तीन हिस्से किये और फ़रमाया : "एक हिस्सा मेरा, दूसरा तेरा और तीसरा हिस्सा उस के लिये है जिस ने वोह रोटी ली थी।" येह सुन कर वोह शख़्स बोला : "वोह रोटी मैं ने ही छुपाई थी।"

हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस शख़्स से फ़रमाया : "येह सारा सोना तुम ही ले लो।" इतना कहने के बा'द आप عَلَيْهِ السَّلَام उस शख़्स को वहीं छोड़ कर आगे रवाना हो गए। वोह इतना ज़ियादा सोना मिलने पर बहुत ख़ुश हुवा। इतने में वहां दो और शख़्स पहुंचे, जब उन्हों ने देखा कि इस वीराने में अकेला शख़्स है और उस के पास बहुत सा सोना है तो उन्हों ने इरादा किया कि हम उस शख़्स को क़त्ल कर देते हैं और सोना छीन लेते हैं। जब वोह उसे क़त्ल करने के लिये आगे बढ़े तो उस शख़्स ने कहा : "तुम मुझे क़त्ल न करो बल्कि हम इस सोने को बराबर बराबर तक़्सीम कर लेते हैं।" इस पर वोह दोनों राज़ी हो गए। फिर उस शख़्स ने कहा : "ऐसा करते हैं कि हम में से एक शख़्स जा कर क़रीबी बाज़ार से खाना ख़रीद लाए, खाना खाने के बा'द हम येह सोना बाहम तक़्सीम कर लेंगे।" चुनान्चे, उन में से एक शख़्स बाज़ार गया जब उस ने खाना ख़रीदा तो उस के दिल में येह शैतानी ख़याल आया कि मैं इस खाने में ज़हर मिला देता हूं जैसे ही वोह दोनों इसे खाएंगे तो मर जाएंगे और सारा सोना मैं ले लूंगा, चुनान्चे, उस ने खाने में ज़हर

www.dawateislami.net

मिला दिया और अपने साथियों की त़रफ़ चल दिया। वहां उन दोनों की निय्यतों में भी फ़ुतूर आ गया और उन्हों ने बाहम मश्वरा किया कि जैसे ही हमारा तीसरा साथी खाना ले कर आएगा हम उसे क़त्ल कर देंगे और सोना हम दोनों आपस में बांट लेंगे। चुनान्चे, जैसे ही वोह खाना ले कर उन के पास पहुंचा उन दोनों ने मिल कर उसे क़त्ल कर दिया और बड़े मज़े से ज़हर मिला खाना खाने लगे। कुछ ही देर बा'द ज़हर के असर से वोह दोनों भी वहीं ढेर हो गए और सोना वहीं पड़ा रह गया। कुछ अ़र्से बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام दोबारा वहीं से गुज़रे तो देखा कि सोना वहीं मौजूद है और वहां तीन लाशें पड़ी हैं। आप عَلَیْہِ السَّلَام ने येह देख कर इरशाद फ़रमाया : "येह दुन्या एक धोका है लिहाज़ा इस से बचो।"(1) (या'नी जो इस के लालच में फंसा वोह हलाक हो गया।)

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की मायानाज़ तस्नीफ़ "**नेकी की दा'वत**" (हि़स्सा अव्वल) सफ़्ह़ा **260** से दुन्या व हुब्बे दुन्या से मुतअ़ल्लिक़ मुफ़ीद मा'लूमात पेशे ख़िदमत हैं :

दुन्या का मा'ना :

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ **868** सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**इस्लाहे़ आ'माल**" (जिल्द अव्वल) सफ़्ह़ा **128** ता **129** पर है : "दुन्या का लुग़वी मा'ना है : "**क़रीब**" और दुन्या को दुन्या इस लिये कहते हैं कि येह आख़िरत की निस्बत इन्सान के ज़ियादा क़रीब है या इस वजह से कि येह अपनी ख़्वाहिशात व लज़्ज़ात के सबब दिल के ज़ियादा क़रीब है।"

(1).....उ़यूनुल हि़कायात, जि. 1, स. 179।

www.dawateislami.net

दुन्या क्या है ?

हज़रते सय्यिदुना अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बुख़ारी शरीफ़ की शर्ह "**उम्दतुल क़ारी**" में फ़रमाते हैं : "दारे आख़िरत से पहले तमाम मख़्लूक़ दुन्या है।"(1) पस इस ए'तिबार से सोना चांदी और इन से ख़रीदी जाने वाली तमाम ज़रूरी व ग़ैर ज़रूरी अश्या दुन्या में दाख़िल हैं।(2)

कौन सी दुन्या अच्छी, कौन सी क़ाबिले मज़म्मत ?

दुन्यावी अश्या की तीन क़िस्में हैं : (1) वोह दुन्यावी अश्या जो आख़िरत में साथ देती हैं और इन का नफ़्अ़ मौत के बा'द भी मिलता है, ऐसी चीज़ें सिर्फ़ दो हैं : इल्म और अ़मल, अ़मल से मुराद है, इख़्लास के साथ **अल्लाह** तआला की इबादत करना और दुन्या की येह क़िस्म महमूद (या'नी बहुत उ़म्दा) है (2) वोह चीज़ें जिन का फ़ाइदा सिर्फ़ दुन्या तक ही महदूद रहता है आख़िरत में इन का कोई फल नहीं मिलता जैसे गुनाहों से लज़्ज़त हासिल करना, जाइज़ चीज़ों से ज़रूरत से ज़ियादा फ़ाइदा उठाना मसलन ज़मीन, जाएदाद, सोना चांदी, उ़म्दा कपड़े और अच्छे अच्छे खाने खाना और येह दुन्या की मज़मूम (या'नी क़ाबिले मज़म्मत) क़िस्म में शामिल हैं। (3) वोह अश्या जो नेकियों पर मददगार हों जैसे ज़रूरी ग़िज़ा, कपड़े वग़ैरा। येह क़िस्म भी महमूद (अच्छी) है लेकिन अगर महज़ दुन्या का फ़ौरी फ़ाइदा और लज़्ज़त मक़्सूद हो तो अब येह दुन्या मज़मूम (क़ाबिले मज़म्मत) कहलाएगी।(3)

---

1 ......عمدة القاری، کتاب بدء الوحی، باب کیف کان۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۵۲۔

2 ......الحدیقة الندیة، ان الدنیا فانیة، ج ۱، ص ۱۷۔

3 ......احیاء العلوم، کتاب ذم الدنیا، بیان حقیقة الدنیا۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۲۷۰۔ ۲۷۱ ملخصا۔

www.dawateislami.net

दुन्या के नज़ारों से भला क्या हो सरोकार
उश्शाक़ को बस इश्क़ है गुलज़ारे नबी से

(वसाइले बख़्शिश, स. 202)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दुन्या का कौन सा काम अल्लाह तआला के लिये है और कौन सा नहीं ?

दुन्यावी कामों की तीन अक़्साम हैं : (1) बा'ज़ काम वोह हैं जिन के बारे में येह तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता कि येह अल्लाह तआला के लिये किये गए हैं मसलन नाजाइज़ व ह़राम काम । (2) बा'ज़ वोह हैं जो अल्लाह तआला के लिये भी हो सकते हैं और उस के ग़ैर के लिये भी मसलन ग़ौरो तफ़क्कुर करना और ख़्वाहिशात से रुकना क्यूंकि अगर लोगों में अपनी मक़्बूलिय्यत बढ़ाने के लिये और बुज़ुर्गी के हुसूल की ख़ातिर ग़ौरो फ़िक्र किया या ख़्वाहिशात को सिर्फ़ इस लिये छोड़ा कि माल की बचत हो या सिह्हत अच्छी रहे तो अब येह काम रिज़ाए इलाही के लिये न होंगे । (3) बा'ज़ काम वोह हैं जो बज़ाहिर नफ़्स के लिये हों मगर ह़क़ीक़त में अल्लाह तआला की रिज़ा की निय्यत से किये गए हों जैसे गिज़ा खाना, निकाह़ करना वग़ैरा ।[1]

ताजे शाही उस के आगे हैच है
मुस्त़फ़ा की जिस को उल्फ़त मिल गई

(वसाइले बख़्शिश, स. 209)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 ......احیاء العلوم، کتاب ذم الدنیا، بیان حقیقۃ الدنیا۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۲۷۳۔

www.dawateislami.net

दुन्यादार की ता'रीफ़ :

"जब बन्दा आख़िरत की बेहतरी की ग़रज़ से दुन्या में से कुछ लेगा तो उसे दुन्यादार नहीं कहेंगे बल्कि उस के ह़क़ में दुन्या आख़िरत की खेती होगी और अगर ज़ाती ख़्वाहिश और हुसूले लज़्ज़त के तौ़र पर येह चीज़ें ह़ासिल करता है तो वोह दुन्यादार है।"(1)

दुन्यावी अश्या की लज़्ज़तों की ह़ैरत अंगेज़ ह़क़ीक़त :

दुन्या में ह़क़ीक़ी लज़्ज़त किसी शै में नहीं, अलबत्ता लोग तकालीफ़ का ख़ातिमा करने वाली चीज़ों को लज़्ज़त का नाम देते हैं मसलन खाने में इस लिये लज़्ज़त है कि वोह भूक की तक्लीफ़ को ख़त्म करता है येही वजह है कि जब भूक ख़त्म हो जाए तो खाने में लज़्ज़त मह़सूस नहीं होती। इसी त़रह़ पानी इस लिये लज़ीज़ लगता है कि प्यास को ख़त्म करता है, जब प्यास बुझ गई तो लज़्ज़त भी जाती रही। ह़क़ीक़ी लज़्ज़तें तो जन्नत में नसीब होंगी क्यूंकि अहले जन्नत को जब कोई तक्लीफ़ ही न होगी तो इस से छुटकारा देने वाली अश्या का वुजूद कहां से होगा? लिहाज़ा उन की लज़्ज़ात ह़क़ीक़ी होंगी मसलन उन के खाने पीने की लज़्ज़तें अस्ली होंगी, मह़ज़ भूक और प्यास ख़त्म करने के लिये न होंगी।(2)

इब्लीस की बेटी :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली ख़व्वास رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ फ़रमाते हैं : "दुन्या इब्लीसे लई़न (या'नी ला'नती शैता़न) की बेटी है और इस (या'नी दुन्या) से मह़ब्बत करने वाला हर शख़्स उस की बेटी का

---

1 ......احیاء العلوم، کتاب ذم الدنیا، بیان حقیقۃ الدنیا۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۲۷۲۔

2 ......الحدیقۃ الندیۃ، ان الدنیا فانیۃ، ج ۱، ص ۹ ۱ ملخصا۔

www.dawateislami.net

ख़ावन्द है, इब्लीस अपनी बेटी की वजह से उस दुन्यादार शख़्स के पास आता जाता रहता है, लिहाज़ा मेरे भाई ! अगर तुम शैतान से महफ़ूज़ रहना चाहते हो तो उस की बेटी (या'नी दुन्या) से रिश्ता क़ाइम न करो ।"(1)

नीली आंखों वाली बद सूरत बुढ़िया :

हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه कहते हैं, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : बरोज़े क़ियामत एक नीली आंखों वाली निहायत बद सूरत बुढ़िया जिस के दांत आगे की त़रफ़ निकले होंगे लोगों के सामने ज़ाहिर होगी और उन से पूछा जाएगा : "इस को जानते हो ?" लोग कहेंगे : "हम इस की पहचान से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहते हैं ।" कहा जाएगा : "येह वोही दुन्या है जिस पर तुम फ़ख़्र किया करते थे, इसी की वजह से क़त़्ए़ रेह़्मी करते या'नी रिश्तेदारियां काटते थे, इसी के सबब एक दूसरे से ह़सद और दुश्मनी करते थे ।" फिर उस (बुढ़िया नुमा दुन्या) को जहन्नम में डाला जाएगा तो पुकारेगी : "ऐ मेरे परवर दगार ! मेरी पैरवी करने वाले और मेरी जमाअ़त कहां है ?" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "उन को भी इस के साथ कर दो ।"(2)

दौलते दुन्या से बे रग़बत मुझे कर दीजिये
मेरी ह़ाजत से मुझे ज़ाइद न करना मालदार

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ......الحدیقة الندیة، ان الدنیافانیة، ج ۱، ص ۹ ۱ ۔

2 ......موسوعة ابن ابی الدنیا، ذم الدنیا، ج ۵، ص ۷۲، رقم: ۱۲۳ ۔

www.dawateislami.net

दुन्या मीठी सर सब्ज़ है :

रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "दुन्या मीठी सर सब्ज़ है, जो इस में हलाल तरीक़े से माल कमाता है और सहीह़ हुक़ूक़ में ख़र्च करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को सवाब अ़ता फ़रमाएगा और उस को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और जो इस में ह़राम त़रीक़े से माल कमाता है और इस को ग़ैरे ह़क़ में ख़र्च करता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को दारुल हवान (या'नी ज़िल्लत के घर) में दाख़िल फ़रमाएगा।"(1)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त "**फ़ैज़ुल क़दीर**" में तह़रीर फ़रमाते हैं : "मा'लूम हुवा कि दुन्या फ़ी नफ़्सिही (या'नी दर अस्ल-फ़िल ह़क़ीक़त) मज़्मूम नहीं है चूंकि येह आख़िरत की खेती है, इस लिये जो शख़्स शरीअ़त की इजाज़त से दुन्या की कोई चीज़ ह़ासिल करे तो येह चीज़ आख़िरत में उस की मदद करती है।"(2)

हुस्ने गुलशन में सरा सर है फ़रेब ऐ दोस्तो !
देखना है हुस्न तो देखो अ़रब के रैगज़ार

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दुन्या के तीन बेहतरीन काम :

सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "दुन्या और जो कुछ इस में है मलऊ़न (या'नी ला'नती)

---

1 ......شعب الایمان، باب فی قبض الید۔۔۔الخ، ج۴، ص۳۹۶، حدیث:۵۵۲۷۔

2 ......فیض القدیر، حرف الدال، ج۳، ص۷۲۸، تحت الحدیث:۴۲۷۳۔

www.dawateislami.net

है सिवाए नेकी का हुक्म देने या बुराई से मन्अ करने या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने के।"[1]

हज़रते अल्लामा अब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى इस हदीस के तहत "**फ़ैज़ुल क़दीर**" में तहरीर फ़रमाते हैं : "बिला शुबा येह काम (या'नी नेकी का हुक्म करना, बुराई से मन्अ करना और ज़िक्रुल्लाह) अगर्चे दुन्या ही में किये जाते हैं लेकिन येह दुन्यावी काम नहीं हैं बल्कि येह तो आ'माले आख़िरत हैं जो कि जन्नत की ने'मतों तक पहुंचने का वसीला हैं, लिहाज़ा हर वोह काम जिस से रिज़ाए इलाही मक़्सूद हो वोह इस ला'नत से मुस्तस्ना (या'नी अलग) है।[2]

चार चीज़ों के इलावा दुन्या मलऊन है :

सुल्ताने मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "होशयार रहो, दुन्या ला'नती चीज़ है और जो कुछ दुन्या में है वोह मलऊन है सिवाए **अल्लाह तआला के ज़िक्र** और उस (चीज़) के **जो रब तआला के क़रीब कर दे** और **आलिम** और **तालिबे इल्म** के।"[3]

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : "जो चीज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से ग़ाफ़िल कर दे वोह दुन्या है या जो अल्लाह व रसूल की नाराज़ी का सबब हो वोह दुन्या है। बाल बच्चों की परवरिश, ग़िज़ा, लिबास, घर वग़ैरा

---

1 ......جامع صغیر، ص ۲۶۰، حدیث: ۴۲۸۲۔

2 ......فیض القدیر، حرف الدال، ج ۳، ص ۷۳۵، تحت الحدیث: ۴۲۸۲۔

3 ......ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی ۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۱۴۴، حدیث ۲۳۲۹۔

www.dawateislami.net

(शरीअ़त की नाफ़रमानी से बचते हुवे) ह़ासिल करना सुन्नते अम्बियाए किराम है, येह दुन्या नहीं।''(1)

दुन्या मच्छर के पर से भी बढ़ कर ज़लील है :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या निहायत ज़लीलो ह़क़ीर है इस को अहम समझ बैठना अ़क़्लमन्दी नहीं कि येह तो मच्छर के पर से भी बढ़ कर ज़लील है। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत''** सफ़ह़ा 464 ता 465 पर मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه दुन्या की मज़म्मत के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : ह़दीस में है : ''अगर दुन्या की क़द्र अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक एक मच्छर के पर के बराबर (भी) होती तो (पानी का) एक घूंट (भी) इस में से काफ़िर को न देता।''(2) (दुन्या) ज़लील है (इसी लिये) ज़लीलों को दी गई, जब से इसे बनाया है कभी इस की त़रफ़ नज़र न फ़रमाई। दुन्या, आस्मानो ज़मीन के दरमियान जव्व (या'नी फ़ज़ा) में मुअ़ल्लक़ (या'नी लटकी हुई) है। फ़रयाद व ज़ारी करती (या'नी रोती धोती) है और कहती है : ऐ मेरे रब ! तू मुझ से क्यूं नाराज़ है ? मुद्दतों के बा'द इरशाद होता है : ''चुप ख़बीसा !'' (फिर फ़रमाया) सोना चांदी ख़ुदा के दुश्मन हैं। वोह लोग जो दुन्या में सोने चांदी से मह़ब्बत रखते हैं क़ियामत के दिन पुकारे जाएंगे कहां हैं वोह लोग जो ख़ुदा के दुश्मन से मह़ब्बत रखते थे। अल्लाह तआ़ला दुन्या को अपने मह़बूब (या'नी प्यारे बन्दों) से ऐसा दूर फ़रमाता है जैसे बिला तशबीह बीमार बच्चे को उस से मुज़िर (या'नी

1 ......مرأة المناجیح،ج۷،ص۱۷۔

2 ......ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاءفی...الخ، ج۴، ص۱۴۴، حدیث ۲۳۲۷۔

www.dawateislami.net

नुक़्सान देह) चीज़ों से मां दूर रखती है। (पारह 15 सूरए बनी इस्राईल आयत नम्बर 11 में इरशाद होता है)

﴿ وَ يَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَیْرِ ؕ وَ كَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ۝۱۱ ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"और आदमी बुराई की दुआ़ करता है जैसे भलाई मांगता है और आदमी बड़ा जल्द बाज़ है।"*

आदमी अपने मुंह से बुराई मांगता है जिस त़रह़ कि अपने लिये भलाई मांगता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जानता है कि (जो कुछ वोह मांग रहा है) उस में कितना ज़रर (या'नी नुक़्सान) है (लिहाज़ा) येह (बन्दा) दुआ़ मांगता है और वोह (परवर दगार عَزَّوَجَلَّ बन्दे को नुक़्सान से बचाने के लिये उस की मांगी हुई शै) नहीं देता। (फिर फ़रमाया : पारह 4 सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 196 और 197 में) इरशाद होता है :

﴿ لَا یَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا فِی الْبِلَادِ ؕ۝۱۹۶ مَتَاعٌ قَلِیْلٌ قف
ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَ بِئْسَ الْمِهَادُ ۝۱۹۷ ﴾

तुम को धोके में न डाल दे काफ़िरों का अहले गहले शहरों में फिरना, येह थोड़ी पूंजी है फिर उन का ठिकाना जहन्नम है और बुरा ठिकाना है।"(1)

या रब ! ग़मे ह़बीब में रोना नसीब हो
आंसू न राईगां हों ग़मे रूज़गार में

(वसाइले बख़्शिश, स. 407)

मह़ब्बते दुन्या का इलाज :

दुन्या की मह़ब्बत दिल से कम करने का **इलाज** येह है कि दुन्या की इन ह़क़ीक़तों को पेशे नज़र रखे कि (1) दुन्या **साए** कि त़रह़ है और साए से धोका खाना **ह़माक़त** है। (2) दुन्या **ख़्वाब** की त़रह़

1 ......मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 464 ता 465।

www.dawateislami.net

है और ख़्वाबों से महब्बत करना **दानिशमन्दी** नहीं। (3) दुन्या ज़ाहिरी ज़ैबो ज़ीनत से आरास्ता बद सूरत **बुढ्ढी औरत** की त़रह़ है लिहाज़ा दुन्या की इस **अस्लिय्यत** को जान लेने के बा'द दुन्या का पीछा करने वाले को **नदामत व पशेमानी** ही होती है। येह ख़राबी पेशे नज़र रखते हुवे कभी भी दुन्या की **ज़ाहिरी ख़ूब सूरती** को दिल में जगह न दे। (4) दुन्या में इन्सान की ह़ैसिय्यत उस सुवार की त़रह़ है जो दरख़्त की छाऊं में कुछ देर आराम करने के बा'द उसे वहीं छोड़ कर अपना सफ़र शुरूअ़ कर देता है। दुन्या को इस नज़र से देखने वाले का दिल कभी भी दुन्या की महब्बत में गिरिफ़्तार नहीं होता। (5) दुन्या सांप की त़रह़ है जो छूने में नर्म व मुलाइम है लेकिन इस का ज़हर जान लेवा होता है। क्या **आ़रिज़ी नफ़्अ़** के लिये **दाइमी तक्लीफ़** को अपना लेना दानाई है? (6) जिस त़रह़ पानी में चलने वाले के क़दम सूखे नहीं रह सकते इसी त़रह़ दुन्या से उल्फ़त रखने वाला मुसीबत व आफ़त से छुटकारा नहीं पा सकता और आख़िरे कार **दुन्यवी महब्बत की दीमक** दिल से इबादत की **लज़्ज़त व मिठास** को आहिस्ता आहिस्ता ख़त्म कर देती है। (7) त़ालिबे दुन्या की मिसाल समन्दर के पानी से प्यास बुझाने वाले जैसी है, जिस क़दर वोह पानी पीता है उतना ही प्यास में इज़ाफ़ा हो जाता है। (8) जिस त़रह़ उ़म्दा और लज़ीज़ ग़िज़ा का अन्जाम **ग़लाज़त और गन्दगी है** इसी त़रह़ खुश नुमा दुन्या का अन्जाम भी **तक्लीफ़ देह मौत** पर ख़त्म होता है। (9) दुन्या लोगों को **धोका** देती है और ईमान **कमज़ोर** करती है। (10) दुन्या में ह़द से ज़ियादा **मश्ग़ूलिय्यत,** आख़िरत से **ग़ाफ़िल** होने का सबब है। (11) दुन्या एक मेहमान ख़ाना है लिहाज़ा इस में पुर सुकून रहने के लिये ख़ुद को मुसाफ़िर

www.dawateislami.net

रखना ज़रूरी है, अगर दुन्या को **मुस्तक़िल ठिकाना** समझ कर इस से दिल लगा बैठे तो जुदाई के वक़्त बहुत ज़ियादा **ग़म और तक्लीफ़** का सामना होता है।(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(8)...तलबे शोहरत

तलबे शोहरत की ता'रीफ़ :

"अपनी शोहरत की कोशिश करना तलबे शोहरत कहलाता है।"(2) (या'नी ऐसे अफ़्आल करना कि मश्हूर हो जाऊं।)

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ لَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِؕ وَ مَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ۝۳۸﴾ (پ۵، النساء: ۳۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"और वोह जो अपने माल लोगों के दिखावे को ख़र्च करते हैं और ईमान नहीं लाते* ***अल्लाह*** *और न क़ियामत पर और जिस का मुसाहिब शैतान हुवा तो कितना बुरा मुसाहिब है।"*

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद **मुहम्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : "बुख़्ल के बा'द सर्फ़े बेजा की बुराई बयान फ़रमाई कि जो लोग महज़ नुमूद व नुमाइश और नाम आवरी (या'नी तलबे शोहरत) के लिये ख़र्च करते हैं और रिज़ाए

1 ......احیاء العلوم، ج۳، ص ۷۵۳ تا ۷۶۶ ماخوذا۔

2 ......مراٰۃ المناجیح، ج۷، ص۲۶ ماخوذا۔

www.dawateislami.net

इलाही इन्हें मक़्सूद नहीं होती जैसे कि मुशरिकीन व मुनाफ़िक़ीन येह भी इन्हीं के हुक्म में हैं जिन का हुक्म ऊपर गुज़र गया।", **"जिस का मुसाहिब शैतान हुवा"** के तहत फ़रमाते हैं : "दुन्या व आख़िरत में, दुन्या में तो इस तरह कि वोह शैतानी काम कर के उस को खुश करता रहा और आख़िरत में इस तरह कि हर काफ़िर एक शैतान के साथ आतशी ज़न्जीर में जकड़ा हुवा होगा।"

हदीसे मुबारका : तालिबे शोहरत के लिये रुस्वाई :

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो शोहरत के लिये अमल करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे रुस्वा करेगा, जो दिखावे के लिये अमल करेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (बरोज़े क़ियामत उस के उयूब) लोगों पर ज़ाहिर फ़रमा देगा।"(1)

तलबे शोहरत का हुक्म :

तलबे शोहरत निहायत ही क़बीह व मज़मूम काम है, तलबे शोहरत बसा अवक़ात कई गुनाहों में मुब्तला होने का सबब बन जाता है लिहाज़ा हर मुसलमान को इस से बचना लाज़िम है। इमाम गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "जाह व मन्सब का मतलब शोहरत और नामवरी है और येह क़ाबिले मज़म्मत है, क़ाबिले ता'रीफ़ सिर्फ़ गुमनामी है, हां येह अलग बात है कि बिग़ैर शोहरत व नामवरी की मशक़्क़त उठाए महज़ दीन फैलाने के सबब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी को मशहूर कर दे तो येह शोहरत व नामवरी क़ाबिले मज़म्मत नहीं।"(2)

---

1 ......بخاری، کتاب الرقاق، باب الریاء والسمعۃ، ج۴، ص۲۴۷، حدیث: ۶۴۹۹۔

2 ......احیاء العلوم، ج۳، ص۸۲۲۔

www.dawateislami.net

शोहरत व नामवरी कब क़ाबिले मज़म्मत नहीं ?

इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى एक सुवाल के जवाब में इरशाद फ़रमाते हैं : "जान लीजिये ! मज़मूम वोह शोहरत है जिस की चाहत की जाए, अलबत्ता जो शोहरत बिग़ैर त़लब के मह़ज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने करम से अ़त़ा फ़रमा दे वोह हरगिज़ मज़मूम नहीं । अलबत्ता कमज़ोर लोगों के लिये शोहरत आज़माइश है । इस को यूं समझिये कि कुछ लोग डूब रहे हों उन में एक ऐसा कमज़ोर शख़्स भी हो जिसे तैरना आता हो, अब उस के लिये बेहतर येह है कि उस का किसी को इ़ल्म न हो वरना वोह सब आ कर उस से चिमट जाएंगे, नतीजतन वोह मज़ीद कमज़ोर हो जाएगा और उन सब के साथ ख़ुद भी हलाक हो जाएगा, जब कि एक क़वी तैराक के लिये बेहतर येह है कि डूबने वाले उस को पहचानें ताकि उस के साथ चिमट जाएं और वोह उन को बचा कर सवाब पाए ।"(1)

ह़िकायत : शोहरत के लिये आ'माल करने की आफ़तें :

ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار इरशाद फ़रमाते हैं कि मेरा एक इस्लामी भाई जो कि मेरा बहुत **मो'तक़िद** था, हर दुख सुख में मुझ से मुलाक़ात करता, मैं उसे इन्तिहाई इ़बादत गुज़ार, तहज्जुद गुज़ार और गिर्या व ज़ारी करने वाला समझता था । मैं ने कुछ दिनों तक उसे न पाया, मा'लूम हुवा कि वोह तो बेह़द कमज़ोर हो गया है । मैं उस के घर के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात लेने के बा'द वहां पहुंच गया और दरवाज़े पर दस्तक दी तो उस की बेटी ने दरवाज़ा खोला, इजाज़त मिलने के बा'द मैं अन्दर दाख़िल हुवा तो देखा कि वोह घर के वस्त़ में बिस्तर पर लैटा हुवा है । चेहरा सियाह,

1 ......احیاء العلوم، ج۳، ص۸۲۹۔

www.dawateislami.net

आंखें नीली और होंट मोटे हो चुके हैं। मैं ने कहा : "ऐ मेरे भाई ! لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ की कसरत करो।" उस ने अपनी आंखें खोलीं और बड़ी मुश्किल से मेरी त़रफ़ देखा, फिर उस पर ग़शी त़ारी हो गई। मैं ने दूसरी मरतबा येही तल्क़ीन की तो उस ने मुझे ब मुश्किल आंखें खोल कर देखा लेकिन दोबारा उस पर ग़शी त़ारी हो गई। जब मैं ने तीसरी मरतबा कलिमा पढ़ने की तल्क़ीन की तो उस ने अपनी आंखे खोलीं और कहने लगा : "ऐ मेरे भाई मन्सूर ! इस कलिमे के और मेरे दरमियान रुकावट खड़ी कर दी गई है।" मैं ने कहा : "لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم कहां गई तुम्हारी वोह नमाज़ें, रोज़े, तहज्जुद और रातों का क़ियाम ?"

तो वोह ह़सरत से कहने लगा : "ऐ मेरे भाई ! मेरे येह सब आ'माल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये नहीं थे, बल्कि मैं येह तमाम इ़बादतें शोहरत के लिये किया करता था ताकि लोग मुझे नमाज़ी, रोज़ेदार और तहज्जुद गुज़ार कहें और मैं लोगों को दिखाने के लिये ज़िक्रे इलाही किया करता था। मैं लोगों की नज़र में बहुत नेक था लेकिन जब मैं तन्हाई में होता तो दरवाज़ा बन्द कर लेता, बरहना हो कर शराब पीता और नाफ़रमानियों से अपने रब عَزَّوَجَلَّ का मुक़ाबला करता। एक अ़र्से तक मैं इसी त़रह़ करता रहा फिर ऐसा बीमार हुवा कि बचने की उम्मीद न रही, मैं ने अपनी बेटी से कहा कि क़ुरआने पाक ले कर आओ, उस ने ऐसा ही किया, मैं मुस्ह़फ़ शरीफ़ के एक एक ह़र्फ़ को पढ़ता रहा यहां तक कि जब सूरए यासीन तक पहुंचा तो मुस्ह़फ़ शरीफ़ को बुलन्द कर के बारगाहे इलाही में यूं अ़र्ज़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस क़ुरआने अ़ज़ीम के सदक़े मुझे

www.dawateislami.net

शिफ़ा अ़ता फ़रमा, मैं आयिन्दा गुनाह नहीं करूंगा।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से बीमारी को दूर कर दिया। जब मैं शिफ़ायाब हुवा, तो दोबारा लह्व लअ़ब और लज़्ज़ात व ख़्वाहिशात में पड़ गया। शैत़ाने लईन ने मुझे वोह अ़हद भुला दिया जो मेरे रब عَزَّوَجَلَّ और मेरे दरमियान हुवा था, अ़र्सए दराज़ तक गुनाह करता रहा, फिर अचानक उसी बीमारी में मुब्तला हो गया जिस में मैं ने मौत के साए देखे तो घर वालों से कहा कि मुझे मेरी आ़दत के मुत़ाबिक़ वस्त़े मकान में निकाल दें। मैं ने मुस्ह़फ़ शरीफ़ मंगवा कर पढ़ा और बुलन्द कर के अ़र्ज़ की :

"या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस की अ़ज़मत का वासित़ा जो इस मुस्ह़फ़ शरीफ़ में है, मुझे इस मरज़ से नजात अ़ता फ़रमा।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी दुआ़ क़बूल फ़रमाई और दोबारा इस बीमारी से मुझे शिफ़ा अ़ता फ़रमा दी। लेकिन मैं फिर इसी त़रह़ नफ़्सानी ख़्वाहिशात और नाफ़रमानियों में पड़ गया यहां तक कि अब दोबारा इसी मरज़ में मुब्तला यहां पड़ा हूं, मैं ने अपने घर वालों को हुक्म दिया कि इस दफ़्आ़ भी मुझे वस्त़े मकान में निकाल दो जैसा कि आप मुझे देख रहे हैं। फिर जब मैं मुस्ह़फ़ शरीफ़ मंगवा कर पढ़ने लगा तो एक ह़र्फ़ भी न पढ़ सका। मैं समझ गया कि अल्लाह तबारक व तआ़ला मुझ पर सख़्त नाराज़ है, मैं ने अपना सर आस्मान की त़रफ़ उठा कर अ़र्ज़ की :

"या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस मुस्ह़फ़ शरीफ़ की अ़ज़मत का सदक़ा ! मुझ से इस मरज़ को ज़ाइल फ़रमा दे।" तो मैं ने हातिफ़े ग़ैबी से येह अश्आ़र सुने। अश्आ़र का मफ़्हूम येह है : "जब तू

www.dawateislami.net

बीमारी में मुब्तला होता है तो अपने गुनाहों से तौबा कर लेता है और जब तन्दुरुस्त होता है तो फिर गुनाह करने लग जाता है। तू जब तक तक्लीफ़ में मुब्तला रहता है तो रोता रहता है और जब कुव्वत हासिल कर लेता है तो बुरे काम करने लगता है। कितनी ही मुसीबतों और आज़माइशों में तू मुब्तला हुवा मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे उन सब से नजात अता फ़रमाई। उस के मन्अ करने और रोकने के बा वुजूद तू गुनाहों में मुस्तग्रक़ रहा और अर्सए दराज़ तक उस से ग़ाफ़िल रहा। क्या तुझे मौत का ख़ौफ़ न था ? तू अक़्ल और समझ रखने के बा वुजूद गुनाहों पर डटा रहा। और तुझ पर जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्लो करम था, तू ने उसे भुला दिया और कभी भी तुझ पर न कपकपी तारी हुई, न ही ख़ौफ़ लाहिक़ हुवा। कितनी मरतबा तू ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ अहद किया लेकिन फिर तोड़ दिया, बल्कि हर भली और अच्छी बात को तू भूल चुका है। इस जहाने फ़ानी से मुन्तक़िल होने से पहले पहले जान ले कि तेरा ठिकाना क़ब्र है, जो हर लम्हा तुझे मौत की आमद की ख़बर सुना रही है।" हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अम्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उस से इस हाल में जुदा हुवा कि मेरी आंखों से आंसू बह रहे थे और अभी घर के दरवाज़े तक भी न पहुंचा था कि मुझे बताया गया कि वोह शख़्स इन्तिक़ाल कर चुका है।"

हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हुस्ने ख़ातिमा की दुआ करते हैं क्यूंकि बहुत से रोज़ेदार और रातों को क़ियाम करने वाले बुरे ख़ातिमे से दोचार हो गए।(1)

---

(1) الروض الفائق، المجلس الثانی، ص ۱۷ ۔

www.dawateislami.net

त़लबे शोहरत के छे अस्बाब व इलाज :

(1).....बा'ज़ अवक़ात अपनी नेक नामी की फ़िक्र दामनगीर होती है इसी लिये बन्दा अपनी शोहरत का ख़्वाहिश मन्द होता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा बुज़ुर्गाने दीन के ऐसे वाक़िआ़त अपने पेशे नज़र रखे कि जिन में शोहरत से बचने के लिये **"नेकियां छुपाओ"** के मदनी नुस्ख़े पर अ़मल की तरग़ीब हो।

(2).....बा'ज़ अवक़ात लोगों की ता'रीफ़ें नफ़्स की तस्कीन का सबब बनती हैं इसी लिये बन्दा ज़ियादा से ज़ियादा **शोहरत** ह़ासिल कर के अपने नफ़्स को आ़रिज़ी सुकून देने की कोशिश करता है। इस का **इलाज** येह है कि ऐसी सूरत में बन्दा अपनी ख़ामियों पर नज़र रखे और ऐसे मौक़अ़ पर अपने ज़मीर से येह सुवाल करे : "कहीं इन **मसनूई ता'रीफ़ात** की आग मेरे टूटे फूटे **आ'माल** को जला कर राख तो नहीं कर रही ?"

(3).....बा'ज़ अवक़ात **ख़ुशामद पसन्द त़बीअ़त** भी शोहरत की त़लब करती है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा ख़ुशामद करने वालों से दूर रहे और ऐसे **मुख़्लिस** अफ़राद की सोहबत इख़्तियार करे जो हुस्ने निय्यत के साथ उ़यूब की निशान देही करें।

(4).....बा'ज़ अवक़ात **नाजाइज़ मफ़ादात** का हुसूल भी **त़लबे शोहरत** का सबब बनता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा कामयाबी के हुसूल के लिये **ख़ुफ़्या और चोर दरवाज़े** तलाश न करे बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात पर तवक्कुल करे और अपनी मह़नत से कामयाबी ह़ासिल करने की कोशिश करे।

(5).....बा'ज़ अवक़ात अपनी **ख़ामियों को छुपाने** के लिये भी **त़लबे शोहरत** का त़रीक़ा अपनाया जाता है। इस का **इलाज** येह

www.dawateislami.net

है कि बन्दा येह ज़ेहन बनाए : "अगर मैं अपनी ख़ामियों को ख़ूबियों में बदलने की इतनी कोशिश करूं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में भी सुर्ख़रूई हासिल होगी और मेरी आख़िरत भी बेहतर होगी।"

(6).....बा'ज़ अवक़ात लोगों को बा आसानी **धोका** देने और लोगों की आंखों में धूल झोंकने के लिये **तलबे शोहरत** जैसा हर्बा इस्ति'माल किया जाता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपने दिल में मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा पैदा करे और इस वक़्ती नफ़्अ़ के हुसूल के लिये उख़रवी वबाल को हमेशा अपने पेशे नज़र रखे।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(9)..ता'ज़ीमे उमरा

ता'ज़ीमे उमरा की ता'रीफ़ :

ता'ज़ीमे उमरा या'नी हुक्मरानों और दौलत मन्दों की ता'ज़ीम करना। अमीर व कबीर लोगों की वोह ता'ज़ीम जो महज़ उन की दौलत व इमारत की वजह से हो **ता'ज़ीमे उमरा** कहलाती है जो क़ाबिले मज़म्मत है।

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿۲۸﴾ ﴾ (پ۱۵، الکھف: ۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"और अपनी जान उन से मानूस रखो जो सुब्हो शाम अपने रब को पुकारते हैं उस की रिज़ा चाहते और तुम्हारी*

www.dawateislami.net

आंखें उन्हें छोड़ कर और पर न पड़ें क्या तुम दुन्या की ज़िन्दगी का सिंगार चाहोगे ? और उस का कहा न मानो जिस का दिल हम ने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया और वोह अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला और उस का काम ह़द से गुज़र गया।"

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان "**नूरुल इरफ़ान**" में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "इस में क़ियामत तक के मुसलमानों को हिदायत है कि ग़ाफ़िलों, मुतकब्बिरों, रियाकारों, मालदारों की न माना करें, मुख़्लिस सालेह़ ग़ुरबा व मसाकीन मुसलमानों की इत़ाअ़त किया करें। इन मालदारों की बात मानना दुन्या व दीन बरबाद कर देता है। इसी लिये अकसर अम्बिया औलिया ग़ुरबा में हुवे।"(1)

ह़दीसे मुबारका : जहन्नम की ख़त़रनाक वादी से पनाह :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**हुब्बुल हुज़्न** से पनाह मांगो।" पूछा गया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **हुब्बुल हुज़्न** क्या है ?" फ़रमाया : "येह जहन्नम की एक वादी है जिस से खुद जहन्नम भी दिन में चार सो मरतबा पनाह मांगता है।" पूछा गया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस में कौन लोग दाख़िल होंगे ?" फ़रमाया : "इस में रियाकार क़ुर्रा (अहले इल्म) को डाला जाएगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां बहुत मबग़ूज़ (क़ाबिले नफ़रत) क़ुर्रा

1 ......نور العرفان، پ۱۵، الکھف، تحت الآیۃ:۲۸۔

www.dawateislami.net

(अहले इल्म) वोह हैं जो अमीर लोगों से (उन की अमीरी और तलबे माल के लिये) मुलाक़ात करते हैं।" [(1)]

ता'ज़ीमे उमरा के बारे में तम्बीह :

अमीर लोगों के मालो दौलत और उन की इमारत की वजह से उन की ता'ज़ीम करना निहायत ही मज़मूम व क़बीह़ काम है, हर मुसलमान को इस बुरे फ़े'ल से बचना लाज़िम है।

ह़िकायत : दुन्यादार की दा'वत कैसे क़बूल करूं ?

ख़लीफ़ए ह़ुज्जतुल इस्लाम मुह़द्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **सरदार अह़मद** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد उमरा से हमेशा दूर रहा करते थे, उमरा के दरवाज़ों पर जाना, उन की ता'ज़ीम करना, उन के आस्तानों के चक्कर लगाना आप के नज़दीक इन्तिहाई मा'यूब था। नीज़ उमरा की दा'वत क़बूल करने से भी ह़त्तल इम्कान इजतिनाब किया करते थे। चुनान्चे, 1375 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 1956 ईसवी में जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हज के लिये तशरीफ़ ले गए तो एक मौक़अ़ पर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में आप ने क़ुरआनो ह़दीस के दलाइल से मुज़य्यन इल्मी बयान फ़रमाया। उमूरे शरइय्या पर मा'मूर एक अमीर व कबीर शख़्स ने जब येह इल्मी बयान सुना तो वोह भी आप के इल्मी कमालात से बेह़द मुतअस्सिर हुवा। उस ने ए'ज़ाज़े इल्म की ख़ातिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की दा'वत करना चाही और एक मुअ़ल्लिम के ज़रीए आप को दा'वत नामा, आने जाने के लिये अपनी कार और दीगर गिरां क़दर तह़ाइफ़ की पेशकश पर मुश्तमिल पैग़ाम भेजा। मुह़द्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना

---

(1) ......ابن ماجه، كتاب السنة، باب الانتفاع بالعلم والعمل به، ج ١، ص ١٦٦، حديث: ٢٥٥۔
مرقاة، كتاب العلم، الفصل الثالث، ج ١، ص ٥٣٠، تحت الحديث: ٢٧٥۔

www.dawateislami.net

सरदार अह़मद चिश्ती क़ादिरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ने येह कह कर उस की दा'वत मुस्तरद कर दी कि : "मैं ह़रमैने त़य्यिबैन में अल्लाह व रसूल का मेहमान हूं, किसी दुन्यादार या अमीर की दा'वत कैसे क़बूल कर लूं ?"(1)

ता'ज़ीमे उमरा के चार अस्बाब और इन का इलाज :

(1).....**ता'ज़ीमे उमरा** का पहला और सब से बड़ा सबब **मालो दौलत की ह़िर्स** है कि उ़मूमन बन्दा अमीर लोगों की ता'ज़ीम उन के माल व अस्बाब को ह़ासिल करने के लिये करता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा मालो दौलत की ग़ैर ज़रूरी मह़ब्बत की तबाहकारियों पर ग़ौर करे कि इस से बन्दे का सुकून तबाहो बरबाद हो जाता है, नीज़ नेकियों से भी दूरी हो जाती है, बसा अवक़ात बन्दा गुनाहों के दलदल में जा फंसता है, मालो दौलत की मह़ब्बत बसा अवक़ात तकब्बुर और ह़सद जैसे मूज़ी मरज़ में मुब्तला होने का सबब भी बन जाती है। माल को फ़ितना फ़रमाया गया है, मालो दौलत **हुक़ूक़ुल्लाह** और **हुक़ूक़ुल इबाद** से ग़फ़्लत का बहुत बड़ा सबब है जो दुन्या व आख़िरत की तबाही व बरबादी की त़रफ़ ले जाने वाली है।

(2).....**ता'ज़ीमे उमरा का** दूसरा सबब **हुब्बे जाह** है कि बन्दा अमीर लोगों की ता'ज़ीम व तकरीम इस लिये करता है कि उन से इसे कोई मन्सब या मर्तबा वग़ैरा मिल जाए। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा हुब्बे जाह की तबाह कारियों पर ग़ौर करे कि जाह व मन्सब की चाहत व ख़्वाहिश अच्छी नहीं बल्कि येह तो एक बहुत बड़ी आज़माइश है। जो बन्दा हुब्बे जाह के मरज़ में मुब्तला हो जाता

1.....तज़्किरए मुह़द्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान, जि. 2, स. 277 बित्तसर्रुफ़।

www.dawateislami.net

है वोह कहीं का नहीं रहता, बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن इस से कोसों दूर भागते थे ।

(3).....**ता'ज़ीमे उमरा** का तीसरा सबब **तलबे शोहरत** है कि उमूमन अमीर लोग मशहूरो मा'रूफ़ होते हैं इस लिये बन्दा उन की ता'ज़ीम व तकरीम बजा लाता है ताकि उन के साथ साथ इसे भी शोहरत मिल जाए । इस का **इलाज** भी येही है कि बन्दा तलबे शोहरत की तबाह कारियों पर ग़ौर करे कि तलबे शोहरत एक मूज़ी मरज़ है, बसा अवक़ात तलबे शोहरत के लिये बन्दा कबीरा गुनाहों का इर्तिकाब कर बैठता है, तलबे शोहरत के सबब बन्दा झूट, ग़ीबत, चुग़ली और वा'दा ख़िलाफ़ी जैसे अमराज़ में भी मुब्तला हो जाता है । अल ग़रज़ तलबे शोहरत एक निहायत ही मज़मूम और क़बीह अम्र है ।

(4).....**ता'ज़ीमे उमरा** का चौथा सबब **शाहाना तर्ज़े ज़िन्दगी का हुसूल** है कि बन्दा ता'ज़ीमे उमरा इस लिये करता है ताकि उन जैसी शाहाना तर्ज़े ज़िन्दगी हासिल कर सके । इस का **इलाज** येह है कि बन्दा क़ारून जैसे दौलत मन्दों, बादशाहों और ऐसे अमीर व कबीर लोगों के अन्जाम पर ग़ौरो फ़िक्र करे जो ज़मीन पर अकड़ कर चलते थे मगर उन का अन्जाम बहुत भयानक हुवा । आह ! आज ऐसे लाखों लोग मनों मिट्टी के नीचे बे सरो सामान दफ़्न हो चुके हैं बल्कि कई लोग तो ईमान की बरबादी के सबब अज़ाबे क़ब्र से दोचार होंगे । बन्दा हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से अपने आप को डराता रहे और ईमान की सलामती की दुआ करता रहे ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(10)..तह्क़ीरे मसाकीन

तह्क़ीरे मसाकीन की ता'रीफ़ :

तह्क़ीरे मसाकीन या'नी ग़रीबों और मिस्कीनों की तह्क़ीर करना। ग़रीबों और मिस्कीनों की वोह तह्क़ीर है जो उन की ग़ुरबत या मिस्कीनी की वजह से हो तह्क़ीरे मसाकीन कहलाती है।

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا یَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ یَّكُوْنُوْا خَیْرًا مِّنْهُمْ وَ لَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰۤى اَنْ یَّكُنَّ خَیْرًا مِّنْهُنَّۚ وَ لَا تَلْمِزُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ لَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِیْمَانِۚ وَ مَنْ لَّمْ یَتُبْ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ۝۱۱﴾ (پ۲۶، الحجرات: ۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"ऐ ईमान वालो न मर्द मर्दों से हंसें अ़जब नहीं कि वोह इन हंसने वालों से बेहतर हों और न औ़रतें औ़रतों से दूर नहीं कि वोह इन हंसने वालियों से बेहतर हों और आपस में त़ा'ना न करो और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो क्या ही बुरा नाम है मुसलमान हो कर फ़ासिक़ कहलाना और जो तौबा न करें तो वोही ज़ालिम हैं।"*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "येह आयत बनी तमीम के ह़क़ में नाज़िल हुई जो ह़ज़रते अ़म्मार व ख़ब्बाब व बिलाल व सुहैब

www.dawateislami.net

व सलमान व सालिम वग़ैरा ग़रीब सहाबा की गुर्बत देख कर इन के साथ तमस्खुर करते थे, उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि मर्द मर्दों से न हंसें या'नी मालदार ग़रीबों की हंसी न बनाएं, न आली नसब ग़ैरे ज़ी नसब की, और न तन्दुरुस्त अपाहज की, न बीना उस की जिस की आंख में ऐब हो।"

हदीसे मुबारका : मुसलमान भाई को हक़ारत से न देखो :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है, न तो वोह इस पर ज़ुल्म करता है न ही इसे रुस्वा करता है और न ही इसे हक़ारत से देखता है। किसी मुसलमान के बुरा होने के लिये सिर्फ़ इतना ही काफ़ी है कि वोह अपने मुसलमान भाई को हक़ारत से देखे।"(1)

तहक़ीरे मसाकीन के बारे में तम्बीह :

फ़क़ीरों व मसाकीन से इन के फ़क़्र व मिस्कीनी के सबब नफ़रत करना या इन्हें हक़ीर जानना निहायत ही मज़मूम व क़बीह, हराम, जहन्नम में ले जाने वाला और रहमान عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब को दा'वत देने वाला काम है, हर मुसलमान को इस बुरे फ़े'ल से बचना लाज़िम है।

हिकायत : ग़रीबों से महब्बत का इन्आम :

हज़रते सय्यिदुना हुसैन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को उन के विसाल के बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

(1) مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، تحریم ظلم المسلم۔۔۔الخ، ص ۱۳۸۶، حدیث: ۲۵۶۴۔

www.dawateislami.net

ने मुझे बख़्श दिया।" मैं ने पूछा : "आप की बख़्शिश आप के ज़ोहदो तक़्वा की वजह से हुई ?" फ़रमाया : "नहीं, बल्कि इस लिये कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना इब्ने सम्माक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की नसीहत को क़बूल किया, फ़क्र या'नी ग़रीबी को इख़्तियार किया और फ़ुक़रा या'नी ग़रीब लोगों से महब्बत की।"(1)

तह़क़ीरे मसाकीन के चार अस्बाब व इलाज :

(1).....**तह़क़ीरे मसाकीन** का पहला सबब **ग़ुरूर व तकब्बुर** है कि बन्दा अपने घमन्ड की वजह से तह़क़ीरे मसाकीन जैसे क़बीह़ फ़े'ल का मुर्तकिब होता है और उसे ग़रीब व मसाकीन लोग कीड़े मकोड़ों की त़रह़ ह़क़ीर लगते हैं। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपने नफ़्स का मुह़ासबा करे और अपना येह मदनी ज़ेह्न बनाए कि येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत है कि उस ने मुख़्तलिफ़ लोगों को मुख़्तलिफ़ अह़वाल अ़ता किये हैं, कोई अमीर व कबीर तो कोई ग़रीब व मिस्कीन। मेरे पास जो भी मालो दौलत है वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता कर्दा है, मेरी इस बुरी आ़दत के सबब अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता मुझे भी ग़ुर्बत व तंगदस्ती की आज़्माइश में मुब्तला कर दिया जाए और दीगर लोग मेरे साथ भी येह रविय्या रखें तो मेरी कैफ़िय्यत क्या होगी ? यक़ीनन येह मेरे नफ़्स पर गिरां गुज़रेगा।"

(2).....**तह़क़ीरे मसाकीन** का दूसरा सबब **ज़ुल्म** है। ग़रीब व मिस्कीन अफ़राद अपनी ग़ुर्बत व मिस्कीनी की वजह से निहायत कमज़ोर होते हैं इसी लिये उन पर **ज़ुल्म** कर के उन की तह़क़ीर की जाती है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा हर मिस्कीन के साथ ज़ुल्म व तशद्दुद से बचते हुवे अच्छा बरताव करे और येह ज़ेह्न में रखे कि

---

1 ......الرسالة القشيرية، ابومحفوظ معروف بن فيروز الكرخي، ص ٢٧ـ

www.dawateislami.net

"मज़्लूम की बद दुआ रद्द नहीं की जाती ।" लिहाज़ा ऐसे अफ़राद को तकालीफ़ दे कर उन की बद दुआएं लेने की बजाए उन की दिलजूई व ख़ैर ख़्वाही कर के उन की दुआएं हासिल करे।

(3).....**तह़क़ीरे मसाकीन** का तीसरा सबब **ग़ुर्बत** है । ग़ुर्बत को ऐब समझ कर मुफ़्लिस और तंगदस्त व मसाकीन अफ़राद को त़न्ज़ और त़ा'नों का निशाना बनाया जाता है बल्कि बसा अवक़ात तो ऐसे लोगों से किसी भी क़िस्म का मुआशरती तअ़ल्लुक़ रखने में भी आ़र मह़सूस की जाती है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपना येह मदनी ज़ेह्न बनाए कि "ग़रीब व मिस्कीन होने में इस बन्दे का तो कोई क़ुसूर नहीं बल्कि येह तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत और उस की जानिब से इस ग़रीब शख़्स के लिये एक आज़्माइश है । लिहाज़ा मैं एक मुसलमान के साथ उस की ग़ुर्बत व मिस्कीनी की वजह से बुरा रविय्या रख कर उस की तकालीफ़ का सबब क्यूं बनूं ?"

(4).....**तह़क़ीरे मसाकीन** का चौथा सबब **त़रह़ त़रह़ की असाइशों का आ़दी होना** है, क्यूंकि बन्दा जब त़रह़ त़रह़ की आसाइशों भरी ज़िन्दगी गुज़ारता है तो उस की नज़र में वोही बेहतर मे'यारे ज़िन्दगी बन जाता है लिहाज़ा जब वोह ग़रीब व मसाकीन और नादार अफ़राद को देखता है तो वोह उसे ह़क़ीर मह़सूस होते हैं। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों के इज़्हार के साथ साथ सादा ज़िन्दगी गुज़ारने की आ़दत बनाए ताकि ग़रीब व मसाकीन ह़ज़रात के त़र्ज़े ज़िन्दगी से भी उस की उन्सिय्यत रहे और वोह उन ह़ज़रात की दिल आज़ारी से बच सके।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(11)..इत्तिबाए शहवात

इत्तिबाए शहवात की ता'रीफ़ :

जाइज़ व नाजाइज़ की परवाह किये बिग़ैर नफ़्स की हर ख़्वाहिश पूरी करने में लग जाना **इत्तिबाए शहवात** कहलाता है।

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿۲۶﴾﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"और ख़्वाहिश के पीछे न जाना कि तुझे अल्लाह की राह से बहका देगी बेशक वोह जो अल्लाह की राह से बहकते हैं उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब है इस पर कि वोह ह़िसाब के दिन को भूल बैठे।"*

एक और मक़ाम पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ﴿۴۰﴾ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِیَ الْمَاْوٰى ﴿۴۱﴾﴾ (پ۳۰، النازعات: ۴۰، ۴۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"और वोह जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका, तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है।"*

www.dawateislami.net

हदीसे मुबारका : हलाकत में डालने वाली चीजें :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तीन चीजें हलाकत में डाल देती हैं : (1) हिर्स व तम्अ में गुम रहना। (2) नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करना। (3) और अपने आप पर फ़ख्र करना।"[1]

इत्तिबाए शहवात के बारे में तम्बीह :

इत्तिबाए ख़्वाहिशात या'नी जाइज़ व नाजाइज़ की परवाह किये बिग़ैर नफ़्स की हर ख़्वाहिश पूरी करने में लग जाना मज़्मूम या'नी क़ाबिले मज़म्मत और हलाकत में डालने वाला काम है लिहाज़ा हर मुसलमान को इस से बचना लाज़िम है।

हिकायत : जाइज़ ख़्वाहिश पूरी करने पर अनोखी सज़ा :

हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र ख़ुल्दी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मन्क़ूल है कि हज़रते सय्यिदुना ख़ैरुन्नस्साज عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق से पूछा गया कि आप "**ख़ैरुन्नस्साज**" के नाम से कैसे मश्हूर हुवे ? क्या नस्साज (या'नी कपड़ा बुनना) आप का पेशा रहा है ? फ़रमाया कि नहीं ! बल्कि इस की वजह येह है कि मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अहद कर रखा था कि कभी भी अपने नफ़्स की ख़्वाहिश पर ताज़ा खजूर नहीं खाऊंगा और काफ़ी अर्से तक मैं अपने अहद पर क़ाइम रहा। एक मरतबा नफ़्स के हाथों मजबूर हो कर मैं ने कुछ खजूरें ख़रीदीं और खाने के लिये बैठ गया, अभी एक ही खजूर खाई थी कि एक शख़्स मेरी तरफ़ कड़ी निगाहों से देखने लगा। फिर वोह मेरे पास आया

---

1 ......معجم اوسط، ج۴، ص ۲۱۲، حدیث ۵۷۵۴ ملتقطاً۔

www.dawateislami.net

और कहा : "ऐ ख़ैर ! तू तो मेरा भागा हुवा ग़ुलाम है।" मैं बहुत हैरान हुवा कि आख़िर येह क्या मुआमला है ! फिर मुझे समझ आ गया कि इस शख़्स का एक ग़ुलाम था जो भाग गया था और उस के शुब्हे में येह मुझे अपना ग़ुलाम ख़याल कर रहा है और हक़ीक़तन मेरी रंगत भी उस के ग़ुलाम जैसी हो गई थी। वोह शख़्स ज़ोर ज़ोर से कह रहा था कि "तू तो मेरा भागा हुवा ग़ुलाम है।"

शोर सुन कर बहुत सारे लोग जम्अ़ हो गए। जैसे ही उन्हों ने मुझे देखा तो बयक ज़बान बोले : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह तो तेरा ग़ुलाम ख़ैर है।" मैं अच्छी त़रह़ समझ गया कि मुझे किस जुर्म की सज़ा मिल रही है। वोह शख़्स मुझे अपना ग़ुलाम समझ कर दुकान पर ले गया। वहां उस के और भी ग़ुलाम मौजूद थे जो कपड़े बुनते थे। मुझे देख कर दूसरे ग़ुलाम कहने लगे : "ऐ बुरे ग़ुलाम ! तू अपने आक़ा से भागता है ? चल ! यहां आ और अपना वोह काम कर जो तू किया करता था।" फिर मालिक ने मुझे हुक्म दिया कि "जाओ और फ़ुलां कपड़ा बुनो।" जैसे ही मैं कपड़ा बुनने लगा तो ऐसा मह़सूस हुवा जैसे मैं बहुत माहिर कारीगर हूं और कई सालों से येह काम कर रहा हूं। चुनान्चे, मैं दूसरे ग़ुलामों के साथ मिल कर काम करने लगा। वहां काम करते हुवे जब कई महीने गुज़र गए तो एक रात मैं ने ख़ूब नवाफ़िल पढ़े और सारी रात इ़बादत में गुज़ारी, फिर सजदे में गिर कर येह दुआ़ की : "ऐ मेरे पाक परवरदगार عَزَّوَجَلَّ मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दे, मैं अब कभी भी अपने अ़हद से न फिरूंगा।" मैं इसी त़रह़ दुआ़ करता रहा। जब सुब्ह़ हुई तो देखा कि मैं अपनी अस्ली सूरत में आ चुका हूं। बा'दे अज़ां मुझे छोड़ दिया गया।

www.dawateislami.net

बस इस वजह से मेरा नाम "**ख़ैरुन्नस्साज** या'नी कपड़े बुनने वाला ख़ैर" पड़ गया।[1]

इत्तिबाए़ शहवात के सात अस्बाब व इलाज :

(1).....**इत्तिबाए़ शहवात** का पहला सबब **जल्द असर क़बूल करने की आ़दत है।** किसी चीज़ की ता'रीफ़ सुन कर या किसी के पास कोई अच्छी चीज़ देख कर बन्दे के दिल में येह ख़्वाहिश पैदा होती है कि येह चीज़ तो मेरे पास भी होनी चाहिये (जैसा कि आज कल मोबाइल, लेपटॉप, आई पेड और गाड़ियों के ह़वाले से इस की मिसालें आ़म हैं) यूं दूसरों की अश्या से मुतअस्सिर हो कर वोह चीज़ ह़ासिल करने के लिये जाइज़ व नाजाइज़ की परवा किये बिग़ैर बन्दा उस के ह़ुसूल में लग जाता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपनी **ज़रूरियात और नाजाइज़ ख़्वाहिशात** में तमीज़ करने की आ़दत डाले, इस ह़वाले से किसी **नेक और मुख़्लिस दोस्त** से मुशावरत कर ले और जाइज़ ख़्वाहिश के ह़ुसूल के लिये जाइज़ ज़राएअ़ इख़्तियार करे।

(2).....**इत्तिबाए़ शहवात** का दूसरा सबब **नफ़्स की शरारतों का इ़ल्म न होना है,** क्यूं के नफ़्स मुख़्तलिफ़ ह़ीले बहानों से नाजाइज़ ख़्वाहिशात की पैरवी करने पर उक्साता है यूं बन्दा नफ़्स के फ़रेब में आ कर नाजाइज़ ख़्वाहिशात के जाल में उलझ कर रह जाता है। इस का **इलाज** येह है कि नफ़्स की हर वोह ख़्वाहिश जो दुन्यवी या उख़रवी नुक़्सान का सबब हो उस की त़रफ़ बिल्कुल तवज्जोह न दे बल्कि अपने नफ़्स पर जब्र करते हुवे इसे ज़रूरियात या फ़क़त़ जाइज़ ख़्वाहिशात तक मह़दूद कर दे।

---

1 ......उ़यूनुल ह़िकायात, जि. 2, स. 46।

www.dawateislami.net

(3).....**इत्तिबाए़ शहवात** का तीसरा सबब **नेक लोगों की सोह़बत से दूरी है,** क्यूंकि बन्दा जब ऐसे लोगों के साथ उठना बैठना रखता है जो इत्तिबाए़ नफ़्स जैसी मोहलिक बीमारी के मरीज़ हों तो उन का असर इस का नफ़्स भी आहिस्ता आहिस्ता क़बूल करने लग जाता है, यूं येह भी इस मरज़ का शिकार हो जाता है, इस का **इलाज** येह है कि बन्दा नेक परहेज़गार लोगों, उ़लमाए किराम, मुफ़्तियाने किराम, बुज़ुर्गाने दीन और ऐसे दीनी लोगों की सोह़बत इख़्तियार करे जो नफ़्स के मक्रो फ़रेब पर वाक़िफ़ हों, इस की जाइज़ व नाजाइज़ ख़्वाहिशात में तमीज़ कर सकते हों कि नेकों की सोह़बत बन्दे को नेक बना देती है।

(4).....**इत्तिबाए़ शहवात** का चौथा सबब **फ़ुज़ूल ख़र्ची** की आ़दत है, जब कोई चीज़ पसन्द आई फ़ौरन ख़रीद ली ख़्वाह उस की ज़रूरत हो या न हो। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा माल ख़र्च करते हुवे अपनी ज़रूरत को पेशे नज़र रखे, बिला ज़रूरत कोई चीज़ न ख़रीदे, मुमकिन हो तो फ़ुज़ूल चीज़ पर ख़र्च की जाने वाली रक़म सदक़ा कर दे।

(5).....**इत्तिबाए़ शहवात** का पांचवां सबब **ला परवाही** है। बा'ज़ अफ़राद को माल की फ़िरावानी और अपनी ला परवाही की वजह से कई क़ाबिले इस्ति'माल चीज़ें ज़ाएअ़ करने का शौक़ होता है और इस अ़मल से उन का नफ़्स सुकून मह़सूस करता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपनी त़बीअ़त में एह़सास पैदा करे ताकि ला परवाही की वजह से किसी भी चीज़ के ज़ाएअ़ होने पर आख़िरत का ख़ौफ़ उस की इस्लाह़ का ज़रीआ़ बन सके।

www.dawateislami.net

(6).....**इत्तिबाए़ शहवात** का छटा सबब **बेजा आसाइशात से भरपूर त़र्ज़े ज़िन्दगी** है। घर में क़ाबिले इस्ति'माल चीज़ (जैसे फ़र्नीचर, गाड़ी, मोबाइल वग़ैरा) होने के बा वुजूद बिला वजह नई चीज़ की तब्दीली की ख़्वाहिश और इस का हुसूल। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा दुन्यादारों के ऐ़शो इ़शरत से भरपूर ज़िन्दगी के बजाए अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के सादा त़र्ज़े ज़िन्दगी पर ग़ौर करे और इस पर अ़मल की कोशिश करे, नीज़ इस बात पर भी ग़ौर करे कि आज दुन्या में मेरे पास जितना माल ज़ियादा होगा कल बरोज़े क़ियामत उस का ह़िसाब भी उतना ही ज़ियादा होगा।

(7).....**इत्तिबाए़ शहवात का सातवां सबब दूसरों के अह़वाल में बेजा ग़ौरो फ़िक्र है।** दूसरों के आ'ला लिबास, शाहाना रहन सहन वग़ैरा में बेजा ग़ौर न सिर्फ़ ह़सद को जनम देता है बल्कि इस से **इत्तिबाए़ शहवात** जैसा मूज़ी मरज़ भी पैदा होता है, फिर ह़राम व ह़लाल की परवाह किये बिग़ैर माल ह़ासिल करने की कोशिश की जाती है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा लोगों के अह़वाल में ग़ौरो फ़िक्र करने से परहेज़ करे, जो कुछ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे अ़त़ा फ़रमाया है उस पर सब्रो शुक्र करे, अपने से अदना हैसिय्यत वाले को देख कर शुक्र अदा करे और बुज़ुर्गाने दीन की सीरत का मुत़ालआ़ कर के उन के मा'मूलाते ज़िन्दगी में ग़ौरो फ़िक्र करे ताकि नेकी और भलाई की जानिब दिल राग़िब हो सके।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(12)....मुदाहनत

मुदाहनत की ता'रीफ़ :

मुदाहनत के लुग़वी मा'ना नर्मी के हैं। नाजाइज़ और गुनाह वाले काम मुलाहज़ा करने के बा'द (इसे रोकने पर क़ादिर होने के बा वुजूद) इसे न रोकना और दीनी मुआ़मले की मदद व नुस्रत में कमज़ोरी व कम हिम्मती का मुज़ाहरा करना मुदाहनत कहलाता है या किसी भी दुन्यवी मफ़ाद की ख़ातिर दीनी मुआ़मले में नर्मी या ख़ामोशी इख़्तियार करना मुदाहनत है।"[1]

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ۝۹﴾ (پ۲۹، القلم: ۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"वोह तो इस आरज़ू में हैं कि किसी त़रह़ तुम नर्मी करो तो वोह भी नर्म पड़ जाएं।"*

एक और मक़ाम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝۷۹﴾ (پ۶، المائدۃ: ۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"जो बुरी बात करते आपस में एक दूसरे को न रोकते ज़रूर बहुत ही बुरे काम करते थे।"*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में

---

[1] ......الحديقة الندية، الخلق التاسع والاربعون ـــ الخ، ج۲، ص۱۵۴ـ

حاشية الصاوی علی الجلالين، پ۱۲، هود، تحت الآية: ۱۱۳، ج۳، ص۹۳۶ـ

www.dawateislami.net

इस आयते मुबारका के तह्त फ़रमाते हैं : "आयत से साबित हुवा कि नह्य मुन्कर या'नी बुराई से लोगों को रोकना वाजिब है और बदी को मन्अ़ करने से बाज़ रहना सख़्त गुनाह है। तिर्मिज़ी की ह़दीस में है कि जब बनी इस्राईल गुनाहों में मुब्तला हुवे तो उन के उ़लमा ने अव्वल तो उन्हें मन्अ़ किया जब वोह बाज़ न आए तो फिर वोह उ़लमा भी उन से मिल गए और खाने पीने, उठने बैठने में उन के साथ शामिल हो गए, उन के इस इस्यान व तअ़द्दी का येह नतीजा हुवा कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते दावूद व ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِمَا السَّلَام की ज़बान से उन पर ला'नत उतारी।"

ह़दीसे मुबारका : मुदाहनत करने वाले की मिसाल :

ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हुदूदुल्लाह में मुदाहनत करने वाला (या'नी ख़िलाफ़े शरअ़ चीज़ देखे और बा वुजूदे कुदरत मन्अ़ न करे उस की) और इन में मुब्तला होने वाले की मिसाल उन लोगों जैसी है जिन्हों ने कश्ती में कुरआ़ अन्दाज़ी की, तो बा'ज़ के ह़िस्से में नीचे वाला ह़िस्सा आया और बा'ज़ के ह़िस्से में ऊपर वाला। पस नीचे वालों को पानी के लिये ऊपर वालों के पास जाना होता था, तो उन्हों ने इसे ज़ह़मत शुमार करते हुवे एक कुलहाड़ी ली और कश्ती के निचले ह़िस्से में एक शख़्स सूराख़ करने लगा, तो ऊपर वाले उस के पास आए और कहा कि तुझे क्या हो गया है? कहा कि तुम्हें मेरी वजह से तक्लीफ़ होती थी और पानी के बिग़ैर गुज़ारा नहीं। अब अगर उन्हों ने उस का

www.dawateislami.net

हाथ पकड़ लिया तो उसे बचा लिया और ख़ुद भी बच जाएंगे और अगर उसे छोड़े रखा तो उसे हलाक करेंगे और अपनी जानों को भी हलाक करेंगे।"(1)

मुदाहनत का हुक्म :

मुदाहनत (या'नी बुराई को देख कर क़ुदरत के बा वुजूद न रोकना या किसी दुन्यवी फ़ाइदे की ख़ातिर दीन में नर्मी या ख़ामोशी इख़्तियार करना) ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।(2)

ह़िकायत : एक आ़लिम बाप का इ़ब्रतनाक अन्जाम :

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دامت بركاتهم العاليه अपनी किताब **"नेकी की दा'वत"** सफ़ह़ा 580 पर एक ह़िकायत नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عليه رحمة الله الغفار फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है कि बनी इस्राईल में एक आ़लिम साह़िब घर में इजतिमाअ़ कर के उस में बयान फ़रमाया करते थे, एक दिन उन के जवान लड़के ने एक ख़ूब सूरत लड़की की त़रफ़ आंख से इशारा किया, जो कि उन आ़लिम साह़िब ने देख लिया और कहा : "ऐ बेटे सब्र कर।" येह कहते ही आ़लिम साह़िब अपने मंच (बैठने की जगह) से मुंह के बल गिर पड़े यहां तक कि उन की हड्डियों के बा'ज़ जोड़ टूट गए, उन की बीवी का ह़म्ल साक़ित़ हो गया और उन के लड़के जंग में मारे गए। अल्लाह عزوجل ने उस वक़्त के नबी عليه الصلوة والسلام को वह़ी फ़रमाई

---

1 ......بخاری، کتاب الشھادات، باب القرعۃ فی المشکلات۔۔۔الخ، ج۲، ص۲۰۸، حدیث:۲۶۸۶۔

2 ......الحدیقۃ الندیۃ، الخلق التاسع والاربعون۔۔۔الخ، ج۲، ص۱۵۵۔

www.dawateislami.net

की फुलां आलिम को ख़बर कर दो कि मैं उस की नस्ल से कभी सिद्दीक़ पैदा नहीं करूंगा, क्या मेरे लिये सिर्फ़ इतना ही नाराज़ होना था कि वोह बेटे को कह दे :"ऐ बेटे सब्र कर।"(1) मत़लब येह कि अपने बेटे पर सख़्ती क्यूं नहीं कि और उसे इस बुरी ह़रकत से अच्छी तरह़ बाज़ क्यूं न रखा ? इस रिवायत में "सिद्दीक़" का ज़िक्र है, औलियाए किराम की सब से अफ़्ज़ल क़िस्म **सिद्दीक़** कहलाती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم सिद्दीक़ थे।(2)

मुदाहनत के तीन अस्बाब व इलाज :

(1).....**मुदाहनत** का पहला सबब **जहालत** है कि बन्दा जब اَمر بِالْمَعْرُوْف या'नी **नेकी की दा'वत देना** और نَهْىٌ عَنِ الْمُنْكَر या'नी **बुराई से मन्अ़ करने** की मुख़्तलिफ़ सूरतों के बारे में इ़ल्म ह़ासिल नहीं करता तो मुदाहनत या'नी बुराई देख कर उसे मन्अ़ करने की त़ाक़त होने के बा वुजूद मन्अ़ न करने जैसे मरज़ में मुब्तला हो जाता है। इस का **इलाज** येही है कि बन्दा उन तमाम सूरतों का इ़ल्म ह़ासिल करे जिन में बुराई देख कर उस को रोकना ज़रूरी है। इस सिलसिले में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायानाज़ तस्नीफ़ "**नेकी की दा'वत**" ह़िस्सा अव्वल का मुत़ालआ़ निहायत मुफ़ीद है।

---

(1)......حلیۃ الاولیاء، مالک بن دینار، ج ۲ ص ۴۲۲، الرقم: ۲۸۲۳۔

(2)......नेकी की दा'वत स. 580।

www.dawateislami.net

(2).....**मुदाहनत** का दूसरा सबब **क़राबत** (रिश्तेदारी) है कि बन्दा जिस शख़्स में बुराई देख रहा है वोह उस का क़रीबी रिश्तेदार है। लिहाज़ा येह रोकने पर क़ादिर होने के बा वुजूद उसे मन्अ़ नहीं करता। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपना मदनी ज़ेहन बनाए कि **शरीअ़त** ने मुझे इस बात का पाबन्द बनाया है कि मैं अपनी ज़ात समेत तमाम क़रीबी रिश्तेदारों को भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी से बचाऊं, क्यूंकि इन रिश्तेदारों के जो मुझ पर हुक़ूक़ हैं इन में से एक हक़ येह भी है कि मैं जब इन्हें किसी बुराई में मुब्तला देखूं और मुझे मा'लूम हो कि मेरे मन्अ़ करने से येह मन्अ़ हो जाएंगे तो इन को ज़रूर मन्अ़ करूं, ब सूरते दीगर हो सकता है कि इन के इस गुनाह में मुझे शरीक समझा जाए और कल बरोज़े क़ियामत मेरी भी पकड़ हो जाए, नीज़ येह भी मदनी ज़ेहन बनाए कि अगर मैं ने इन को इस बुराई से न रोका और कल बरोज़े क़ियामत इन्हीं रिश्तेदारों ने मेरा गिरेबान पकड़ लिया और मेरी शिकायत बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में की तो मेरा क्या बनेगा ? मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मुझ से नाराज़ हो गया तो मैं कहीं का न रहूंगा।

(3).....**मुदाहनत** का तीसरा सबब **दुन्यवी ग़रज़** है कि बन्दा किसी दुन्यवी ग़रज़ की वजह से बुराई से मन्अ़ नहीं करता। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा दुन्यवी अग़राज़ व मक़ासिद को उख़रवी अग़राज़ व मक़ासिद पर तरजीह़ देने के वबाल पर ग़ौर करे कि जो लोग आख़िरत पर दुन्या को तरजीह़ देते हैं वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी को दा'वत देते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी जहन्नम

www.dawateislami.net

में दाखि़ले का सबब है। आखि़रत पर दुन्या को तरजीह़ देना बुरे ख़ातिमे का भी एक सबब है, दुन्या फ़ानी है और आखि़रत अबदी है, यक़ीनन फ़ानी को अबदी पर तरजीह़ देना किसी भी त़रह़ अ़क़्ल मन्दी का काम नहीं है, यक़ीनन समझ दारी इसी में है कि बन्दा दुन्या में फ़क़त़ इतनी मश्ग़ूलिय्यत रखे जितना इस दुन्या में रहना है, आखि़रत पर दुन्या को तरजीह़ देना शैत़ान का एक ख़त़रनाक वार और बहुत बड़ा धोका है इस मूज़ी मरज़ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हमेशा पनाह मांगते रहिये। किसी दुन्यवी ग़रज़ की वजह से **मुदाहनत** इख़्तियार करने का एक **इलाज** येह भी है कि बन्दा येह मदनी ज़ेह्न बनाए कि मैं एक फ़ानी चीज़ (या'नी दुन्यवी ग़रज़) की वजह से बुराई से मन्अ़ नहीं कर रहा, ह़ालांकि बुराई से मन्अ़ करने पर जो मुझे सिला (अज्रो सवाब) मिलेगा वोह दुन्या व आखि़रत दोनों में मुझे फ़ाइदा देगा। तो एक ऐसी चीज़ जो दुन्या व आखि़रत दोनों में फ़ाइदा देगी, इस पर एक ऐसी चीज़ को तरजीह़ देना जो फ़क़त़ दुन्या में ही आ़रिज़ी फ़ाइदा देगी येह किसी त़रह़ भी दानिशमन्दी का काम नहीं है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(13)..... कुफ़्राने नेअ़म

कुफ़्राने नेअ़म की ता'रीफ़ :

"**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों पर उस का शुक्र अदा न करना और उन से ग़फ़्लत बरतना **कुफ़्राने नेअ़म** कहलाता है।"(1)

(1) ......الحدیقۃ الندیۃ، الخلق الثامن والثلاثون۔۔۔الخ، ج۲، ص۱۰۰۔

www.dawateislami.net

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَ اِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَىٕنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِیْدَنَّكُمْ وَ لَىٕنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِیْ لَشَدِیْدٌ۝۷﴾

(پ۱۳، ابراھیم: ۷) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** *"और याद करो जब तुम्हारे रब ने सुना दिया कि अगर एह़सान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा और अगर नाशुक्री करो तो मेरा अ़ज़ाब सख़्त है।"*

ह़दीसे मुबारका : ने'मतों का इज़्हार न करना कुफ़्राने ने'मत है :

ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो थोड़ी चीज़ का शुक्र अदा न करे वोह ज़ियादा का भी शुक्र अदा नहीं कर सकता और जो लोगों का शुक्रिया अदा नहीं करता वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का भी शुक्र अदा नहीं कर सकता। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों का तज़्किरा करना भी उस का शुक्र अदा करना ही है जब कि उस की ने'मतों का इज़्हार न करना **कुफ़्राने ने'मत** (या'नी ने'मतों की नाशुक्री) है।"(1)

कुफ़्राने नेअ़म के बारे में तम्बीह :

कुफ़्राने नेअ़म या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों पर उस का शुक्र अदा न करना और उन से ग़फ़्लत बरतना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। **कुफ़्राने नेअ़म** ने'मतों के छिन जाने का भी एक सबब है लिहाज़ा हर मुसलमान को इस से बचना लाज़िम है।

---

1 ......مسند احمد، حدیث نعمان بن بشیر، ج ۶، ص ۳۹۴، حدیث: ۱۸۴۷۷۔

www.dawateislami.net

हिकायत : तंगदस्ती में भी शुक्र :

तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गै़र सियासी तह्रीक दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ 128 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब "**शुक्र के फ़ज़ाइल**" सफ़्हा 62 पर है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बयान फ़रमाया कि एक शख़्स को दुन्या की दौलत से बहुत नवाज़ा गया और फिर सब कुछ जाता रहा तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना करने लगा यहां तक कि उस के पास बिछाने के लिये सिर्फ़ एक चटाई रह गई मगर वोह फिर भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना में मश्ग़ूल रहा। एक दूसरे मालदार शख़्स ने उस से कहा : "अब तुम किस बात पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते हो ?" उस ने कहा : "मैं उन ने'मतों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करता हूं कि जिन के लिये अगर सारी दुन्या की दौलत भी दे दूं तो वोह ने'मतें मुझे न मिलें।" उस ने पूछा : "वोह क्या ?" उस ने जवाब दिया : "क्या तुम अपनी ज़बान, हाथ और पाउं को नहीं देखते ?"(1) (कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कितनी बड़ी बड़ी ने'मतें हैं !)

कुफ़्राने नेअ़्म के तीन अस्बाब व इलाज :

(1).....**कुफ़्राने नेअ़्म** का पहला सबब **बे सब्री की आ़दत** है। किसी भी क़िस्म की तक्लीफ़ पर वावेला करना नाशुक्री में मुब्तला कर देता है बा'ज़ अवक़ात तो बन्दा इस मोहलिक मरज़ के सबब कुफ़्रिय्यात बक कर ईमान से भी हाथ धो बैठता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा मुसीबतों और मुश्किलात पर सब्र करने की

---

(1) .....شعب الایمان، باب فی تعدیۃ۔۔۔الخ، ج۴، ص۱۱۲، حدیث:۴۴۶۲۔

www.dawateislami.net

आदत बनाए, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हज़ारहा ने'मतों पर ग़ौर करे और इस हवाले से अपने नफ़्स की तर्बिय्यत करे नीज़ अपना येह मदनी ज़ेहन बनाए कि अगर मैं ने'मतों पर शुक्र करूंगा तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ रब्बे करीम इन ने'मतों में बरकत व वुस्अत अता फ़रमाएगा । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

(2).....**कुफ़राने नेअ़म** का दूसरा सबब **तवक्कुल की कमी** है। बन्दा जैसे जैसे इस मरज़ का शिकार होता है वैसे ही नाशुक्री का तनासुब भी बढ़ता चला जाता है, मालो दौलत और आसाइशात से महरूम अफ़राद में येह मोहलिक मरज़ ज़ियादा पाया जाता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपने अन्दर क़नाअ़त पैदा करे, अपनी ख़ताओं और ग़लतियों का क़ुसूर वार अपने नफ़्स को ही ठहराए, जो ने'मतें मुयस्सर हैं उन्हें शुक्र की रस्सी से बांध कर रखे और ज़वाले ने'मत से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगे ।

(3).....**कुफ़राने नेअ़म** का तीसरा सबब **जुरअत अ़लल्लाह** है। जब गुनाहों की नुहूसत की वजह से बन्दा बेबाक हो जाता है तो उस की ज़बान पर नाशुक्री के कलिमात जारी हो जाते हैं और बसा अवक़ात इन में **कुफ़्रिय्या कलिमात** भी शामिल हो जाते हैं जिस से बन्दा कुफ़्र के तारीक गढ़ों में औंधे मुंह जा गिरता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपने आप को जहन्नम के अ़ज़ाबात से डराता रहे, ख़ौफ़े आख़िरत पैदा करे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की **ख़ुफ़्या तदबीर** से डरते हुवे हमेशा ईमान की सलामती की फ़िक्र करता रहे, नीज़ रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ईमान व सलामती की दुआ भी करता रहे ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(14).....हिर्स

हिर्स की ता'रीफ़ :

"ख़्वाहिशात की ज़ियादती के इरादे का नाम **हिर्स** है और बुरी हिर्स येह है कि अपना हिस्सा हासिल कर लेने के बा वुजूद दूसरे के हिस्से की लालच रखे। या किसी चीज़ से जी न भरने और हमेशा ज़ियादती की ख़्वाहिश रखने को **हिर्स**, और **हिर्स** रखने वाले को **हरीस** कहते हैं।"(1)

आम तौर पर येही समझा जाता है कि हिर्स का तअल्लुक़ सिर्फ़ "**मालो दौलत**" के साथ होता है हालांकि ऐसा नहीं है क्यूंकि हिर्स तो किसी शै की मज़ीद ख़्वाहिश करने का नाम है और वोह चीज़ कुछ भी हो सकती है, चाहे माल हो या कुछ और ! चुनान्चे, मज़ीद माल की ख़्वाहिश रखने वाले को "**माल का हरीस**" कहेंगे तो मज़ीद खाने की ख़्वाहिश रखने वाले को "**खाने का हरीस**" कहा जाएगा और नेकियों में इज़ाफ़े के तमन्नाई को "**नेकियों का हरीस**" जब कि गुनाहों का बोझ बढ़ाने वाले को "**गुनाहों का हरीस**" कहेंगे। तल्मीज़े सदरुश्शरीआ हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى लिखते हैं : "लालच और हिर्स का जज़्बा ख़ूराक, लिबास, मकान, सामान, दौलत, इज़्ज़त, शोहरत अल ग़रज़ हर ने'मत में हुवा करता है।"(2)

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

1 ......مرقاۃ، کتاب الرقاق، باب الامل والحرص، ج۹، ص۱۱۹، تحت الباب: ۲، مرآۃ المناجیح، ج۷، ص۸۶ مفصلاً۔

2 ......जन्नती ज़ेवर, स. 111 माख़ूज़न।

www.dawateislami.net

﴿وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ ۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ يُّعَمَّرَ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ۩﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"और बेशक तुम ज़रूर उन्हें पाओगे कि सब लोगों से ज़ियादा जीने की हवस रखते हैं और मुशरिकों से एक को तमन्ना है कि कहीं हज़ार बरस जिये और वोह उसे अ़ज़ाब से दूर न करेगा इतनी उ़म्र दिया जाना और* ***अल्लाह*** *उन के कौतक (बुरे अ़मल) देख रहा है।"* (پ ۱، البقرۃ: ۹۶)

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "मुशरिकीन का एक गुरौह मजूसी है आपस में तह़िय्यत व सलाम के मौक़अ़ पर कहते हैं : **ज़िह हज़ार साल** या'नी हज़ार बरस जियो। मत़लब येह है कि मजूसी मुशरिक हज़ार बरस जीने की तमन्ना रखते हैं यहूदी इन से भी बढ़ गए कि इन्हें ह़िर्स व ज़िन्दगानी सब से ज़ियादा है।"

ह़दीसे मुबारका : इब्ने आदम की ह़िर्स :

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : "अगर इब्ने आदम के पास सोने की दो वादियां भी हों तब भी येह तीसरी की ख़्वाहिश करेगा और इब्ने आदम का पेट क़ब्र की मिट्टी ही भर सकती है।"(1)

1 ......مسلم، کتاب الزکاۃ، باب لو ان لابن آدم ـــ الخ، ص ۵۲۱، حدیث: ۱۰۴۸ ـ

www.dawateislami.net

ह़िर्स का हुक्म :

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 232 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**ह़िर्स**" सफ़ह़ा 13 पर है : "**ह़िर्स** का तअ़ल्लुक़ जिन कामों से होता है इन में से कुछ काम बाइसे सवाब होते हैं और कुछ बाइसे अ़ज़ाब जब कि कुछ काम मह़्ज़ मुबाह़ (या'नी जाइज़) होते हैं या'नी ऐसे कामों के करने पर कोई सवाब मिलता है और न ही छोड़ने पर कोई इ़ताब होता है लेकिन येही मुबाह़ (या'नी जाइज़) काम अगर कोई अच्छी निय्यत से करे तो वोह सवाब का मुस्तह़िक़ और अगर बुरे इरादे से करे तो अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार हो जाता है, यूं बुन्यादी त़ौर पर ह़िर्स, की तीन क़िस्में बनती हैं : (1) ह़िर्से मह़्मूद (या'नी अच्छी ह़िर्स) (2) ह़िर्से मज़्मूम (या'नी बुरी ह़िर्स) (3) ह़िर्से मुबाह़ (या'नी जाइज़ ह़िर्स), लेकिन अगर इस ह़िर्स में अच्छी निय्यत होगी तो येह ह़िर्से मह़्मूद बन जाएगी और अगर बुरी निय्यत होगी तो मज़्मूम हो जाएगी।

हर ह़िर्स बुरी नहीं होती :

ह़िर्स की मज़्कूरा तक़्सीम से मा'लूम हुवा कि हर **ह़िर्स** बुरी नहीं होती बल्कि **ह़िर्स** की अच्छाई या बुराई का इन्ह़िसार उस शै पर है जिस की **ह़िर्स** की जा रही है, लिहाज़ा अच्छी चीज़ की **ह़िर्स** अच्छी और बुरी की **ह़िर्स** बुरी होती है, मगर अच्छाई या बुराई की त़रफ़ जाना हमारे हाथ में है। लेकिन सब से पहले येह जानना बेह़द ज़रूरी है कि किन किन चीज़ों की ह़िर्स "**मह़्मूद**" है ? ताकि उसे अपनाया जा सके और कौन कौन सी अश्या की "**मज़्मूम**" ? ताकि उस से बचा जा सके। इस सिलसिले में **ह़िर्स** की अक़्साम की मुख़्तसर वज़ाह़त मुलाह़ज़ा कीजिये : चुनान्चे,

www.dawateislami.net

(1) कौन सी हि़र्स मह़मूद है ?

रिज़ाए इलाही के लिये किये जाने वाले नेक आ'माल إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन्सान को जन्नत में ले जाएंगे, लिहाज़ा **नेकियों की हि़र्स** मह़मूद (या'नी पसन्दीदा) होती है मसलन नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात, सदक़ा व ख़ैरात, तिलावत, **ज़िक्रुल्लाह,** दुरूदे पाक, हु़सूले इल्मे दीन, सिलए रेह़्मी, ख़ैर ख़्वाही और नेकी की दा'वत आ़म करने की हि़र्स मह़मूद है।

(2) किन चीज़ों की हि़र्स मज़्मूम है ?

जिस त़रह़ गुनाहों का इर्तिकाब ममनूअ़ है इसी त़रह़ इन की हि़र्स भी ममनूअ़ व मज़्मूम होती है क्यूंकि इस **हि़र्स** का अन्जाम आतशे दोज़ख़ में जलना है मसलन रिश्वत, चोरी, बद निगाही, ज़िना, इग़लाम बाज़ी, अम्रद पसन्दी, हु़ब्बे जाह, फ़िल्में डिरामे देखने, गाने बाजे सुनने, नशे, जूए की हि़र्स, ग़ीबत, तोहमत, चुग़ली, गाली देने, बद गुमानी, लोगों के ऐ़ब ढूंडने और उन्हें उछालने व दीगर गुनाहों की **हि़र्स मज़्मूम** है।

(3) कौन सी हि़र्स मह़्ज़ मुबाह़ है ?

खाना पीना, सोना, दौलत इकठ्ठी करना, मकान बनाना, तोह़्फ़ा देना, उ़म्दा या ज़ाइद लिबास पहनना और दीगर बहुत सारे काम **मुबाह़** हैं, चुनान्चे, इन की **हि़र्स** भी **मुबाह़** है। मुबाह़ उस जाइज़ अ़मल या फे़'ल (या'नी काम) को बोलते हैं जिस का करना न करना यक्सां हो या'नी ऐसा काम करने से न सवाब मिले न गुनाह ! लिहाज़ा इन की हि़र्स में भी सवाब या गुनाह नहीं मिलेगा, मसलन किसी को नित नए और उ़म्दा कपड़े पहनने की हि़र्स है और निय्यत

www.dawateislami.net

कुछ भी नहीं (न तकब्बुर की और न ही इज़्हारे ने'मत की) तो उसे इस का न गुनाह मिलेगा और न ही सवाब, जब कि इस ह़िर्स को पूरा करने में शरीअ़त की ख़िलाफ़ वर्ज़ी न करे, चुनान्चे, अगर इस क़िस्म की ह़िर्स को पूरा करने के लिये रिश्वत, चोरी, डाका जैसे ह़राम कमाई के ज़राएअ़ इख़्तियार करने पड़ते हैं तो ऐसी ह़िर्स से बचना लाज़िम है।

ह़िर्से मुबाह़ कब ह़िर्से मह़मूद बनेगी और कब मज़्मूम ?

अगर कोई मुबाह़ काम अच्छी निय्यत से किया जाए तो **अच्छा** हो जाएगा, लिहाज़ा उस की ह़िर्स भी **मह़मूद** होगी और अगर वोही काम बुरी निय्यत से किया जाए तो बुरा हो जाएगा और उस की ह़िर्स भी **मज़्मूम** होगी और कुछ भी निय्यत न हो तो वोह काम और उस की ह़िर्स **मुबाह़** रहेगी। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या, जि. 7, स. 189 पर नक़्ल फ़रमाते हैं : "हर मुबाह़ (या'नी ऐसा जाइज़ अ़मल जिस का करना न करना यक्सां हो) निय्यते ह़सन (या'नी अच्छी निय्यत) से **मुस्तह़ब** हो जाता है।"(1) फ़ुक़हाए किराम رَحِمَھُمُ اللہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : मुबाह़ात (या'नी ऐसे जाइज़ काम जिन पर न सवाब हो न गुनाह उन) का हुक्म अलग अलग निय्यतों के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ हो जाता है, इस लिये जब उस से (या'नी किसी मुबाह़ से) ताआ़त (या'नी इबादात) पर कुव्वत ह़ासिल करना या **ताआ़त** (या'नी इबादात) तक पहुंचना मक़्सूद हो तो येह (मुबाह़ात या'नी जाइज़ चीज़ें भी) इबादात होंगी

(1) ......फ़तावा रज़विय्या जि. 8, स. 452।

www.dawateislami.net

मसलन खाना पीना, सोना, हुसूले माल और वत़ी (या'नी ज़ौजा से हम बिस्तरी) करना।"(1)

मुबाह़ ह़िर्स के मह़मूद या मज़मूम बनने की एक मिसाल :

इ़त्र लगाना एक मुबाह़ काम है जिस पर अच्छी अच्छी निय्यतें कर के सवाब कमाया जा सकता है चुनान्चे, जिसे अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ इ़त्र लगाने की ह़िर्स हो तो उस की येह ह़िर्स मह़मूद होगी। **आ़रिफ़ बिल्लाह, मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन**, ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی लिखते हैं : मुबाह़ कामों में भी अच्छी निय्यत करने से सवाब मिलेगा, मसलन ख़ुश्बू लगाने में इत्तिबाए़ सुन्नत और (मस्जिद में जाते हुवे लगाने पर) ता'ज़ीमे मस्जिद (की निय्यत भी की जा सकती है), फ़र्ह़ते दिमाग़ (या'नी दिमाग़ की ताज़गी) और अपने इस्लामी भाइयों से नापसन्दीदा बू दूर करने की निय्यतें हों तो हर निय्यत का अलग सवाब मिलेगा।(2) ख़ुश्बू लगाने में अकसर शैत़ान ग़लत निय्यत में मुब्तला कर देता है, लिहाज़ा अगर कोई इस निय्यत से ख़ुश्बू लगाता है कि लोग वाह वाह करें, जिधर से गुज़रूं ख़ुश्बू महक जाए, लोग मुड़ मुड़ कर देखें और मेरी ता'रीफ़ करें तो ऐसी निय्यत मज़मूम है चुनान्चे, इस निय्यत से ख़ुश्बू लगाने की ह़िर्स भी मज़मूम है। **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ामिद इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِی का फ़रमाने आ़ली है : इस निय्यत से ख़ुश्बू लगाना कि लोग वाह वाह करें या

---

(1) ردالمحتار، کتاب النکاح، مطلب: کثیرا ما۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۷۵۔

(2) اشعۃ اللمعات، ج ۱، ص ۳۷۔

www.dawateislami.net

क़ीमती ख़ुश्बू लगा कर लोगों पर अपनी मालदारी का सिक्का बिठाने की निय्यत हो तो इन सूरतों में ख़ुश्बू लगाने वाला गुनहगार होगा और ख़ुश्बू बरोज़े क़ियामत मुर्दार से भी ज़ियादा बदबूदार होगी।(1)

हिकायत : सोने का अन्डा देने वाली नागन :

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ 232 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "हिर्स" सफ़हा 6 पर है : हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ली जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने "**उ़यूनुल हिकायात**" में एक दिलचस्प सबक़ आमोज़ हिकायत नक़्ल की है कि किसी घर में एक अ़जीबो ग़रीब नागन रहती थी जो रोज़ाना सोने का एक अन्डा दिया करती। घर का मालिक मुफ़्त की दौलत मिलने पर बहुत ख़ुश था। उस ने घर वालों को ताकीद कर रखी थी कि वोह येह बात किसी को न बताएं। कई माह तक येह सिलसिला यूं ही चलता रहा। एक दिन नागन अपने बिल से निकली और उन की बकरी को डस लिया। इस का ज़हर ऐसा जान लेवा था कि देखते ही देखते बकरी की मौत वाक़ेअ़ हो गई। येह देख कर घर वालों को बड़ा तैश आया और वोह नागन को ढूंडने लगे ताकि उसे मार सकें मगर उस शख़्स ने येह कह कर उन्हें ठन्डा कर दिया कि "हमें नागन से मिलने वाले सोने के अन्डे का नफ़्अ़ बकरी की क़ीमत से कहीं ज़ियादा है, लिहाज़ा परेशान होने की ज़रूरत नहीं।" कुछ अ़र्से बा'द नागन ने उन के पालतू गधे को डस लिया जो फ़ौरन मर गया। अब तो वोह शख़्स भी सख़्त घबराया मगर लालच के मारे उस ने फ़ौरन ख़ुद पर क़ाबू पा लिया और कहने लगा : "इस ने आज हमारा दूसरा

---

1 ......नेकी की दा'वत, स. 118 احياء العلوم، كتاب النية---الخ، بيان تفصيل الاعمال---الخ، ج٥، ص٩٨

www.dawateislami.net

जानवर मार डाला, ख़ैर कोई बात नहीं, इस ने किसी इन्सान को तो नुक़्सान नहीं पहुंचाया।" घर वाले चुप हो रहे। इस के बा'द दो साल का अ़र्सा गुज़र गया मगर नागन ने किसी को नहीं डसा, अहले ख़ाना भी अपने जानवरों के नुक़्सान को भूल गए।

फिर एक दिन नागन ने उन के गुलाम को डस लिया। उस बेचारे ने मदद के लिये अपने मालिक को पुकारा, मगर इस से पहले कि मालिक उस तक पहुंचता, ज़हर की वजह से ग़ुलाम का जिस्म फट चुका था। अब वोह शख़्स परेशान हो कर कहने लगा : "इस नागन का ज़हर तो बहुत ख़त़रनाक है, इस ने जिस जिस को डसा वोह फ़ौरन मौत के घाट उतर गया, अब कहीं येह मेरे घर वालों में से किसी को न डस ले।" कई दिन इसी परेशानी में गुज़र गए कि उस नागन का क्या किया जाए! दौलत की ह़िर्स ने एक बार फिर उस शख़्स की आंखों पर पट्टी बांध दी और उस ने येह कह कर अपने घर वालों को मुत़मइन कर दिया : "अगर्चे इस नागन की वजह से हमें नुक़्सान हो रहा है मगर सोने के अन्डे भी तो मिलते हैं, लिहाज़ा हमें ज़ियादा परेशान नहीं होना चाहिये।" कुछ ही दिनों बा'द नागन ने उस के बेटे को डस लिया। फ़ौरन त़बीब को बुलाया गया लेकिन वोह भी कुछ न कर सका और उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई। जवान बेटे की मौत मियां बीवी पर बिजली बन कर गिरी और वोह शख़्स ग़ज़ब नाक हो कर कहने लगा : "अब मैं इस नागन को ज़िन्दा नहीं छोड़ूंगा।" मगर वोह उन के हाथ न आई। जब काफ़ी अ़र्सा गुज़र गया तो सोने का अन्डा न मिलने की वजह से उन की लालची त़बीअ़त में बेचैनी होने लगी, चुनान्चे, दोनों मियां बीवी नागन के बिल के पास आए, वहां की सफ़ाई की और धूनी दे कर ख़ुश्बू महकाई, यूं गोया नागन

www.dawateislami.net

को सुल्ह़ का पैग़ाम दिया गया। ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर वोह वापस आ गई और उन्हें फिर से सोने का अन्डा मिलने लगा। मालो दौलत की ह़िर्स ने उन्हें अन्धा कर दिया और वोह अपने बेटे और ग़ुलाम की मौत को भी भूल गए।

फिर एक दिन नागन ने उस की ज़ौजा को सोते में डस लिया, थोड़ी ही देर में उस ने भी तड़प तड़प कर जान दे दी। अब वोह लालची शख़्स अकेला रह गया तो उस ने नागन वाली बात अपने भाइयों और दोस्तों को बता ही दी। सब ने ये ही मश्वरा दिया : "तुम ने बहुत बड़ी ग़लती की, अब भी वक़्त है संभल जाओ और जितनी जल्दी हो सके इस ख़त़रनाक नागन को मार डालो।" अपने घर आ कर वोह शख़्स नागन को मारने के लिये घात लगा कर बैठ गया। अचानक उसे नागन के बिल के क़रीब एक क़ीमती मोती नज़र आया जिसे देख कर उस की लालची त़बीअ़त ख़ुश हो गई। दौलत की हवस ने उसे सब कुछ भुला दिया, वोह कहने लगा : "वक़्त त़बीअ़तों को बदल देता है, यक़ीनन उस नागन की त़बीअ़त भी बदल गई होगी कि जिस त़रह़ येह सोने के अन्डों के बजाए अब मोती देने लगी है, इसी त़रह़ इस का ज़ह्र भी ख़त्म हो गया होगा, चुनान्चे, अब मुझे इस से कोई ख़त़रा नहीं।" येह सोच कर उस ने नागन को मारने का इरादा तर्क कर दिया। रोज़ाना एक क़ीमती मोती मिलने पर वोह लालची शख़्स बहुत ख़ुश रहने लगा और नागन की पुरानी धोका बाज़ी को भूल गया। एक दिन उस ने सारा सोना और मोती बरतन में डाले और उस पर सर रख कर सो गया। उसी रात नागन ने उसे भी डस लिया। जब उस की चीख़ें बुलन्द हुई तो आस पास के लोग भागम भाग वहां पहुंचे और उस से कहने लगे : "तुम ने इसे मारने में सुस्ती

www.dawateislami.net

की और लालच में आ कर अपनी जान दाव पर लगा दी !" लालची शख़्स शर्म के मारे कुछ न बोल सका, सोने से भरा हुवा बरतन अपने रिश्तेदारों और दोस्तों के ह़वाले किया और कराहते हुवे बड़ी मुश्किल से कहा : "आज के दिन मेरे नज़्दीक इस माल की कोई क़द्रो क़ीमत नहीं क्यूंकि अब येह दूसरों का हो जाएगा और मैं ख़ाली हाथ इस दुन्या से चला जाऊंगा ।" कुछ ही देर में उस का इन्तिक़ाल हो गया ।(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने देखा कि मालो दौलत की ह़िर्स ने हंसते बसते घराने को उजाड़ कर रख दिया ! यक़ीनन ह़रीस की निगाह मह़दूद होती है जो सिर्फ़ वक़्ती फ़ाइदा देखती है जिस की वजह से वोह दुरुस्त फ़ैसले करने में नाकाम रहता है और नुक़्सान उठाता है । ह़िकायत में मज़्कूर घर के सर बराह को संभलने के कई मवाक़ेअ़ मिले लेकिन मुफ़्त की दौलत के नशे ने उसे ऐसा मदहोश कर दिया कि बेटे और ज़ौजा की नागन के हाथों हलाकत भी उसे होश में न ला सकी, अन्जामे कार वोह ख़ुद भी मौत के मुंह में जा पहुंचा ।

देखे हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़्लत की बदौलत
सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेकियों की ह़िर्स बढ़ाइये :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपना मदनी जेह़्न बना लीजिये कि मुझे नेकियों का ह़रीस बनना है, नेकियों का ह़रीस बनने के लिये इन मदनी फूलों पर अ़मल कीजिये :

---

(1) عیون الحکایات، الحکایۃ الثامنۃ بعد الخمسمائۃ۔۔۔الخ، ص ۴۳۹ ملخصاً

www.dawateislami.net

(1) नेकियों के फ़ज़ाइल का मुतालआ कीजिये (क्यूंकि इन्सानी तबीअत उस शै की तरफ़ जल्दी रागिब होती है जिस में उसे अपना फ़ाइदा दिखाई देता है) फिर (2) रिज़ाए इलाही पाने की निय्यत से राहे अमल पर क़दम रख दीजिये (3) नेकियों का हरीस बनने की राह में पेश आने वाली मशक़्क़तों को बरदाश्त करने का हौसला पाने के लिये बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن के शौक़े इबादत की हिकायात पढ़िये और (4) नेकियों पर इस्तिक़ामत हासिल करने के लिये अच्छी सोहबत इख़्तियार कर लीजिये।

गुनाहों की हिर्स मज़्मूम है :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाह जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल हैं और इन की हिर्स मज़्मूम होती है मगर अफ़सोस सद करोड़ अफ़सोस ! आज मुसलमानों की भारी अक्सरिय्यत गुनाहों की हिर्स का शिकार है। मसाजिद, मदारिस, जामिआत, सुन्नतों भरे इजतिमाआत और दीनी लाइब्रेरियों में आने वालों की ता'दाद बहुत कम जब कि सीनिमा घरों, ड्रामा हॉलों और नाइट क्लबों जैसे गुनाहों के अड्डों में जाने वालों की ता'दाद इस से कई गुना ज़ियादा है। टी वी, वी सी आर, डी वी डी प्लेयर, डिश एन्टीना, इन्टरनेट और केबल का ग़लत इस्ति'माल आम है। नमाज़ें क़ज़ा करना, फ़र्ज़ रोज़े छोड़ देना, गाली देना, तोहमत लगाना, बद गुमानी करना, ग़ीबत करना, चुग़ली खाना, लोगों के ऐब जानने की जुस्त्जू में रहना, लोगों के ऐब उछालना, झूट बोलना, झूटे वा'दे करना, किसी का माल नाहक़ खाना, ख़ून बहाना, किसी को बिला इजाज़ते शरई तक्लीफ़ देना, क़र्ज़ दबा लेना, किसी की चीज़ आरिय्यतन (या'नी वक़्ती तौर पर) ले कर वापस न करना, मुसलमानों को बुरे

www.dawateislami.net

अल्क़ाब से पुकारना, किसी की चीज़ उसे ना गवार गुज़रने के बा वुजूद बिला इजाज़त इस्ति'माल करना, शराब पीना, जूआ खेलना, चोरी करना, ज़िना करना, फ़िल्में ड्रामे देखना, गाने बाजे सुनना, सूद व रिश्वत का लैन दैन करना, मां-बाप की नाफ़रमानी करना और इन्हें सताना, अमानत में ख़ियानत करना, बद निगाही करना, औरतों का मर्दों की और मर्दों का औरतों की मुशाबहत (या'नी नक़्क़ाली) करना, बे पर्दगी, गुरूर, तकब्बुर, ह़सद, रियाकारी, अपने दिल में किसी मुसलमान का बुग़्ज़ो कीना रखना, गुस्सा आ जाने पर शरीअ़त की ह़द तोड़ डालना, हुब्बे जाह, बुख़्ल, ख़ुद पसन्दी जैसे मुआ़मलात हमारे मुआ़शरे में बड़ी बे बाकी के साथ किये जाते हैं।

नफ़्सो शैत़ान हो गए ग़ालिब   इन के चुंगल से तू छुड़ा या रब
नीम जां कर दिया गुनाहों ने   मरज़े इस्यां से दे शिफ़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 87)

गुनाहों की ह़िर्स से बचने के तीन इलाज :

(1).....**गुनाहों की पहचान कीजिये।** गुनाहों की पहचान ह़ासिल करने और इन की सज़ाएं जानने के लिये सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा उ़लमाए किराम व मुफ़्तियाने उ़ज़्ज़ाम की सोह़बत इख़्तियार कीजिये, नीज़ इस मुआ़मले में तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ कुतुबो रसाइल से भी मदद ली जा सकती है।

(2).....**गुनाहों के नुक़्सानात पर ग़ौर कीजिये।** कि जब बन्दा गुनाह करता है तो ग़ज़बे इलाही को दा'वत देता है, जन्नत से दूर और जहन्नम के क़रीब हो जाता है, अपनी जान को तक्लीफ़ में

www.dawateislami.net

डाल देता है, अपने बातिन को नापाक कर बैठता है, आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों को ईज़ा देता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नाराज़ करता है, तमाम इन्सानों से ख़यानत और **रब्बुल आलमीन** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी करता है। वग़ैरा वग़ैरा

(3).....**बुरे ख़ातिमे से बे ख़ौफ़ न हो ।** कि गुनाहों में मुब्तला रहना और तौबा की तौफ़ीक़ नसीब न होना भी बुरे ख़ातिमे के अस्बाब में से एक सबब है।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(15)....बुख़्ल

बुख़्ल की ता'रीफ़ :

"बुख़्ल के लुग़वी मा'ना कन्जूसी के हैं और जहां ख़र्च करना शरअ़न, आ़दतन या मुरुव्वतन लाज़िम हों वहां ख़र्च न करना **बुख़्ल** कहलाता है, या जिस जगह माल व अस्बाब ख़र्च करना ज़रूरी हो वहां ख़र्च न करना येह भी **बुख़्ल** है।"[2]

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَ لَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَ لِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۠﴿۱۸۰﴾﴾ (پ۴، آل عمران: ۱۸۰)

---

1 ......हिर्स, स. 42 मुल्तक़तन।

2 ......الحديقة الندية، الخلق السابع والعشرون۔۔۔الخ، ج۲، ص۲۷، مفردات الفاظ القران، ۱۰۹۔

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"और जो बुख़्ल करते हैं उस चीज़ में जो **अल्लाह** ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दी हरगिज़ उसे अपने लिये अच्छा न समझें बल्कि वोह उन के लिये बुरा है अ़न क़रीब वोह जिस में बुख़्ल किया था क़ियामत के दिन उन के गले का तौक़ होगा और **अल्लाह** ही वारिस है आस्मानों और ज़मीन का और **अल्लाह** तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।"*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद **मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी** عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِى **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "बुख़्ल के मा'ना में अकसर उ़लमा इस त़रफ़ गए हैं कि वाजिब का अदा न करना बुख़्ल है इसी लिये बुख़्ल पर शदीद वई़दें आई हैं चुनान्चे, इस आयत में भी एक वई़द आ रही है तिर्मिज़ी की ह़दीस में है : बुख़्ल और बद खुल्क़ी येह दो ख़स्लतें ईमानदार में जम्अ़ नहीं होतीं। अकसर मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि यहां बुख़्ल से ज़कात का न देना मुराद है।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि जिस को **अल्लाह** ने माल दिया और उस ने ज़कात अदा न की रोज़े क़ियामत वोह माल सांप बन कर उस को तौक़ की त़रह़ लिपटेगा और येह कह कर डसता जाएगा कि मैं तेरा माल हूं मैं तेरा ख़ज़ाना हूं।"

ह़दीसे मुबारका : बुख़्ल हलाकत का सबब है :

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "लालच से बचते रहो क्यूंकि तुम से पहली

www.dawateislami.net

क़ौमें लालच की वजह से हलाक हुईं, लालच ने उन्हें बुख़्ल पर आमादा किया तो वोह बुख़्ल करने लगे और जब क़त्ए रेह्मी का ख़याल दिलाया तो उन्हों ने क़त्ए रेह्मी की और जब गुनाह का हुक्म दिया तो वोह गुनाह में पड़ गए।''(1)

बुख़्ल के बारे में तम्बीह :

बुख़्ल एक निहायत ही क़बीह़ और मज़्मूम फ़े'ल है, नीज़ बुख़्ल बसा अवक़ात दीगर कई गुनाहों का भी सबब बन जाता है इस लिये हर मुसलमान को इस से बचना लाज़िम है।

ह़िकायत : बख़ील या'नी कन्जूस औ़रत का अन्जाम :

मुनीफ़ा बिन्ते रूमी ख़ातून का बयान है कि मैं मक्कए मुकर्रमा में मुक़ीम थी, एक दिन मैं ने एक बा रौनक़ मक़ाम पर लोगों का हुजूम देखा, क़रीब जाने पर मा'लूम हुवा कि वहां एक औ़रत है जिस का सीधा हाथ मफ़्लूज हो चुका है और लोग उस से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के सुवालात पूछ रहे हैं। जब उस औ़रत से उस के हाथ मफ़्लूज होने की वजह पूछी गई तो उस ने एक निहायत ही इ़ब्रतनाक दास्तान सुनाई, वोह कहने लगी कि आज से कुछ अ़र्से क़ब्ल मैं अपने वालिदैन के साथ रहती थी। मेरे वालिद बहुत नेक व पारसा थे। कसरत से सदक़ा व ख़ैरात करते और ग़ुरबा की अपनी इस्तित़ाअ़त के मुत़ाबिक़ इमदाद भी किया करते थे। जब कि मेरी वालिदा इन्तिहाई बख़ील या'नी कन्जूस थी। पूरी ज़िन्दगी में सिर्फ़ एक पुराना सा कपड़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में दिया और एक मरतबा जब मेरे वालिद ने गाए ज़ब्ह़

1 ......ابوداود، کتاب الزکاۃ، باب فی الشح، ج۲، ص۱۸۵، حدیث:۱۶۹۸۔

www.dawateislami.net

की तो उस की थोड़ी सी चरबी किसी ग़रीब को दे दी इस के इलावा कभी भी कोई चीज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च न की। फिर मेरे वालिदैन का इन्तिक़ाल हो गया, अपने वालिदैन के इन्तिक़ाल के कुछ दिन बा'द मैं ने ख़्वाब में देखा कि मेरा वालिद एक हौज़ (या'नी तालाब) के किनारे खड़ा है और लोगों को पियाले भर भर कर पानी पिला रहा है। मैं भी खड़े हो कर सारा मन्ज़र देख रही थी। अचानक मेरी नज़र अपनी वालिदा पर पड़ी जो ज़मीन पर पड़ी हुई थी उस के हाथों में वोही चरबी थी जो उस ने सदक़ा की थी और उसी पुराने कपड़े से उस का सित्र ढांपा हुवा था जो उस ने सदक़ा किया था। वोह शिद्दते प्यास से "हाए प्यास, हाए प्यास" की सदाएं बुलन्द कर रही थी। येह दर्दनाक मन्ज़र देख कर मैं तड़प उठी। मैं ने कहा : "हाए अफ़्सोस ! येह तो मेरी वालिदा है और जो लोगों को पानी पिला रहा है वोह मेरा वालिद है। मैं हौज़ से एक पियाला भर कर अपनी वालिदा को पिलाऊंगी।" फिर जैसे ही पानी का पियाला भर कर मैं अपनी वालिदा के पास आई तो आस्मान से मुनादी की येह निदा सुनाई दी : "ख़बरदार ! इस कन्जूस औ़रत को जो पानी पिलाएगा उस का हाथ मफ़्लूज हो जाएगा।" फिर मेरी आंख खुल गई और उस वक़्त से मेरा हाथ ऐसा है जैसा कि तुम देख रहे हो।"(1)

बुख़्ल के पांच अस्बाब और इन का इलाज :

(1)...**बुख़्ल** का पहला सबब **तंगदस्ती का ख़ौफ़** है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा इस बात को हमेशा ज़ेहन में रखे कि राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करने से कमी नहीं आती बल्कि इज़ाफ़ा होता है।

1 ......उ़यूनुल हिकायात, जि. 2 स. 221।

www.dawateislami.net

(2).....**बुख़्ल** का दूसरा सबब **माल से महब्बत** है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा क़ब्र की तन्हाई को याद करे कि मेरा येह माल क़ब्र में मेरे किसी काम न आएगा बल्कि मेरे मरने के बा'द वुरसा इसे बे दर्दी से तसर्रुफ़ में लाएंगे।

(3).....**बुख़्ल** का तीसरा सबब **नफ़्सानी ख़्वाहिशात का ग़लबा** है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा ख़्वाहिशाते नफ़्सानी के नुक़्सानात और इस के **उख़रवी अन्जाम** का बार बार मुतालआ करे। इस सिलसिले में अमीरे अहले सुन्नत का रिसाला "**गुनाहों का इलाज**" पढ़ना हद दरजा मुफ़ीद है।

(4).....**बुख़्ल** का चौथा सबब **बच्चों के रोशन मुस्तक़्बिल की ख़्वाहिश** है। इस का **इलाज** येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा रखने में अपने ए'तिक़ाद व यक़ीन को मज़ीद पुख़्ता करे कि जिस रब عَزَّوَجَلَّ ने मेरा मुस्तक़्बिल बेहतर बनाया है वोही रब عَزَّوَجَلَّ मेरे बच्चों के मुस्तक़्बिल को भी बेहतर बनाने पर क़ादिर है।

(5).....**बुख़्ल** का पांचवां सबब **आख़िरत के मुआमले में ग़फ़्लत** है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा इस बात पर ग़ौर करे कि मरने के बा'द जो मालो दौलत मैं ने राहे ख़ुदा में ख़र्च की वोह मुझे नफ़्अ़ दे सकती है, लिहाज़ा इस फ़ानी माल से नफ़्अ़ उठाने के लिये इसे नेकी के कामों में ख़र्च करना ही अ़क़्लमन्दी है।[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ......احیاء العلوم، ج۳، ص ۳۸۴ تا ۳۸۷ ملتقطا۔

www.dawateislami.net

(16).....तूले अमल

तूले अमल की ता'रीफ़ :

"**तूले अमल**" का लुग़वी मा'ना लम्बी लम्बी उम्मीदें बांधना है। और जिन चीज़ों का हुसूल बहुत मुश्किल हो, उन के लिये लम्बी उम्मीदें बांध कर ज़िन्दगी के क़ीमती लम्हात ज़ाएअ़ करना **तूले अमल** कहलाता है।[1]

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۞۳﴾ (پ۱۴، الحجر: ۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"उन्हें छोड़ो कि खाएं और बरतें और उम्मीद उन्हें खेल में डाले तो अब जाना चाहते हैं।"*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद **मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "इस में तम्बीह है कि लम्बी उम्मीदों में गिरिफ़्तार होना और लज़्ज़ाते दुन्या की त़लब में ग़र्क़ हो जाना ईमानदार की शान नहीं। ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : लम्बी उम्मीदें आख़िरत को भुलाती हैं और ख़्वाहिशात का इत्तिबाअ़ ह़क़ से रोकता है।"

ह़दीसे मुबारका : लम्बी लम्बी उम्मीदें दुन्या की मह़ब्बत का सबब :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन,

[1] .....فیض القدیر، حرف الهمزة، ج ۱، ص ۲۷۷، تحت الحدیث: ۲۹۴۔

www.dawateislami.net

रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलिशान है : "मुझे तुम पर दो बातों का बहुत ज़ियादा ख़ौफ़ है, ख़्वाहिश की पैरवी करना और लम्बी लम्बी उम्मीदें रखना। ख़्वाहिश की पैरवी तो हक़ बात से रोकती है और लम्बी लम्बी उम्मीदें दुन्या की महब्बत में मुब्तला कर देती हैं। याद रखो ! बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे भी दुन्या अता फ़रमाता है जिस से महब्बत करता है और उसे भी देता है जिसे नापसन्द करता है मगर जब वोह किसी बन्दे से महब्बत फ़रमाता है तो उसे ईमान (की दौलत) अता फ़रमाता है। सुन लो ! कुछ लोग दीन वाले हैं और कुछ दुन्या वाले। तुम दीन वाले बनो, दुन्या वाले न बनो। याद रखो ! दुन्या पीठ फेर कर जा रही है। जान लो ! आख़िरत क़रीब आ चुकी है। ख़बरदार ! आज तुम अमल के दिन में हो, इस में हिसाब नहीं और अन क़रीब तुम हिसाब के दिन में होगे जहां कोई अमल न होगा।"(1)

तूले अमल का हुक्म :

हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "(तूले अमल या'नी) लम्बी उम्मीदें नेकी व ताअत की राह में रुकावट हैं, नीज़ हर फ़ितने और शर का बाइस हैं, लम्बी उम्मीदों में मुब्तला हो जाना एक ला इलाज मरज़ है जो लोगों को और बहुत से मुख़्तलिफ़ अमराज़ में मुब्तला करता है।"(2)

---

1 ......موسوعة ابن ابی الدنیا، قصر الامل، ج ٣، ص ٣٠٣، الرقم: ٣۔

2 ......منہاج العابدین، ص ١١٨۔

www.dawateislami.net

हिकायत : बादशाह की तौबा :

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र क़ुरशी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बाद बिन अ़ब्बाद मुहल्लबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى को इरशाद फ़रमाते सुना : बसरा के बादशाहों में से किसी बादशाह ने उमूरे सल्तनत को ख़ैर बाद कह कर ज़ोहदो तक़्वा की राह इख़्तियार कर ली मगर फिर दोबारा सल्तनत व हुकूमत की त़रफ़ माइल हुवा और दुन्या का ऐ़शो इ़शरत त़लब करने की ठान ली। चुनान्चे, उस ने एक शानदार मह़ल बनवाया, उस में आ'ला क़िस्म के क़ालीन बिछवाए और हर त़रह़ के साज़ो सामान से उस अ़ज़ीमुश्शान मह़ल को आरास्ता कराया, और एक कमरा मेहमानों के लिये ख़ास कर दिया, वहां उ़म्दा बिस्तर बिछाए जाते, अन्वाओ़ अक़्साम के खाने चुने जाते। बादशाह लोगों को बुलाता तो वोह अ़ज़ीमुश्शान मह़ल और बादशाह की ठाट बाट (या'नी शानो शौकत) देख कर ता'रीफ़ व ख़ुशामद करते हुवे वापस चले जाते। येह सिलसिला काफ़ी अ़र्से तक चलता रहा, बादशाह मुकम्मल त़ौर पर दुन्या की रंगीनियों में गुम हो चुका था उस के इस अ़ज़ीमुश्शान मह़ल में हर त़रह़ के आलाते मूसीक़ी और लह्वो लअ़ब का सामान था। वोह हर वक़्त दुन्यवी मशाग़िल में मगन रहता। इसी मसनूई शानो शौकत ने उसे तूले अमल जैसे मूज़ी मरज़ में मुब्तला कर दिया। चुनान्चे, एक दिन उस ने अपने ख़ास वज़ीरों, मुशीरों और अ़ज़ीज़ों को बुला कर कहा : "तुम इस अ़ज़ीमुश्शान मह़ल में मेरी ख़ुशियों को देख रहे हो, देखो ! मैं यहां कितना पुर सुकून हूं ! मैं चाहता हूं कि अपने तमाम बेटों के लिये भी ऐसे ही अ़ज़ीमुश्शान मह़ल्लात बनवाऊं, तुम लोग चन्द दिन मेरे पास रुको, ख़ूब ऐ़श करो और मज़ीद मह़ल्लात बनाने के

www.dawateislami.net

सिलसिले में मुझे मुफ़ीद मश्वरे दो, ताकि मैं अपने बेटों के लिये बेहतरीन मह़ल्लात बनाने में कामयाब हो जाऊं।" चुनान्चे, वोह लोग उस के पास रहने लगे। दिन रात लह्वो लअ़ब में मश्ग़ूल रहते और बादशाह को मश्वरा देते कि इस त़रह़ मह़ल बनवाओ, फ़ुलां चीज़ इस की आराइश के लिये मंगवाओ, फ़ुलां मे'मार से बनवाओ, अल ग़रज़ रोज़ाना इसी त़रह़ मश्वरे होते और अ़ज़ीमुश्शान मह़ल्लात बनाने की तरकीबें सोची जातीं। एक रात वोह तमाम लोग लह्वो लअ़ब में मश्ग़ूल थे कि मह़ल की किसी जानिब से एक ग़ैबी आवाज़ ने सब को चौंका दिया। कोई कहने वाला कह रहा था : **"ऐ अपनी मौत को भूल कर इमारत बनाने वाले ! लम्बी लम्बी उम्मीदें छोड़ दे क्यूंकि मौत लिखी जा चुकी है। लोग ख़्वाह ख़ुद हंसें या दूसरों को हंसाएं, बहर ह़ाल मौत उन के लिये लिखी जा चुकी है और बहुत ज़ियादा उम्मीद रखने वाले के सामने तय्यार खड़ी है। ऐसे मकानात हरगिज़ न बना जिन में तुझे रहना ही नहीं तू इबादत व रियाज़त इख़्तियार कर, ताकि तेरे गुनाह मुआ़फ़ हो जाएं।" बक़ौल :**

दिला ग़ाफ़िल न हो, यक्दम येह दुन्या छोड़ जाना है
बाग़ीचे छोड़ कर, ख़ाली ज़मीन अन्दर समाना है
तू अपनी मौत को मत भूल, कर सामान चलने का
ज़मीं की ख़ाक पर सोना है, ईंटों का सिरहाना है
जहां के शग़्ल में शाग़िल, ख़ुदा के ज़िक्र से ग़ाफ़िल
करे दा'वा कि येह दुन्या, मेरा दाइम ठिकाना है
ग़ुलाम इक दम न कर ग़फ़्लत, ह़याती पर न हो ग़ुर्रा
ख़ुदा की याद कर हरदम, कि जिस ने काम आना है

www.dawateislami.net

उस ग़ैबी आवाज़ ने बादशाह और उस के तमाम हमराहियों को ख़ौफ़ में मुब्तला कर दिया। बादशाह ने अपने दोस्तों से कहा : "जो ग़ैबी आवाज़ मैं ने सुनी क्या तुम ने भी सुनी ?" सब ने यक ज़बां हो कर कहा : "जी हां ! हम ने भी सुनी है।" बादशाह ने कहा : "जो चीज़ मैं महसूस कर रहा हूं क्या तुम भी महसूस कर रहे हो ?" पूछा : "आप क्या महसूस कर रहे हैं ?" कहा : "मैं अपने दिल पर कुछ बोझ सा महसूस कर रहा हूं। मुझे लगता है कि येह मेरी मौत का पैग़ाम है।" लोगों ने कहा : "ऐसी कोई बात नहीं, आप की उ़म्र दराज़ और इक़्बाल बुलन्द हो ! आप परेशान न हों।" फिर बादशाह ने लोगों की त़रफ़ तवज्जोह न दी, उस का दिल चोट खा चुका था। ग़ैबी आवाज़ ने उस का सारा ऐ़श ख़त्म कर दिया था, वोह रोते हुवे कहने लगा : "तुम मेरे बेहतरीन दोस्त और भाई हो, तुम मेरे लिये क्या कुछ कर सकते हो ?" लोगों ने कहा : "आ़ली जाह ! आप जो चाहें हुक्म फ़रमाएं, आप का हर हुक्म माना जाएगा।" बादशाह ने शराब के तमाम बरतन तोड़ डाले। इस के बा'द बारगाहे ख़ुदावन्दी में इस त़रह़ अ़र्ज़ गुज़ार हुवा :

"ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मैं तुझे और यहां मौजूद तेरे बन्दों को गवाह बना कर तेरी त़रफ़ रुजूअ़ करता और अपने तमाम गुनाहों और ज़ियादतियों पर नादिम हो कर तौबा करता हूं। ऐ मेरे ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ अगर तू मुझे दुन्या में कुछ मुद्दत और बाक़ी रखना चाहता है तो मुझे दाइमी इत़ाअ़त व फ़रमांबरदारी की राह पर चला दे। और अगर मुझे मौत दे कर अपनी त़रफ़ बुलाना चाहता है तो मुझ

www.dawateislami.net

पर करम कर दे और अपने करम से मेरे गुनाहों को बख़्श दे।" बादशाह इसी त़रह़ मसरूफ़े इल्तिजा रहा और उस का दर्द बढ़ता गया। फिर उस ने इन कलिमात की तकरार शुरूअ़ कर दी : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मौत, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मौत।" बस येही कलिमात उस की ज़बान पर जारी थे कि उस की रूह़ क़फ़से उ़नसुरी से परवाज़ कर गई। उस दौर के फ़ुक़हाए किराम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم اَجْمَعِين फ़रमाया करते थे : "उस बादशाह का ख़ातिमा तौबा पर हुवा है।"(1)

तूले अमल के अस्बाब व इ़लाज :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर्चे **तूले अमल** एक ला इ़लाज मरज़ है मगर हर मरज़ के कई अस्बाब होते हैं, अगर उन अस्बाब को ख़त्म कर दिया जाए तो वोह मरज़ भी ख़त्म हो सकता है, लिहाज़ा **तूले अमल** के अस्बाब व इ़लाज पेशे ख़िदमत हैं :

(1).....लम्बी उम्मीदों का पहला सबब **हुब्बे दुन्या** (या'नी दुन्या की मह़ब्बत) है। जब बन्दा दुन्या से इस क़दर मानूस हो जाए कि दुन्यावी ख़्वाहिशात, लज़्ज़तों और मुआ़मलात का जुदा होना उस के दिल पर ना गवार गुज़रे तो उस का दिल उस मौत के बारे में ग़ौरो फ़िक्र से रुक जाता है जो दुन्यवी ख़्वाहिशात व लज़्ज़तों से जुदाई का सबब है। जो चीज़ इन्सान को नापसन्द होती है उसे ख़ुद से दूर करने की कोशिश करता है जब कि येही इन्सान बेकार क़िस्म की आरज़ूओं में मसरूफ़ नज़र आता है और चाहता है कि

1.....उ़यूनुल ह़िकायात, जि. 2 स. 348 बित्तसर्रुफ़ क़लील।

www.dawateislami.net

हर काम ख़्वाहिशात के मुताबिक़ हो जाए। लिहाज़ा दुन्या में हमेशा रहना ही उस की **अस्ल चाहत** होती है और इसी वजह से मुसलसल इन्हीं **ख़यालात** में घिरा रहता है और अपने दिल में घर बार, बीवी बच्चे, दोस्त अह्बाब, मालो दौलत और दीगर तमाम अस्बाब को **ज़रूरी** समझता है और फिर इसी सोच पर उस का दिल जम जाता है और यूं मौत को भूल जाता है।

इस सबब का **इलाज** येह है कि क़ियामत के दिन और इस में पहुंचने वाले सख़्त अ़ज़ाब और मिलने वाले बहुत बड़े सवाब पर ईमान लाए और जब इस पर यक़ीने **कामिल** हो जाएगा तो दिल से दुन्या की मह़ब्बत निकल जाएगी क्यूंकि उ़म्दा चीज़ की मह़ब्बत दिल से घटया चीज़ की मह़ब्बत निकाल देती है और जब बन्दा दुन्या को ह़क़ारत और आख़िरत को पसन्दीदा निगाहों से देखेगा तो दुन्या की जानिब तवज्जोह करने में **ना गवारी** मह़सूस करेगा अगर्चे मशरिक़ो मग़रिब की **बादशाहत** ही उसे क्यूं न दे दी जाए। वोह किस त़रह़ दुन्या पर ख़ुश होगा या उस के दिल में दुन्या की मह़ब्बत जड़ बना सकेगी? जब कि उस के दिल में तो आख़िरत पर ईमान पुख़्ता हो चुका है। हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करते हैं कि दुन्या को हमारी नज़रों में ऐसी ही वुक़्अ़त दे जैसी उस ने अपने नेक बन्दों की नज़रों में दी।

(2).....लम्बी उम्मीदों का दूसरा सबब **जहालत** है। जहालत या तो यूं पाई जाती है कि इन्सान अपनी **जवानी** पर भरोसा कर के येह समझ बैठता है कि जवानी में **मौत** नहीं आएगी और बेचारा इस बात पर ग़ौर नहीं कर पाता कि शहर भर के बुढ़ों को शुमार किया जाए,

www.dawateislami.net

तो उन की ता'दाद मर्दों के दसवें हिस्से को भी न पहुंचेगी और ता'दाद कम होने की वजह येही है कि ज़ियादा तर लोग जवानी में ही मर जाते हैं। एक बुढ्ढा मरता है तो हज़ार बच्चे और जवान मर रहे होते हैं या जहालत यूं पाई जाती है कि **सिहहत मन्द** रहने की वजह से मौत नहीं आएगी और अचानक मौत आने को एक आध वाकिआ शुमार करता है और येही उस की जहालत है कि येह एक वाकिआ नहीं है और अगर एक आध वाकिआ शुमार कर भी लिया जाए तो बीमारी का अचानक ज़ाहिर हो जाना कुछ मुश्किल नहीं क्यूंकि हर बीमारी अचानक आ सकती है और जब इन्सान अचानक बीमार हो सकता है तो अचानक मौत का आना ज़रा भी मुश्किल नहीं।

इस का **इलाज** येह है कि अपना ज़ेहन यूं बनाए कि दूसरे जिस तरह मरते हैं मैं भी मरूंगा, मेरा जनाज़ा भी उठाया जाएगा और कब्र में डाल दिया जाएगा शायद मेरी कब्र को ढांप देने वाली सिलें तय्यार हो चुकी होंगी। इस गफ़्लत से छुटकारा हासिल न करना और यूं टाल मटोल करते रहना सरासर **जहालत है।**(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(17)...सूए ज़न (या'नी बद गुमानी)

सूए ज़न या'नी बद गुमानी की ता'रीफ़ :

शैखे तरीकत अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी**

(1) احیاء العلوم، کتاب ذکر الموت، بیان السبب ـــ الخ، ج۵، ص۲۰۱، ۲۰۲ ماخوذا۔

www.dawateislami.net

रज़वी ज़ियाई دامت برکاتھم العالیہ बद गुमानी की ता'रीफ़ करते हुवे फ़रमाते हैं :"बद गुमानी से मुराद येह है कि बिला दलील दूसरे के बुरे होने का दिल से ए'तिक़ादे जाज़िम (या'नी यक़ीन) करना।"(1)

आयते मुबारका :

अल्लाह عزوجل कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِیْرًا مِّنَ الظَّنِّ٘-اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّ لَا تَجَسَّسُوْا وَ لَا یَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًاؕ-اَیُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ یَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِیْهِ مَیْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُؕ-وَ اتَّقُوا اللّٰهَؕ-اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِیْمٌ(۱۲)﴾ (پ۲۶، الحجرات:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"ऐ ईमान वालों बहुत गुमानों से बचो बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है और ऐब न ढूंढो और एक दूसरे की ग़ीबत न करो क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए तो येह तुम्हें गवारा न होगा और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है।"*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद **मुह़म्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी علیہ رحمۃ اللہ الھادی **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "मोमिने सालेह़ के साथ बुरा गुमान ममनूअ़ है, इसी त़रह़ उस का कोई कलाम सुन कर फ़ासिद मा'ना मुराद लेना बा वुजूद येह कि उस के दूसरे सह़ीह़ मा'ना मौजूद हों और मुसलमान का ह़ाल उन के मुवाफ़िक़ हो, येह भी गुमाने बद में दाख़िल है। सुफ़्यान सौरी رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया गुमान दो त़रह़ का है, एक वोह कि दिल में आए और ज़बान से भी कह दिया जाए, येह अगर मुसलमान पर बदी के साथ है गुनाह है, दूसरा येह कि दिल

(1).....शैत़ान के बा'ज़ हथयार, स. 32।

www.dawateislami.net

में आए और ज़बान से न कहा जाए, येह अगर्चे गुनाह नहीं मगर इस से भी दिल ख़ाली करना ज़रूर है।

मस्अला : गुमान की कई क़िस्में हैं, **एक वाजिब** है वोह अल्लाह के साथ अच्छा गुमान रखना **एक मुस्तहब** वोह मोमिने सालेह के साथ नेक गुमान, **एक ममनूअ व हराम** वोह अल्लाह के साथ बुरा गुमान करना और मोमिन के साथ बुरा गुमान करना, **एक जाइज़** वोह फ़ासिके मो'लिन के साथ ऐसा गुमान करना जैसे अफ़्आल उस से ज़ुहूर में आते हों।"

हदीसे मुबारका : मोमिन की बद गुमानी अल्लाह से बद गुमानी :

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से रिवायत है कि **ख़ातिमुल मुर्सलीन, रहमतुल्लिल आलमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने अपने भाई के मुतअल्लिक़ बद गुमानी की बेशक उस ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से बद गुमानी की, क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है : ﴿اِجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ﴾ (پ۲۶، الحجرات:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"बहुत गुमानों से बचो।"* (1)

बद गुमानी का हुक्म :

तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत्बूआ 64 सफ़्हात पर मुश्तमिल रिसाले "**बद गुमानी**" सफ़्हा 21 पर है : "किसी शख़्स के दिल में किसी के बारे में बुरा गुमान आते ही उसे गुनहगार क़रार नहीं दिया जाएगा क्यूंकि महज़ दिल में बुरा ख़याल

1 ......كنز العمال، كتاب الاخلاق، ظن السوء، الجزء: ٣، ج٢، ص ١٩٩، حديث: ٧٥٨٢۔

www.dawateislami.net

आ जाने की बिना पर सज़ा का हक़दार ठहराने का मतलब किसी इन्सान पर उस की ताक़त से ज़ाइद बोझ डालना है और येह बात शरई तक़ाज़े के ख़िलाफ़ है।" अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है : ﴿لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا﴾(پ۳،البقرۃ:۲۸۶) *तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "अल्लाह किसी जान पर बोझ नहीं डालता मगर उस की ताक़त भर।"*

बद गुमानी के ह़राम होने की दो सूरतें :

(1).....**बद गुमानी को दिल पर जमा लेना :** शारेह़े बुख़ारी अ़ल्लामा **बदरुद्दीन ऐ़नी** عَلَيْهِ رَحمَةُاللّٰهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : "गुमान वोह ह़राम है जिस पर गुमान करने वाला मुसिर हो (या'नी इस्रार करे) और उसे अपने दिल पर जमा ले, न कि वोह गुमान जो दिल में आए और क़रार न पकड़े।"(1)

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "(मुसलमान से) बद गुमानी भी इसी त़रह़ ह़राम है जिस त़रह़ ज़बान से बुराई करना ह़राम है। लेकिन बद गुमानी से मुराद येह है कि दिल में किसी के बारे में बुरा यक़ीन कर लिया जाए, रहे दिल में पैदा होने वाले ख़दशात व वस्वसे तो वोह मुआ़फ़ हैं बल्कि शक भी मुआ़फ़ है।"

मज़ीद लिखते हैं : "बद गुमानी के पुख़्ता होने की पहचान येह है कि मज़नून (जिस से गुमान रखा जाए) के बारे में तुम्हारी क़ल्बी कैफ़िय्यत तब्दील हो जाए, तुम्हें उस से नफ़रत मह़सूस होने लगे, तुम उस को बोझ समझो, उस की इ़ज़्ज़त व इकराम और उस के लिये फ़िक्र मन्द होने के बारे में सुस्ती करने लगो। नबिय्ये अकरम

(1).....عمدۃ القاری، کتاب البر والصلۃ، باب ماینھی۔۔۔الخ، ج۱۵، ص۲۱۸، تحت الحدیث:۶۰۶۵۔

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम कोई बद गुमानी कर बैठो तो उस पर जमे न रहो।"(1) या'नी उसे अपने दिल में जगह न दो, न किसी अ़मल के ज़रीए़ उस का इज़्हार करो और न आ'ज़ा के ज़रीए़ उस बद गुमानी को पुख़्ता करो।(2)

मसलन शैत़ान ने किसी शख़्स के दिल में किसी नेक शख़्स के बारे में रियाकारी का गुमान डाला तो उस इस्लामी भाई ने इस गुमान को फ़ौरन झटक दिया और उस मुसलमान के बारे में मुख़्लिस होने का हुस्ने ज़न क़ाइम कर लिया तो अब उस की गिरफ़्त नहीं होगी और न ही वोह गुनहगार होगा। इस के बर अ़क्स अगर दिल में बद गुमानी आने के बा'द उस को न झुटलाया और वोह बद गुमानी उस के दिल में क़रार पकड़े रही ह़त्ता कि यक़ीन के दरजे पर पहुंच गई कि फ़ुलां शख़्स रियाकार ही है तो अब बद गुमानी करने वाला गुनाहगार होगा चाहे इस बारे में ज़बान से कुछ न बोले।

(2).....**बद गुमानी को ज़बान पर ले आना या इस के तक़ाज़े पर अ़मल कर लेना :** अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی लिखते हैं : "शक या वह्म की बिना पर मोअमिनीन से बद गुमानी इस सूरत में ह़राम है जब उस का असर आ'ज़ा पर ज़ाहिर हो या'नी उस के तक़ाज़े पर अ़मल कर लिया जाए मसलन उस बद गुमानी को ज़बान से बयान कर दिया जाए।"(3)

अ़ल्लामा सय्यिद मह़मूद आलूसी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی लिखते हैं : "जब बद गुमानी ग़ैर इख़्तियारी हो तो जिस चीज़ की मुमानअ़त है,

---

1 ......معجم کبیر، باب من اسمہ الحارث، ج ۳، ص ۲۲۸، حدیث: ۳۲۲۷ ملتقطاً
2 ......احیاء العلوم، کتاب آفات اللسان، بیان تحریم الغیبۃ بالقلب، ج ۳، ص ۱۸۶۔
3 ......الحدیقۃ الندیۃ، الخلق الرابع والعشرون من ۔۔۔ الخ، ج ۲، ص ۱۳ ملخصًا۔

www.dawateislami.net

वोह उस के तक़ाज़े के मुताबिक़ अ़मल करना है या'नी मज़्नून (या'नी जिस के बारे में दिल में गुमान आए उस) को ह़क़ीर जानना या उस की ऐब गोई करना या उस बद गुमानी को बयान कर देना।"(1)

मसलन किसी ने दा'वत की और दा'वत में न पहुंचने वाले शख़्स ने मुलाक़ात होने पर अपना कोई उ़ज़्र पेश किया मगर दा'वत करने वाले के दिल में शैत़ान ने वस्वसा डाला कि येह झूट बोल रहा है और उस ने इस गुमान की पैरवी करते हुवे फ़ौरन बोल दिया कि तुम झूट बोल रहे हो तो ऐसी बद गुमानी ह़राम है।(2)

बद गुमानी क्यूं ह़राम है ?

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : "**बद गुमानी** के ह़राम होने की वजह येह है कि दिल के भेदों को सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला जानता है, लिहाज़ा तुम्हारे लिये किसी के बारे में **बुरा गुमान** रखना उस वक़्त तक जाइज़ नहीं जब तक तुम उस की बुराई इस त़रह़ ज़ाहिर न देखो कि उस में तावील (या'नी बचाव की दलील) की गुन्जाइश न रहे, पस उस वक़्त तुम्हें ला मुह़ाला (या'नी नाचार) उसी चीज़ का यक़ीन रखना पड़ेगा जिसे तुम ने जाना और देखा है और अगर तुम ने उस की बुराई को न अपनी आंखों से देखा और न ही कानों से सुना मगर फिर भी तुम्हारे दिल में उस के बारे में बुरा गुमान पैदा हो तो समझ जाओ कि येह बात तुम्हारे दिल में शैत़ान ने डाली है, उस वक़्त तुम्हें चाहिये कि दिल

---

1 ......روح المعانی، پ ۲۶، الحجرات، تحت الآیۃ: ۱۲، ج ۲۶، ص ۴۲۹ ملخصاً

2 .....बद गुमानी, स. 21 बित्तसर्रुफ़ क़लील।

www.dawateislami.net

में आने वाले उस **गुमान को झुटला दो** क्यूंकि येह (बद गुमानी) सब से बड़ा फ़िस्क़ है।" मज़ीद लिखते हैं : "यहां तक कि अगर किसी शख़्स के मुंह से शराब की बू आ रही हो तो उस को शरई ह़द लगाना जाइज़ नहीं क्यूंकि हो सकता है कि उस ने शराब का घूंट भरते ही कुल्ली कर दी हो या किसी ने उसे ज़बरदस्ती शराब पिला दी हो, जब येह सब एह़तिमालात (या'नी शुबुहात) मौजूद हैं तो (सुबूते शरई के बिग़ैर) मह़ज़ क़ल्बी ख़यालात की बिना पर तस्दीक़ कर देना और उस मुसलमान के बारे में (शराबी होने की) **बद गुमानी** करना जाइज़ नहीं है।"(1)

ह़िकायत : बद गुमानी करने वाले सौदागर की तौबा :

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अस्अ़द याफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى के दौर के) एक साह़िबे इल्मो फ़ज़्ल के ह़वाले से बयान करते हैं कि बग़दाद में एक सौदागर था जो औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى की शान में बद कलामी किया करता था। कुछ अ़र्से बा'द मैं ने उसी शख़्स को औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى की सोह़बत में देखा और किसी ने मुझे बताया कि इस ने अपनी सारी दौलत इन्हीं पर लुटा दी है। मैं ने उस सौदागर से इस तब्दीली की वजह दरयाफ़्त की तो उस ने बताया कि मैं ग़लत़ी पर था और इस का एह़सास मुझे इस त़रह़ हुवा कि एक मरतबा जुमुआ़ की नमाज़ के बा'द मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى को देखा कि बहुत जल्दी में मस्जिद से निकल रहे हैं। मैं ने सोचा कि

---

(1) احیاء العلوم، کتاب آفات اللسان، بیان تحریم الغیبۃ بالقلب، ج۳، ص ۱۸۶۔

www.dawateislami.net

देखूं तो सही येह शख़्स बड़ा सूफ़ी कहलाता है और थोड़ी देर के लिये मस्जिद में रुकने को तय्यार नहीं। सब कुछ छोड़ छाड़ कर उन के पीछे पीछे चलने लगा ताकि देखूं कि वोह कहां जाते हैं? सय्यिदुना बिशर हाफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बाज़ार में गए, नान बाई से नर्म नर्म रोटियां ख़रीदीं। मैं ने सोचा सूफ़ी साहिब को देखिये अपने लिये नर्म नर्म रोटियां ले रहे हैं। इस के बा'द आप ने कबाब वाले से एक दिरहम के कबाब ख़रीदे। येह देख कर मेरा ग़ुस्सा और ज़ियादा बढ़ गया। वहां से वोह हल्वाई की दुकान पर पहुंचे और एक दिरहम का फ़ालूदा लिया। मैं ने दिल में ठान ली कि इन्हें ख़रीदने दो, जब येह इसे खाने बैठेंगे तो मैं इन का मज़ा किर किरा करूंगा।

सब चीज़ें ख़रीदने के बा'द उन्हों ने जंगल की राह ली। मैं ने सोचा इन्हें बैठ कर खाने के लिये शायद सब्ज़ाज़ार और पानी की तलाश है चुनान्चे, मैं उन के पीछे लगा रहा हत्ता कि अ़स्र के वक़्त आप एक गाऊं की मस्जिद में पहुंचे, जहां एक बीमार आदमी मौजूद था। आप उस के सिरहाने बैठ कर उसे खाना खिलाने लगे। मैं थोड़ी देर के लिये वहां से चला गया और गाऊं की सैर को निकल गया। जब मैं वापस लौटा तो सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی वहां नहीं थे। मैं ने उस बीमार से आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बारे में पूछा तो उस ने बताया कि वोह तो बग़दाद चले गए। मैं ने पूछा : "बग़दाद यहां से कितनी दूर है?" उस ने बताया : "तक़रीबन 120 मील।" मेरी ज़बान से निकला : "اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّاۤ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ" मुझे अपने किये पर बहुत

www.dawateislami.net

पछतावा हुवा। मेरे पास इतने पैसे न थे कि सुवारी पर जाऊं और न जिस्म में इतनी सकत कि पैदल जा सकूं। फिर उस बीमार शख़्स ने मुझे मश्वरा दिया कि सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى के वापस तशरीफ़ लाने तक यहीं रहो।" चुनान्चे, मैं दूसरे जुमुआ तक वहीं रुका रहा। अगले जुमुअ़तुल मुबारक सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى खाना ले कर दोबारा बीमार के पास पहुंचे। जब आप उसे खाना खिला चुके तो उस ने मेरे मुतअ़ल्लिक़ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बताते हुवे कहा : "ऐ अबू नस्र ! येह शख़्स गुज़श्ता जुमुअ़तुल मुबारक से आप के पीछे यहां आया था और हफ़्ता भर से यहीं पड़ा हुवा है, इसे वापस पहुंचा दीजिये।" सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى ने जलाल भरी नज़रों से मेरी त़रफ़ देखा और पूछा : "तुम मेरे साथ क्यूं आए थे ?" मैं ने कहा : "हुज़ूर ! मुझ से ग़लती हो गई।" फ़रमाया : "मेरे पीछे पीछे चले आओ।" मैं उन के पीछे चलता रहा ह़त्ता की मग़रिब के वक़्त हम शहर के क़रीब जा पहुंचे। उन्हों ने मेरे मह़ल्ले के बारे में पूछा और मेरे बताने के बा'द फ़रमाने लगे : "जाओ और दोबारा ऐसा न करना।" मैं ने उसी वक़्त से औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के बारे में बद गुमानी से तौबा की और उन की सोह़बते बा बरकत इख़्तियार कर ली और اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इसी पर क़ाइम भी रहूंगा।(1)

बद गुमानी के सात इलाज :

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद **इल्यास अ़त्तार**

(1) ......روض الرياحين، الحكاية السابعة والثلاثون بعد المئتين، ص٢١٨ ملخصاً۔

www.dawateislami.net

क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**शैतान के बा'ज़ हथयार**" सफ़हा **34** से बद गुमानी के सात **इलाज** पेशे ख़िदमत हैं :

(1)....**मुसलमान की ख़ूबियों पर नज़र रखिये :** मुसलमानों की ख़ामियों की टटोल के बजाए उन की **ख़ूबियों पर नज़र रखिये**, जो उन के मुतअ़ल्लिक़ **हुस्ने ज़न** रखता है उस के दिल में राह़तों का बसेरा और जिस पर शैत़ान का हथयार काम कर जाए और वोह **बद गुमानी** की बुरी आ़दत में मुब्तला हो जाए, उस के दिल में वह़शतों का डेरा होता है।

(2)....**बद गुमानी से तवज्जोह हटा दीजिये :** जब भी किसी मुसलमान के बारे में दिल में **बुरा गुमान** आए तो उसे झटक दीजिये और उस के अ़मल पर **अच्छा गुमान** क़ाइम करने की कोशिश फ़रमाइये। **मसलन** किसी इस्लामी भाई को ना'त या बयान सुनते हुवे रोता देख कर आप के दिल में उस के मुतअ़ल्लिक़ **रियाकारी** की बद गुमानी पैदा हो तो फ़ौरन उस के **इख़्लास** से रोने के बारे में हुस्ने ज़न क़ाइम कर लीजिये। ह़ज़रते सय्यिदुना **मक्हुल दिमश्क़ी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "जब तुम किसी को रोता देखो तो खुद भी रोओ और उसे रियाकार न समझो, मैं ने एक दफ़्अ़ा किसी शख़्स के बारे में येह ख़याल किया तो मैं **एक साल** तक रोने से मह़रूम रहा।"(1)

ख़ुदा ! बद गुमानी की आ़दत मिटा दे
मुझे हुस्ने ज़न का तू आ़दी बना दे

---

(1)......تنبيه المغترين، الباب الثانى فى جملة اخرى۔۔۔الخ، ومن اخلاقهم رقة قلوبهم۔۔۔الخ، ص۱۰۷۔

www.dawateislami.net

(3).....**ख़ुद नेक बनिये ताकि दूसरे भी नेक नज़र आएं : अपनी** इस्लाह़ की कोशिश जारी रखिये क्यूंकि जो ख़ुद **नेक** हो वोह दूसरों के बारे में भी **नेक गुमान** (या'नी अच्छे ख़यालात) रखता है जब कि जो ख़ुद बुरा हो उसे दूसरे भी **बुरे** ही दिखाई देते हैं। अ़रबी मक़ूला है : **اِذَا سَاءَ فِعْلُ الْمَرْءِ سَاءَتْ ظُنُوْنُه** **या'नी** जब किसी के काम बुरे हो जाएं तो उस के गुमान (या'नी ख़यालात) भी बुरे हो जाते हैं।(1)

इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن नक़्ल फ़रमाते हैं : "**ख़बीस गुमान ख़बीस दिल ही से निकलता है।**"(2)

मेरा तन सफ़ा हो मेरा मन सफ़ा हो
ख़ुदा ! हुस्ने ज़न का ख़ज़ाना अ़ता हो

(4).....**बुरी सोह़बत बुरे गुमान पैदा करती है : बुरी सोह़बत** से बचते हुवे **नेक सोह़बत** इख़्तियार कीजिये, जहां दूसरी बरकतें मिलेंगी वहीं **बद गुमानी** से बचने में भी मदद ह़ासिल होगी। ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : **صُحْبَةُ الْاَشْرَارِ تُوْرِثُ سُوْءَ الظَّنِّ بِالْاَخْيَار** या'नी बुरों की सोह़बत अच्छों से **बद गुमानी** पैदा करती है।(3)

बुरी सोह़बतों से बचा या इलाही
तू नेकों का संगी बना या इलाही

---

1 ......فیض القدیر، حرف الھمزۃ، ج ۳، ص ۱۵۷۔

2 .....फ़तावा रज़विय्या, जि. 22 स. 400।

3 ......الرسالۃ القشیریۃ، باب الصحبۃ، ص ۳۲۸۔

www.dawateislami.net

(5).....**किसी से बद गुमानी हो तो अ़ज़ाबे इलाही से खुद को डराइये :** जब भी दिल में किसी मुसलमान के बारे में **बद गुमानी** पैदा हो तो खुद को **बद गुमानी के अन्जाम और अ़ज़ाबे इलाही** से डराइये । पारह 15 सूरए बनी इस्राईल की आयत नम्बर 36 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इब्रत निशान है :

﴿وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ وَ الْبَصَرَ وَ الْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ۝۳۶﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उस बात के पीछे न पड़ जिस का तुझे इल्म नहीं बेशक कान और आंख और दिल इन सब से सुवाल होना है ।"*

किसी के बारे में बद गुमानी पैदा हो तो अपने आप को इस त़रह़ डराइये कि बड़ा अ़ज़ाब तो दूर रहा मेरी ह़ालत तो येह है कि **जहन्नम** का सब से हलका अ़ज़ाब भी बरदाश्त नहीं कर सकूंगा । आह ! हलका अ़ज़ाब भी किस क़दर हौलनाक है ! बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "दोज़ख़ियों में सब से हलका अ़ज़ाब जिस को होगा उसे **आग के जूते** पहनाए जाएंगे जिन से उस का **दिमाग़ खौलने** लगेगा ।"(1)

जहन्नम से मुझ को बचा या इलाही
मुझे नेक बन्दा बना या इलाही

(6).....**किसी के बारे में बद गुमानी पैदा हो तो अपने लिये दुआ़ कीजिये :** जब भी किसी के बारे में "बद गुमानी" होने लगे तो अपने प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में यूं दुआ़ मांगिये : या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ तेरा येह कमज़ोर बन्दा दुन्या व आख़िरत

---

(1)......بخاری، کتاب الرقاق، باب صفة الجنة والنار، ج ۴، ص ۲۶۲، حدیث: ۶۵۶۱۔

www.dawateislami.net

की तबाही से बचने के लिये इस **बद गुमानी** से अपने दिल को बचाना चाहता है। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे शैतान के ख़तरनाक हथयार "**बद गुमानी**" से बचा ले। मुझे "**हुस्ने ज़न**" जैसी अ़ज़ीम दौलत अ़ता फ़रमा दे, ऐ मेरे प्यारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे अपने ख़ौफ़ से मा'मूर दिल, रोने वाली आंख और लरज़ने वाला बदन अ़ता फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(7).....**जिस के लिये बद गुमानी हो उस के लिये दुआ़ए ख़ैर कीजिये :** जब भी किसी इस्लामी भाई के लिये दिल में **बद गुमानी** आए तो उस के लिये दुआ़ए ख़ैर कीजिये और उस की इ़ज़्ज़त व इकराम में इज़ाफ़ा कर दीजिये। **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي इरशाद फ़रमाते हैं : "जब तुम्हारे दिल में किसी मुसलमान के बारे में **बद गुमानी** आए तो तुम्हें चाहिये कि उस की **रिआ़यत** (या'नी इ़ज़्ज़त व आव-भगत वग़ैरा) में इज़ाफ़ा कर दो और उस के लिये दुआ़ए ख़ैर करो, क्यूंकि येह चीज़ शैतान को गुस्सा दिलाती है और उसे (या'नी शैतान को) तुम से **दूर भगाती** है, यूं शैतान दोबारा तुम्हारे दिल में **बुरा गुमान** डालते हुवे डरेगा कि कहीं तुम फिर अपने भाई की रिआ़यत और उस के लिये दुआ़ए ख़ैर में **मश्ग़ूल** न हो जाओ।"(1)

मुझे ग़ीबत व चुग़ली व बद गुमानी
की आफ़ात से तू बचा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 80)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ......احياء العلوم، كتاب آفات اللسان، بيان تحريم الغيبة بالقلب، ج ٣، ص ١٨٧ـ

www.dawateislami.net

(18)....इनादे ह़क़

इनादे ह़क़ की ता'रीफ़

"किसी (दीनी) बात को दुरुस्त जानने के बा वुजूद हटधर्मी की बिना पर इस की मुख़ालफ़त करना इनादे ह़क़ कहलाता है।"(1)

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿ اَلْقِيَا فِیْ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِیْدٍۙ(۲۴) ﴾ (پ۲۶، ق:۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हुक्म होगा तुम दोनों जहन्नम में डाल दो हर बड़े नाशुक्रे हटधर्म को।"*

ह़दीसे मुबारका : दो आंखों वाली जहन्नमी गर्दन :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन जहन्नम की आग से एक गर्दन निकलेगी, जिस की दो आंखें होंगी जिन से वोह देखेगी, दो कान होंगे जिन से वोह सुनेगी, एक ज़बान भी होगी जिस से वोह कलाम करेगी और वोह कहेगी : मैं तीन त़रह़ के लोगों को अ़ज़ाब देने के लिये मुसल्लत़ की गई हूं : सरकश और हटधर्म पर, जो अल्लाह के साथ **ग़ैरुल्लाह** को मिलाए और तस्वीरें बनाने वालों पर।"(2)

1 ......الحدیقة الندیة، الخلق الثانی والخمسون۔۔۔الخ، ج۲، ص۱۶۲۔

2 ......ترمذی، کتاب صفة جهنم، باب ما جاء فی صفة النار، ج۴، ص۲۵۹، حدیث:۲۵۸۳۔

www.dawateislami.net

इनादे ह़क़ के बारे में तम्बीह :

इनादे ह़क़ या'नी किसी दीनी बात को दुरुस्त जानने के बा वुजूद हटधर्मी की बिना पर इस की मुख़ालफ़त करना निहायत ही मज़्मूम, क़बीह़ और ह़राम फ़े'ल है, नीज़ **इनादे ह़क़** दुन्या व आख़िरत की तबाही व बरबादी का भी सबब है लिहाज़ा हर मुसलमान को इस से बचना लाज़िम है।

ह़िकायत : सब से पहले शैत़ान ने इनादे ह़क़ किया :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सब से पहले शैत़ान ने **इनादे ह़क़** किया। चुनान्चे, तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 97 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "तकब्बुर" सफ़्ह़ा 10 पर है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तख़्लीक़ (या'नी पैदाइश) के बा'द तमाम फ़िरिश्तों और इब्लीस (शैत़ान) को हुक्म दिया कि उन को सजदा करें तो तमाम फ़िरिश्तों ने हुक्मे ख़ुदावन्दी की ता'मील में सजदा किया। फ़िरिश्तों में सब से पहले सजदा करने वाले ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना मीकाईल عَلَیْہِ السَّلَام, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना इस्राफ़ील عَلَیْہِ السَّلَام, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना इ़ज़्राईल عَلَیْہِ السَّلَام और फिर दीगर मुक़र्रब फ़िरिश्ते थे। फ़िरिश्तों ने येह सजदा जुमुआ़ के रोज़ वक़्ते ज़वाल से अ़स्र तक किया। मगर इब्लीस लईन ने इन्कार कर दिया और तकब्बुर कर के

www.dawateislami.net

काफ़िरों में से हो गया। जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इब्लीस से उस के इन्कार का सबब दरयाफ़्त फ़रमाया तो वोह अकड़ कर कहने लगा :

﴿اَنَا خَیْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِیْ مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهٗ مِنْ طِیْنٍ ۝۷۶﴾ (پ۲۳، ص:۷۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"मैं इस से बेहतर हूं, तू ने मुझे आग से बनाया और इसे मिट्टी से पैदा किया।"*

इस से इब्लीस की फ़ासिद मुराद येह थी कि अगर ह़ज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام आग से पैदा किये जाते और मेरे बराबर भी होते जब भी मैं इन्हें सजदा न करता चे जाए कि इन से बेहतर हो कर इन को सजदा करूं। (مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ) इब्लीस की इस सरकशी, नाफ़रमानी और **तकब्बुर** पर उस की ह़सीन सूरत ख़त्म हो गई और वोह बद शक्ल रू सियाह हो गया, उस की नूरानिय्यत सल्ब कर ली गई। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُهٗ ने इब्लीस को अपनी बारगाह से धुतकारते हुवे इरशाद फ़रमाया :

﴿فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِیْمٌ ۝۷۷﴾ (پ۲۳، ص:۷۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"तू जन्नत से निकल जा कि तू रांधा (ला'नत किया) गया।"*

इनादे ह़क़ के पांच अस्बाब व इलाज :

(1).....**इनादे ह़क़** का पहला सबब तकब्बुर है, येह ही शैत़ान की बरबादी का सबब बना। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा तकब्बुर के नुक़्सानात और तबाहकारियों पर ग़ौर करे कि तकब्बुर करने वाला शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को सख़्त नापसन्द है, तकब्बुर करने वाले शख़्स से खुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नफ़रत

www.dawateislami.net

का इज़्हार फ़रमाया : तकब्बुर करने वाले को बद तरीन शख़्स क़रार दिया गया है, मुतकब्बिरीन को कल बरोज़े क़ियामत ज़िल्लत व रुस्वाई का सामना होगा, रह़मते इलाही से मह़रूम होने वाले बद नसीबों में मुतकब्बिर भी होगा, मुतकब्बिर के लिये सब से बड़ी रुस्वाई येह होगी कि वोह जन्नत में इब्तिदाअन दाख़िल न हो सकेगा, वग़ैरा वग़ैरा। जब बन्दा **तकब्बुर** के इन नुक़्सानात को अपने पेशे नज़र रखेगा तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **तकब्बुर** जैसे मूज़ी मरज़ से नजात ह़ासिल होगी और इस की वजह से **इनादे ह़क़** जैसे मूज़ी मरज़ से बचाव की सूरत भी पैदा हो जाएगी। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

(2).....**इनादे ह़क़** का दूसरा सबब **नाजाइज़ ज़राएअ़ से मालो दौलत ह़ासिल करने की ख़्वाहिश है।** इस का **इलाज** येह है कि बन्दा वक़्ती फ़ाइदे के लिये अ़ज़ाबे आख़िरत के दाइमी नुक़्सान को पेशे नज़र रखे, अपने अन्दर ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा करे, रह़मते इलाही पर भोरोसा करते हुवे ह़क़ बात की ताईद करे ख़्वाह इस में दुन्यवी नुक़्सान ही क्यूं न उठाना पड़े।

(3).....**इनादे ह़क़** का तीसरा सबब **हुब्बे दुन्या** है। इसी वजह से बन्दा **जाइज़** को **नाजाइज़** और **नाजाइज़** को **जाइज़** साबित करने पर उतर आता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपने आप को **हुब्बे दुन्या** से बचाए, **हुब्बे दुन्या** की मज़म्मत को पेशे नज़र रखे।

(4).....**इनादे ह़क़** का चौथा सबब **ख़ुद पसन्दी** है। जो अपनी राए या मश्वरे को "**ह़तमी**" और "**नाक़ाबिले रद्द**" समझते हैं बा'ज़ अवक़ात ह़क़ बात की ताईद करना उन के लिये मुश्किल हो जाता है और वोह इसे अपनी अना का मस्अला बना कर ह़क़ बात की मुख़ालफ़त शुरूअ़ कर देते हैं। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा

www.dawateislami.net

अपनी राए या मश्वरे को कभी भी कामिल तसव्वुर न करे, बल्कि जब भी मश्वरा पेश करे तो इसे नाक़िस समझ कर ही पेश करे कि क़बूल हो गया तो ख़ुशी होगी और रद्द कर दिया गया तो अफ़्सोस नहीं होगा कि पहले ही नाक़िस समझ कर पेश किया था।

(5).....**इनादे ह़क़** का पांचवां सबब **त़लबे शोहरत** है। किसी बात का ह़क़ होना रोज़े रोशन की त़रह़ वाज़ेह़ हो इस के बा वुजूद मुख़ालफ़त में अपना बात़िल और ग़लत़ मौक़िफ़ पेश करने से भी शोहरत ह़ासिल की जाती है। इस का इलाज येह है कि बन्दा त़लबे शोहरत की मज़म्मत पर ग़ौर करे कि जो शख़्स भी त़लबे शोहरत के लिये कोई अ़मल करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ज़लीलो रुस्वा फ़रमाएगा, त़लबे शोहरत एक ऐसा मूज़ी मरज़ है जो बहुत से गुनाहों का सबब बनता है। वग़ैरा वग़ैरा। इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ त़लबे शोहरत से नजात ह़ासिल होगी और फिर इनादे ह़क़ से भी छुटकारा ह़ासिल होगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْاعَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(19)..... इसरारे बात़िल

इसरारे बात़िल की ता'रीफ़ :

"नसीह़त क़बूल न करना, अहले ह़क़ से बुग़्ज़ रखना और नाह़क़ या'नी बात़िल और ग़लत़ बात पर डट कर अहले ह़क़ को अज़िय्यत देने का कोई मौक़अ़ हाथ से न जाने देना **इसरारे बात़िल** कहलाता है।[1]

(1) ......الحدیقۃ الندیۃ، الثالث والخمسون ــــ الخ، ج ۲، ص ۲۴ ا ملتقطاً

www.dawateislami.net

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۙ﴿۷﴾ يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۸﴾﴾ (پ۲۵، الجاثية: ۷، ۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"ख़राबी है हर बड़े बोहतान हाए गुनहगार के लिये, **अल्लाह** की आयतों को सुनता है कि उस पर पढ़ी जाती हैं फिर हट पर जमता है ग़ुरूर करता गोया इन्हें सुना ही नहीं तो उसे ख़ुश ख़बरी सुनाओ दर्दनाक अ़ज़ाब की ।"*

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मौलाना मुफ़्ती **अह़मद यार ख़ान नईमी** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى अपनी तफ़्सीर "**नूरुल इरफ़ान**" में "फिर हट पर जमता है" के तह़्त फ़रमाते हैं : "मा'लूम हुवा कि तकब्बुर व हटधर्मी ईमान से रोकने वाली आड़ हैं ।"

ह़दीसे मुबारका : गुनाहों पर डटे रहने वाले की हलाकत :

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हलाकत व बरबादी है उन के लिये जो नेकी की बात सुन कर उसे झुटला देते हैं और उस पर अ़मल नहीं करते और हलाकत व बरबादी है उन के लिये जो जान बूझ कर गुनाहों पर डटे रहते हैं ।"(1)

---

(1) ......مسند احمد، مسند عبداللہ بن عمرو بن العاص، ج ۲، ص ۶۸۲، حدیث: ۷۰۶۲۔

www.dawateislami.net

इसरारे बातिल के बारे में तम्बीह :

इसरारे बातिल या'नी नसीहत क़बूल न करना, अहले हक़ से बुग़्ज़ रखना और नाहक़ या'नी बातिल और ग़लत बात पर डट कर अहले हक़ को अज़िय्यत देने का कोई मौक़अ़ हाथ से न जाने देना निहायत ही मज़्मूम, क़बीह या'नी बुरा और हराम फ़े'ल है, इस से हर मुसलमान को बचना लाज़िम है।

हिकायत : बद बख़्ती की अनोखी मिसाल :

मन्क़ूल है कि फ़िरऔन ज़मीन में सरकशी के साथ साथ खुदाई का भी दा'वेदार था। उस ने अपनी क़ौम को दरयाए नील के ज़रीए गुमराह कर रखा था वोह यूं कि जब **"यौमे नैरोज़"** (या'नी आतिश परस्तों की ईद का दिन) आता और दरयाए नील इन्तिहाई ठाठें मारने लगता तो लोगों में येह ए'लान कर दिया जाता कि तुम्हारे लिये फ़िरऔन ने दरयाए नील को पुर जोश कर दिया है लिहाज़ा तुम उसे सजदा करो तो जाहिल लोग उस की बात पर यक़ीन करते हुवे उसे सजदा करते। एक साल दरयाए नील का पानी कम होना शुरूअ़ हुवा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इसे पुर शोर मोजें मारने की इजाज़त न दी। लोग भूक के सबब निढाल हो गए और क़हत में मुब्तला हो गए। चुनान्चे, पूरी क़ौम इकठ्ठी हो कर फ़िरऔन के पास गई और उस से मुतालबा किया कि "हमारे अहलो इयाल, अवलाद और जानवर सब हलाक हुवे जा रहे हैं, अगर तुम हमारे खुदा हो तो दरयाए नील का पानी जारी कर दो।" तो उस ने जवाब दिया "ऐसा ही होगा।" फिर वोह ऊनी लिबास, बालों की बनी हुई टोपी और राख भरी थैली ले कर एक "मक़्यास" नामी मशहूरो मा'रूफ़ वीरान जज़ीरे की तरफ़

www.dawateislami.net

चला गया और हुक्म दिया कि उस की रिआ़या और क़ौम में से कोई शख़्स उस के पीछे न आए।

फिर उस ने जज़ीरे में दाख़िल होते ही शाही लिबास और सर का ताज उतार कर ऊनी लिबास और बालों से बनी हुई टोपी पहन ली और राख ज़मीन पर बिखेर कर उस पर लौट पोट होने लगा और रोते हुवे बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में सजदा रैज़ हो गया और अपना चेहरा राख पर लत-पत करते हुवे कहने लगा : "ऐ मेरे मालिको मौला ! मैं जानता हूं कि तू ही ज़मीनो आस्मान का मालिक और अव्वलीन व आख़िरीन का मा'बूद है। लेकिन मुझ पर बद बख़्ती ग़ालिब आ गई, मैं तेरी नाफ़रमानी व सरकशी में बहुत आगे बढ़ गया। तू मेरा मा'बूद है और मैं तेरा बन्दा हूं, तू ने मेरे मुतअ़ल्लिक़ जो फ़ैसला फ़रमा दिया, फ़रमा दिया। मौला ! अब मुझे मेरी क़ौम में ज़लीलो रुस्वा न कर और तू ही सब से बढ़ कर करम फ़रमाने वाला है।"

अभी फ़िरऔ़न की बात पूरी न हुई थी कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसी वक़्त दरयाए नील को जारी होने का हुक्म दे दिया और उसे फ़रमाया कि जहां तक फ़िरऔ़न जाए वोह भी उस के साथ साथ चले। चुनान्चे, फ़िरऔ़न वापस अपनी क़ौम में इस ह़ालत में जा रहा था कि दरया का पानी उस के दामन को तर करते हुवे साथ साथ जा रहा था और लोग अपनी आस्तीनों को पानी और कीचड़ में डुबो कर ख़ुशी से एक दूसरे को मार रहे थे। उस वक़्त से अब तक मिस्र में ख़ुशी मनाने का येह त़रीक़ा राइज है और अहले मिस्र इसे यौमे नवरोज़ या'नी दरयाए नील की त़ुग़्यानी का दिन कहते हैं।(1)

---

1 ....हि़कायतें और नसीह़तें, स. 373।

www.dawateislami.net

इसरारे बातिल के सात अस्बाब व इलाज :

(1).....**इसरारे बातिल** का पहला सबब **तकब्बुर** है कि अकसर तकब्बुर के सबब ही बन्दा इसरारे बातिल जैसी आफ़त में मुब्तला हो जाता है, इसी सबब की वजह से शैतान इसरारे बातिल में मुब्तला हो कर दाइमी ज़िल्लत व ख़्वारी का हक़दार क़रार पाया। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा शैतान के अन्जाम पर ग़ौर करे, तकब्बुर का **इलाज** करे और अपने अन्दर आजिज़ी पैदा करे।

तकब्बुर की तबाह कारियों, इस के **इलाज** और इस से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मतबूआ किताब "**तकब्बुर**" का मुतालआ निहायत मुफ़ीद है।

(2)....**इसरारे बातिल** का दूसरा सबब **बुग़्ज़ो कीना** है। इसी सबब की वजह से बन्दा हक़ क़बूल करने में पसो पेश से काम लेता है और अपनी ग़लती को तस्लीम नहीं करता। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن की सीरते तय्यिबा के इस पहलू को मद्दे नज़र रखे कि बुज़ुर्गाने दीन येह नहीं देखते थे कि "कौन कह रहा है ?" बल्कि येह देखते थे कि "क्या कह रहा है ?" नीज़ अपने सीने को मुसलमानों के बुग़्ज़ो कीने से पाक रखने की कोशिश करे।

(3).....**इसरारे बातिल** का तीसरा सबब **ज़ाती मफ़ादात की हिफ़ाज़त** है। क्यूंकि जब बन्दा येह महसूस करता है कि "हक़ की ताईद करने से ज़ाती मफ़ादात ख़तरे में पड़ जाएंगे जब कि ग़लत काम पर अड़े रहने से मेरी ज़ात को ख़ातिर ख़्वाह फ़ाइदा होगा।" येह ज़ेहन में रख कर बन्दा इस ग़लत काम के लिये अपनी तमाम तर तवानाई सर्फ़ करने पर तय्यार हो जाता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और हक़ की ताईद को ज़ाती मफ़ादात

www.dawateislami.net

पर मुक़द्दम रखे और येह ज़ेहन बनाए कि "ज़ाती फ़ाइदे के लिये ग़लत़ बात पर डटे रहने से आ़रिज़ी नफ़्अ़ तो ह़ासिल करना मुमकिन है लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी के सबब रह़मते इलाही और उस की दीगर ने'मतों से मह़रूम कर दिया गया तो मेरा क्या बनेगा?"

(4).....**इसरारे बात़िल** का चौथा सबब त़लबे **शोहरत व नामवरी** है। बा'ज़ लोग **बदनामी** के ज़रीए़ नाम कमा कर सस्ती शोहरत ह़ासिल करते हैं चूंकि इसरारे बात़िल भी सस्ती शोहरत ह़ासिल करने का ज़रीआ़ है लिहाज़ा इस में ज़ियादा रग़बत पाई जाती है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा येह सोचे कि "ग़लत़ बात पर डटे रहने से लोगों में वक़्ती शोहरत तो मिल जाएगी लेकिन उन के दिलों से मेरी क़द्रो मन्ज़िलत बिल्कुल ख़त्म हो जाएगी, क्या येह बेहतर नहीं कि अपनी ग़लत़ी तस्लीम कर के और ह़क़ बात को तस्लीम कर के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल की जाए? इस त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे दुन्या व आख़िरत में सुर्ख़रू फ़रमाएगा।"

(5).....**इसरारे बात़िल** का पांचवां सबब **हां में हां मिलाने और चापलूसी करने की आ़दत है।** इस का **इलाज** येह है कि बन्दा तमल्लुक़ (या'नी चापलूसी) के नुक़्सानात पेशे नज़र रखे कि चापलूसी एक क़बीह़ और मा'यूब काम है, चापलूस शख़्स की कोई भी दिल से इ़ज़्ज़त नहीं करता, चापलूसी का अन्जाम ज़िल्लतो रुस्वाई है, चापलूसी की वजह से बसा अवक़ात किसी मुसलमान का शदीद नुक़्सान भी हो जाता है, चापलूसी में अकसर अवक़ात बन्दा झूट जैसे कबीरा गुनाह में मुब्तला हो जाता है। वग़ैरा वग़ैरा

www.dawateislami.net

(6).....**इसरारे बातिल का छटा सबब इताअते इलाही को तर्क कर देना है ।** इस का **इलाज** येह है कि बन्दा इताअते इलाही को मुक़द्दम रखे क्यूंकि बा'ज़ सूरतों में इस सबब का नतीजा ईमान की बरबादी की सूरत में ज़ाहिर होता है ।

(7).....**इसरारे बातिल** का सातवां सबब **इत्तिबाए नफ़्स** है क्यूंकि बा'ज़ अवक़ात बन्दा अपनी अनानिय्यत की वजह से ग़लत बात पर जम जाता है और किसी तरह भी इस से दस्त बरदार होने के लिये तय्यार नहीं होता । इस का **इलाज** येह है कि बन्दा नफ़्स की इस चाल को ना काम बनाते हुवे हक़ बात की ताईद करे और इस हवाले से अपने नफ़्स की तरबिय्यत भी करे और वक़्तन फ़ वक़्तन नफ़्स का मुहासबा भी करता रहे ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(20).....मक्रो फ़रेब

मक्रो फ़रेब की ता'रीफ़ :

"वोह फ़े'ल जिस में उस फ़े'ल के करने वाले का बातिनी इरादा उस के ज़ाहिर के ख़िलाफ़ हो **मक्र** कहलाता है ।"(1)

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَ اِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ؕ وَ يَمْكُرُوْنَ وَ يَمْكُرُ اللّٰهُ ؕ وَ اللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ۝۳۰﴾ (پ ۹، الانفال: ۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"और ऐ महबूब याद करो जब काफ़िर तुम्हारे साथ मक्र करते थे कि तुम्हें बन्द (क़ैद) कर लें या शहीद कर दें या*

---

(1) ......فیض القدیر، حرف المیم، ج ۶، ص ۲۵۸، تحت الحدیث: ۹۲۳۳۔

www.dawateislami.net

निकाल (जिला वतन कर) दें और वोह अपना सा मक्र करते थे और **अल्लाह** *अपनी खुफ़्या तदबीर फ़रमाता था और* **अल्लाह** *की खुफ़्या तदबीर सब से बेहतर ।"*

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद **मुहम्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِی **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "इस में उस वाक़िए़ का बयान है जो हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने ज़िक्र फ़रमाया कि कुफ़्फ़ारे कुरैश दारुन्नदवा (कमेटी घर) में रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निस्बत मश्वरा करने के लिये जम्अ़ हुवे और इब्लीसे लईन एक बुड्ढे की सूरत में आया और कहने लगा कि मैं शैखे़ नज्द हूं, मुझे तुम्हारे इस इजतिमाअ़ की इत्तिलाअ़ हुई तो मैं आया मुझ से तुम कुछ न छुपाना, मैं तुम्हारा रफ़ीक़ हूं और इस मुआ़मले में बेहतर राए से तुम्हारी मदद करूंगा, इन्हों ने उस को शामिल कर लिया और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ राए ज़नी शुरूअ़ हुई, अबुल बख़्तरी ने कहा कि मेरी राए येह है कि **मुहम्मद** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को पकड़ कर एक मकान में क़ैद कर दो और मज़बूत़ बन्दिशों से बान्ध दो, दरवाज़ा बन्द कर दो, सिर्फ़ एक सूराख़ छोड़ दो जिस से कभी कभी खाना पानी दिया जाए और वहीं वोह हलाक हो कर रह जाए। इस पर शैत़ाने लईन जो शैखे़ नज्दी बना हुवा था बहुत नाखु़श हुवा और कहा निहायत नाक़िस राए है, येह ख़बर मश्हूर होगी और उन के अस्ह़ाब आएंगे और तुम से मुक़ाबला करेंगे और उन को तुम्हारे हाथ से छुड़ा लेंगे। लोगों ने कहा : शैखे़ नज्दी ठीक कहता है फिर हिश्शाम बिन अ़म्र खड़ा हुवा और उस ने कहा मेरी राए येह है कि

www.dawateislami.net

उन को (या'नी मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को) ऊंट पर सुवार कर के अपने शहर से निकाल दो फिर वोह जो कुछ भी करें उस से तुम्हें कुछ ज़रर नहीं। इब्लीस ने इस राए को भी नापसन्द किया और कहा जिस शख़्स ने तुम्हारे होश उड़ा दिये और तुम्हारे दानिशमन्दों को हैरान बना दिया उस को तुम दूसरों की तरफ़ भेजते हो, तुम ने उस की शीरीं कलामी, सैफ़ ज़बानी, दिल कशी नहीं देखी है अगर तुम ने ऐसा किया तो वोह दूसरी क़ौम के कुलूब तस्ख़ीर कर के उन लोगों के साथ तुम पर चढ़ाई करेंगे। अहले मजमअ़ ने कहा शैख़े नज्दी की राए ठीक है इस पर अबू जहल खड़ा हुवा और उस ने येह राए दी कि क़ुरैश के हर हर ख़ानदान से एक एक आ़ली नसब जवान मुन्तख़ब किया जाए और उन को तेज़ तलवारें दी जाएं, वोह सब यकबारगी ह़ज़रत पर ह़म्ला आवर हो कर क़त्ल कर दें तो बनी हाशिम क़ुरैश के तमाम क़बाइल से न लड़ सकेंगे। ग़ायत येह है कि ख़ून का मुआ़वज़ा देना पड़े वोह दे दिया जाएगा। इब्लीसे लईन ने इस तजवीज़ को पसन्द किया और अबू जहल की बहुत ता'रीफ़ की और इसी पर सब का इत्तिफ़ाक़ हो गया। ह़ज़रते जिब्रील عَلَیۡہِ السَّلَام ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर वाक़िआ़ गुज़ारिश किया और अ़र्ज़ किया कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी ख़्वाबगाह में शब को न रहें, **अल्लाह** तआ़ला ने इज़्न दिया है कि मदीनए त़य्यिबा का अ़ज़्म फ़रमाएं। ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को शब में अपनी ख़्वाबगाह में रहने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि हमारी चादर शरीफ़ ओढ़ो तुम्हें कोई ना गवार बात पेश न आएगी और ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दौलत सराए अक़्दस से बाहर तशरीफ़ लाए और एक मुश्त ख़ाक दस्ते

www.dawateislami.net

मुबारक में ली और आयत : ﴿اِنَّا جَعَلْنَا فِیْۤ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا﴾ पढ़ कर मुह़ासरा करने वालों पर मारी, सब की आंखों और सरों पर पहुंची, सब अन्धे हो गए और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को न देख सके और हुज़ूर मअ़ अबू बक्र सिद्दीक़ के ग़ारे सौर में तशरीफ़ ले गए और ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को लोगों की अमानतें पहुंचाने के लिये मक्कए मुकर्रमा में छोड़ा । मुशरिकीन रात भर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दौलत सराए अक़्दस का पहरा देते रहे, सुब्ह़ को जब क़त्ल के इरादे से ह़म्ला आवर हुवे तो देखा कि ह़ज़रते अ़ली हैं, इन से हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दरयाफ़्त किया गया कि कहां हैं ? इन्हों ने फ़रमाया कि हमें मा'लूम नहीं । तो तलाश के लिये निकले, जब ग़ार पर पहुंचे तो मकड़ी के जाले देख कर कहने लगे कि अगर इस में दाख़िल होते तो येह जाले बाक़ी न रहते । हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस ग़ार में तीन रोज़ ठहरे फिर मदीनए त़य्यिबा रवाना हुवे ।"

ह़दीसे मुबारका : मक्रो फ़रेब करने वाला मलऊ़न है :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो किसी मोमिन को ज़रर पहुंचाए या उस के साथ मक्र और धोकाबाज़ी करे वोह मलऊ़न है ।"(1)

मक्रो फ़रेब का हुक्म :

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 207 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "जहन्नम के ख़त़रात"

1 ......ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی الخیانة والغش، ج۳، ص۳۷۸، حدیث:۱۹۴۸۔

www.dawateislami.net

सफ़ह़ा 171 पर है : "मुसलमानों के साथ मक्र या'नी धोकाबाज़ी और दग़ाबाज़ी करना क़त़्अ़न ह़राम और गुनाहे कबीरा है जिस की सज़ा जहन्नम का अ़ज़ाबे अ़ज़ीम है।"

ह़िकायत : बाबा दिल देखता है !!!

एक इस्लामी भाई ने बताया कि तक़रीबन 1998 की बात है कि मैं जूतों की दुकान में नोकरी करता था। एक दिन सुब्ह़ के वक़्त एक शख़्स दुकान में आया जिस ने गले में मोतियों वाली माला डाली हुई थी और सर पर रूमाल ओढ़ा हुवा था, लिबास भी साफ़ सुथरा था, हाथों में कई अंगूठियां थीं। वोह आ कर सेठ की सामने वाली कुरसी पर बैठ गया। इस से पहले कि हम उस से कुछ मा'लूम करते, सेठ ने ख़ुद ही उस से पूछा : "बाबा क्या चाहिये ?" मगर उस ने कोई जवाब न दिया बल्कि सेठ को घूरने लगा, सेठ के बार बार पूछने के बा वुजूद वोह बाबा ख़ामोश ही रहा। सेठ ने एक बार फिर पूछा : "बाबा क्या लेना है ?" अब वोह बाबा धीमे और पुर अस्रार लहजे में बोला : "बाबा तेरी क़मीस लेगा, बोल देगा ?" सेठ घबरा गया और बोला : "बाबा मेरी क़मीस पुरानी है मैं नई क़मीस मंगवा देता हूं।" मगर बाबा बोला : "नहीं, तेरी ही क़मीस लेगा, बोल देगा ?"

आख़िर सेठ ने परेशान हो कर क़मीस उतारना चाही तो वोह बाबा फ़ौरन बोला : "रहने दे ! बाबा दिल देखता है।" फिर कुछ देर ख़ामोश रह कर बोला : "बाबा तेरे जूते लेगा, बोल ! देगा ?" सेठ बोला : "बाबा ! मेरे जूते बहुत पुराने हैं नए जूते दे देता हूं।" वोह बोला : "नहीं ! बाबा तेरे ही जूते लेगा, बोल ! देगा ?" सेठ अपने

www.dawateislami.net

जूते देने लगा तो वोह एक दम बोला : "नहीं ! बाबा दिल देखता है, अपने जूते अपने पास रख, बाबा दिल देखता है।" फिर वोह बाबा कुछ देर टिक टिकी बांधे घूर घूर कर सेठ को देखता रहा, सेठ ने घबरा कर पूछा : "बाबा क्या चाहिये ?" बोला : "जो मांगूंगा, देगा ?" सेठ बोला : "बाबा आप बोलो क्या लेना है ?" वोह कुछ देर ख़ामोश रहा, फिर बोला : "अगर मैं बोलूं कि अपनी जेब के सारे पैसे दे दे तो क्या तू बाबा को दे देगा ?" अब सेठ चौंका मगर शायद उस शख़्स ने कोई अ़मल किया हुवा था, चुनान्चे, सेठ ने जेब में हाथ डाला और जेब की तमाम रक़म निकाल कर उस के सामने रख दी। उस बाबा नुमा शख़्स ने नोट हाथ में लिये और कुछ देर उलट पलट कर देखता रहा फिर बोला : "बाबा दिल देखता है, अपने पैसे वापस ले, बाबा पैसों का क्या करेगा ?" बाबा दिल देखता है।"

येह कहते हुवे तमाम नोट वापस कर दिये और ख़ामोशी से टिकटिकी बांधे सेठ को घूरने लगा और कुछ देर बा'द मुस्कुरा कर बोला : "अगर बाबा तुझ से तेरी तिजोरी की सारी रक़म मांगे तो क्या तू बाबा को दे देगा ? बोल ! बाबा दिल देखता है, बोल ! दे देगा ?" चूंकि वोह बाबा नुमा पुर अस्रार शख़्स तमाम चीज़ें मांगने के बा'द **बाबा दिल देखता है** ! ! ! कह कर वापस कर चुका था लिहाज़ा सेठ ने बिला ताख़ीर तिजोरी ख़ाली कर दी। उस शख़्स ने अपना रूमाल बिछा दिया और रक़म उस में रखने लगा। फिर उस को बांध कर गांठ लगा दी और मुस्कुरा कर बोला : "अगर बाबा येह सारी रक़म उठा कर ले जाए तो तुझे बुरा तो नहीं लगेगा ?" सेठ बोला : "बाबा ! मैं ने पैसे आप को दिये हैं, अब आप जो चाहें करें।" वोह फिर बोला : "नहीं तू येह सोच रहा है कि कहीं येह रक़म ले न जाए, बाबा दिल

www.dawateislami.net

देखता है, बाबा दिल देखता है, बाबा दिल देखता है।" येह कहते कहते वोह पुर अस्रार अन्दाज़ में पोटली हाथ में लिये दुकान से नीचे उतर गया। हम सब सकते के आ़लम में कुछ देर एक दूसरे को देखते रहे फिर एक दम सेठ चीख़ा : "अरे ! वोह शख़्स मुझे लूट कर चला गया, उसे पकड़ो।" मगर बाहर जा कर देखा तो वोह पुर अस्रार शख़्स ग़ाइब हो चुका था, बहुत तलाश किया लेकिन वोह न मिला, यूं सेठ उस के मक्रो फ़रेब में आ कर हज़ारों की रक़म गंवा बैठा।(1)

मक्र या'नी फ़रेब के चार अस्बाब व इलाज :

(1)....**मक्रो फ़रेब** का पहला और सब से बड़ा सबब **हि़र्स** है कि बन्दा मालो दौलत या किसी दुन्यवी शै के हुसूल की हि़र्स के सबब मक्रो फ़रेब करता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा हुब्बे माल की मज़म्मत पर ग़ौर करे, येह मदनी ज़ेह्न बनाए कि येह माल फ़ानी है और फ़ानी शै के लिये किसी को धोका दे कर एक गुनाह अपने सर ले लेना अ़क्ल मन्दी नहीं बल्कि ह़माक़त है।

(2)....**मक्रो फ़रेब** का दूसरा सबब **जहालत** है कि बन्दा मक्रो फ़रेब के ग़ैर शरई होने, इस के वबाल और आफ़ात से ना बलद होता है इस लिये वोह मक्र से काम लेता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा मक्र के मुतअ़ल्लिक़ शरई अह़काम और इस के दुन्यवी व उख़रवी नुक़्सानात सीखे और अपने आप को इस से बचाने की कोशिश करे।

(3)....**मक्रो फ़रेब** का तीसरा सबब **क़िल्लते ख़शिय्यत** है कि जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ दिल में न हो तो बन्दा बड़े बड़े गुनाहों के इरतिकाब से भी बाज़ नहीं आता। इस का **इलाज** येह है

---

1 ....आदाबे मुर्शिदे कामिल, स. 205।

www.dawateislami.net

कि बन्दा अपने दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ पैदा करे, क़ब्रो हश्र के अ़ज़ाबात को याद करे और अपना मदनी ज़ेहन बनाए कि आज दुन्या में कोई छोटी सी भी तक्लीफ़ पहुंचे तो दर्द से बिलबिला उठते हैं कल बरोज़े क़ियामत रब عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी की सूरत में जहन्नम का दर्दनाक अ़ज़ाब कैसे बरदाश्त करेंगे ?

(4)...**मक्रो फ़रेब** का चौथा सबब **एह़तिरामे मुस्लिम न होना** है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपने दिल में एह़तिरामे मुस्लिम पैदा करे, इस मूज़ी मरज़ से नजात की दुआ़ करे और अपना येह मदनी ज़ेहन बनाए कि अब मुसलमानों के साथ मक्र कर के इन को नुक़्सान पहुंचाने के बजाए इन्हें फ़ाइदा पहुंचा कर "خَيْرُ النَّاسِ مَنْ يَّنْفَعُ النَّاسَ" या'नी लोगों में सब से बेहतर वोह है जो उन को नफ़्अ़ पहुंचाए। का मिस्दाक़ बनने की कोशिश करूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(21)......ग़दर (बद अ़हदी)

बद अ़हदी की ता'रीफ़ :

मुआ़हदा करने के बा'द इस की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करना ग़दर या'नी बद अ़हदी कहलाता है।[1]

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّ هُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ۝﴾ (پ۱۰، الانفال: ۵۵، ۵۶)

1 ......فیض القدیر، حرف الثاء، ج۳، ص۴۱۶، تحت الحدیث: ۳۴۹۴۔

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"बेशक सब जानवरों में बदतर **अल्लाह** के नज़दीक वोह हैं जिन्हों ने कुफ़्र किया और ईमान नहीं लाते, वोह जिन से तुम ने मुआ़हदा किया था फिर हर बार अपना अ़हद तोड़ देते हैं और डरते नहीं।"*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद **मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "**اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ**" और इस के बा'द की आयतें बनी कुरैज़ा के यहूदियों के ह़क़ में नाज़िल हुईं जिन का रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़हद था कि वोह आप से न लड़ेंगे, न आप के दुश्मनों की मदद करेंगे, उन्हों ने अ़हद तोड़ा और मुशरिकीने मक्का ने जब रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जंग की तो उन्हों ने हथयारों से इन (मुशरिकीन) की मदद की फिर ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मा'ज़िरत की, कि हम भूल गए थे और हम से कुसूर हुवा फिर दोबारा अ़हद किया और इस को भी तोड़ा। **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें सब जानवरों से बदतर बताया क्यूंकि कुफ़्फ़ार सब जानवरों से बदतर हैं और बा वुजूद कुफ़्र के अ़हद शिकन भी हों तो और भी ख़राब।

और "डरते नहीं" के तह़्त फ़रमाते हैं : "ख़ुदा से न अ़हद शिकनी के ख़राब नतीजे से और न उस से शरमाते हैं बा वुजूद येह कि अ़हद शिकनी हर आ़क़िल के नज़्दीक शर्मनाक जुर्म है और अ़हद शिकनी करने वाला सब के नज़्दीक बे ए'तिबार हो जाता है। जब उस की बे ग़ैरती इस दरजे पहुंच गई तो यक़ीनन वोह जानवरों से बदतर हैं।"

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

हदीसे मुबारका : बद अहदी करने वाला मलऊन है :

हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह** बिन उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो मुसलमान अहद शिकनी और वा'दा ख़िलाफ़ी करे, उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और फ़िरिश्तों और तमाम इन्सानों की ला'नत है और उस का न कोई फ़र्ज़ क़बूल होगा न नफ़्ल।"(1)

ग़दर या'नी बद अहदी का हुक्म :

"अहद की पासदारी करना हर मुसलमान पर लाज़िम है और ग़दर या'नी बद अहदी करना हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।"(2)

हिकायत : बद अहदी क़त्लो ग़ारत का सबब कैसे बनी ?

हुदैबिय्या के सुल्ह नामे में एक शर्त येह भी दर्ज थी कि क़बाइले अरब में से जो क़बीला कुरैश के साथ मुआहदा करना चाहे वोह कुरैश के साथ मुआहदा करे और जो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुआहदा करना चाहे वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मुआहदा करे। इसी बिना पर क़बीलए बनी बक्र ने कुरैश से और क़बीलए बनी खज़ाआ ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बाहमी इमदाद का मुआहदा कर लिया। येह दोनों क़बीले मक्कए मुकर्रमा के क़रीब ही आबाद थे लेकिन इन दोनों में अर्सए दराज़ से सख़्त अदावत और मुख़ालफ़त चली आ रही थी। एक मुद्दत से कुफ़्फ़ारे

---

1 ......بخاری، کتاب الجزیۃ والموادعۃ، باب اثم من عاھد ثم غدر، ج ۲، ص ۳۷۰، حدیث ۳۱۷۹۔

2 ......الحدیقۃ الندیۃ، الخلق الحادی والعشرون۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۲۵۲۔

www.dawateislami.net

कुरैश और दूसरे क़बाइले अ़रब के कुफ़्फ़ार मुसलमानों से जंग करने में अपना सारा ज़ोर सर्फ़ कर रहे थे लेकिन सुल्हे हुदैबिय्या की बदौलत जब अम्न क़ाइम हुवा तो क़बीलए बनी बक्र ने क़बीलए बनी ख़ज़ाआ के बद बातिन लोगों से अपनी पुरानी अ़दावत का इन्तिक़ाम लेना चाहा और अपने ह़लीफ़ कुफ़्फ़ारे कुरैश से मिल कर **बद अ़हदी** करते हुवे क़बीलए बनी ख़ज़ाआ पर ह़म्ला कर दिया। इस ह़म्ले में कुफ़्फ़ारे कुरैश के तमाम रुअसा और बड़े बड़े सरदारों ने बनी ख़ज़ाआ के लोगों को क़त्ल किया। बेचारे बनी ख़ज़ाआ इस ख़ौफ़नाक ज़ालिमाना ह़म्ले की ताब न ला सके और अपनी जान बचाने के लिये ह़रमे का'बा में पनाह लेने के लिये भागे। बनी बक्र के अ़वाम ने तो ह़रम में तलवार चलाने से हाथ रोक लिया और ह़रमे इलाही का एह़तिराम किया लेकिन बनी बक्र का सरदार "नौफ़ल" इस क़दर जोशे इन्तिक़ाम में आपे से बाहर हो चुका था कि वोह ह़रम में भी बनी ख़ज़ाआ को निहायत बे दर्दी के साथ क़त्ल करता रहा और चिल्ला चिल्ला कर अपनी क़ौम को ललकारता रहा कि फिर येह मौक़अ़ कभी हाथ नहीं आ सकता। चुनान्चे, इन दरिन्दा सिफ़त ख़ूंख़्वार दरिन्दों ने **बद अ़हदी के बातिनी मरज़ में मुब्तला हो कर** ह़रमे इलाही के एह़तिराम को भी ख़ाक में मिला दिया और ह़रमे का'बा की हुदूद में निहायत ही ज़ालिमाना तौर पर बनी ख़ज़ाआ का ख़ून बहाया और कुफ़्फ़ारे कुरैश ने भी इस क़त्लो ग़ारत और कश्तो ख़ून में ख़ूब हिस्सा लिया।[1]

ग़दर (बद अ़हदी) के चार अस्बाब व इलाज :

(1).....**ग़दर** या'नी बद अ़हदी का पहला सबब क़िल्लते ख़शिय्यत है कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ ही न हो तो बन्दा कोई

1.....مدارج النبوت، ج ۲، ص ۲۸۲، ۲۸۱ ملخصاً۔

www.dawateislami.net

भी गुनाह करने से बाज़ नहीं आता। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा फ़िक्रे आख़िरत का ज़ेह्न बनाए, अपने आप को रब عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी से डराए, अपनी मौत को याद करे, येह मदनी ज़ेह्न बनाए कि कल बरोज़े क़ियामत ख़ुदा न ख़्वास्ता इस ग़दर या'नी बद अ़हदी के सबब रब عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हो गया तो मेरा क्या बनेगा ?

(2).....**ग़दर** या'नी बद अ़हदी का दूसरा सबब हुब्बे दुन्या है कि बन्दा किसी न किसी दुन्यवी ग़रज़ की ख़ातिर बद अ़हदी जैसे क़बीह़ फ़े'ल का इर्तिकाब कर बैठता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा हुब्बे दुन्या की मज़म्मत पर ग़ौर करे कि दुन्या की मह़ब्बत कई बुराइयों की जड़ है, जो शख़्स हुब्बे दुन्या जैसे मूज़ी मरज़ का शिकार हो जाता है उस के लिये दीगर कई गुनाहों के दरवाज़े खुल जाते हैं, यक़ीनन समझदार वोही है जो जितना दुन्या में रहना है उतना ही दुन्या में मश्ग़ूलिय्यत रखे और फ़क़त़ अपनी उख़रवी ज़िन्दगी की तय्यारी करता रहे।

(3).....**ग़दर** या'नी बद अ़हदी का तीसरा सबब धोका भी है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा धोके जैसे क़बीह़ फ़े'ल की मज़म्मत पर ग़ौर करे कि जो लोग धोका देते हैं उन के बारे में अह़ादीसे मुबारका में येह वारिद है कि वोह हम में से नहीं। यक़ीनन धोका देना और धोका खाना किसी मुसलमान की शान नहीं, धोका देही से काम लेने वाला बिल आख़िर ज़िल्लत से दो चार होता है, जब लोगों पर उस की धोका देही का पर्दा चाक हो जाता है तो वोह किसी को मुंह दिखाने के क़ाबिल नहीं रहता, धोका देने वाला शख़्स रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में भी नदामत व शर्मिन्दगी से दोचार होगा।

www.dawateislami.net

(4).....**ग़दर** या'नी बद अ़हदी का चौथा सबब जहालत है कि जब बन्दा ग़दर जैसी मूज़ी बीमारी के वबाल से ही वाक़िफ़ न होगा तो इस से बचेगा कैसे ? इस का **इलाज** येह है कि बन्दा ग़दर की तबाह कारियों पर ग़ौर करे कि बद अ़हदी करना मोमिनों की शान नहीं है, हुज़ूर नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और दीगर बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने कभी किसी के साथ बद अ़हदी नहीं फ़रमाई, बद अ़हदी निहायत ही ज़िल्लतो रुस्वाई का सबब है, बद अ़हदी करने वाले शख़्स के लिये कल बरोज़े क़ियामत उस की बद अ़हदी के मुताबिक़ झन्डा गाड़ा जाएगा। बद अ़हदी का एक **इलाज** येह भी है कि बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में यूं दुआ़ करे : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे बद अ़हदी जैसे मूज़ी मरज़ से नजात अ़ता फ़रमा कि मैं कभी भी किसी मुसलमान के साथ बद अ़हदी न करूं। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّى الله تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(22).... ख़ियानत

ख़ियानत की ता'रीफ़ :

"इजाज़ते शरइय्या के बिग़ैर किसी की अमानत में तसर्रुफ़ करना ख़ियानत कहलाता है।"(1)

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

(1).....عمدة القارى، كتاب الايمان، باب علامات المنافق، تحت الباب: ٢٤، ج١، ص٣٢٨ـ

www.dawateislami.net

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَ الرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْۤا اَمٰنٰتِكُمْ وَ اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ﴾ (پ۹، الانفال:۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"ऐ ईमान वालो* ***अल्लाह*** *व रसूल से दग़ा न करो और न अपनी अमानतों में दानिस्ता ख़ियानत ।"*

हदीसे मुबारका : ख़ियानत मुनाफ़क़त की अ़लामत है :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे हक़ीक़त बुन्याद है : "तीन बातें ऐसी हैं कि जिस में पाई जाएं वोह मुनाफ़िक़ होगा अगर्चे नमाज़, रोज़ा का पाबन्द ही क्यूं न हो : (1) जब बात करे तो झूट बोले (2) जब वा'दा करे तो ख़िलाफ़ वरज़ी करे (3) जब अमानत उस के सिपुर्द की जाए तो ख़ियानत करे ।"(1)

ख़ियानत का हुक्म :

हर मुसलमान पर अमानतदारी वाजिब और ख़ियानत करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ।(2)

हिकायत : ख़ियानत करने वाले का इ़ब्रतनाक अन्जाम :

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की ख़िदमत में कुछ लोग ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की, कि हम सफ़रे ह़ज पर निकले हुवे हैं, मक़ामे सिफ़ाह़ पर हमारे क़ाफ़िले का आदमी फ़ौत हो गया है । हम ने उस के लिये जब क़ब्र खोदी तो एक बहुत बड़ा

---

1 ......مسلم، كتاب الايمان، باب بيان خصال المنافق، ص ٥٠، حديث: ١٠٧۔

2 ......الحديقة الندية، الخلق الثانى والعشرون۔۔۔الخ، ج ١، ص ٦٥٢۔

www.dawateislami.net

काला सांप बैठा नज़र आया, जिस ने क़ब्र को भर रखा था उसे छोड़ कर दूसरी क़ब्र खोदी तो उस में भी वोही सांप नज़र आया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में इस गम्भीर मस्अले के ह़ल के लिये ह़ाज़िर हुवे हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : "येह उस की ख़ियानत की सज़ा है जिस का वोह मुर्तकिब हुवा करता था। उसे उन दोनों में से किसी एक क़ब्र में दफ़्न कर दो, ख़ुदा की क़सम ! अगर इस दुन्या की सारी ज़मीन भी खोद डालोगे तब भी हर जगह येही सूरते ह़ाल होगी।"

बिल आख़िर लोगों ने उसी सांप भरी क़ब्र में उसे दफ़्ना दिया। वापस आ कर उस का सामान उस के घर वालों को दे दिया और उस की बेवा से उस के बुरे आ'माल के बारे में दरयाफ़्त किया तो उस ने बताया कि : "येह खाना बेचता था और उस में ख़ियानत करता था इस त़रह़ कि उस में से अपने घर के लिये कुछ निकाल लेता और फिर कमी पूरी करने के लिये उस में उतनी ही मिलावट कर देता था।"(1)

ख़ियातन के छे अस्बाब व इलाज :

(1).....**ख़ियानत** का पहला सबब **बद निय्यती** है। जिस त़रह़ अच्छी निय्यत अख़्लाक़ व किरदार के लिये **शिफ़ा** और **अकसीर** का दरजा रखती है इसी त़रह़ बद निय्यती का ज़ह्र बन्दे के आ'माल को बे समर बल्कि तबाहो बरबाद कर देता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपनी निय्यत को दुरुस्त रखे और अपना येह ज़ेह्न बनाए कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी ह़ुस्ने निय्यत और ईमानदारी की बदौलत

(1) ......شرح الصدور، باب عذاب القبر، ص ۱۷۴۔

www.dawateislami.net

दुन्या व आख़िरत में कामयाबी अ़ता फ़रमाने पर क़ादिर है लिहाज़ा ख़ियानत कर के दुन्यवी व उख़रवी नुक़्सान करने का क्या फ़ाइदा ?"

(2).....**ख़ियानत** का दूसरा सबब **धोका** देने की आ़दत है। इस का इलाज येह है कि बन्दा अपने ज़ेहन में धोका देही के नुक़्सानात को पेशे नज़र रखे कि धोका देना एक निहायत ही क़बीह़ और बुरा अ़मल है, धोका देने वाले से **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बराअत का इज़्हार फ़रमाया है, धोका देना मोमिन की सिफ़त नहीं है, धोके से जहां वक़ार मजरूह़ होता है वहीं लोगों का ए'तिमाद भी ख़त्म हो जाता है लिहाज़ा एह़तिरामे मुस्लिम का हर दम ख़याल रखे और येह मदनी ज़ेह्न बनाए कि वक़्ती नफ़्अ़ ह़ासिल करने के लिये दाइमी नुक़्सान मौल लेना यक़ीनन अ़क़्लमन्दी नहीं है ?"

(3).....**ख़ियानत** का तीसरा सबब تَوَكُّل عَلَى الله की कमी है। क्यूंकि बन्दा अपने कमज़ोर ए'तिक़ाद की बिना पर येह समझता है कि ख़ियानत का रास्ता इख़्तियार करने में ही मेरी **कामयाबी** है । इस का **इलाज** येह है कि बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर कामिल भरोसा रखे और येह मदनी ज़ेह्न बनाए कि "दुन्या में जो भी रास्ता **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी का सबब बनता हो उस पर चल कर मुझे कभी भी कामयाबी नहीं मिल सकती, लिहाज़ा मैं इस ख़ियानत वाले रास्ते को छोड़ कर दियानत वाले रास्ते को अपनाऊंगा ।"

(4).....**ख़ियानत** का चौथा सबब **नफ़्सानी ख़्वाहिशात की तक्मील** है । इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपने नफ़्स का मुह़ासबा करे, इस के मक्रो फ़रेब से आगाही ह़ासिल करे, इस की

www.dawateislami.net

नाजाइज़ ख़्वाहिशात को तर्क करने का ज़ेह्न बनाए और इस के लिये कोशिश भी करे ताकि ख़ियानत जैसे कबीरा गुनाह से बच सके।

(5).....**ख़ियानत** का पांचवां सबब **मुसलमानों को नुक़्सान देने की आ़दत है,** येह सबब जिन दीगर बातिनी अमराज़ का बाइ़स बनता है इन में से एक ख़ियानत भी है। इस का इलाज येह है कि बन्दा अपने अन्दर मुसलमानों की ख़ैरख़्वाही का जज़्बा पैदा करे और मुसलमानों की बद ख़्वाही के अ़ज़ाबात को पेशे नज़र रखे।

(6).....**ख़ियानत** का छटा सबब **बुरी सोहबत** है। बा'ज़ अवक़ात इन्सान अपने इर्द गिर्द के माहोल की हर ख़ामी व ख़ूबी को क़बूल कर लेता है जिस का असर उस के ज़ाती अख़्लाक़ व किरदार पर होता है ख़ास तौर पर बद अत्वार अफ़राद की बद दियानती से इन्सान बहुत जल्द मुतअस्सिर हो जाता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा नेक, दियानत दार और ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वालों की सोहबत इख़्तियार करे ताकि इस मोहलिक मरज़ के साथ साथ दीगर अख़्लाक़ी बुराइयों से भी अपने आप को बचा सके।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(23)....ग़फ़्लत

ग़फ़्लत की ता'रीफ़ :

"यहां दीनी उमूर में ग़फ़्लत मुराद है या'नी वोह भूल है जो इन्सान पर बेदार मग़ज़ी और एहतियात की कमी के बाइ़स त़ारी होती है।"(1)

(1)......مفردات الفاظ القرآن، ص ۶۰۹۔

www.dawateislami.net

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَ اذْكُرْ رَّبَّكَ فِیْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّ خِیْفَةً وَّ دُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَ الْاٰصَالِ وَ لَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِیْنَ۝۲۰۵﴾ (پ۹، الاعراف:۲۰۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"और अपने रब को अपने दिल में याद करो, ज़ारी (आजिज़ी) और डर से और बे आवाज़ निकले ज़बान से सुब्ह और शाम और ग़ाफ़िलों में न होना।"*

ह़दीसे मुबारका : मुझे तुम पर ग़फ़्लत का ख़ौफ़ है :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बह़रैन से (जिज़्ये का) माल ले कर वापस लौटे और अन्सार ने आप की आमद की ख़बर सुनी तो सब ने सुब्ह़ की नमाज़ हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ अदा की। जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़ारिग़ हुवे तो सारे आप के सामने ह़ाज़िर हो गए। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें देख कर तबस्सुम फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया : "मेरा ख़याल है कि आप लोगों ने अबू उ़बैदा की आमद की ख़बर सुन ली है कि वोह कुछ माल लाए हैं।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसा ही है। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ख़ुश ख़बरी सुना दो और उस की उम्मीद रखो जो तुम्हें ख़ुश कर देगा, पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे तुम पर फ़क़्र (या'नी ग़ुर्बत) का ख़ौफ़ नहीं लेकिन मुझे डर है कि तुम पर दुन्या फैला दी जाएगी जैसा कि तुम से पहली क़ौमों पर फैलाई गई थी,

www.dawateislami.net

पस तुम भी इस दुन्या की ख़ातिर पहले (के) लोगों की तरह बाहम मुक़ाबला करोगे, और येह तुम्हें गफ़्लत में डाल देगी जिस तरह इस ने पिछली क़ौमों को ग़ाफ़िल कर दिया।"(1)

ग़फ़्लत के बारे में तम्बीह :

फ़राइज़ व वाजिबात व सुनने मुअक्कदा की अदाएगी में ग़फ़्लत नाजाइज़ व ममनूअ़ और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, हर मुसलमान को इस से बचना लाज़िम है।

हिकायत : ग़ाफ़िल आ़बिद की ग़फ़्लत से तौबा का इन्आ़म :

हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हुसैन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि हमारा एक पड़ोसी बहुत ज़ियादा इबादत गुज़ार था। वोह इस क़दर नमाज़ें पढ़ा करता था कि बसा अवक़ात मुसलसल क़ियाम के सबब उस के पाउं सूज जाते। ख़ौफ़े ख़ुदा में रोने के सबब उस की बीनाई कमज़ोर हो गई। एक मरतबा उस के घर वालों और लोगों ने मिल कर उसे शादी करने का मश्वरा दिया। येह सुन कर उस ने एक कनीज़ ख़रीद ली। येह कनीज़ नग़्मा सराई की शौक़ीन थी लेकिन उस आ़बिद को येह बात मा'लूम न थी। एक दिन आ़बिद अपनी इबादत गाह में खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था कि कनीज़ ने बुलन्द आवाज़ में गाना शुरूअ़ कर दिया। गाने की आवाज़ सुन कर आ़बिद की नमाज़ में ख़लल आ गया, उस ने इबादत में लगे रहने की बहुत कोशिश की मगर नाकाम रहा। कनीज़ उस से कहने लगी : "मेरे आक़ा ! तुम्हारी जवानी ढलने को है, तुम ने ऐन जवानी में दुन्या की लज़्ज़तों को छोड़ दिया, अब तो मुझ से कुछ फ़ाइदा उठा लो।"

---

(1)......بخاری، کتاب الرقاق، باب مایحذرمن زھرۃ الدنیا۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۵۴۰، حدیث: ۶۴۲۵۔

www.dawateislami.net

येह बात सुन कर आ़बिद पर ग़फ़्लत का पर्दा पड़ गया और वोह इबादत छोड़ कर उस कनीज़ के साथ मश्ग़ूल हो गया। जब उस आ़बिद के भाई को येह बात मा'लूम हुई तो उस ने उसे (नेकी की दा'वत पर मुश्तमिल) एक ख़त़ लिखा जिस का मज़्मून कुछ यूं था :

"अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़मत वाला, येह ख़त़ एक मुशफ़िक़ व नासेह़ और त़बीब दोस्त की त़रफ़ से उस शख़्स की त़रफ़ है जिस से ह़लावते ज़िक्र और तिलावते क़ुरआन की लज़्ज़त सल्ब हो गई, जिस के दिल से ख़ुशूअ़ और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ जाता रहा। मुझे मा'लूम हुवा है कि तुम ने एक कनीज़ ख़रीदी है जिस के बदले अपना "ह़िस्सए आख़िरत" बेच दिया है, तुम ने कसीर को क़लील के बदले और क़ुरआन को नग़्मात के बदले बेच दिया, मैं तुम्हें ऐसी शै से डराता हूं जो लज़्ज़ात को तोड़ने वाली, शहवतों को ख़त्म करने वाली है, जब वोह आएगी तो तुम्हारी ज़बान गुंग हो जाएगी, आ'ज़ा की मज़बूत़ी रुख़्सत हो जाएगी और तुम्हें कफ़न पहनाया जाएगा, तुम्हारे अहलो इयाल और पड़ोसी तुम से वह़शत खाएंगे, मैं तुम्हें उस चिंघाड़ से डराता हूं जब लोग बादशाहे जब्बार عَزَّوَجَلَّ की हैबत से घुटनों के बल गिर जाएंगे, मेरे भाई ! मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब से डराता हूं।"

फिर येह ख़त़ लपेट कर उस आ़बिद के पास भेज दिया। जब आ़बिद को येह ख़त़ मिला तो वोह रक़्सो सुरूर की मह़फ़िल में मश्ग़ूल था। येह ख़त़ पढ़ते ही उस पर ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब कपकपी त़ारी हो गई, उस के मुंह से झाग निकलने लगी, वोह सारी दुन्यवी लज़्ज़त भूल गया, मह़फ़िल से उठा और शराब के बरतन तोड़ डाले।

www.dawateislami.net

कनीज़ को आज़ाद करने के बा'द क़सम उठाई कि "अब न तो कुछ खाना खाऊंगा और न ही सोऊंगा।" बा'दे अज़ां उस के इन्तिक़ाल के बा'द ख़त लिखने वाले भाई ने उसे ख़्वाब में देखा और पूछा : "ما فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" तो उस आबिद ने जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे उस कनीज़ के बदले एक जन्नती कनीज़ (या'नी हूर) अता फ़रमाई है जो मुझे जन्नत की पाकीज़ा शराब येह कह कर पिलाती है कि येह पाकीज़ा शराब उस शराब के बदले में पी लो जो तुम ने दुन्या में अपने रब عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर छोड़ दी थी।"[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(24)....क़स्वत (दिल की सख़्ती)

क़स्वत या'नी दिल की सख़्ती की ता'रीफ़

"मौत व आख़िरत को याद न करने के सबब दिल का सख़्त हो जाना या दिल का इस क़दर सख़्त हो जाना कि इस्तिताअत के बा वुजूद किसी मजबूरे शरई को भी खाना न खिलाए **क़स्वते क़ल्बी** कहलाता है।"[2]

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰی نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ فَوَیْلٌ لِّلْقٰسِیَةِ قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓىٕكَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۲۲﴾﴾ (پ۲۳، الزمر:۲۲)

1 ......كتاب التوابين، ص۲۵۸۔

2 ......الحديقة الندية، الخلق العاشر من ـــ الخ، ج۲، ص۳۸۴،

जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल, जि. 1 स. 386

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"तो क्या वोह जिस का सीना* **अल्लाह** *ने इस्लाम के लिये खोल दिया तो वोह अपने रब की त़रफ़ से नूर पर है उस जैसा हो जाएगा जो संग दिल है तो ख़राबी है उन की जिन के दिल यादे ख़ुदा की त़रफ़ से सख़्त हो गए हैं वोह खुली गुमराही में हैं।"*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद **मुह़म्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "नफ़्स जब ख़बीस होता है तो क़बूले ह़क़ से उस को बहुत दूरी हो जाती है और **ज़िक्रुल्लाह** के सुनने से उस की सख़्ती और कदूरत बढ़ती है जैसे कि आफ़्ताब की गर्मी से मोम नर्म होता है और नमक सख़्त होता है ऐसे ही **ज़िक्रुल्लाह** से मोअमिनीन के क़ुलूब नर्म होते हैं और काफ़िरों के दिलों की सख़्ती और बढ़ती है। **फ़ाइदा :** इस आयत से उन लोगों को इब्रत पकड़ना चाहिये जिन्हों ने **ज़िक्रुल्लाह** को रोकना अपना शिआ़र बना लिया है वोह सूफ़ियों के ज़िक्र को भी मन्अ़ करते हैं, नमाज़ों के बा'द **ज़िक्रुल्लाह** करने वालों को भी रोकते और मन्अ़ करते हैं, ईसाले सवाब के लिये क़ुरआने करीम और कलिमा पढ़ने वालों को भी बिदअ़ती बताते हैं, और इन ज़िक्र की मह़फ़िलों से निहायत घबराते और भागते हैं **अल्लाह** तआ़ला हिदायत दे।"

ह़दीसे मुबारका : दिल की सख़्ती अ़मल को ज़ाएअ़ करने का सबब :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़दी बिन ह़ातिम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "छे चीज़ें अ़मल को ज़ाएअ़ कर देती हैं :

www.dawateislami.net

(1) मख़्लूक़ के उ़यूब की टोह में लगे रहना (2) दिल की सख़्ती (3) दुन्या की महृब्बत (4) ह़या की कमी (5) लम्बी लम्बी उम्मीदें और (6) ह़द से ज़ियादा ज़ुल्म ।''(1)

क़स्वत या'नी दिल की सख़्ती के बारे में तम्बीह :

क़सावत या'नी दिल का सख़्त हो जाना निहायत ही मोहलिक और आ'माल को ज़ाएअ़ करने वाला मरज़ है नीज़ दिल का सख़्त होना बद बख़्ती की अ़लामत है, गुनाहों की कसरत इस का सबबे अ़ज़ीम और मौत व आख़िरत की याद इस का **इलाज** है ।

ह़िकायत : सख़्त दिल डाकू का इ़ब्रत नाक अन्जाम :

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ **अ़ब्दुल्लाह** शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى अपने सफ़र नामे में लिखते हैं कि एक बार मैं शहरे बसरा से एक गाऊं की त़रफ़ जा रहा था । दोपहर के वक़्त अचानक एक ख़ौफ़नाक डाकू हम पर ह़म्ला आवर हो गया । मेरे साथी को उस ने शहीद कर डाला, हमारा तमाम मालो मताअ़ छीन कर मेरे दोनों हाथ रस्सी से बांधे, मुझे ज़मीन पर डाला और फ़रार हो गया । मैं ने जूं तूं हाथ खोले और एक जानिब चल पड़ा मगर परेशानी के आ़लम में रास्ता भूल गया यहां तक कि रात आ गई । एक त़रफ़ आग की रोशनी देख कर मैं उसी सम्त चल पड़ा । कुछ देर चलने के बा'द मुझे एक ख़ैमा नज़र आया । मैं शिद्दते प्यास से निढ़ाल हो चुका था लिहाज़ा ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़े हो कर मैं ने सदा लगाई : ''**अल अ़त़श ! अल अ़त़श !**'' या'नी हाए प्यास ! हाए प्यास !'' इत्तिफ़ाक़ से वोह ख़ैमा उसी संग दिल और

1 ......كنزالعمال، كتاب المواعظ، الفصل السادس، الجزء:١٦، ج٨، ص٣٦، حديث:٤٤٠١٦

www.dawateislami.net

ख़ौफ़नाक डाकू का था जिस ने हम पर हम्ला कर के लूटा था। मेरी पुकार सुन कर पानी के बजाए वोह नंगी तलवार लिये बाहर निकला और इरादा किया कि एक ही वार में मेरा काम तमाम कर दे मगर उस की बीवी आड़े आ गई। मगर वोह डाकू अपनी **क़सावते क़ल्बी** या'नी दिल की सख़्ती के बाइस मजबूर था, अपने इरादे से बाज़ न आया और मुझे घसीटता हुवा दूर जंगल में ले आया। मेरे सीने पर चढ़ गया, मेरे गले पर तलवार रख कर मुझे ज़ब्ह करने ही वाला था कि यका यक झाड़ियों की त़रफ़ से एक शेर दहाड़ता हुवा बर आमद हुवा। शेर को देख कर ख़ौफ़ के मारे डाकू दूर जा गिरा, शेर ने झपट कर उसे चीर फाड़ डाला और झाड़ियों में ग़ाइब हो गया। मैं इस ग़ैबी इमदाद पर ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का शुक्र बजा लाया।(1)

क़सावते क़ल्बी के तीन अस्बाब व इलाज :

(1)....**क़सावते क़ल्बी** का पहला सबब **पेट भर कर खाना** है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जो पेट भर कर खाने का आ़दी हो जाता है उस के बदन पर गोश्त बढ़ जाता है और जिस के बदन पर गोश्त बढ़ जाता है वोह **शहवत परस्त** हो जाता है और जो शहवत परस्त हो जाता है उस के गुनाह बढ़ जाते हैं और जिस के गुनाह बढ़ जाते हैं उस का दिल सख़्त हो जाता है और जिस का दिल सख़्त हो जाता है वोह दुन्या की आफ़तों और रंगीनियों में ग़र्क़ हो जाता है।"(2)

1.....ज़ुल्म का अन्जाम, स. 2।

2.....المنبهات، باب الخماسی، ص ٥٩ـ

www.dawateislami.net

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "राहे आख़िरत पर गामज़न बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن की आदत थी कि वोह हमेशा सालन नहीं खाते थे बल्कि वोह ख़्वाहिशाते नफ़्स की तक्मील से बचते थे क्यूंकि **इन्सान अगर हस्बे ख़्वाहिश लज़ीज़ चीज़ें खाता रहे तो इस से उस के नफ़्स में अकड़ (या'नी ग़ुरूर) और दिल में सख़्ती पैदा होती है,** नीज़ वोह दुन्या की लज़ीज़ चीज़ों से इस क़दर मानूस हो जाता है कि लज़ाइज़े दुन्या की महब्बत उस के दिल में घर कर जाती है और वोह रब्बे काइनात جَلَّ جَلَالُهٗ की मुलाक़ात और उस की बारगाहे आ़ली में हाज़िरी को भूल जाता है, उस के हक़ में दुन्या जन्नत और मौत क़ैद ख़ाना बन जाती है। और जब वोह अपने नफ़्स पर सख़्ती डाले और उस को लज़्ज़तों से महरूम रखे तो दुन्या उस के लिये क़ैद ख़ाना बन जाती और तंग हो जाती है तो उस का नफ़्स इस क़ैदख़ाने और तंगी से आज़ादी चाहता है और मौत ही इस की आज़ादी है। हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन मुआ़ज़ राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़रमान में इसी बात की त़रफ़ इशारा है, चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "**ऐ सिद्दीक़ीन के गुरौह!** जन्नत का वलीमा खाने के लिये अपने आप को भूका रखो क्यूंकि नफ़्स को जिस क़दर भूका रखा जाए उसी क़दर खाने की ख़्वाहिश बढ़ती है।"(1) (या'नी जब शिद्दत से भूक लगी होती है उस वक़्त खाना खाने में ज़ियादा लुत़्फ़ आता है, इस का तजरिबा उ़मूमन हर रोज़ादार को होता है, लिहाज़ा दुन्या में ख़ूब भूके रहो ताकि जन्नत की आ'ला ने'मतों से ख़ूब लज़्ज़त याब हो सको)

1 ......احیاء العلوم، کتاب کسر الشھوتین، بیان طریق الریاضۃ فی کسر شھوات البطن، ج۳، ص ۱۱۴۔

www.dawateislami.net

पेट भर कर खाने से आदमी इबादत की लज़्ज़त व मिठास से महरूम हो जाता है, अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "मैं जब से मुसलमान हुवा हूं कभी पेट भर कर नहीं खाया ताकि इबादत की हलावत नसीब हो।" हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : "मैं कोहे लुबनान में कई औलियाए किराम की सोहबत में रहा, उन में से हर एक ने मुझ से येही कहा कि जब लोगों में जाओ तो उन्हें चार बातों की नसीहत करना, इन में एक नसीहत येह थी कि जो ज़ियादा खाएगा उसे इबादत की लज़्ज़त नसीब नहीं होगी।"(1)

इस का **इलाज** येह है कि बन्दा भूक से कम खाए ताकि उसे दूसरे की भूक का एहसास भी पैदा हो और इबादत की हलावत भी हासिल हो। भूक से कम खाने का मदनी ज़ेहन बनाने के लिये शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की माया नाज़ तस्नीफ़ "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द अव्वल के बाब "**पेट का कुफ़्ले मदीना**" का मुतालआ मुफ़ीद है।

(2)....**क़सावते क़ल्बी** का दूसरा सबब फ़ुज़ूल गोई है। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना ईसा **रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने हवारियों को नसीहत करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "**ऐ लोगो!** तुम फ़ुज़ूल गोई से बचते रहो, कभी भी **ज़िक्रुल्लाह** के इलावा अपनी ज़बान से कोई लफ़्ज़ न निकालो, वरना तुम्हारे दिल सख़्त हो

1 ......منہاج العابدین، ص۹۸، ۸۴-

www.dawateislami.net

जाएंगे, अगर्चे दिल नर्म होते हैं (लेकिन फ़ुज़ूल गोई इन्हें सख़्त कर देती है) और सख़्त दिल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह्मत से महरूम होता है।"(1) (या'नी अगर तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह्मत के उम्मीद वार हो तो अपने दिलों को सख़्ती से बचाओ)

इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपनी ज़बान को फ़ुज़ूल गोई से महफ़ूज़ रखे। फ़ुज़ूल गोई से जान छुड़ाने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रिसाला "**क़ुफ़्ले मदीना**" का मुतालआ बे हद मुफ़ीद है।

(3)....**क़सावते क़ल्बी** का तीसरा सबब **ज़ियादा हंसना** है, चुनान्चे, रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, महबूबे रब्बे क़दीर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीहत निशान है : "ज़ियादा मत हंसो ! क्यूंकि ज़ियादा हंसना दिल को मुर्दा (या'नी सख़्त) कर देता है।"(2)

इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपने अन्दर सन्जीदगी पैदा करे, मज़ाक़ मस्ख़री करने वालों की सोहबत इख़्तियार करने से बचे। क़हक़हा लगाने से बचे और हुज़ूर नबिय्ये रह्मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नते मुबारका पर अमल करते हुवे फ़क़त मुस्कुराने की आदत बनाए।

गुनाह कर कर के हाए हो गया दिल सख़्त पथ्थर से
करूं किस से कहां जा कर शिकायत या रसूलल्लाह

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

(1) ......عيون الحكايات، الحكاية الثامنة والتسعون...الخ، ص ١١٩۔
(2) ......ابن ماجه، كتاب الزهد، باب الحزن والبكاء، ج ٤، ص ٤٦٥، حديث : ٤١٩٣۔

www.dawateislami.net

(25).....तमअ (लालच)

तमअ (लालच) की ता'रीफ़ :

किसी चीज़ में हद दरजा दिलचस्पी की वजह से नफ़्स का इस की जानिब राग़िब होना तमअ या'नी लालच कहलाता है।[1]

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَ مَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۚ۝۹﴾ (پ۲۸، الحشر: ۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया तो वोही कामयाब हैं।"*

हदीसे मुबारका : तमअ या'नी लालच से बचते रहो :

हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह** बिन अम्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राहते कल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "लालच से बचते रहो क्यूंकि तुम से पहली क़ौमें लालच की वजह से हलाक हुईं, लालच ने उन्हें बुख़्ल पर आमादा किया तो वोह बुख़्ल करने लगे और जब क़त्ए रेह्मी का ख़याल दिलाया तो उन्हों ने क़त्ए रेह्मी की और जब गुनाह का हुक्म दिया तो वोह गुनाह में पड़ गए।"[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ......مفردات الفاظ القرآن، ص ۵۲۴۔

2 ......ابوداود، كتاب الزكاة، باب فى الشح، ج ۲، ص ۱۸۵، حديث: ۱۶۹۸۔

www.dawateislami.net

त़मअ़ (लालच) के बारे में तम्बीह :

मालो दौलत की ऐसी त़मअ़ (लालच) जिस का कोई दीनी फ़ाइदा न हो, या ऐसी अच्छी निय्यत न हो जो लालच ख़त्म कर दे, निहायत ही क़बीह़, गुनाहों की त़रफ़ रग़बत दिलाने वाली और हलाकत में डालने वाली बीमारी है, मालो दौलत के लालच में फंसने वाला शख़्स ना काम व ना मुराद और जो इन के मक्रो जाल से बच गया वोही कामयाब व कामरान है।

ह़िकायत : मालो दौलत की त़मअ़ का इब्रतनाक अन्जाम :

बलअ़म बिन बाऊ़रा अपने दौर का बहुत बड़ा आ़लिम और आ़बिदो ज़ाहिद था, उसे इस्मे आ'ज़म का भी इ़ल्म था। वोह अपनी जगह बैठा हुवा अपनी रूह़ानिय्यत से अ़र्शे आ'ज़म को देख लिया करता था, बहुत ही **मुस्तजाबुद्दा'वात** था कि उस की दुआ़एं बहुत ज़ियादा मक़्बूल हुवा करती थीं, उस के शागिर्दों की ता'दाद हज़ारों में थी। जब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام क़ौमे जब्बारीन से जिहाद करने के लिये बनी इस्राईल के लश्करों को ले कर रवाना हुवे तो बलअ़म बिन बाऊ़रा की क़ौम उस के पास घबराई हुई आई और कहा कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام बहुत ही बड़ा और निहायत ही त़ाक़तवर लश्कर ले कर ह़म्ला आवर होने वाले हैं और वोह येह चाहते हैं कि हम लोगों को हमारी ज़मीनों से निकाल कर येह ज़मीन अपनी क़ौम बनी इस्राईल को दे दें। इस लिये आप ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के लिये ऐसी बद दुआ़ कर दीजिये कि वोह शिकस्त खा कर वापस चले जाएं। आप चूंकि **मुस्तजाबुद्दा'वात** हैं इस लिये आप की दुआ़ ज़रूर मक़्बूल हो जाएगी।

www.dawateislami.net

येह सुन कर बलअ़म बिन बाऊ़रा कांप उठा और कहने लगा कि "तुम्हारा बुरा हो, खुदा की पनाह ! ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं और उन के लश्कर में मोमिनों और फ़िरिश्तों की जमाअ़त है उन के ख़िलाफ़ भला मैं कैसे और किस त़रह़ बद दुआ़ कर सकता हूं ?" लेकिन उस की क़ौम ने रो रो कर और गिड़ गिड़ा कर इस त़रह़ इस्रार किया कि उस ने येह कह दिया कि इस्तिख़ारा कर लेने के बा'द अगर मुझे इजाज़त मिल गई तो बद दुआ़ कर दूंगा । मगर इस्तिख़ारा के बा'द जब उस को बद दुआ़ की इजाज़त नहीं मिली तो उस ने साफ़ साफ़ जवाब दे दिया कि अगर मैं बद दुआ़ करूंगा तो मेरी दुन्या व आख़िरत दोनों बरबाद हो जाएंगी ।

उस की क़ौम ने जब येह देखा कि किसी त़रह़ भी येह राज़ी नहीं हो रहा तो उन्हों ने मालो दौलत का लालच देने का सोचा, चुनान्चे, उन्हों ने बहुत से क़ीमती हदाया और तह़ाइफ़ व दीगर मालो दौलत उस की ख़िदमत में पेश कर के सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के ख़िलाफ़ बद दुआ़ करने पर बे पनाह इस्रार किया । यहां तक कि बलअ़म बिन बाऊ़रा पर ह़िर्स और लालच का भूत सुवार हो गया, और वोह माल के जाल में फंस गया । वोह अपनी गधी पर सुवार हो कर बद दुआ़ के लिये चल पड़ा, रास्ते में बार बार उस की गधी ठहर जाती और मुंह मोड़ कर भाग जाना चाहती थी मगर वोह उस को मार मार कर आगे बढ़ाता रहा, यहां तक कि गधी को अल्लाह तआ़ला ने गोयाई की त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई और उस ने कहा कि "अफ़्सोस, ऐ बलअ़म बिन बाऊ़रा ! तू कहां और किधर जा रहा है ? देख ! मेरे आगे फ़िरिश्ते हैं जो मेरा रास्ता रोकते और मेरा मुंह मोड़ कर मुझे पीछे धकेल रहे हैं । ऐ बलअ़म ! तेरा बुरा हो क्या तू

www.dawateislami.net

अल्लाह के नबी और मोअमिनीन की जमाअ़त पर बद दुआ़ करेगा ?" गधी की बात सुन कर भी बलअ़म बिन बाऊ़रा वापस नहीं हुवा । यहां तक कि "**हुस्बान**" नामी पहाड़ पर चढ़ गया और बुलन्दी से ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के लश्करों को बग़ौर देखा और मालो दौलत के लालच में उस ने **बद दुआ़** शुरूअ़ कर दी । लेकिन ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की शान कि वोह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के लिये बद दुआ़ करता था, मगर उस की ज़बान पर उस की क़ौम के लिये बद दुआ़ जारी हो जाती थी । येह देख कर कई मरतबा उस की क़ौम ने टोका कि "ऐ बलअ़म ! तुम तो उल्टी बद दुआ़ कर रहे हो ।" तो उस ने कहा कि "ऐ मेरी क़ौम ! मैं क्या करूं मैं बोलता कुछ और हूं और मेरी ज़बान से निकलता कुछ और है ।"

फिर अचानक उस पर येह ग़ज़बे इलाही नाज़िल हो गया कि नागहां उस की ज़बान लटक कर उस के सीने पर आ गई । उस वक़्त बलअ़म बिन बाऊ़रा ने अपनी क़ौम से रो-रो कर कहा कि अफ़्सोस मेरी दुन्या व आख़िरत दोनों बरबाद व ग़ारत हो गईं । मेरा ईमान जाता रहा और मैं क़हरे क़ह्हार व ग़ज़बे जब्बार में गिरिफ़्तार हो गया ।(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(26)....तमल्लुक़ (चापलूसी)

तमल्लुक़ (चापलूसी) की ता'रीफ़ :

"अपने से बुलन्द रुत्बा शख़्सिय्यत या साहि़बे मन्सब के सामने मह़्ज़ मफ़ाद ह़ासिल करने के लिये आ़जिज़ी व इन्किसारी

---

1 ......تفسیر الطبری، پ۹، الاعراف، تحت الآیۃ:۱۷۶، ج۶، ص۱۲۳۔
حاشیۃ الصاوی علی الجلالین، پ۹، الاعراف، تحت الآیۃ:۱۷۵، ج۲، ص۷۲۷۔

www.dawateislami.net

करना या अपने आप को नीचा दिखाना तमल्लुक़ या'नी चापलूसी कहलाता है।''(1)

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ ۙ قَالُوْۤا اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ۝۱۱﴾ (پ۱، البقرۃ: ۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *''और जो उन से कहा जाए ज़मीन में फ़साद न करो तो कहते हैं हम तो संवारने वाले हैं।''*

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना **सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی **''ख़ज़ाइनुल इरफ़ान''** में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : ''कुफ़्फ़ार से मेल जोल, उन की ख़ातिर दीन में मुदाहनत और अहले बातिल के साथ **तमल्लुक़** व चापलूसी और उन की ख़ुशी के लिये सुल्हे कुल बन जाना और इज़्हारे हक़ से बाज़ रहना शाने मुनाफ़िक़ और हराम है, इसी को मुनाफ़िक़ीन का फ़साद फ़रमाया गया। आज कल बहुत लोगों ने येह शैवा कर लिया है कि जिस जल्से में गए वैसे ही हो गए, इस्लाम में इस की मुमानअत है ज़ाहिरो बातिन का यक्सां न होना बड़ा ऐब है।''

हदीसे मुबारका : चापलूसी के सबब ग़ैरत और दीन जाता रहा :

हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह** बिन मसऊद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जिस ने किसी ग़नी (या'नी मालदार) के लिये आजिज़ी इख़्तियार की और अपने आप को उस की ता'ज़ीम व मालो

1 ......بریقة محمودیة شرح الطریقة المحمدیه، الثانی عشر من آفات القلب۔۔۔الخ، فی بحث التواضع والتملق، ج۲، ص۲۳۵۔

www.dawateislami.net

दौलत के लिये बिछा दिया तो ऐसे शख़्स की ग़ैरत के तीन हिस्से और उस के दीन का एक हिस्सा जाता रहा।"(1)

तमल्लुक़ (चापलूसी) के बारे में तम्बीह :

चापलूसी और ख़ुशामद करना एक मज़्मूम, मोहलिक और ग़ैर अख़्लाक़ी फ़े'ल है, बसा अवक़ात चापलूसी और ख़ुशामद हलाकत में डालने वाले दीगर कई गुनाहों जैसे झूट, ग़ीबत, चुग़ली, बद गुमानी वग़ैरा में मुब्तला कर देती है जो ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं। अलबत्ता इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये अगर ख़ुशामद की ज़रूरत पेश आए तो त़ालिबे इ़ल्म को चाहिये कि अपने उस्ताद और त़ालिबे इ़ल्म इस्लामी भाइयों की ख़ुशामद करे ताकि उन से इ़ल्मी तौ़र पर मुस्तफ़ीद हुवा जा सके। ऐसी ख़ुशामद और चापलूसी शरअ़ में ममनूअ़ नहीं। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ख़ुशामद करना मोमिन के अख़्लाक़ में से नहीं है मगर इ़ल्म ह़ासिल करने के लिये ख़ुशामद कर सकता है।"(2)

ह़िकायत : मैं मालदारों की चापलूसी क्यूं करूं ?

एक मरतबा रियासत नानपारा (ज़िल्अ़ बहराइच यूपी हिन्द) के नवाब की मद्ह़ में शो'रा ने क़साइद लिखे। आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن भी माहिर और अ़ज़ीम शो'रा में से थे लिहाज़ा

(1) شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، ج۶، ص۲۹۸، حدیث:۸۲۳۲۔

(2) شعب الایمان، باب فی حفظ اللسان، ج۴، ص۲۲۴، حدیث:۴۸۶۳۔

www.dawateislami.net

आप से भी कुछ लोगों ने गुज़ारिश की, कि नवाब साहिब की ता'रीफ़ में कोई क़सीदा लिख दें। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने नवाब साहिब की ता'रीफ़ में कोई क़सीदा तो न लिखा अलबत्ता इस गुज़ारिश के जवाब में एक ना'त शरीफ़ लिखी जिस का मत्लअ़ या'नी शुरूअ़ का शे'र यूं है :

वोह कमाले हुस्ने हुज़ूर है कि गुमाने नक़्स, जहां नहीं
येही फूल ख़ार से दूर है येही शम्अ़ है कि धूआं नहीं

और मक़्तअ़ या'नी आख़िरी शे'र में नवाब साहिब की ता'रीफ़ में कोई क़सीदा न लिखने और इस के जवाब में ना'ते रसूले मक़्बूल लिखने की बहुत ही नफ़ीस और इ़श्क़ो महब्बत में डूबी हुई वजह यूं बयान की :

करूं मद्हे अहले दुवल रज़ा ? पड़े इस बला में मेरी बला
मैं गदा हूं अपने करीम का मेरा दीन पारए नां नहीं

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के कलाम के इस मक़्तअ़ या'नी आख़िरी शे'र का मत्लब येह है कि ऐ रज़ा मैं और दौलत मन्दों, दुन्या के नवाबों और हुक्मरानों की ता'रीफ़ व ख़ुशामद करूं ? नहीं नहीं इस बला या'नी मालदारों की ख़ुशामद नुमा आफ़त व बला में तो बस "**मेरी बला**" ही पड़े ! (या'नी मुझ से तो ऐसा हो ही नहीं सकता) बस मैं तो अपने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे दुरबार का भिकारी हूं, मेरा दीन "रोटी का टुकड़ा" नहीं कि जिधर "माल" देखा उधर लुढ़क गए।(1)

1 .....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 30 माख़ूज़न।

www.dawateislami.net

तमल्लुक़ (चापलूसी) के आठ अस्बाब व इलाज :

(1).....जब इन्सान की त़बीअ़त **आराम पसन्द** हो जाए और मेह़नत की आ़दत यक्सर ख़त्म हो जाए तो बन्दा अपने **ज़ाती मफ़ादात** के हुसूल के लिये चापलूसी की सीढ़ी इस्ति'माल करता है। इस का इ़लाज येह है कि बन्दा ख़ुद को मेह़नत का आ़दी बनाए ताकि चापलूसी के बजाए इस की मेह़नत को कामयाबी की **सनद** समझा जाए।

(2)...तमल्लुक़ का एक सबब **शोहरत की त़लब** है लिहाज़ा बन्दा त़लबे शोहरत के नुक़्सानात को अपने पेशे नज़र रखे।

(3).....बा'ज़ अफ़राद की त़बीअ़त **फ़सादी** होती है, लिहाज़ा वोह अपनी त़बीअ़त के हाथों मजबूर हो कर तमल्लुक़ की राह इख़्तियार करते हैं और जब उन के इस **बुरे फ़े'ल** की निशान देही की जाए तो इसे येह लोग **इस्लाह़** का नाम देते हैं। इस का **इ़लाज** येह है कि बन्दा इस त़रह़ अपने नफ़्स का मुह़ासबा करते हुवे येह सुवाल करे : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शर व फ़साद फैलाने वाले को सख़्त नापसन्द करता है कहीं अपनी इस शर अंगेज़ी और फ़सादी त़बीअ़त के सबब मैं रह़मते इलाही से मह़रूम न कर दिया जाऊं ?"

(4).....बा'ज़ अफ़राद अपनी तरक़्क़ी के लिये दीगर अफ़राद को दूसरों की नज़रों में नीचे गिराना लाज़िमी समझते हैं और इस के लिये **चुग़ल ख़ोरी** की राह इख़्तियार करते हैं लिहाज़ा **चुग़ल ख़ोरी** की आ़दत **तमल्लुक़** का बहुत बड़ा सबब है इस का **इ़लाज** येह है कि बन्दा चुग़ल ख़ोरी के **दुन्यवी** और उख़रवी नुक़्सानात अपने पेशे नज़र रखे।

www.dawateislami.net

(5).....दूसरों को **अज़िय्यत** देने और नुक़्सान पहुंचाने की ग़रज़ से तमल्लुक़ का ह़र्बा इस्ति'माल किया जाता है इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपनी ज़ात में ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा पैदा करे और आख़िरत के मुआख़ज़े को अपने पेशे नज़र रखे।

(6).....बा'ज़ अफ़राद तमल्लुक़ को ज़ाती ख़ामियों के लिये **पर्दा** समझते हैं और अपनी ख़ामियों को दूर करने के बजाए तमल्लुक़ में ही अपना वक़्त ज़ाएअ़ करते हैं। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपनी ज़ाती ख़ामियों को दूर करने के लिये दियानत दाराना कोशिश करे और अपनी इ़ज़्ज़ते नफ़्स को मजरूह़ होने से बचाए।

(7).....बा'ज़ अफ़राद **बुग़्ज़ो कीना** के सबब किसी को भी नुक़्सान पहुंचाना चाहते हैं तो उस की चापलूसी शुरूअ़ कर देते हैं ताकि इस जाल में फंस कर वोह शख़्स ख़ुद पसन्दी वग़ैरा जैसी आफ़ात में मुब्तला हो जाए और कभी तरक़्क़ी न कर सके। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपने सीने को मुसलमानों के कीने से पाक करे, एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा बेदार करे और मुसलमानों के साथ हुस्ने सुलूक करते हुवे दुरुस्त और मुफ़ीद मश्वरा दे।

(8).....बा'ज़ अवक़ात साहि़बे मन्सब ह़ज़रात की हम नशीनी भी इस मोहलिक मरज़ में मुब्तला कर देती है, इस का इलाज येह है कि बन्दा बक़दरे ज़रूरत ही साहि़बे मन्सब अफ़राद से तअ़ल्लुक़ रखे और बेजा मुलाक़ात से परहेज़ करे।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(27).....ए'तिमादे ख़ल्क़

ए'तिमादे ख़ल्क़ की ता'रीफ़ :

"**मुसब्बिबुल अस्बाब** या'नी अस्बाब को पैदा करने वाले" रब عَزَّوَجَلَّ को छोड़ कर फ़क़त् "**अस्बाब**" पर भरोसा कर लेना या ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ को छोड़ कर फ़क़त् मख़्लूक़ पर भरोसा कर लेना ए'तिमादे ख़ल्क़ कहलाता है।

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَ شَاوِرْهُمْ فِی الْاَمْرِۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِؕ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِیْنَ(۱۵۹)﴾ (پ ۴، آل عمران: ۱۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"और कामों में उन से मश्वरा लो और जो किसी बात का इरादा पक्का कर लो तो **अल्लाह** पर भरोसा करो बेशक तवक्कुल वाले **अल्लाह** को प्यारे हैं।"*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद **मुह़म्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "तवक्कुल के मा'ना हैं **अल्लाह** तबारक व तआ़ला पर ए'तिमाद करना और कामों को उस के सिपुर्द कर देना मक़्सूद येह है कि बन्दे का ए'तिमाद तमाम कामों में **अल्लाह** पर होना चाहिये।"

ह़दीसे मुबारका : जिस पर तवक्कुल उसी की किफ़ायत :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन ह़ुसीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा करता है और उसी का हो के रह जाता है तो रब عَزَّوَجَلَّ उस के हर काम में किफ़ायत फ़रमाता है और उसे

www.dawateislami.net

वहां से रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है जहां उस का गुमान भी नहीं होता और जो दुन्या पर तवक्कुल करता है और उसी का हो के रह जाता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे इस दुन्या का ही कर देता है।"(1)

ए'तिमादे ख़ल्क़ के बारे में तम्बीह :

ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ को बिल्कुल भुला कर फ़क़त मख़्लूक़ या अस्बाब पर ए'तिमाद कर लेना निहायत ही मज़्मूम और हलाकत व बरबादी में डालने वाला अ़मल है। हर मुसलमान को इस से बचना ज़रूरी है।

हिकायत : मख़्लूक़ पर ए'तिमाद न करने का सिला :

हज़रते सय्यिदुना या'क़ूब बसरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं एक दिन ह़रम में दस दिन तक भूका रहा, भूक से शदीद निढाल हो गया तो ख़याल आया कि वादी में चलना चाहिये शायद वहां से कुछ खाने को मिल जाए। वहां पहुंचा तो एक पुराना शलग़म मिला, मैं ने उसे उठा लिया लेकिन दिल में वह़शत पैदा हुई और यूं मह़सूस हुवा कि जैसे कोई कह रहा हो कि दस दिन के फ़ाक़े के बा'द तेरे हिस्से में येही गला सड़ा शलग़म आया। चुनान्चे, मैं ने उसे फेंक दिया और दोबारा मस्जिद में आ गया।

थोड़ी देर बा'द एक अ़जमी आया और मेरे सामने बैठ गया। फिर एक थैला निकाला और कहा येह तुम्हारे लिये है। मैं ने पूछा : "तुम ने इसे मेरे लिये ही क्यूं ख़ास कर लिया ?" उस ने कहा कि "हम पन्दरह दिन से समन्दर में फंसे हुवे थे, मैं ने मन्नत मानी कि अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बचा लिया तो मुजावरीन में जो शख़्स

1 ......شعب الایمان، باب فی الرجاء من اللہ تعالی، ج۲، ص۲۸، حدیث:۱۰۷۶۔

www.dawateislami.net

मुझे सब से पहले नज़र आएगा येह थैला उसे सदक़ा करूंगा और सब से पहले आप ही मुझे मिले हैं लिहाज़ा इसे क़बूल फ़रमाइये।" मैं ने थैला खोला तो उस में मिस्र का मेदा, छिले हुवे बादाम और बरफ़ियां थीं। मैं ने उस में से थोड़ा सा लिया और बाक़ी वापस कर दिया। फिर अपने आप से कहा : "तेरा रिज़्क़ तो तेरी त़रफ़ सफ़र कर के आ रहा था और तू इसे वादी में तलाश कर रहा था।"(1)

ए'तिमादे ख़ल्क़ का सबब व इलाज :

ए'तिमादे ख़ल्क़ का अस्ल सबब अ़दमे तवक्कुल है। मख़्लूक़ पर ह़द दरजा भरोसा करना, लोगों से लम्बी लम्बी उम्मीदें वाबस्ता कर लेना और सिर्फ़ इन्हें अपनी कामयाबी का ज़रीआ़ समझना तवक्कुल न होने की अ़लामतें हैं। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपने ख़ालिक़ो मालिक عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा रखे, उस की रह़मते कामिला पर नज़र रखे, येह मदनी ज़ेहन बनाए कि मैं जिस मख़्लूक़ पर भरोसा कर रहा हूं येह भी उसी रब عَزَّوَجَلَّ की ही बनाई हुई है और ख़ालिक़ को छोड़ कर फ़क़त़ मख़्लूक़ पर भरोसा कर लेना बे अ़क़्ली और ह़माक़त है। बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के तवक्कुल के ह़वाले से वाक़िआ़त का मुत़ालआ़ करे और येह बात हमेशा पेशे नज़र रखे कि मख़्लूक़ फ़क़त़ कामयाबी तक पहुंचने का सबब और ज़रीआ़ हो सकती है जब कि कामयाबी अ़त़ा करना फ़क़त़ रब عَزَّوَجَلَّ ही का काम है, लिहाज़ा उसी पर भरोसा रखा जाए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 ......احیاء العلوم، کتاب التوحید والتوکل، الفن الاول فی حلب النفع، ج۴، ص ۳۳۴

www.dawateislami.net

(28)....निस्याने ख़ालिक़

निस्याने ख़ालिक़ की ता'रीफ़ :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी को तर्क कर देना और **हुक़ूक़ुल्लाह** को यक्सर फ़रामोश कर देना "**निस्याने ख़ालिक़**" कहलाता है।[1]

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ اَنْفُسَهُمْ ؕ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۱۹﴾﴾ (پ۲۸، الحشر: ۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"और उन जैसे न हो जो* ***अल्लाह*** *को भूल बैठे तो* ***अल्लाह*** *ने उन्हें बला में डाला कि अपनी जानें याद न रहें वोही फ़ासिक़ हैं।"*

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿فَاذْكُرُوْنِیْۤ اَذْكُرْكُمْ وَ اشْكُرُوْا لِیْ وَ لَا تَكْفُرُوْنِ ﴿۱۵۲﴾﴾ (پ۲، البقرۃ: ۱۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा और मेरा ह़क़ मानो और मेरी नाशुक्री न करो।"*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती **मुह़म्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی इस आयते मुबारका के तह़त "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में फ़रमाते हैं : "ज़िक्र तीन त़रह़ का होता है। (1) लिसानी (2) क़ल्बी (3) बिल जवारिह़।

ज़िक्रे लिसानी : तस्बीह़, तक़्दीस, सना वग़ैरा बयान करना है ख़ुत़बा, तौबा, इस्तिग़्फ़ार, दुआ़ वग़ैरा इस में दाख़िल हैं।

---

1 ......تفسیر الطبری، پ۲۸، الحشر، تحت الآیۃ: ۱۹، ج۱۲، ص۵۰۔
روح المعانی، پ۲۸، الحشر، تحت الآیۃ: ۱۹، ج۲۸، ص۳۵۴۔

www.dawateislami.net

ज़िक्रे क़ल्बी : **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों का याद करना, उस की अ़ज़मत व किब्रियाई और उस के दलाइले क़ुदरत में ग़ौर करना उ़लमा का इस्तिम्बात़ (मसाइल में ग़ौर करना) भी इसी में दाख़िल हैं।

ज़िक्र बिल जवारिह़ : येह है कि आ'ज़ा त़ाअ़ते इलाही में मश्ग़ूल हों जैसे ह़ज के लिये सफ़र करना येह ज़िक्र बिल जवारिह़ में दाख़िल है। नमाज़ तीनों क़िस्म के ज़िक्र पर मुश्तमिल है तस्बीह़ व तक्बीर सना व क़िराअत तो ज़िक्रे लिसानी है और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ इख़्लास ज़िक्रे क़ल्बी और क़ियाम, रुकूअ़ व सुजूद वग़ैरा ज़िक्र बिल जवारिह़ है। इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है तुम त़ाअ़त बजा ला कर मुझे याद करो मैं तुम्हें अपनी इमदाद के साथ याद करूंगा सह़ीह़ैन की ह़दीस में है कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि अगर बन्दा मुझे तन्हाई में याद करता है तो मैं भी उस को ऐसे ही याद फ़रमाता हूं और अगर वोह मुझे जमाअ़त में याद करता है तो मैं उस को इस से बेहतर जमाअ़त में याद करता हूं। क़ुरआनो ह़दीस में ज़िक्र के बहुत फ़ज़ाइल वारिद हैं और येह हर त़रह़ के ज़िक्र को शामिल हैं ज़िक्र बिल जह्र को भी और बिल इख़्फ़ा को भी।"

ह़दीसे मुबारका : ख़ालिक़ को भूल जाना उस की नाशुक्री है :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि रब عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "ऐ इब्ने आदम बेशक तू जब मुझे याद करता है तो मेरा शुक्र अदा करता है और जब तू मुझे भूल जाता है तो मेरा इन्कार कर देता है।"[1]

---

1 ......معجم الاوسط، من اسمه محمد، ج٥، ص ٢٦٢، حدیث: ٧٢٦٥۔

www.dawateislami.net

हुक़ूक़ुल्लाह में ग़फ़्लत करने वाले की मिसाल :

हज़रते नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकारे दो आलम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक़ूक़ में ग़फ़्लत बरतने वाला, हदों को तोड़ने वाला और इन्हें क़ाइम रखने वाला इन की मिसाल कश्ती के तीन मुसाफ़िरों की है। जिन्हों ने कश्ती को तीन हिस्सों में तक़्सीम कर दिया। एक ने सब से ऊपर वाला, दूसरे ने दरमियानी और तीसरे ने सब से नीचे वाला हिस्सा ले लिया। सफ़र के दौरान निचली मन्ज़िल वाले ने अचानक कुलहाड़ा चलाना शुरूअ़ कर दिया। दूसरे ने पूछा : "येह क्या करने लगे हो ?" उस ने जवाब दिया : "मैं अपने हिस्से में थोड़ा सा सूराख़ करने लगा हूं ताकि पानी तक रसाई हो और मेरी बची कुची चीज़ें और ख़ून बहाना आसान हो।" इस पर तीसरा कहने लगा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे नाबूद करे, छोड़ो उसे अपने हिस्से में शिगाफ़ करने दो।" दूसरे ने कहा : "नहीं नहीं इस ने सूराख़ कर दिया तो ख़ुद भी ग़र्क़ होगा और हमें भी ग़र्क़ करेगा।" अब अगर इन्हों ने उस का हाथ रोक दिया तो वोह भी बच गया और येह ख़ुद भी लेकिन अगर इन्हों ने उस का हाथ न पकड़ा तो येह भी हलाक होंगे और वोह ख़ुद भी।(1)

सब से बड़ा सख़ी और बख़ील :

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब "**अज़्ज़ोहद व क़सरुल अमल**" सफ़ह़ा 77 पर

---

(1)......بخاری، کتاب الشرکۃ، ہل یقرع فی القسمۃ، ج ۲، ص ۱۴۳، حدیث: ۲۴۹۳۔
مسند احمد، ج ۷، ص ۳۱۹، ۳، حدیث: ۱۷۶۳۸۔

www.dawateislami.net

है : "और लोगों में सब से बड़ा सख़ी वोह है जो हुक़ूक़ुल्लाह को उम्दा त़रीक़े पर अदा करे अगर्चे इस के इलावा दीगर कामों में लोग इसे बख़ील ही कहते हों और सब से बड़ा बख़ील वोह है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक़ूक़ की अदाएगी में बुख़्ल करे अगर्चे दूसरे कामों में लोग उसे सख़ी ही कहते हों।"

निस्याने ख़ालिक़ के बारे में तम्बीह :

अपने ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ ही को भूल जाना, उस के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हो जाना, इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी को तर्क कर देना और हुक़ूक़ुल्लाह को यक्सर फ़रामोश कर देना बहुत बड़ी बद बख़्ती और हलाकत का सबब है।

ह़िकायत : ए'तिमादे ख़ालिक़ और निस्याने ख़ल्क़ की तारीख़ी मिसाल :

जब नमरूद ने अपनी सारी क़ौम के रूबरू ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को आग में डाला तो ज़मीनो आस्मान की हर मख़्लूक़ चीख़ें मार मार कर बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ करने लगी कि : "ऐ पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तेरे ख़लील आग में डाले जा रहे हैं और उन के सिवा ज़मीन में कोई और इन्सान तेरी तौह़ीद का अ़लम बरदार और तेरा परस्तार नहीं है, लिहाज़ा तू हमें इजाज़त दे कि हम उन की इमदाद व नुसरत करें।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "इब्राहीम मेरे ख़लील हैं और मैं उन का मा'बूद हूं, अगर इब्राहीम तुम सब से फ़रयाद कर के मदद त़लब करें तो मेरी इजाज़त है कि तुम सब उन की मदद करो और अगर वोह मेरे सिवा किसी और से कोई मदद त़लब न करें तो तुम सब सुन लो कि मैं उन का दोस्त और ह़ामी व मददगार हूं। लिहाज़ा तुम उन का मुआ़मला मुझ

www.dawateislami.net

पर छोड़ दो।" बा'दे अज़ां आप عَلَيْهِ السَّلَام के पास पानी का फ़िरिश्ता आया और अ़र्ज़ करने लगा : "अगर आप फ़रमाएं तो मैं पानी बरसा कर इस आग को बुझा दूं।" फिर हवा का फ़िरिश्ता हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ करने लगा : "अगर आप का हुक्म हो तो मैं ज़बरदस्त आंधी चला कर इस आग को उड़ा दूं।" तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने इन दोनों फ़िरिश्तों से फ़रमाया : "मुझे तुम लोगों की कोई ज़रूरत नहीं। मुझे मेरा रब عَزَّوَجَلَّ ही काफ़ी है और वोही मेरा बेहतरीन कारसाज़ है, वोह जब चाहेगा और जिस त़रह़ उस की मरज़ी होगी मेरी मदद फ़रमाएगा।"(1)

निस्याने ख़ालिक़ के सात अस्बाब व इलाज :

(1)....**निस्याने ख़ालिक़** का पहला सबब ख़ौफ़े ख़ुदा की कमी है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपने अन्दर ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा करे, अपना ज़ियादा वक़्त ख़ाइफ़ीन की सोह़बत में गुज़ारे और ख़ौफ़े ख़ुदा के ह़वाले से मुख़्तलिफ़ कुतुब का मुत़ालआ़ कर के अपनी मा'लूमात में इज़ाफ़ा करे नीज़ इस पर अ़मल की कोशिश करता रहे। इस ज़िम्न में तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब "**ख़ौफ़े ख़ुदा**" का मुत़ालआ़ भी बहुत मुफ़ीद है।

(2)....**निस्याने ख़ालिक़** का दूसरा सबब **गुनाहों के बारे में ला इल्मी** है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा गुनाहे सग़ीरा और गुनाहे कबीरा के ह़वाले से मा'लूमात ह़ासिल करे। इस ज़िम्न में मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ इन कुतुब "**इह़याउल उ़लूम**", "**जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल**" का मुत़ालआ़ निहायत मुफ़ीद है।

1 ......حاشية الصاوى على الجلالين، پ۱۷، الانبياء، تحت الآية: ۶۸، ج۴، ص۱۳۰۷۔

www.dawateislami.net

(3)....**निस्याने ख़ालिक़** का तीसरा सबब **दुन्यवी उमूर में हद से ज़ियादा ग़ैर ज़रूरी मश्ग़ूलिय्यत** है कि बन्दा दुन्यवी उमूर में ऐसा मश्ग़ूल होता है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इताअ़त व फ़रमांबरदारी को यक्सर फ़रामोश कर देता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपनी दुन्यवी मश्ग़ूलिय्यत का जाइज़ा ले और जो मश्ग़ूलिय्यत इताअ़ते इलाही में रुकावट और अ़ज़ाबे आख़िरत का सबब बन रही हो, उसे अपनी ज़ात से दूर करने की मुख़्लिसाना कोशिश करे।

(4)....बा'ज अवक़ात बन्दा अपनी **ग़फ़्लत** के सबब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी में मुब्तला हो जाता है। लिहाज़ा निस्याने ख़ालिक़ का चौथा सबब **ग़फ़्लत** है। इस का **इलाज** येह है कि ग़फ़्लत के अस्बाब को दूर करे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करता रहे।

(5)....**निस्याने ख़ालिक़** का पांचवां सबब **दुन्या की महब्बत** है और ह़दीसे पाक के मुताबिक़ हुब्बे दुन्या तमाम गुनाहों की जड़ है लिहाज़ा बन्दे को चाहिये कि **हुब्बे दुन्या का इलाज** करे ताकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इताअ़त व फ़रमां बरदारी में येह मोहलिक मरज़ रुकावट न बन सके।

(6)....बा'ज़ अवक़ात बन्दे के दिल में मख़्लूक़ की महब्बत ख़ालिक़ की महब्बत पर इस त़रह ग़ालिब आ जाती है कि बन्दा मख़्लूक़ की इताअ़त को ख़ालिक़ की इताअ़त पर तरजीह देता है और वोह येह ह़दीसे पाक भूल जाता है कि "**ख़ालिक़ की नाफ़रमानी में मख़्लूक़ की इताअ़त जाइज़ नहीं।**" इस का इलाज येह है कि बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर ग़ौर करे और येह बात पेशे नज़र रखे कि हमारी इतनी नाफ़रमानियों के बा वुजूद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम पर किस क़दर मेहरबान है!

www.dawateislami.net

(7)....**निस्याने ख़ालिक़** का सातवां सबब **बुरी सोह़बत** है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा हमेशा नेक परहेज़गार लोगों की सोह़बत इख़्तियार करे, बद अख़्लाक़ और बुरे लोगों से अपने आप को हमेशा दूर रखे कि "**बुरी सोह़बत ज़हरीले सांप से भी ज़ियादा नुक़्सान देह है।**" कि सांप तो अपने डंक से फ़क़त़ जिस्मानी नुक़्सान पहुंचाता है मगर बुरी सोह़बत बसा अवक़ात जिस्मानी नुक़्सान के साथ साथ रूह़ानी नुक़्सान (जैसे गुनाहों में मुब्तला होना, ईमान की बरबादी वग़ैरा) भी पहुंचाती है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी का मुश्कबार मदनी माह़ोल भी एक अच्छी सोह़बत फ़राहम करता है, इस मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर लाखों लोग गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर नेकियों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं, निस्याने ख़ालिक़ जैसे मूज़ी मरज़ से नजात पा कर सुब्ह़ो शाम अपने रब عَزَّوَجَلَّ की याद में मगन होने वाले बन गए हैं। आप भी इस मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने अ़लाक़े में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत फ़रमाइये, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप की ज़िन्दगी में एक मदनी इन्क़िलाब बर्पा हो जाएगा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(29)......निस्याने मौत

निस्याने मौत की ता'रीफ़ :

दुन्यवी मालो दौलत की महब्बत व गुनाहों में ग़र्क़ हो कर मौत को यक्सर फ़रामोश कर देना निस्याने मौत कहलाता है।

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ﴿۱۹﴾﴾ (پ۲۶، ق:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"और आई मौत की सख़्ती ह़क़ के साथ येह है जिस से तू भागता था।"*

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "येह कलाम काफ़िर या ग़ाफ़िल (या'नी दुन्यवी महब्बत में मौत को भूल जाने वाले) से होगा, फ़िरिश्ते फ़रमाएंगे।"(1)

ह़दीसे मुबारका : सब से अ़क़्लमन्द मोमिन :

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सब से ज़ियादा अ़क़्लमन्द व दाना वोह मोमिन है जो मौत को कसरत से याद करे और इस के लिये अह़सन त़रीक़े पर तय्यारी करे, येही (ह़क़ीक़ी) दाना लोग हैं।"(2)

---

(1).....नूरुल इरफ़ान, पारह. 26, ق, तह़तल आयत : 19

(2).....شعب الایمان، باب فی الزھد وقصر الامل، ج۷، ص۳۵۱، حدیث:۱۰۵۴۹۔

www.dawateislami.net

निस्याने मौत के बारे में तम्बीह :

निस्याने मौत या'नी मौत का भूल जाना दिल की सख़्ती की अ़लामत है और दिल का सख़्त होना गुनाहों के इर्तिकाब का बहुत बड़ा सबब है, **मौत को भूल जाना** हलाकत में डालने वाला मज़्मूम अम्र है, लिहाज़ा मौत को हमेशा याद करते रहना चाहिये।

हिकायत : ऐ वीरान मह़ल ! तेरे मकीन कहां हैं ?

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی एक मरतबा एक आ़लीशान मह़ल के क़रीब से गुज़रे तो एक कनीज़ हाथों में दफ़ उठाए येह नग़्मा गा रही थी : "हम लोग ऐसी ने'मतों और ख़ुशियों में हैं जो कभी ज़ाइल (या'नी ख़त्म) न होंगी।" येह सुन कर आप رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस कनीज़ से फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तू झूट बोल रही है।" फिर आप वहां से रवाना हो गए। कुछ अ़र्से बा'द जब आप का गुज़र दोबारा उस मह़ल के क़रीब से हुवा तो देखा कि उस मह़ल पर बोसीदगी व शिकस्तगी के आसार नुमायां हैं, नोकर चाकर सब ग़ाइब थे, मह़ल की तमाम ज़ैबो ज़ीनत ख़ाक में मिल चुकी थी, गर्दिशे अय्याम की ज़द में आ कर वोह ज़ैबो ज़ीनत का शाहकार मह़ल अब ख़राब व बेकार हो चुका था गोया वोह वीरान मह़ल पुकार पुकार कर ज़बाने ह़ाल से यूं कह रहा था :

अजल ने न किसरा ही छोड़ा न दारा
इसी से सिकन्दर सा फ़ातेह़ भी हारा
हर इक ले के क्या क्या न ह़सरत सिधारा
पड़ा रह गया सब यूंही ठाठ सारा
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

www.dawateislami.net

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने महल के दरवाज़े के पास खड़े हो कर बुलन्द आवाज़ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ वीरान महल ! तेरे मकीन कहां हैं ? कहां गए तेरे ख़ुद्दाम ? तेरी ज़ैबो ज़ीनत को क्या हुवा ? कहां है वोह झूटी कनीज़ जिस का येह गुमान था कि हमारी ने'मतें और ख़ुशियां ख़त्म न होंगी ? कहां गई अब वोह ने'मतें और ख़ुशियां ?" अभी आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه येह बातें कर ही रहे थे कि महल के अन्दर से येह ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी : "ऐ सालेह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जब मख़्लूक़ का मख़्लूक़ पर इतना ग़ज़ब है तो मख़्लूक़ पर ख़ालिक़ के ग़ज़ब का आ़लम क्या होगा ?" फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه लोगों की तरफ़ मुतवज्जेह हुवे और ज़ारो क़ितार रोते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! मुझे मा'लूम हुवा है कि जहन्नमी यूं पुकारेंगे : ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तू जो चाहे हमें अ़ज़ाब दे, लेकिन हम पर ग़ज़ब न फ़रमा, बेशक तेरा क़हरो ग़ज़ब आग से ज़ियादा शदीद है। ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ जब तू हम पर ग़ज़ब फ़रमाता है तो अ़ज़ाब की ज़न्जीरें, बेड़ियां और जहन्नमी तौक़ हम पर तंग हो जाते हैं।"(1)

निस्याने मौत के नव इलाज :

(1)....दुन्या की महब्बत को दिल में जगह न दीजिये क्यूंकि **निस्याने मौत** या'नी मौत को फ़रामोश कर देने का सब से बड़ा सबब दुन्या की महब्बत है, जब बन्दा दुन्या की महब्बत में मश्ग़ूल होता है तो उ़मूमन मौत को भूल जाता है।

1....उ़यूनुल हिकायात, जि. 2, स. 190 ।

www.dawateislami.net

(2)....गुस्ले मय्यित, तदफ़ीन और जनाज़ों में कसरत से शिर्कत कीजिये कि इन तमाम मुआ़मलात से **निस्याने मौत** के मूज़ी मरज़ से नजात मिलती और फ़िक्रे आख़िरत नसीब होती है।

(3)....तन्हाई में फ़ौत शुदा अह़बाब को याद कीजिये कि इस से फ़िक्रे आख़िरत से भरपूर मदनी ज़ेह्न मिलेगा कि एक न एक दिन मुझे भी इन की त़रह़ इस दुन्या से जाना है और अपनी करनी का फल भुगतना है।

(4)....उन ग़ाफ़िलों को याद कीजिये कि जिन के कफ़न बाज़ारों में आ गए थे और वोह दुन्या की रंगीनियों में गुम थे ख़ुसूसन वोह लोग जो जवानी में ही मौत के घाट उतर गए, जिन के कम उ़म्री में फ़ौत हो जाने का ख़याल तक न था।

(5)....क़ब्र के अह़वाल पर ग़ौर कीजिये कि आज मेरी मह़ब्बत का दम भरने वाले, हर वक़्त मेरे साथ रहने वाले कल मुझे इसी तंगो तारीक कोठरी में छोड़ कर वापस आ जाएंगे।

(6)....मौत से मुतअ़ल्लिक़ा कुतुब का मुत़ालआ़ कीजिये। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन रसाइल चार सनसनी ख़ेज़ ख़्वाब, बुरे ख़ातिमे के अस्बाब, क़ब्र वालों की पच्चीस ह़िकायात और कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात, क़ब्र की पहली रात वग़ैरा का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।

www.dawateislami.net

(7)....मौत के मौज़ूअ़ पर बयानात सुनिये । शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन बयानात : ग़फ़्लत, क़ब्र का इम्तिह़ान, क़ियामत का इम्तिह़ान और मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी, निगराने शूरा ह़ाजी मुह़म्मद इमरान अ़त्तारी سَلَّمَهُ اللّٰهُ الْغَنِی का फ़िक्रे आख़िरत से भरपूर बयान "**मौत का तसव्वुर**" सुनना भी बहुत मुफ़ीद है ।

(8)....अपने कमरे, दफ़्तर या मोबाइल या जहां भी बार बार नज़र पड़ती हो वहां "**अल मौत**" लिख कर लगा दीजिये ताकि जब भी इस पर नज़र पड़े तो फ़ौरन मौत की याद आ जाए ।

(9)....सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना और मौत को याद करने वालों की सोह़बत में रह कर **अ़मली तर्बिय्यत** ह़ासिल करना भी निस्याने मौत जैसे मरज़ को दूर भगाने में बहुत मुआ़विन है ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(30)....जुरअत अ़लल्लाह

जुरअत अ़लल्लाह की ता'रीफ़ :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सरकशी व क़स्दन नाफ़रमानी करना या'नी जिन कामों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने करने का हुक्म दिया है उन्हें न करना और जिस से मन्अ़ फ़रमाया है उन से अपने आप को न बचाना जुरअत अ़लल्लाह कहलाता है ।

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿اِنَّمَا السَّبِیْلُ عَلَی الَّذِیْنَ یَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَ یَبْغُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ۝۴۲﴾ (پ۲۵، الشورى: ۴۲)

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"मुआख़ज़ा तो उन्हीं पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़ सरकशी फैलाते हैं उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है ।"*

ह़दीसे मुबारका : सरकश इन्सान की ज़िल्लत व ख़्वारी :

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो दुन्या में सरकशी करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे ज़लील करेगा और जो दुन्या में तवाज़ोअ़ इख़्तियार करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की त़रफ़ एक फ़िरिश्ता भेजेगा जो उस से कहेगा : ऐ नेक बन्दे ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि मेरे कुर्ब में आ जा कि तू उन लोगों में से है जिन पर आज न कोई ख़ौफ़ है और न कुछ ग़म ।"[(1)]

जुरअत अ़लल्लाह या'नी सरकशी के बारे में तम्बीह :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सरकशी व नाफ़रमानी करना, उस के मामूरात (जिन कामों का उस ने हुक्म दिया उन) से रूगर्दानी करना और उस के मन्हिय्यात (जिन चीज़ों से उस ने मन्अ़ किया है उन) को बजा लाना ह़राम व नाजाइज़ और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

ह़िकायत : सरकशी का इलाज एक वलिय्युल्लाह के हाथ :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "या सय्यिदी ! मुझ से बहुत गुनाह सरज़द होते हैं, बराए करम ! **गुनाहों का इलाज** तजवीज़ फ़रमा दीजिये ।

---

(1) ......تاریخ ابن عساکر، ج ۵۴، ص ۱۳۴۔

www.dawateislami.net

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पहली नसीहत करते हुवे फ़रमाया : "जब गुनाह करने का पक्का इरादा हो जाए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का रिज़्क़ खाना छोड़ दो।" उस शख़्स ने हैरत से अर्ज़ की : "हुज़ूर ! येह आप कैसी नसीहत फ़रमा रहे हैं ? येह कैसे हो सकता है ? जब कि रिज़्क़ देने वाला तो वोही रब عَزَّوَجَلَّ ही है, मैं उस की रोज़ी छोड़ कर भला किस की रोज़ी खाऊंगा ?" फ़रमाया : देखो ! कितनी बुरी बात है कि जिस परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की रोज़ी खाओ उसी की नाफ़रमानी भी करो ?"

फिर दूसरी नसीहत फ़रमाई : "जब भी गुनाह का इरादा हो जाए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुल्क से बाहर निकल जाओ।" अर्ज़ की : "हुज़ूर ! येह भी कैसे हो सकता है ? मशरिक़, मग़रिब, शिमाल, जुनूब, दाएं, बाएं, ऊपर, नीचे अल ग़रज़ जिधर जाऊं उधर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही का मुल्क पाऊं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुल्क से बाहर किस तरह जाऊं ?" फ़रमाया : देखो ! कितनी बुरी बात है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुल्क में भी रहो और फिर उस की नाफ़रमानी भी करो ?"

फिर तीसरी नसीहत फ़रमाई : "जब पुख़्ता इरादा हो जाए कि बस अब गुनाह कर ही डालना है तो अपने आप को इतना छुपा लो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ न देख सके।" अर्ज़ की : "हुज़ूर ! येह कैसे मुमकिन है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे न देख सके, वोह तो दिलों के अह़वाल से भी बा ख़बर है।" फ़रमाया : "देखो ! कितनी बुरी बात है कि तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को समीओ़ बसीर (या'नी सुनने वाला और देखने वाला) भी तस्लीम करते हो और येह भी यक़ीन के साथ कह रहे हो कि हर लम्ह़े मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ देख रहा है मगर फिर भी गुनाह किये जा रहे हो ?"

www.dawateislami.net

फिर चौथी नसीह़त फ़रमाई : "जब मलकुल मौत सय्यिदुना इज़्राईल عَلَيْهِ السَّلَام तुम्हारी रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये तशरीफ़ लाएं तो उन से कह देना : थोड़ी सी मोहलत (مُہ۔لَت) दे दीजिये ताकि मैं तौबा कर लूं।" अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मेरी क्या अवक़ात और मेरी सुने कौन ? मौत का वक़्त मुक़र्रर है और मुझे एक लम्ह़ा भी मोहलत नहीं मिल सकेगी, फ़ौरन मेरी रूह़ क़ब्ज़ कर ली जाएगी।" फ़रमाया : जब तुम येह जानते हो कि मैं बे इख़्तियार हूं और तौबा की मोहलत ह़ासिल नहीं कर सकता तो फ़िल ह़ाल मिले हुवे लम्ह़ात को ग़नीमत जानते हुवे मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام की तशरीफ़ आवरी से पहले पहले तौबा क्यूं नहीं कर लेते ?"

फिर पांचवीं नसीह़त फ़रमाई : "जब तुम्हारी मौत वाक़ेअ़ हो जाए और क़ब्र में मुन्कर नकीर (सुवालो जवाब करने वाले दो फ़िरिश्ते) तशरीफ़ ले आएं तो उन को क़ब्र से हटा देना।" अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! येह क्या फ़रमा रहे हैं ? मैं उन्हें कैसे हटा सकूंगा ? मुझ में इतनी त़ाक़त कहां ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम मुन्कर नकीर को नहीं हटा सकते तो उन के सुवालात के जवाबात की तय्यारी अभी से क्यूं नहीं कर लेते ?"

फिर छटी और आख़िरी नसीह़त करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "अगर क़ियामत के दिन तुम्हें जहन्नम का हुक्म सुनाया जाए तो कह देना : "मैं नहीं जाता।" अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! वहां तो गुनहगारों को घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।" फ़रमाया : "जब तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रोज़ी खाने से भी बाज़ नहीं आ सकते, उस के मुल्क से बाहर भी नहीं निकल सकते, उस से नज़र भी नहीं बचा

www.dawateislami.net

सकते, मुन्कर नकीर को भी नहीं हटा सकते और अगर जहन्नम का हुक्म सुना दिया जाए तो उसे भी नहीं टाल सकते तो फिर गुनाह करना ही क्यूं नहीं छोड़ देते ?" उस शख़्स पर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के तजवीज़ कर्दा गुनाहों के इलाज के इन छे नसीह़त आमोज़ मदनी फूलों की ख़ुश्बूओं ने बहुत असर किया, ज़ारो क़ित़ार रोते हुवे उस ने अपने तमाम गुनाहों से सच्ची तौबा कर ली और मरते दम तक तौबा पर क़ाइम रहा।[1]

जुरअत अ़लल्लाह के अस्बाब व इलाज :

(1).....जुरअत **अ़लल्लाह** का पहला सबब **ख़ौफ़े ख़ुदा की कमी** है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपने अन्दर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ पैदा करे, अपनी तवज्जोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत की जानिब रखे, उस की ने'मतों पर शुक्र अदा करने की आ़दत डाले।

(2).....जुरअत **अ़लल्लाह** का दूसरा सबब **जहालत** और **ला इल्मी** है। बन्दा गुनाहों में मुब्तला रहता है और उसे येह पता भी नहीं होता कि "मैं गुनाह कर रहा हूं।" इस का **इलाज** येह है कि बन्दा गुनाह की मा'लूमात और इन पर मिलने वाले अ़ज़ाबात की तफ़्सील का इ़ल्म ह़ासिल करे। इस ह़वाले से तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब "**जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल**" का मुत़ालआ़ बेह़द मुफ़ीद है।

---

[1] ......تذکرۃ الاولیاء،ج ۱،ص ۱۰۰ ملخصا

www.dawateislami.net

(3).....जुरअत **अ़लल्लाह** का तीसरा सबब **हुब्बे जाह** और **त़लबे शोहरत** है। बन्दा अपनी ता'रीफ़ सुनने और शोहरत ह़ासिल करने के लिये नाजाइज़ व ह़राम काम भी कर गुज़रता है और कभी तो ईमान से भी हाथ धोना पड़ता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा सस्ती शोहरत के बदले आख़िरत में मिलने वाले रुस्वा कुन अ़ज़ाब को पेशे नज़र रखे और हुब्बे जाह और त़लबे शोहरत के अस्बाब व **इलाज** का मुत़ालआ़ कर के इस **मोहलिक** मरज़ से नजात ह़ासिल करने की कोशिश करे।

(4).....जुरअत **अ़लल्लाह** का चौथा सबब **बुरी सोह़बत** है। बुरे दोस्तों की बद आ'मालियां देख कर इन्सान के अन्दर भी गुनाह करने का जज़्बा पैदा होता है, आख़िरे कार येह जज़्बा उसे गुनाहों के दल दल में फंसा देता है जिस की वजह से बन्दा दुन्यावी ज़िल्लत के साथ उख़रवी अ़ज़ाब का भी मुस्तह़िक़ क़रार पाता है। इस का इलाज येह है कि बन्दा बुरी सोह़बत को अपने लिये अन्धा कूंआं समझे और अच्छे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करे।

(5).....जुरअत **अ़लल्लाह** का पांचवां सबब **इत्तिबाए़ शहवात** है। क्यूंकि बन्दे का नफ़्से अम्मारा उसे नाजाइज़ व ह़राम कामों पर उक्साता रहता है जिस की वजह से बन्दा क़स्दन गुनाह में मुब्तला हो जाता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपनी ज़रूरियात और जाइज़ व नाजाइज़ ख़्वाहिशात में फ़र्क़ करे, नफ़्सानी ख़्वाहिश पर क़ाबू पाए और नफ़्स की शरारतों से बा ख़बर रहे।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(31).....निफ़ाक़ (मुनाफ़क़त)

निफ़ाक़ (मुनाफ़क़त) की ता'रीफ़ :

ज़बान से मुसलमान होने का दा'वा करना और दिल में इस्लाम से इन्कार करना निफ़ाक़े ए'तिक़ादी और ज़बान व दिल का यक्सां न होना निफ़ाक़े अ़मली कहलाता है।"(1)

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿اِنَّ الْمُنٰفِقِیْنَ یُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَ هُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَ اِذَا قَامُوْۤا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰىۙ یُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَ لَا یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِیْلًا ۠﴾ (پ۵، النساء: ۱۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"बेशक मुनाफ़िक़ लोग अपने गुमान में अल्लाह को फ़रेब दिया चाहते हैं और वोही इन्हें ग़ाफ़िल कर के मारेगा और जब नमाज़ को खड़े हों तो हारे जी से लोगों को दिखावा करते हैं और अल्लाह को याद नहीं करते मगर थोड़ा।"*

एक और मक़ाम पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿اِنَّ الْمُنٰفِقِیْنَ فِی الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَ لَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِیْرًا ۙ﴾ (پ۵، النساء ۱۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"बेशक मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सब से नीचे त़बके़ में हैं और तू हरगिज़ उन का कोई मददगार न पाएगा।"*

---

(1).....बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 182 جامع العلوم والحکم، الحدیث الثامن والاربعون، ص ۵۲۹۔

www.dawateislami.net

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद **मुहम्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "मुनाफ़िक़ का अ़ज़ाब काफ़िर से भी ज़ियादा है क्यूंकि वोह दुन्या में इज़्हारे इस्लाम कर के मुजाहिदीन के हाथों से बचा रहा है और कुफ़्र के बा वुजूद मुसलमानों को मुग़ालत़ा देना और इस्लाम के साथ इस्तिहज़ा करना उस का शैवा रहा है।"

ह़दीसे मुबारका : मुनाफ़िक़ की चार अ़लामतें :

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "चार अ़लामतें जिस शख़्स में होंगी वोह ख़ालिस मुनाफ़िक़ होगा और इन में से एक अ़लामत हुई तो उस शख़्स में निफ़ाक़ की एक अ़लामत पाई गई यहां तक कि उस को छोड़ दे : (1) जब अमानत दी जाए तो ख़ियानत करे (2) जब बात करे तो झूट बोले (3) जब वा'दा करे तो वा'दा ख़िलाफ़ी करे (4) जब झगड़ा करे तो गाली बके।"(1)

निफ़ाक़ (मुनाफ़क़त) के बारे में तम्बीह :

निफ़ाक़े ए'तिक़ादी कुफ़्र का सब से बड़ा दरजा है, मुनाफ़िक़े ए'तिक़ादी को कल बरोज़े क़ियामत हमेशा हमेशा के लिये जहन्नम के सब से निचले दरजे में डाला जाएगा जब कि निफ़ाक़े अ़मली गुनाहे कबीरा, ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। **रब्बुल आ़लमीन** दोनों त़रह़ के निफ़ाक़ से तमाम मुसलमानों को मह़फ़ूज़ व मामून फ़रमाए। आमीन

---

(1) بخاری، کتاب الایمان، علامۃ المنافق، ج ۱، ص ۲۴، حدیث: ۳۳۔

www.dawateislami.net

हिकायत : निफ़ाक़ से बचने का मदनी अन्दाज़ :

इमामुल मुअ़ब्बिरीन हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद इब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن ने एक शख़्स से उस का ह़ाल अह़वाल पूछा तो वोह बड़ी मायूसी से बोला : "उस का क्या ह़ाल होगा जिस पर पांच सो दिरहम क़र्ज़ हो, बाल बच्चे दार हो मगर पल्ले कुछ न हो।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه येह सुन कर घर तशरीफ़ लाए और एक हज़ार दिरहम ला कर उस को पेश करते हुवे फ़रमाया : "पांच सो दिरहम से अपना क़र्ज़ अदा कर दो और मज़ीद पांच सो अपने घर ख़र्च के लिये रख लो।" इस के बा'द आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने दिल में अ़हद किया कि आयिन्दा किसी का ह़ाल दरयाफ़्त नहीं करूंगा।" **हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "इमाम इब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن ने येह अ़हद इस लिये किया कि अगर मैं ने किसी का ह़ाल पूछा और उस ने अपनी परेशानी बताई फिर अगर मैं ने उस की मदद नहीं की तो मैं पूछने के मुआ़मले में मुनाफ़िक़ ठहरूंगा।"(1)

निफ़ाक़ के अस्बाब और इन का इलाज

निफ़ाक़े ए'तिक़ादी के दो अस्बाब और इन का इलाज :

(1).....निफ़ाक़े ए'तिक़ादी का पहला सबब **जहालत** है। जब बन्दा सह़ीह़ त़रीक़े से अ़क़ाइद, फ़राइज़ व वाजिबात का इल्म ह़ासिल नहीं करता तो शैत़ान दिल में त़रह़ त़रह़ के वस्वसे पैदा करता है तो बन्दा निफ़ाक़े ए'तिक़ादी जैसे मूज़ी मरज़ में मुब्तला हो जाता

(1)......کیمیائے سعادت، ج ۱، ص ۴۰۸۔

www.dawateislami.net

है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अ़क़ाइद, फ़राइज़ व वाजिबात का तफ़्सीली इ़ल्म ह़ासिल करे, उ़लमाए अहले सुन्नत की कुतुब के वसीअ़ मुत़ालए़ के साथ साथ उन की सोह़बत भी इख़्तियार करे, जब भी कोई शरई व ए'तिक़ादी मस्अला दर पेश हो तो किसी सुन्नी सह़ीह़ुल अ़क़ीदा मुस्तनद आ़लिमे दीन या सुन्नी मुफ़्तियाने किराम व **दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत** से राबित़ा करे। अ़क़ाइदे अहले सुन्नत की तफ़्सील के लिये सदरुश्शरीआ़ बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की मायानाज़ तसनीफ़ "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा अव्वल और रोज़ मर्रा के शरई मसाइल के लिये इसी किताब "**बहारे शरीअ़त**" के बक़िय्या ह़िस्सों का मुत़ालआ़ निहायत ही मुफ़ीद है।

(2).....निफ़ाक़े ए'तिक़ादी का दूसरा सबब **बद अ़क़ीदा लोगों की सोह़बत** है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा बद अ़क़ीदा लोगों की सोह़बत से दूर भागे और येह मदनी ज़ेह्न बनाए कि अगर मुझे किसी शख़्स के बारे में मा'लूम हो जाए कि येह शख़्स चोर है और इस के साथ उठने बैठने से मेरा माल चोरी होने का अन्देशा है तो यक़ीनन मैं ऐसे शख़्स के साथ कभी भी बैठना गवारा न करूंगा या बहुत एह़तियात़ करूंगा, लेकिन बद अ़क़ीदा लोग तो ऐसे चोर हैं जो मेरा सब से क़ीमती ख़ज़ाना या'नी ईमान चुरा सकते हैं तो मैं उन लोगों की सोह़बत कैसे गवारा करूं? ख़बरदार! ईमान सब से बड़ी दौलत है अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता ईमान बरबाद हो गया तो कहीं के नहीं रहेंगे। बद अ़क़ीदा शख़्स के साए से भी दूर भागें, इस से किसी क़िस्म का कोई तअ़ल्लुक़ न रखें, यक़ीनन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ख़ुसूसन इमामुल अम्बिया, ह़ुज़ूर सय्यिदुल अस्फ़िया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

की गुस्ताख़ी करने वाले, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पाकीज़ा और मुबारक ज़ात में उ़यूब तलाश करने वाले, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पर तबर्रा व बोहतान तराशी करने वाले, अहले बैते उ़ज़्ज़ाम की शान में ज़बान दराज़ करने वाले, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के ख़िलाफ़ नीज़ इन के मज़ारात के ख़िलाफ़ ज़बान दराज़ करने वाले किसी भी त़रह़ मुसलमानों के ख़ैर ख़्वाह नहीं हो सकते, ऐसे लोगों की सोह़बत से अपने आप को हमेशा दूर रखिये, शैत़ाने लईन की इत्तिबाअ़ करने वाले ऐसे लोगों से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगिये। ऐसे लोगों की सोह़बत इख़्तियार कीजिये जो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان, अहले बैते किराम, औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से मह़ब्बत करने वाले हों, इन की शान बयान करने वाले हों, बुग़्ज़ो इनाद के बजाए इ़श्क़ो मह़ब्बत की बातें करने वाले हों। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन की सोह़बत इख़्तियार करने की बरकत से ईमान की ह़िफ़ाज़त का मदनी ज़ेह्न मिलेगा, गुनाहों से बचने और नेकियों के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न मिलेगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

निफ़ाक़े अ़मली के तीन अस्बाब और इन का इ़लाज :

(1).....निफ़ाक़े अ़मली का पहला सबब **जहालत** है कि बन्दा जब निफ़ाक़, इस की अ़लामात, इस की तबाहकारियों से जाहिल होता है तो इस मूज़ी मरज़ में मुब्तला हो जाता है। इस का **इ़लाज** येह है कि बन्दा निफ़ाक़े अ़मली और इस की तबाहकारियों का इ़ल्म ह़ासिल करे, इन पर ग़ौरो फ़िक्र कर के बचने की तदाबीर इख़्तियार करे।

www.dawateislami.net

(2).....निफ़ाक़े अ़मली का दूसरा सबब **हिर्स़े मज़्मूम** है कि बन्दा किसी चीज़ की त़मअ़ और लालच की वजह से मुनाफ़क़त करता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा हिर्स़े मज़्मूम की तबाहकारियों पर ग़ौर करे और येह मदनी ज़ेह्न बनाए कि किसी दुन्यवी फ़ानी शै की ख़ात़िर मुनाफ़क़त करना किसी भी त़रह़ से अ़क़्लमन्दी का काम नहीं है। हिर्स़ की तबाहकारियां जानने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब **''हिर्स़''** का मुत़ालआ़ कीजिये।

(3).....निफ़ाक़े अ़मली का तीसरा सबब **हुब्बे दुन्या** है कि जब बन्दे पर दुन्या की मह़ब्बत ग़ालिब आती है तो उसे ह़ासिल करने के लिये बसा अवक़ात मुनाफ़क़त इख़्तियार कर लेता है। इस का इलाज येह है कि बन्दा हुब्बे दुन्या जैसी मूज़ी बीमारी की आफ़तों पर ग़ौरो फ़िक्र करे कि येह बीमारी मुख़्तलिफ़ गुनाहों में मुब्तला होने का एक सबब है बल्कि बसा अवक़ात तो हुब्बे दुन्या जैसे मूज़ी मरज़ में मुब्तला हो कर ईमान बरबाद होने का भी ख़त़रा बढ़ जाता है। लिहाज़ा बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में इस मूज़ी मरज़ से नजात की दुआ़ करता रहे कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे इस मरज़ से नजात अ़त़ा फ़रमा। आमीन

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(32)....इत्तिबाए़ शैत़ान

इत्तिबाए़ शैत़ान की ता'रीफ़ :

''शैत़ान के वसाविस व शुब्हात के मुत़ाबिक़ चलना इत्तिबाए़ शैत़ान कहलाता है।''(1)

---

(1).....तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह. 2, अल बक़रह, तह़तल आयत : 208, स. 69 माख़ूज़न।

www.dawateislami.net

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِؕ وَ مَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَ الْمُنْكَرِؕ﴾(پ١٨، النور: ٢١)

"तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो शैतान के क़दमों पर न चलो और जो शैतान के क़दमों पर चले तो वोह तो बे हयाई और बुरी ही बात बताएगा ।"

हदीसे मुबारका : शैतान की इत्तिबाअ़ न करने का इन्आ़म :

हज़रते सय्यिदुना सबरह बिन अबी फ़ाका رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक शैतान आदमी की राहे इस्लाम में बैठ जाता है और कहता है : तू इस्लाम क़बूल कर रहा है ? हालांकि तू अपना और अपने आबा का दीन छोड़ रहा है। वोह आदमी उस की मुख़ालफ़त कर के इस्लाम क़बूल करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है। फिर शैतान उस की राहे हिजरत में रुकावट डालता है और कहता है : तू हिजरत कर रहा है ? हालांकि तू अपने ज़मीनो आस्मान छोड़ रहा है। वोह आदमी उस की मुख़ालफ़त कर के हिजरत करता है। फिर शैतान बन्दे की राहे जिहाद में रुकावट डालता है और कहता है : तू जिहाद कर रहा है ? हालांकि येह तो जान और माल का जिहाद है कि तू जिहाद करेगा तो क़त्ल कर दिया जाएगा, तेरी ज़ौजा का कहीं और निकाह कर दिया जाएगा और तेरा माल तक़्सीम कर दिया जाएगा। वोह आदमी उस की मुख़ालफ़त कर के जिहाद करता है।

www.dawateislami.net

फिर इरशाद फ़रमाया : जो ऐसा करे और मर जाए या राहे खुदा में मारा जाए या डूब जाए या उस की सुवारी उसे गिरा कर मार दे तो (इन तमाम सूरतों में) **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर हक़ है कि उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाए** ।"(1)

इत्तिबाए शैतान के बारे में तम्बीह :

शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है, इस का मक़्सद दुन्या व आख़िरत दोनों को तबाहो बरबाद करना है, हर छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा गुनाह करना शैतान ही की इत्तिबाअ़ है, शैतान के वसाविस व शुब्हात के मुताबिक़ चलना नाजाइज़ व हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ।

हिकायत : शैतान की इत्तिबाअ़ करने का इब्रतनाक अन्जाम :

मन्कूल है कि बनी इस्राईल में एक बहुत बड़ा आ़बिद या'नी इबादत गुज़ार शख़्स था । उसी अ़लाक़े के तीन भाई एक बार उस आ़बिद की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवे कि हम कहीं सफ़र पर जा रहे हैं, वापसी तक हमारी जवान बहन को हम आप के पास छोड़ कर जाना चाहते हैं । आ़बिद ने ख़ौफ़े फ़ितना के सबब मा'ज़िरत चाही मगर उन के बेहद इस्रार पर वोह तय्यार हो गया और कहा कि उसे मैं अपने साथ तो नहीं रखूंगा अलबत्ता इबादत ख़ाने के किसी क़रीबी घर में उस को ठहरा दीजिये, चुनान्चे, ऐसा ही किया गया । आ़बिद खाना अपने इबादत ख़ाने के दरवाज़े के बाहर रख देता और वोह उठा कर ले जाती ।

1 ......صحیح ابن حبان، کتاب السیر، باب فضل الجهاد، ذکر۔۔۔الخ، ج۷، ص۵۷، حدیث: ۴۵۸۲۔

www.dawateislami.net

कुछ दिन के बा'द शैतान ने आबिद के दिल में हमदर्दी के अन्दाज़ में वस्वसा डाला कि खाने के अवक़ात में जवान लड़की अपने घर से निकल कर आती है कहीं किसी बदकार मर्द के हथ्थे न चढ़ जाए, बेहतर येह है कि अपने दरवाज़े के बजाए उस के दरवाज़े के बाहर खाना रख दिया जाए, इस अच्छी निय्यत का काफ़ी सवाब मिलेगा। चुनान्चे, उस ने अब खाना उस के दरवाज़े पर पहुंचाना शुरूअ़ किया। चन्द रोज़ बा'द शैतान ने फिर वस्वसे के ज़रीए़ आ़बिद का जज़्बए हमदर्दी उभारा कि बेचारी चुप चाप अकेली पड़ी रहती है, आख़िर इस की वह्शत दूर करने की अच्छी निय्यत के साथ बात चीत करने में क्या गुनाह है? येह तो कारे सवाब है! यूं भी तुम बहुत परहेज़गार आदमी हो, नफ़्स पर ह़ावी हो, निय्यत भी साफ़ है येह तुम्हारी बहन की जगह है। चुनान्चे, बात चीत का सिलसिला शुरूअ़ हुवा। जवान लड़की की सुरीली आवाज़ ने आ़बिद के कानों में रस घोलना शुरूअ़ कर दिया, दिल में हैजान बरपा हुवा, शैतान ने मज़ीद उक्साया यहां तक कि "न होने का हो गया।" या'नी आ़बिद ने उस लड़की के साथ मुंह काला कर लिया ह़त्ता कि लड़की ने बच्चा भी जन दिया। शैतान ने दिल में वस्वसों के ज़रीए़ ख़ौफ़ दिलाया कि अगर लड़की के भाइयों ने बच्चा देख लिया तो बड़ी रुस्वाई होगी लिहाज़ा इ़ज़्ज़त प्यारी है तो नौमौलूद बच्चे का गला काट कर ज़मीन में गाड़ दो। वोह ज़ेह्नी तौर पर तय्यार हो गया फिर फ़ौरन वस्वसा डाला कि कहीं ऐसा न हो कि लड़की ही अपने भाइयों को बता दे बस आ़फ़िय्यत इसी में है कि "न रहे बांस न बजे बांसरी" दोनों ही को ज़ब्ह़ कर डालो।

www.dawateislami.net

अल ग़रज़ आ़बिद ने जवान लड़की और नन्हे बच्चे को बे दर्दी के साथ ज़ब्ह़ कर के उसी मकान में एक गढ़ा खोद कर दफ़्न कर के ज़मीन बराबर कर दी। जब तीनों भाई सफ़र से लौट कर आ़बिद के पास आए तो उस ने इज़्हारे अफ़्सोस करते हुवे कहा : "आप की बहन फ़ौत हो गई है, आइये उस की क़ब्र पर फ़ातिह़ा पढ़ लीजिये।" चुनान्चे, आ़बिद उन्हें क़ब्रिस्तान ले गया और एक क़ब्र दिखा कर झूट मूट कहा : "येह आप की मर्हूमा बहन की क़ब्र है।" चुनान्चे, उन्हों ने फ़ातिह़ा पढ़ी और रन्जीदा रन्जीदा वापस आ गए।

रात शैत़ान एक मुसाफ़िर की सूरत में तीनों भाइयों के ख़्वाबों में आया और उस ने आ़बिद के तमाम सियाह कारनामे बयान कर दिये और तदफ़ीन वाली जगह की निशानदेही भी कर दी कि यहां खोदो। चुनान्चे, तीनों उठे और एक दूसरे को अपना ख़्वाब सुनाया। तीनों ने मिल कर ख़्वाब में की गई निशानदेही के मुत़ाबिक़ ज़मीन खोदी तो वाक़ेई वहां बहन और बच्चे की ज़ब्ह़ शुदा लाशें मौजूद थी। वोह तीनों आ़बिद पर चढ़ दौड़े, बिल आख़िर उस ने इक़्बाले जुर्म कर लिया।

उन्हों ने बादशाह के दरबार में उस के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दाइर कर दिया। आ़बिद को उस के इ़बादत ख़ाने से घसीट कर निकाला गया और सज़ाए मौत देने का फ़ैसला हुवा। जब सूली पर चढ़ाने के लिये लाया गया तो शैत़ान उस पर ज़ाहिर हुवा और कहने लगा : "मुझे पहचान ! मैं तेरा वोही शैत़ान हूं जिस ने तुझे औ़रत के फ़ितने में डाल कर ज़िल्लत की आख़िरी मन्ज़िल तक पहुंचाया है, ख़ैर घबरा मत ! अब भी मैं तुझे बचा सकता हूं मगर शर्त़ येह है कि तुझे मेरी इत़ाअ़त करनी होगी।" मरता क्या न करता ! आ़बिद ने कहा : "मैं तेरी हर बात मानने के लिये तय्यार हूं।" शैत़ान ने कहा :

www.dawateislami.net

"अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इन्कार कर दे और काफ़िर हो जा।" उस बद नसीब आ़बिद ने कुफ़्र बकते हुवे कहा : "मैं ख़ुदा का इन्कार करता हूं और काफ़िर होता हूं।" शैत़ान एक दम ग़ाइब हो गया और सिपाहियों ने फ़ौरन उस बद नसीब आ़बिद को फांसी पर चढ़ा दिया।(1)

इत्तिबाए़ शैत़ान के चार अस्बाब व इलाज :

(1).....**इत्तिबाए़ शैत़ान** का सब से बड़ा और बुन्यादी सबब **वस्वसों की पैरवी है** क्यूंकि गुनाह करवाने और नेकियां छुड़वाने में वस्वसे पैदा करना शैत़ान का सब से बड़ा हथयार है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा शैत़ानी वस्वसों के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करे, इन से बचने के त़रीक़े जाने और बचने की कोशिश भी करे, शैत़ान के मक्रो फ़रेब और इस के वस्वसों से बचने के लिये रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ करे, शैत़ानी वसाविस से बचने का **रूह़ानी इलाज** भी करता रहे कि जब भी कोई शैत़ानी वस्वसा या ख़याल दिल में आए तो फ़ौरन तअ़व्वुज़ या'नी اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم पढ़े, لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه पढ़ कर बाईं त़रफ़ तीन मरतबा थू थू करे और फ़ौरन उस शैत़ानी वस्वसे को अपने ज़ेहन से दूर करे, नीज़ शैत़ानी वसाविस को क़त़अ़न ख़ात़िर में न लाए। शैत़ानी वस्वसों की मा'लूमात और इन से बचने के त़रीक़े जानने के लिये शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**वस्वसे और इन का इलाज**" का हफ़्ते में एक बार मुत़ालआ़ बेहद मुफ़ीद है।

(2).....**इत्तिबाए़ शैत़ान** का दूसरा सबब **बुरी सोह़बत** है कि सोह़बत अपना असर रखती है अच्छी सोह़बत अच्छा असर और

---

1 ......تلبیس ابلیس، ص ۳۸-۴۰ ملخصاً

www.dawateislami.net

बुरी सोह़बत बुरा असर। जब बन्दा बुरे लोगों की सोह़बत में बैठने लगता है तो फिर वोह शैत़ानी कामों में पड़ जाता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा नेक, परहेज़गार और मुत्तक़ी लोगों की सोह़बत इख़्तियार करे, ऐसे लोगों के पास बैठे जिन्हें देख कर रब عَزَّوَجَلَّ की याद आए, गुनाहों से नफ़रत और नेकियों की त़रफ़ रग़बत मिले, दिल में रह़मान عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत और शैत़ाने लईन की नफ़रत पैदा हो। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी का मुश्कबार मदनी माह़ोल भी गुनाहों से नफ़रत करने और नेकियों की त़रफ़ रग़बत करने में बहुत मुआ़वनत करता है, लाखों लोग इस मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने के बा'द गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर नेकियों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं, आप भी इस मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने अ़लाक़े में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत कीजिये, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की कोशिश कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप की ज़िन्दगी में भी मदनी इन्क़िलाब बर्पा हो जाएगा।

(3).....**इत्तिबाए़ शैत़ान** का तीसरा सबब **गुनाहों में रग़बत** है। जब बन्दा ख़ुद गुनाहों में दिलचस्पी ले कर शैत़ान की पैरवी करता है तो उस के लिये गुनाह करना बहुत आसान और नेकी करना मुश्किल हो जाता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा येह मदनी ज़ेह्न बनाए कि गुनाहों में रग़बत **बुरे ख़ातिमे का एक सबब** है। और बुरा ख़ातिमा दुन्या व आख़िरत की तबाही व बरबादी है, लिहाज़ा ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये गुनाहों से बे रग़बती और नेकियों में दिलचस्पी लेना बहुत ज़रूरी है।

www.dawateislami.net

(4).....**इत्तिबाए़ शैत़ान** का चौथा सबब **अपनी इस्लाह़ की जानिब तवज्जोह न देना है,** कि जो शख़्स अपना मुह़ासबा नहीं करता वोह कभी भी अपनी ख़ामियों और गुनाहों पर मुत्त़लअ़ नहीं हो पाता यूं वोह शैत़ान की पैरवी में मुब्तला हो कर गुनाह पर गुनाह करता ही रहता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा रोज़ाना अपने नफ़्स का मुह़ासबा करे, रात को सोने से क़ब्ल इस बात पर ग़ौर करे कि आज मैं ने कौन कौन से अच्छे आ'माल किये हैं और कौन कौन से बुरे अ़मल और गुनाह मुझ से सरज़द हुवे हैं, गुनाहों पर अपने नफ़्स को मलामत करे और आयिन्दा न करने का अ़हद करे। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ा कर्दा मदनी इन्आ़मात भी नफ़्स का मुह़ासबा करने में बहुत मुआ़विन हैं। लिहाज़ा आप भी मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये, रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुवे मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कीजिये और हर माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की बरकत से इत्तिबाए़ शैत़ान जैसे मूज़ी मरज़ समेत दीगर गुनाहों से भी बचने का मदनी ज़ेह्न मिलेगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(33).....बन्दगिये नफ़्स

बन्दगिये नफ़्स की ता'रीफ़ :

जाइज़ व नाजाइज़ की परवाह किये बिग़ैर नफ़्स का हर हुक्म मान लेना **बन्दगिये नफ़्स** कहलाता है।

www.dawateislami.net

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَ اَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَ نَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰىۙ(۴۰) فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِیَ الْمَاْوٰىؕ(۴۱)﴾ (پ۳۰، النّٰزعٰت: ۴۰، ۴۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और वोह जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका, तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है।"

ह़दीसे मुबारका : समझदार कौन....?

ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "समझदार वोह शख़्स है जो अपना मुह़ासबा करे और आख़िरत की बेहतरी के लिये नेकियां करे और अह़मक़ वोह है जो अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात की पैरवी करे और अल्लाह तआ़ला से इन्आ़मे आख़िरत की उम्मीद रखे।"(1)

बन्दगिये नफ़्स के बारे में तम्बीह :

बन्दगिये नफ़्स या'नी जाइज़ व नाजाइज़ की परवाह किये बिग़ैर नफ़्स की हर हर बात को मान लेना या इस पर अ़मल कर लेना निहायत ही मोहलिक या'नी हलाकत में डालने वाला काम है।

ह़िकायत : बन्दगिये नफ़्स का इब्रतनाक अन्जाम :

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुस्लिम बिन कुतैबा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने "**सियरुल अ़जम**" में पढ़ा कि जब "**अर्दशीर**" नामी बादशाह ने अपनी हुकूमत को मुस्तह़्कम कर लिया तो छोटे छोटे बादशाहों ने इस के ताबेअ़ रहने का इक़रार कर लिया। अब इस की नज़र बहुत बड़ी क़रीबी सल्त़नत "**सुरयानिय्या**"

1 ......مسند احمد، شداد بن اوس، ج۶، ص۷۸، حدیث: ۱۷۱۲۳۔

www.dawateislami.net

की त़रफ़ थी। चुनान्चे, अर्दशीर ने उस मुल्क पर चढ़ाई कर दी, वहां का बादशाह एक बड़े शहर में क़ल्अ़ा बन्द था। अर्दशीर ने शहर का मुह़ासरा कर लिया लेकिन काफ़ी अ़र्सा गुज़रने के बावुजूद भी वोह उस शहर को फ़त्ह़ न कर सका। एक दिन बादशाह की बेटी क़ल्ए़ की दीवार पर चढ़ी तो अचानक उस की नज़र अर्दशीर पर पड़ी। उस की मर्दानी वजाहत व ख़ूब सूरती देख कर शहज़ादी उस की मह़ब्बत में गिरिफ़्तार हो गई और इ़श्क़ की आग में जलने लगी, बिल आख़िर नफ़्स के हाथों मजबूर हो कर उस ने एक तीर पर येह इ़बारत लिखी : "ऐ ह़सीनो जमील बादशाह ! अगर तुम मुझ से शादी करने का वा'दा करो तो मैं तुम्हें ऐसा ख़ुफ़्या रास्ता बताऊंगी जिस के ज़रीए़ तुम थोड़ी सी मशक़्क़त के बा'द ब आसानी इस शहर को फ़त्ह़ कर लोगे।" फिर शहज़ादी ने वोह तीर अर्दशीर बादशाह की जानिब फेंक दिया। उस ने तीर पर लिखी इ़बारत पढ़ी और एक तीर पर येह जवाब लिखा : "अगर तुम ने ऐसा रास्ता बता दिया तो तुम्हारी ख़्वाहिश ज़रूर पूरी की जाएगी येह हमारा वा'दा है।" और तीर शहज़ादी की जानिब फेंक दिया। शहज़ादी ने येह इ़बारत पढ़ी तो फ़ौरन ख़ुफ़्या रास्ते का पता लिख कर तीर बादशाह की त़रफ़ फेंक दिया। शहवत के हाथों मजबूर होने वाली उस बे मुरुव्वत शहज़ादी के बताए हुवे रास्ते से **अर्दशीर** बादशाह ने बहुत जल्द इस शहर को फ़त्ह़ कर लिया।

ग़फ़्लत व बे ख़बरी के आ़लम में बहुत सारे सिपाही हलाक हो गए और शहर का बादशाह या'नी उस शहज़ादी का बाप भी क़त्ल कर दिया गया। ह़स्बे वा'दा अर्दशीर ने शहज़ादी से शादी कर ली,

www.dawateislami.net

शहज़ादी को न तो अपने बाप की हलाकत का ग़म था और न ही अपने मुल्क की बरबादी की कोई परवाह। बस अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश के मुताबिक़ होने वाली शादी पर वोह बेहद ख़ुश थी। दिन गुज़रते रहे, उस की ख़ुशियों में इज़ाफ़ा होता रहा।

एक रात जब शहज़ादी बिस्तर पर लैटी तो काफ़ी देर तक उसे नींद न आई, वोह बेचैनी से बार बार करवटें बदलती रही। **अर्दशीर** ने उस की येह हालत देखी तो कहा : "क्या बात है ? तुम्हें नींद क्यूं नहीं आ रही ?" शहज़ादी ने कहा : "मेरे बिस्तर पर कोई चीज़ है जिस की वजह से मुझे नींद नहीं आ रही।" **अर्दशीर** ने जब बिस्तर देखा तो चन्द धागे एक जगह जम्अ थे इन की वजह से शहज़ादी का इन्तिहाई नर्म व नाज़ुक जिस्म बेचैन हो रहा था। **अर्दशीर** को उस के जिस्म की नर्मी व नज़ाकत पर बड़ा तअज्जुब हुवा। उस ने पूछा : "तुम्हारा बाप तुम्हें कौन सी गिज़ा खिलाता था जिस की वजह से तुम्हारा जिस्म इतना नर्म व नाज़ुक है ?" शहज़ादी ने कहा : "मेरी गिज़ा मख्खन, हड्डियों का गूदा, शहद और मग्ज़ हुवा करती थी।" **अर्दशीर** ने कहा : "तेरे बाप की तरह आसाइश व आराम तुझे कभी किसी ने न दिया होगा। तू ने उस के एहसान और क़राबत का इतना बुरा बदला दिया कि उसे क़त्ल करवा डाला। जब तू अपने शफ़ीक़ बाप के साथ भलाई न कर सकी तो मैं भी अपने आप को तुझ से महफ़ूज़ नहीं समझता।" फिर **अर्दशीर** ने हुक्म दिया : "इस के सर के बालों को ताक़तवर घोड़े की दुम से बान्ध कर घोड़े को तेज़ी से दौड़ाया जाए।" चुनान्चे, हुक्म की ता'मील हुई और चन्द ही लम्हों में उस नफ़्स परस्त शहज़ादी का जिस्म टुकडे टुकडे हो गया।(1)

1 ......उ़यूनुल हिकायात, जि. 2, स. 231।

www.dawateislami.net

बन्दगिये नफ़्स के सात अस्बाब व इलाज :

(1).....**बन्दगिये नफ़्स** का पहला सबब **इख़्लास की कमी** है क्यूंकि रियाकारी और हुब्बे जाह वग़ैरा नफ़्स की तस्कीन का ज़रीआ हैं लिहाज़ा नफ़्स कभी नहीं चाहेगा कि बन्दे का अ़मल महूज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हो। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपने अ़मल में इख़्लास पैदा करे और मुख़्लिसीन की सोहबत इख़्तियार करे।

(2).....**बन्दगिये नफ़्स** का दूसरा सबब **उख़रवी अन्जाम से बे ख़बरी** है इसी वजह से बन्दा नफ़्स के फ़रेब में आ कर गुनाहों में मुब्तला हो जाता है। इस का इलाज येह है कि गुनाहों के बारे में **मा'लूमात** हासिल करे ताकि आख़िरत में **मुआख़ज़े का ख़ौफ़** उसे इस मोहलिक मरज़ से बचा सके।

(3).....**बन्दगिये नफ़्स** का तीसरा सबब **ख़ौफ़े ख़ुदा की कमी** है क्यूंकि ख़ौफ़े ख़ुदा ही नफ़्स की गुलामी से नजात का सब से बड़ा ज़रीआ है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपने अन्दर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ पैदा करे।

(4).....**बन्दगिये नफ़्स** का चौथा सबब **नफ़्सानी ख़्वाहिशात** की पैरवी है क्यूंकि किसी पसो पेश के बिग़ैर नफ़्स की हर बात मान लेना बसा अवक़ात ईमान की बरबादी का सबब भी बन जाता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपने नफ़्स की तर्बिय्यत करने के लिये हर ख़्वाहिश का दियानत दाराना जाइज़ा ले।

(5).....**बन्दगिये नफ़्स** का पांचवां सबब **शिकम सैरी** है क्यूंकि जिस शख़्स का पेट भरा होता है उस पर शैतान बा आसानी

www.dawateislami.net

ग़ालिब आ जाता है जिस की वजह से नेकियों में दिल नहीं लगता अलबत्ता गुनाहों में दिलचस्पी बढ़ जाती है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा भूक से कम खा कर नफ़्स की शरारतों को नाकाम बनाए। तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल में भूक से कम खाने को **"पेट का कुफ़्ले मदीना लगाना"** कहते हैं। इस पर अमल का ज़ेहन बनाने के लिये शैखे़ तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دامت برکاتہم العالیہ की माया नाज़ तस्नीफ़ **"पेट का कुफ़्ले मदीना"** का मुतालआ बहुत मुफ़ीद है।

(6).....**बन्दगिये नफ़्स** का छटा सबब नफ़्स की शरारतों से बे ख़बरी है क्यूंकि जब दुश्मन के हम्ले का तरीक़ए कार ही मा'लूम न हो तो उस से बचने के लिये तदबीर क्यूंकर इख़्तियार करेगा ? इस का इलाज येह है कि बन्दा अपनी जिस नफ़्सानी ख़्वाहिश में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी का कोई अदना सा भी पहलू पाए तो उसे फ़ौरन तर्क कर दे।

(7).....**बन्दगिये नफ़्स** का सातवां सबब अपने **मा'मूलाते ज़िन्दगी का एहतिसाब न करने की आदत है।** क्यूंकि अपने रोज़ मर्रा के मा'मूलात का जाइज़ा लिये बिग़ैर अपनी ख़ामियों और ख़ताओं से आगाही मुश्किल है और न ही येह पता चलता है कि "मेरी ज़िन्दगी ख़ालिक़ की इताअत में गुज़र रही है या नफ़्स की पैरवी में ?" इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपने नफ़्स का मुहासबा करे। तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में अपने नफ़्स का मुहासबा करने को **"फ़िक्रे मदीना"** कहते हैं। आप भी इस मदनी माहोल से हर

www.dawateislami.net

दम वाबस्ता हो जाइये, रोज़ाना फ़िक्रे मदीना कीजिये, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़ता कर्दा मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये और अपनी दुन्या व आख़िरत को बेहतर बनाइये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(34).....रग़्बते बत़ालत

रग़्बते बत़ालत की ता'रीफ़ :

नाजाइज़ व ह़राम कामों की जानिब दिलचस्पी रखना रग़्बते बत़ालत कहलाता है।

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴾ (پ۲۱، العنكبوت:۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"तुम फ़रमाओ अल्लाह बस है मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह, जानता है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है और वोह जो बात़िल पर यक़ीन लाए और अल्लाह के मुन्किर हुवे वोही घाटे में हैं।"*

ह़दीसे मुबारका : बद तरीन शख़्स :

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बदतर है वोह बन्दा जो बुख़्ल और तकब्बुर करे और बुलन्दो बाला और बड़ाई वाले (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) को भूल जाए, बदतर है वोह बन्दा जो ज़ुल्म व ज़ियादती करे और जब्बार عَزَّوَجَلَّ को भुला दे, बदतर है वोह बन्दा जो ग़ाफ़िल हो और खेल कूद में पड़ा रहे और क़ब्रिस्तान और उस में बोसीदा होने को

www.dawateislami.net

भूल जाए, बदतर है वोह बन्दा जो सरकशी करे और ह़द से बढ़ जाए और अपनी इब्तिदा और इन्तिहा को भूल जाए, बदतर है वोह बन्दा जो दीन को **शहवाते नफ़्सानिय्या** से फ़रेब और धोका दे, बदतर है वोह बन्दा जिस का रहनुमा ह़िर्स हो, बदतर है वोह बन्दा जिस को ख़्वाहिशात राहे ह़क़ से भटका दें, बदतर है वोह बन्दा जिस का शौक़ और रग़बत उस को ज़लीलो ख़्वार कर दे।"(1)

रग़बते बत़ालत के बारे में तम्बीह :

रग़बते बत़ालत या'नी नाजाइज़ व ह़राम कामों में दिलचस्पी रखना निहायत मज़्मूम और हलाकत में डालने वाला अम्र है।

ह़िकायत : बेह़याई की त़रफ़ मैलान का अन्जाम :

ह़ज़रते सय्यिदुना लूत़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने जब अपनी क़ौम को वा'ज़ो नसीह़त फ़रमाई तो उन्हों ने मुत़लक़ इस पर कान न धरे बल्कि मज़ीद सरकशी पर उतर आए। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब के साथ चन्द फ़िरिश्तों को ले कर आस्मान से उतरे। फिर येह फ़िरिश्ते निहायत ही ख़ूब सूरत लड़कों की शक्ल में मेहमान बन कर ह़ज़रते सय्यिदुना लूत़ عَلَیْہِ السَّلَام के हां पहुंचे। इन मेहमानों के हुस्नो जमाल को देख कर क़ौम की ह़राम व नाजाइज़ कामों की त़रफ़ रग़बत का ख़याल कर के ह़ज़रते सय्यिदुना लूत़ عَلَیْہِ السَّلَام बहुत फ़िक्र मन्द हुवे। थोड़ी देर बा'द क़ौम के बद फ़े'लों ने आप عَلَیْہِ السَّلَام के घर का मुह़ासरा कर लिया और

1 ......ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ۔۔۔الخ، ج۴، ص۲۰۳، حدیث:۲۴۵۶۔

www.dawateislami.net

इन मेहमानों के साथ बद फ़े'ली के इरादे से दीवार पर चढ़ने लगे। हज़रते सय्यिदुना लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने निहायत दिल सोज़ी के साथ उन लोगों को समझाया और इस बुरे काम से मन्अ़ किया, मगर वोह बद फ़े'ल और सरकश क़ौम अपने बेहूदा और बुरे इक़्दाम से बाज़ न आई। आप अपनी तन्हाई और मेहमानों के सामने रुस्वाई से तंग दिल हो कर ग़मगीन व रन्जीदा हो गए।

येह मन्ज़र देख कर सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ! आप बिल्कुल फ़िक्र न करें, हम लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के भेजे हुवे फ़िरिश्ते हैं जो इन बदकारों पर अ़ज़ाब ले कर नाज़िल हुवे हैं। लिहाज़ा आप मोअमिनीन और अपने अहलो इ़याल को साथ ले कर सुब्ह़ होने से क़ब्ल ही इस बस्ती से दूर निकल जाएं और अपनी क़ौम को ख़बरदार कर दें कि कोई शख़्स पीछे मुड़ कर इस बस्ती की त़रफ़ न देखे वरना वोह भी इस अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हो जाएगा।" चुनान्चे, सय्यिदुना लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام अपने अहलो इ़याल और दीगर मोअमिनीन को हमराह ले कर बस्ती से बाहर तशरीफ़ ले गए। सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام इस शहर की पांचों बस्तियों को अपने परों पर उठा कर आस्मान की त़रफ़ बुलन्द हुवे और कुछ ऊपर जा कर इन बस्तियों को उलट दिया और येह आबादियां चकना चूर हो कर ज़मीन पर बिखर गईं। फिर कंकर के पथ्थरों का मींह बरसा और इस ज़ोर से संगबारी हुई कि क़ौमे लूत़ के तमाम लोग हलाक हो गए और उन की लाशें भी टुकड़े टुकड़े हो कर बिखर गईं। ऐन उस वक़्त जब कि येह शहर उलट पलट हो रहा था। सय्यिदुना लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام की एक बीवी जिस का नाम "**वाइला**" था जो दर ह़क़ीक़त मुनाफ़िक़ा थी और क़ौम के बदकारों से महब्बत

www.dawateislami.net

रखती थी उस ने पीछे मुड़ कर देख लिया और अपनी क़ौम पर नाज़िल होने वाले अ़ज़ाब को देख कर बे साख़्ता उस के मुंह से निकला : "हाए मेरी क़ौम !" येह कहना था कि अ़ज़ाबे इलाही का एक पथ्थर उस के ऊपर भी आ गिरा और वोह भी वहीं हलाक हो गई। जो पथ्थर उस क़ौम पर बरसाए गए वोह कंकरियों के टुकड़े थे। और हर पथ्थर पर उस शख़्स का नाम लिखा हुवा था जो उस पथ्थर से हलाक हुवा।[1]

रग़बते बत़ालत के छे अस्बाब व इलाज :

(1).....**रग़बते बत़ालत** का पहला सबब **फ़िक्रे आख़िरत का न होना** है। अगर किसी काम का भयानक अन्जाम मा'लूम हो तो उस काम से बचने की कोशिश की जाती है लेकिन अन्जाम से ला इल्मी या ग़फ़्लत की बिना पर बन्दा वोह काम कर गुज़रता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपने किसी भी काम को करने से पहले फ़िक्रे आख़िरत करे, येह मदनी ज़ेहन बनाए कि अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता इस काम के वबाल के सबब मेरा ख़ातिमा ईमान पर न हुवा और मुझे अ़ज़ाबे क़ब्र से दो चार होना पड़ा तो मेरा क्या बनेगा ? कल बरोज़े क़ियामत अगर मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मुझ से नाराज़ हो गया और मुझे जहन्नम में दाख़िल कर दिया गया तो मेरा क्या बनेगा ?

(2).....**रग़बते बत़ालत** का दूसरा सबब **शराब व कबाब व गुनाहों भरी महफ़िलों में शिर्कत** है। ऐसी महाफ़िल कई बुराइयों का मजमूआ़ होती हैं, जब बन्दा इन में दिलचस्पी लेता और शिर्कत करता है तो वोह ख़ुद भी इन गुनाहों में मुब्तला हो जाता है, इस का

---

1 ......حاشیۃ الصاوی علی الجلالین، پ۸، الاعراف، تحت الآیہ: ۸۴، ج۲، ص۶۹۰۔
अजा़इबुल क़ुरआन, स. 111 बित्तसर्रुफ़ क़लील।

www.dawateislami.net

इलाज येह है कि बन्दा इस त़रह़ की गुनाहों भरी मह़ाफ़िल में शिर्कत से बचे, जब इन में शिर्कत के लिये नफ़्स वरग़लाए तो **मह़शर की रुस्वाई** को याद करे, ऐसे लोगों के बुरे अन्जाम पर ग़ौर करे और सोचे कि अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता मेरा अन्जाम भी इन के साथ हुवा तो क्या बनेगा ? इस त़रह़ اِنۡ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ गुनाहों से नफ़रत और नेकियों में रग़बत पैदा होगी।

(3).....**रग़बते बत़ालत** का तीसरा सबब **नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी** है। जब नफ़्स को खुली छूट दी जाए तो उस की नाजाइज़ ख़्वाहिशात बढ़ती ही जाती हैं यहां तक कि वोह गुनाहों का मुत़ालबा शुरूअ़ कर देता है, इस का **इलाज** येह है कि बन्दा नफ़्स की हर ख़्वाहिश पूरी करने के बजाए ज़रूरियात, जाइज़ व नाजाइज़ ख़्वाहिशात में इम्तियाज़ करे, नफ़्स की नाजाइज़ ख़्वाहिशात पर पकड़ करे, इस का मुह़ासबा करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से डराए, اِنۡ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ नफ़्स का मुह़ासबा करने की बरकत से वोह गुनाहों की बजाए नेकियों का मुत़ालबा करने पर मजबूर हो जाएगा।

(4).....**रग़बते बत़ालत** का चौथा सबब **तसाहुल फ़िल्लाह** है। जब बन्दा अह़कामे इलाही की बजा आवरी में सुस्ती करता है तो उस की नुहूसत के सबब गुनाहों में मुब्तला हो जाता है। क्यूंकि बुज़ुर्गाने दीन फ़रमाते हैं : **"बन्दा जब करने वाले काम न करे तो न करने वाले कामों में पड़ जाता है।"** इस का **इलाज** येह है कि आख़िरत की फ़िक्र करे, सुस्ती छोड़े और नेक कामों में मश्ग़ूल हो जाए, अपनी आख़िरत के लिये कुछ कमा ले, क्यूंकि समझदार वोही

www.dawateislami.net

है जिस ने दुन्या में रहते हुवे अपनी आख़िरत की तय्यारी कर ली कि मौत जब आएगी तो एक लम्हा भी मोहलत नहीं मिलेगी, लिहाज़ा अपने आप को नेक कामों में मश्ग़ूल रखो कि जब बन्दा नेकियों में मश्ग़ूल हो जाएगा तो रग़बते बत़ालत जैसे मरज़ में मुब्तला होने से मह़फ़ूज़ रहेगा।

(5).....**रग़बते बत़ालत** का पांचवां सबब **क़सावते क़ल्बी या'नी दिल की सख़्ती** है। जब बन्दे का दिल सख़्त हो जाता है तो उस का नेकियों में दिल नहीं लगता और वोह गुनाहों की त़रफ़ माइल हो जाता है, गुनाह करने में उसे लज़्ज़त मह़सूस होती है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा कसरत से मौत को याद करे कि दिल की सख़्ती का येह सब से बेहतरीन **इलाज** ह़दीसे पाक में बयान किया गया है। गुनाहों के सबब मिलने वाली उख़रवी तकालीफ़ और अ़ज़ाबात को याद करे, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दिल की सख़्ती दूर होगी और रग़बते बत़ालत जैसे मरज़ से छुटकारा नसीब हो जाएगा।

(6).....**रग़बते बत़ालत** का एक सबब **बद निगाही** भी है। क्यूंकि पहले आंख बहकती हैं फिर दिल बहकता है इस के बा'द **बाक़ी आ'ज़ा** बहकते हैं। यूं गुनाहों का सिलसिला शुरूअ़ हो जाता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा ह़त्तल मक्दूर अपने आप को बद निगाही से बचाए, बिला वजह इधर उधर देखने से परहेज़ करे, नज़रें झुका कर चले, बद निगाही के अ़ज़ाब को हमेशा अपने पेशे नज़र रखे कि जो शख़्स दुन्या में अपनी आंखों को ह़राम से पुर करेगा कल बरोज़े क़ियामत उस की आंखों में जहन्नम की आग भर दी जाएगी। जब बद निगाही से ह़िफ़ाज़त नसीब होगी तो रग़बते बत़ालत

www.dawateislami.net

जैसे मरज़ से भी छुटकारा मिल जाएगा اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ । बद निगाही से बचने और आंखों की हिफ़ाज़त करने के लिये शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه के रिसाले "**कुफ़्ले मदीना**" का मुत़ालआ़ मुफ़ीद है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(35).....कराहते अ़मल

कराहते अ़मल की ता'रीफ़ :

नेक और अच्छे आ'माल को नापसन्द करना **कराहते अ़मल** कहलाता है।

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسَىٰ أَن تَكْرَهُوا شَيْئًا وَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ وَعَسَىٰ أَن تُحِبُّوا شَيْئًا وَهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢١٦﴾﴾ (پ۲، البقرة: ۲۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"तुम पर फ़र्ज़ हुवा खुदा की राह में लड़ना और वोह तुम्हें नागवार है और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वोह तुम्हारे ह़क़ में बेहतर हो और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो और* ***अल्लाह*** *जानता है और तुम नहीं जानते।"*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद **मुह़म्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में

www.dawateislami.net

आख़िरी अल्फ़ाज़ "और तुम नहीं जानते" के तह़्त फ़रमाते हैं : "कि तुम्हारे ह़क़ में क्या बेहतर है तो तुम पर लाज़िम है कि हुक्मे इलाही की इत़ाअ़त करो और उसी को बेहतर समझो चाहे वोह तुम्हारे नफ़्स पर गिरां हो।"

कराहते अ़मल के बारे में तम्बीह :

कराहते अ़मल या'नी नेक और अच्छे आ'माल को नापसन्द करना शैत़ान का एक बहुत बड़ा वार और हलाकत में डालने वाला अम्र है हर मुसलमान को इस से बचना ज़रूरी है।

ह़िकायत : मरने से क़ब्ल नौजवान की दाढ़ी काट डाली :

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपनी मायानाज़ तस्नीफ़ "**नेकी की दा'वत**" में एक नौजवान का वाक़िआ़ बयान फ़रमाया जिस के घर वाले कराहते अ़मल या'नी अच्छे आ'माल को नापसन्द करने जैसे मूज़ी मरज़ में मुब्तला थे, फ़रमाते हैं : "दा'वते इस्लामी से वाबस्ता ओरंगी टाऊन, बाबुल मदीना कराची का एक नौजवान आ़शिक़े रसूल जिस की उ़म्र ब मुश्किल 20 साल होगी, दाढ़ी जब से आई रख ली थी, बेचारा ख़ून के सरत़ान (या'नी ब्लड केंसर BLOOD CANCER) में मुब्तला हो गया। मैं (या'नी सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ) उस की इ़यादत के लिये अस्पताल पहुंचा, बेचारा ज़िन्दगी और मौत की कश्मकश में था, ज़बान साथ नहीं दे रही थी, दाढ़ी चेहरे से उतार ली गई थी, मैं चोंका, उस मज़्लूम ने चेहरे की त़रफ़ ब मुश्किल तमाम हाथ उठाया और इशारे से फ़रयाद की, मैं इतना समझ सका

www.dawateislami.net

गोया वोह कह रहा था : "मैं ने مَعَاذَ اللّٰه नहीं मुन्डवाई । मेरे घर वालों ने नींद या बेहोशी की ह़ालत में मेरी दाढ़ी साफ़ कर डाली है ।" आह ! चन्द दिनों के बा'द वोह दुख्यारा दुन्या से चल बसा । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मर्हूम की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमाए और उस की दाढ़ी साफ़ कर डालने वाले को तौबा की सआदत बख़्शे ।"

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

रूह़ में सोज़ नहीं, क़ल्ब में एह़सास नहीं
कुछ भी पैग़ामे मुह़म्मद का तुम्हें पास नहीं

अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! कैसा नाज़ुक दौर आ पहुंचा है कि आज मुसलमान कहलाने वाले अपनी अवलाद को बिलजब्र (या'नी ज़बरदस्ती) सुन्नतों से दूर रखते हैं बल्कि सुन्नतों पर अ़मल करने पर बसा अवक़ात त़रह़ त़रह़ की सज़ाएं देते हैं, ऐसे ऐसे दिल ख़राश वाक़िआ़त देखे गए कि बस ख़ुदा की पनाह । कई नौजवान इस्लामी भाइयों ने मदनी माह़ोल से मुतअस्सिर (مُتَ۔اَث۔ثِر) हो कर दाढ़ी रख ली तो ख़ानदान भर में गोया ज़लज़ला आ गया ! अगर धोंस धमकी और मार पीट से बाज़ न आए तो दाढ़ी रखने के सबब बेचारे घरों से निकाल दिये गए, नींद की ह़ालत में आ़शिक़ाने रसूल की दाढ़ियों पर क़ैंचियां चला दी गईं । दा'वते इस्लामी के मदनी काम के आग़ाज़ से पहले का वाक़िआ़ है : एक नौजवान सगे मदीना (عُفِيَ عَنْهُ) के पास आने जाने, उठने बैठने लगा, उस पर माह़ोल का असर पड़ने लगा । उस ने घर पर आते जाते "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ" कहना शुरूअ़ कर दिया, बा'ज़ अवक़ात दौराने गुफ़्त्गू उस ने اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ कह दिया ।

www.dawateislami.net

मुसलमान कहलाने वाले वालिदैन के कान खड़े हो गए ! बाज़ पुर्स शुरूअ़ हो गई । चुनान्चे, उस से घर में सुवाल हुवा : "बेटा ! बात क्या है कि आज कल सलाम करने और اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कहने लग गया है । उस ग़रीब ने सुन्नतों के अदना ख़ादिम सगे मदीना (عُفِیَ عَنْهُ) का नाम ले दिया, बस खेल ख़तम, उसे सख़्ती के साथ रोक दिया गया कि ख़बरदार ! आज के बा'द उस "मुल्ला" की सोहबत में तुझे नहीं रहना ! आख़िरे कार वोह बेचारा मॉर्डन बन गया ।[1]

वोह दौर आया कि दीवानए नबी के लिये

हर एक हाथ में पथ्थर दिखाई देता है

कराहते अ़मल के चार अस्बाब व इलाज :

(1).....**कराहते अ़मल** का पहला सबब बद अ़मल लोगों की सोहबत है कि बन्दा जब ऐसे लोगों की सोहबत इख़्तियार करता है जो नेक आ'माल न तो ख़ुद करते हैं और न ही अपने क़रीब रहने वालों को करने देते हैं तो आहिस्ता आहिस्ता बन्दा कराहते अ़मल जैसे क़बीह़ मरज़ में मुब्तला हो जाता है । इस का **इलाज** येह है कि बन्दा नेक लोगों की सोहबत इख़्तियार करे । नेकी की दा'वत आ़म करने वालों को दोस्त बनाए, फ़ासिक़ बद अ़मल और बद अ़क़ीदा लोगों की सोहबत से अपने आप को दूर रखे । नेक बनने के लिये शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**नेक बनने का नुस्ख़ा**" का मुत़ालआ़ निहायत मुफ़ीद है ।

1....नेकी की दा'वत, स. 544 ।

www.dawateislami.net

(2).....**कराहते अ़मल** का दूसरा सबब **जहालत व ला इल्मी** है कि बन्दा अपनी जहालत के सबब कराहते अ़मल जैसी बुराई का शिकार हो जाता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा फ़िल फ़ौर हुसूले इल्मे दीन में लग जाए, मुफ़्तियाने किराम, उ़लमाए किराम और अहले इल्म ह़ज़रात की सोह़बत इख़्तियार करे, सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत करे, दीनी कुतुब का मुत़ालआ़ करे ताकि **जन्नत में ले जाने वाले आ'माल** और **जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल** से वाक़िफ़िय्यत हो, जन्नती आ'माल पर अ़मल की कोशिश करे और जहन्नमी आ'माल से बचने की तदाबीर इख़्तियार करे।

(3).....**कराहते अ़मल** का तीसरा सबब **बात़िनी अमराज़** हैं। क्यूंकि बुग़्ज़ो कीना, ह़सद, ग़ीबत, बद गुमानी, ग़फ़्लत और क़सावते क़ल्बी की वजह से नेकी करना अच्छा नहीं लगता। इस का **इलाज** येह है बन्दा अपने बात़िनी गुनाहों के **इलाज** की जानिब सन्जीदगी से मुतवज्जेह हो, बात़िनी अमराज़ की तबाहकारियों पर ग़ौरो फ़िक्र करे और बारगाहे इलाही में इन अमराज़ से शिफ़ा के लिये दुआ़ भी करता रहे।

(4).....**कराहते अ़मल** का चौथा सबब **दुन्या की बेजा मश्ग़ूलिय्यत** है कि बन्दा जब अपनी ज़रूरियात व जाइज़ ख़्वाहिशात के इलावा दुन्या की रंगीनियों में बेजा मश्ग़ूल हो जाता है तो उस का दिल क़सावत या'नी सख़्ती का शिकार हो जाता है, उसे गुनाहों भरे आ'माल से मह़ब्बत और नेक आ'माल से नफ़रत होने लगती है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा हुब्बे दुन्या की तबाहकारियों पर ग़ौर करे, दुन्यादारों के इब्रतनाक अन्जाम वाले वाक़िआ़त पर ग़ौर करे,

www.dawateislami.net

अपना येह मदनी ज़ेहन बनाए कि समझदारी इसी में है कि जितना दुन्या में रहना है उतना दुन्या के लिये और जितना आख़िरत में रहना है उतना आख़िरत की तय्यारी की जाए ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(36).....क़िल्लते ख़शिय्यत

क़िल्लते ख़शिय्यत की ता'रीफ़ :

अल्लाह तबारक व तआ़ला के ख़ौफ़ में कमी को क़िल्लते ख़शिय्यत कहते हैं ।

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ یَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَیْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ كَبِیْرٌ ۝۱۲﴾ (پ۲۹، الملک:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"बेशक वोह जो बे देखे अपने रब से डरते हैं उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है ।"*

ह़दीसे मुबारका : ख़ौफ़े ख़ुदा रिज़्क़ और उम्र में इज़ाफ़े का सबब :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो अपनी उ़म्र में इज़ाफ़ा और रिज़्क़ में कुशादगी और बुरी मौत से तह़फ़्फ़ुज़ चाहता है वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरे और सिलए रेहमी करे ।"(1)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 ......مسند احمد، مسند علی بن ابی طالب، ج ۱، ص ۳۰۲، حدیث: ۱۲۱۲۔

www.dawateislami.net

क़िल्लते ख़शिय्यत के बारे में तम्बीह :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ का न होना या कम होना निहायत ही मोहलिक मरज़ है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ न होना या ख़ौफ़ में कमी होना बेबाकी और गुनाहों पर जरी कर देता है, हर मुसलमान को अपने दिल में रब عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ पैदा करना चाहिये कि क़ुरआने पाक में मोअमिनीन को ख़ौफ़े ख़ुदा का हुक्म दिया गया है। चुनान्चे, इरशाद होता है : ﴿وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ﴾ (پ۴، آل عمران:۱۷۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"और मुझ से डरो अगर ईमान रखते हो।"*

सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना **मुफ़्ती मुहम्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : "क्यूंकि ईमान का मुक़्तज़ा ही येह है कि बन्दे को ख़ुदा ही का ख़ौफ़ हो।"

काश ! ख़ौफ़े ख़ुदा नसीब हो जाए :

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मायानाज़ तस्नीफ़ "**कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब**" सफ़्हा 24 पर मज़्कूरा आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : "ऐ काश ! इस आयते मुक़द्दसा के सदके़ ग़फ़्लत का पर्दा चाक हो जाए और उम्मीदे रह़मत के साथ साथ हमें सहीह़ मा'नों में ख़ौफ़े ख़ुदा भी मुयस्सर आ जाए, दुन्या की बे सबाती का ह़क़ीक़ी मा'नों में एह़सास हो जाए, काश ! काश ! काश ! बुरे ख़ातिमे का डर दिल में घर कर जाए, अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ियों का हर दम धड़का लगा रहे, नज़्अ़

www.dawateislami.net

की सख़्तियों, मौत की तल्ख़ियों, अपने ग़ुस्ले मय्यित व तक्फ़ीन व तदफ़ीन की कैफ़िय्यतों, क़ब्र की अन्धेरियों और वह्शतों, मुन्करो नकीर के सुवालों, क़ब्र के अ़ज़ाबों, मह़शर की गर्मियों और घबराहटों, पुल सिरात़ की दहशतों, बारगाहे इलाही की पेशियों, मैदाने क़ियामत में छोटी छोटी बातों की भी पुरसिशों और सब के सामने ऐ़ब खुलने की रुस्वाइयों, जहन्नम की ख़ौफ़नाक चिंघाड़ों, दोज़ख़ की हौलनाक सज़ाओं और अपने नाज़ों के पले बदन की नज़ाकतों, जन्नत की अ़ज़ीम ने'मतों से मह़रूमियों वग़ैरा वग़ैरा का ख़ौफ़ हमें बेचैन करता रहा और ऐ काश ! येह ख़ौफ़ हमारे लिये हिदायत व रह़मत का ज़रीआ़ बन जाए जैसा कि पारह **9** सूरतुल आ'राफ़ आयत नम्बर **154** में इरशादे रब्बुल इ़बाद है : ﴿هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ﴿۱۵۴﴾﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"हिदायत और रह़मत है उन के लिये जो अपने रब से डरते हैं ।"*

ज़माने का डर मेरे दिल से मिटा कर
तू कर ख़ौफ़ अपना अ़त़ा या इलाही
तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा
मैं थर थर रहूं कांपता या इलाही

ख़ौफ़े ख़ुदा से क्या मुराद है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "**ख़ौफ़े ख़ुदा**" से मुराद येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर, उस की बे नियाज़ी, उस की नाराज़ी, उस की गिरफ़्त (पकड़), उस की त़रफ़ से दिये जाने

www.dawateislami.net

वाले अ़ज़ाबों, उस के ग़ज़ब और इस के नतीजे में ईमान की बरबादी वग़ैरा से ख़ौफ़ ज़दा रहने का नाम ख़ौफ़े ख़ुदा है। ऐ काश ! हमें ह़क़ीक़ी मा'नों में ख़ौफ़े ख़ुदा नसीब हो जाए। आह ! आह ! आह ! हम तो अपने ख़ातिमे के बारे में अल्लाह क़दीर عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर जानते हैं न कभी जीते जी जान सकेंगे। ज़बाने रिसालत से जन्नत की बिशारत की अ़ज़ीम सआ़दत से बहरामन्द जन्नती हस्तियों के ख़ौफ़े ख़ुदा की बातें जब पढ़ते सुनते हैं तो अपनी ग़फ़्लत पर वाक़ेई ह़सरत होती है। चुनान्चे, पढ़िये और कुढ़िये :

सात सहा़बा के रिक़्क़त अंगेज़ कलिमात :

(1) अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक बार परन्दे को देख कर फ़रमाया : "ऐ परन्दे ! काश मैं तुम्हारी त़रह़ होता और मुझे इन्सान न बनाया जाता।" (2) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ौल है : "काश ! मैं एक दरख़्त होता जिस को काट दिया जाता।" (3) अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते : "मैं इस बात को पसन्द करता हूं कि मुझे वफ़ात के बा'द उठाया न जाए।" (4,5) ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाया करते : "काश ! हम पैदा ही न हुवे होते।" (6) उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाया करतीं : "काश ! मैं نَسْيًا مَّنْسِيًّا (या'नी कोई भूली बिसरी चीज़) होती।" (7) ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते : "काश ! मैं राख होता।"(1)

1 ......قوت القلوب، الفصل الثانی والثلاثون۔۔۔الخ، شرح مقام۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۴۵۹، ۴۶۰ ملخصاً

www.dawateislami.net

हिकायत : ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब बेहोश हो गए :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की एक कनीज़ आप की बारगाह में हाज़िर हुई और अर्ज़ करने लगी : “आली जाह ! मैं ने ख़्वाब में एक अजीब मुआमला देखा। मैं ने देखा कि जहन्नम को भड़काया गया और उस पर पुल सिरात रख दिया गया फिर उमवी ख़ुलफ़ा को लाया गया। सब से पहले ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक बिन मरवान को उस पुल सिरात से गुज़रने का हुक्म दिया गया, चुनान्चे, वोह पुल सिरात पर चलने लगा लेकिन अफ़्सोस ! वोह थोड़ा सा चला कि पुल उलट गया और वोह जहन्नम में जा गिरा।”

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दरयाफ़्त किया : “फिर क्या हुवा ?” कनीज़ ने कहा : “फिर उस के बेटे वलीद बिन अब्दुल मलिक को लाया गया, वोह भी इसी तरह पुल सिरात पार करने लगा कि अचानक पुल सिरात फिर उलट गया, जिस की वजह से वोह भी दोज़ख़ में जा गिरा।” आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पूछा : “इस के बा'द क्या हुवा ?” उस ने अर्ज़ की : “इस के बा'द सुलैमान बिन अब्दुल मलिक को हाज़िर किया गया, उसे भी हुक्म हुवा कि पुल सिरात से गुज़रो, उस ने भी चलना शुरूअ किया लेकिन यका यक वोह भी दोज़ख़ की गहराइयों में जा गिरा।” आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पूछा : “मज़ीद क्या हुवा ?” उस ने जवाब दिया : “ऐ अमीरल मोअमिनीन ! इन सब के बा'द आप को लाया गया।”

कनीज़ का येह जुम्ला सुनते ही हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब निहायत ही दर्दनाक चीख़ मारी और ज़मीन पर गिर गए। कनीज़ ने जल्दी से कहा :

www.dawateislami.net

"ऐ अमीरल मोअमिनीन ! रहमान عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने देखा कि आप ने सलामती के साथ पुल सिरात़ पार कर लिया ।" लेकिन सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कनीज़ की बात न समझ पाए क्यूंकि आप पर ख़ौफ़े ख़ुदा का ऐसा ग़लबा त़ारी था कि आप बेहोशी के आ़लम में भी इधर उधर हाथ पाउं मार रहे थे ।(1)

क़िल्लते ख़शिय्यत के छे इलाज :

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 160 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**ख़ौफ़े ख़ुदा**" सफ़ह़ा 23 से क़िल्लते ख़शिय्यत के 6 **इलाज** पेशे ख़िदमत हैं :

(1)......**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में क़िल्लते ख़शिय्यत से सच्ची तौबा करे कि गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे उस ने गुनाह किया ही न हो और ख़ौफ़े ख़ुदा की ने'मत के ह़ुसूल के लिये दुआ़ करे कि दुआ़ मोमिन का हथयार है और दुआ़ इस त़रह़ करे : "ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ तेरा येह कमज़ोर व नातुवां बन्दा दुन्या व आख़िरत में कामयाबी के लिये तेरे ख़ौफ़ को अपने दिल में बसाना चाहता है । ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ मैं गुनाहों की ग़लाज़त से लिथड़ा हुवा बदन लिये तेरी पाक बारगाह में ह़ाज़िर हूं । ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दे और आयिन्दा ज़िन्दगी में गुनाहों से बचने के लिये इस सिफ़त को अपनाने के सिलसिले में भरपूर अ़मली कोशिश करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा दे और इस कोशिश को कामयाबी की

---

(1) احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء، بیان احوال الصحابة۔۔۔الخ، ج۴، ص ۲۳۱۔

www.dawateislami.net

मन्ज़िल पर पहुंचा दे। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे अपने ख़ौफ़ से मा'मूर दिल, रोने वाली आंख और लरज़ने वाला बदन अ़ता फ़रमा।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

या रब ! मैं तेरे ख़ौफ़ से रोता रहूं हर दम
दीवाना शहनशाहे मदीना का बना दे

(2)......अपनी कमज़ोरी व नातुवानी को सामने रख कर जहन्नम के अ़ज़ाबात पर ग़ौरो फ़िक्र करे कि आज दुन्या में छोटी सी तकलीफ़ बरदाश्त नहीं होती तो जहन्नम के सख़्त अ़ज़ाबात को कैसे बरदाश्त कर सकेंगे हालांकि जहन्नम की आग दुन्या की आग से सत्तर गुना ज़ियादा सख़्त है, दुन्या की आग भी जहन्नम की आग से पनाह मांगती है, दोज़ख़ में बख़्ती ऊंट के बराबर सांप हैं। येह सांप एक मरतबा किसी को काटे तो उस का दर्द और ज़हर चालीस बरस तक रहेगा। और दोज़ख़ में पालान बन्धे हुवे ख़च्चरों के मिस्ल बिच्छू हैं तो उन के एक मरतबा काटने का दर्द चालीस साल तक रहेगा। वग़ैरा वग़ैरा

(3)......कुरआनो ह़दीस में मौजूद ख़ौफ़े ख़ुदा के **फ़ज़ाइल** पेशे नज़र रखे कि जो रब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर उस के ख़ौफ़ के सबब खड़ा होने से डरा उस के लिये दो जन्नतों की बिशारत है, दुन्या में ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले के लिये कल बरोज़े क़ियामत अम्न की बिशारत है, ख़ौफ़े ख़ुदा से निकलने वाले आंसू जिस्म के जिस हिस्से पर गिरें उस पर जहन्नम की आग ह़राम होने की नवीद सुनाई गई है। ख़ौफ़े ख़ुदा से डरने वाले के गुनाह दरख़्त के पत्तों की त़रह़ झड़ जाते हैं। वग़ैरा वग़ैरा

www.dawateislami.net

(4)......बुजु़र्गाने दीन के ख़ौफ़े ख़ुदा पर मुश्तमिल **वाक़िआत** का मुतालआ करे। इस के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ इन कुतुब "**ख़ौफ़े ख़ुदा, तौबा की रिवायात व हिकायात, इहयाउल उ़लूम जिल्द सिवुम**" वग़ैरा का मुतालआ बहुत मुफ़ीद है।

(5)......खुद एह्तिसाबी की आदत बनाने के लिये **मदनी इन्आमात** पर अ़मल की कोशिश करे कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की त़रफ़ से अ़ता कर्दा येह मदनी इन्आमात क़िल्लते ख़शिय्यत जैसी मोहलिक बीमारी से नजात और ख़ौफ़े ख़ुदा जैसी अ़ज़ीम ने'मत के हुसूल में اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बहुत मुआविन साबित होंगे।

(6)......ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वालों की **सोहबत** इख़्तियार करे क्यूंकि अल्लाह तआला का ख़ौफ़ रखने वाले नेक लोगों की सोहबत में बैठना भी इन्सान के दिल में ख़ौफ़े इलाही बेदार करने में मददगार साबित होता है।

कब गुनाहों से किनारा मैं करूंगा या रब
नेक कब ऐ मेरे अल्लाह ! बनूंगा या रब
गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी
हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(37).....जज़्अ (वावेला करना)

जज़्अ की ता'रीफ़ :

"पेश आने वाली किसी भी मुसीबत पर वावेला करना, या इस पर बे सब्री का मुज़ाहरा करना **जज़्अ** कहलाता है।"(1)

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًاۙ(۱۹) اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًاۙ(۲۰) وَّ اِذَا مَسَّهُ الْخَیْرُ مَنُوْعًاۙ(۲۱)﴾ (پ۲۹، المعارج: ۱۹ تا ۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"बेशक आदमी बनाया गया है बड़ा बे सब्रा ह़रीस, जब उसे बुराई पहुंचे तो सख़्त घबराने वाला, और जब भलाई पहुंचे तो रोक रखने वाला।"*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद **मुह़म्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "या'नी इन्सान की ह़ालत येह है कि उसे कोई ना गवार ह़ालत पेश आती है तो इस पर सब्र नहीं करता और जब माल मिलता है तो इस को ख़र्च नहीं करता।"

ह़दीसे मुबारका : जज़्अ करने का वबाल :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो अपने रिज़्क़ पर राज़ी न हो और जो

1 ......الحديقة الندية، الخلق السابع و الثلاثون ـــ الخ، ج۲، ص۹۸ـ

www.dawateislami.net

अपनी बीमारी की ख़बर आ़म करने लगे और इस पर सब्र न करे उस का कोई अ़मल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलन्द न होगा और वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि वोह उस पर नाराज़ होगा।"[1]

जज़्अ़ के बारे में तम्बीह :

किसी मुसीबत या मुश्किल पर वावेला करना या बे सब्री का मुज़ाहरा करना अपने आप को हलाकत में डालना है कि बसा अवक़ात बे सब्री का मुज़ाहरा करने में इन्सान से मज़ीद कई गुनाहों का सुदूर हो जाता है बल्कि कुफ़्रिय्या जुम्ले तक बक देता है जिस से ईमान बरबाद हो जाता है और बा'ज़ अवक़ात इन्सान इस बे सब्री के सबब अज्रो सवाब के अ़ज़ीम ख़ज़ाने से भी मह़रूम कर दिया जाता है।

ह़िकायत : जज़्अ़ से बचने का इन्आ़म :

ह़ज़रते सय्यिदुना आ'मश बिन मसरूक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقُدُّوس से रिवायत है कि एक नेक शख़्स किसी जंगल में रहा करता था, उस मर्दे सालेह़ के पास एक मुर्ग़, एक गधा और एक कुत्ता था, मुर्ग़ सुब्ह़ सवेरे उसे नमाज़ के लिये जगाता, गधे पर वोह पानी और दीगर सामान लाद कर लाता और कुत्ता उस के मालो मताअ़ और दीगर चीज़ों की रखवाली करता। एक दिन ऐसा हुवा कि उस के मुर्ग़ को एक लोमड़ी खा गई। जब उस नेक शख़्स को मा'लूम हुवा तो उस ने कहा : "मेरे लिये इस में बेहतरी होगी।" (या'नी वोह अपने रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहा और सब्र का दामन न छोड़ा) लेकिन घर वाले बहुत परेशान हुवे कि हमारा नुक़्सान हो गया।

---

1 ......حلية الاولياء، يوسف بن اسباط، ج٨، ص٢٦٨، الرقم: ١٢١٦٢۔

www.dawateislami.net

कुछ दिनों के बा'द एक भेड़िया आया और उस ने उन के गधे को चीर फाड़ डाला। जब घर वालों को इस की इत्तिलाअ़ मिली तो वोह बहुत ग़मगीन हुवे और आहो ज़ारी करने लगे कि हमारा बहुत बड़ा नुक़्सान हो गया। लेकिन उस नेक शख़्स ने कोई बे सब्री वाले जुम्ले अपनी ज़बान से न निकाले बल्कि कहने लगा : "इस गधे के मर जाने ही में हमारी आ़फ़िय्यत होगी।" फिर कुछ अ़र्से के बा'द कुत्ते को बीमारी ने आ लिया और वोह भी मर गया। लेकिन उस साबिरो शाकिर शख़्स ने फिर भी बे सब्री और नाशुक्री का मुज़ाहरा न किया बल्कि वोही अल्फ़ाज़ दोहराए कि "हमारे लिये इस के हलाक हो जाने में ही आ़फ़िय्यत होगी।"

बहर ह़ाल वक़्त गुज़रता रहा, कुछ दिनों के बा'द दुश्मनों ने रात को उस जंगल की आबादी पर ह़म्ला किया और उन तमाम लोगों को पकड़ कर ले गए जो उस जंगल में रहते थे। उन सब की क़ैद का सबब येह बना कि उन के पास जानवर वग़ैरा मौजूद थे जिन की आवाज़ सुन कर दुश्मन मुतवज्जेह हो गया और दुश्मनों ने जानवरों की आवाज़ से उन की रिहाइश की जगह मा'लूम कर ली फिर उन सब को उन के मालो अस्बाब समेत क़ैद कर के ले गए। लेकिन वोह नेक शख़्स और उस का साज़ो सामान सब बिल्कुल मह़फ़ूज़ रहा क्यूंकि उस के पास कोई जानवर ही न था जिस की आवाज़ सुन कर दुश्मन उस के घर की त़रफ़ आते। अब उस नेक मर्द का यक़ीन इस बात पर मज़ीद पुख़्ता हो गया कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हर काम में कोई न कोई ह़िक्मत ज़रूर होती है।"(1)

---

(1).....उ़यूनुल ह़िकायात, जि. 1, स. 187।

www.dawateislami.net

चल मदीना के सात हुरूफ़ की निस्बत से बे सब्री के 7 इलाज :

(1).....कुरआनो ह़दीस में मौजूद सब्र के फ़ज़ाइल पर ग़ौर करे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब्र वालों के साथ है, सब्र करने वालों से मह़ब्बत फ़रमाता है, सब्र करने को हिम्मत वाला काम फ़रमाया गया, सब्र करने वाले के लिये मग़फ़िरत, बड़े अज्र और कामयाबी की नवीद सुनाई गई है। सब्र को ईमान और जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना शुमार किया गया है। वग़ैरा वग़ैरा

(2).....अम्बियाए किराम عَلَيهِمُ السَّلَام, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُم व दीगर बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين पर आने वाली आज़माइशों और इन पर इन के अ़ज़ीम सब्र से मुतअ़ल्लिक़ ह़िकायात व रिवायात का मुत़ालआ़ करे ताकि इस से येह मा'लूम हो सके कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इन्आ़म याफ़्ता बन्दों का रविय्या और त़र्ज़े अ़मल मुश्किल वक़्त में कैसा होता था।

(3).....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की जानिब से आने वाली आज़माइश के अस्बाब पर ग़ौर करे क्यूंकि अकसर अवक़ात आज़माइश गुनाहों के सबब आती है इस त़रह़ ग़ौर करने से अपने आ'माल का मुह़ासबा करने का मौक़अ़ मिलता है।

(4).....सब्र करने वाले नेक लोगों की सोह़बत इख़्तियार करे।

(5).....**बे सब्री** की सूरत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी, अज्रे अ़ज़ीम से मह़रूमी और नाशुक्री करने, ग़ैर शरई अफ़्आ़ल के सादिर होने पर मिलने वाली उख़रवी सज़ाओं पर ग़ौर करे।

www.dawateislami.net

(6).....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَ الْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۵۵﴾ ﴾(پ۲، البقرة: ۱۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"और ज़रूर हम तुम्हें आज़माएंगे कुछ डर और भूक से और कुछ मालों और जानों और फलों की कमी से, और खुश ख़बरी सुना उन सब्र वालों को ।"*

इस फ़रमान को सामने रखते हुवे आज़माइश पर पूरा उतरने का ज़ेहन बनाए और इस के बा'द मिलने वाले उख़रवी इन्आ़मो बिशारत पर नज़र रखे ।

(7).....नेकियों पर इस्तिक़ामत न मिलने की सब से बड़ी वजह बे सब्री है लिहाज़ा नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने के लिये नेक अफ़राद की सोह़बत इख़्तियार करे और बे सब्री के उख़रवी नुक़्सानात पर नज़र रखना ह़द दरजा मुफ़ीद है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(38).....अ़दमे खुशूअ़

अ़दमे खुशूअ़ की ता'रीफ़ :

बारगाहे इलाही में ह़ाज़िरी के वक़्त (या'नी नमाज़ या नेक कामों में) दिल का न लगना अ़दमे खुशूअ़ कहलाता है ।[1]

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है : ﴿قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱﴾ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ﴿۲﴾ ﴾(پ۱۸، المؤمنون: ۱، ۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले, जो अपनी नमाज़ में गिड़ गिड़ाते हैं ।"*

[1] الحديقة الندية، الخلق الثالث والاربعون...الخ، ج۲، ص۱۱۷ مفهوما۔

www.dawateislami.net

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद **मुहम्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : "इन के दिलों में खुदा का ख़ौफ़ होता है और इन के आ'ज़ा साकिन होते हैं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि नमाज़ में ख़ुशूअ़ येह है कि इस में दिल लगा हुवा और दुन्या से तवज्जोह हटी हुई हो और नज़र जाए नमाज़ से बाहर न जाए और गोशए चश्म (आंख के किनारे) से किसी त़रफ़ न देखे और कोई अ़ब्स काम न करे और कोई कपड़ा शानों पर न लटकाए इस त़रह़ कि इस के दोनों किनारे लटकते हों और आपस में मिले न हों और उंगलियां न चटख़ाए और इस क़िस्म के ह़रकात से बाज़ रहे। बा'ज़ ने फ़रमाया कि ख़ुशूअ़ येह है कि आस्मान की त़रफ़ नज़र न उठाए।"

ह़दीसे मुबारका : मुनाफ़िक़ाना ख़ुशूअ़ से अल्लाह की पनाह :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुनाफ़िक़ाना ख़ुशूअ़ से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगो।" पूछा गया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुनाफ़िक़ाना ख़ुशूअ़ क्या है?" इरशाद फ़रमाया : "मुनाफ़िक़ाना ख़ुशूअ़ येह है कि ज़ाहिरन तो ख़ुशूअ़ हो मगर दिल में ख़ुशूअ़ न हो।"(1)

अ़दमे ख़ुशूअ़ के बारे में तम्बीह :

अ़दमे ख़ुशूअ़ निहायत ही मोहलिक मरज़ और इबादात के सवाब में कमी का बाइस है। शैत़ान अपनी ज़ुर्रिय्यत के साथ इबादात

---

1 ......شعب الایمان، باب فی اخلاص العمل۔۔۔الخ، ج۵، ص ۳۶۴، حدیث: ۶۹۶۷.

www.dawateislami.net

में ख़ुशूअ़ को अव्वलन कम करता है और फिर आहिस्ता आहिस्ता ख़त्म कर देता है यूं इबादात बराए नाम ही रह जाती हैं।

ह़िकायत : अ़दमे ख़ुशूअ़ शैत़ान का मोहलिक हथयार :

जब नमाज़ फ़र्ज़ हुई तो शैत़ान दहाड़ें मार कर रोने लगा, उस के सारे चेले जम्अ़ हो गए, और रोने का सबब पूछा तो वोह कहने लगा : "हम तो मारे गए कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुसलमानों पर नमाज़ फ़र्ज़ फ़रमा दी है।" चेलों ने कहा : "नमाज़ फ़र्ज़ होने से क्या होगा ?" शैत़ान ने जवाब दिया : "मेरे बे वुक़ूफ़ चेलो ! तुम नहीं समझे, समझदार मुसलमान तो नमाज़ें पढ़ेंगे और (नमाज़ की बरकत से गुनाहों से बच कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुश्नूदी ह़ासिल करने में कामयाब हो जाएंगे और इस त़रह़ वोह) मेरे हाथ से निकल जाएंगे।" चेले येह बात सुन कर परेशान हो गए और शैत़ान से कहने लगे : "तुम ही बताओ कि हम क्या करें ?" शैत़ान ने कहा : "उन्हें नमाज़ मत पढ़ने दो, अगर कोई नमाज़ के लिये खड़ा हो जाए तो उस को घेर लो, एक कहे : दाएं देख, दूसरा कहे : बाईं त़रफ़ देख, यूं उस को उलझा कर रखो।"(1)

लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कई ऐसे नेक और परहेज़गार बन्दे हैं जो शैत़ान के इस मक्रो फ़रेब को यक्सर ख़ात़िर में नहीं लाते, किसी भी क़िस्म की बैरूनी सर गर्मियां उन के ख़ुशूअ़ को मुतअस्सिर नहीं कर सकती थीं। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه निहायत ही ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ पढ़ने वालों में

(1)......نزهة المجالس، باب فضل الصلوات ليلا ونهارا۔۔۔الخ، ج۱، ص ۱۵۴۔

www.dawateislami.net

शुमार किये जाते थे। जब आप नमाज़ पढ़ रहे होते तो अकसर आप की बच्ची दफ़ बजाती और घर में मौजूद दीगर ख़्वातीन से बातें करती लेकिन आप अपनी नमाज़ में ही मश्ग़ूल रहते, न तो उन की बातें सुनते और न ही समझते। एक दिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पूछा गया : क्या आप नमाज़ में अपने नफ़्स से कोई बात करते हैं ?" फ़रमाया : "हां ! येह बात कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सामने खड़ा हूं और मैं ने दो घरों में से एक घर में लौटना है।" अ़र्ज़ की गई : "क्या हमारी त़रह़ आप भी नमाज़ में उमूरे दुन्या में से कुछ पाते हैं ?" फ़रमाया : "मुझे नमाज़ में दुन्या के ख़यालात पैदा होने से येह बात ज़ियादा पसन्द है कि मुझ पर तीरों से ह़म्ला किया जाए।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाया करते थे : "अगर पर्दा उठा दिया जाए तो मेरे यक़ीन में कोई इज़ाफ़ा न हो।"(1)

अ़दमे ख़ुशूअ़ के चार अस्बाब व इलाज :

(1)......**अ़दमे ख़ुशूअ़** का पहला सबब **दिल की सख़्ती** है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा मौत को कसरत से याद करे, ज़बान और पेट का क़ुफ़्ले मदीना लगाए और बिला ज़रूरत हंसने से परहेज़ करे।

(2)......**अ़दमे ख़ुशूअ़** का दूसरा सबब **परेशान नज़री** (या'नी बिला ज़रूरत इधर उधर देखना) है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा आंखों का क़ुफ़्ले मदीना लगाते हुवे अपनी नज़रें झुका कर रखे, येह तसव्वुर करे कि मैं बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर हूं, मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मुझे देख रहा है।

---

(1) ......احياء العلوم، كتاب اسرار الصلاة---الخ، حكايات واخبار---الخ، ج ۱، ص ۲۳۲۔

www.dawateislami.net

(3)......**अदमे खुशूअ** का तीसरा सबब ज़ेहन में **फुज़ूल ख़यालात और बेजा फ़िक्रें** भी है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा बारगाहे इलाही में हाज़िरी के वक़्त अपने अन्दर यक्सूई पैदा करे और इस से नजात के लिये बारगाहे इलाही में दुआ भी करे।

(4)......**अदमे खुशूअ** का चौथा सबब बारगाहे इलाही में हाज़िर होने के आदाब के बारे में **ला इल्मी** है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा बारगाहे इलाही में हाज़िर होने के आदाब सीखे, ऐसे नेक लोगों और अल्लाह वालों की सोहबत इख़्तियार करे जो बारगाहे इलाही के आदाब से वाक़िफ़ हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(39).....ग़ज़ब लिन्नफ़्स

ग़ज़ब लिन्नफ़्स की ता'रीफ़ :

अपने आप को तक्लीफ़ से दूर करने या तक्लीफ़ मिलने के बा'द इस का बदला लेने के लिये ख़ून का जोश मारना "**ग़ज़ब**" कहलाता है। अपने ज़ाती इन्तिक़ाम के लिये गुस्सा करना "**ग़ज़ब लिन्नफ़्स**" कहलाता है।[1]

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَ الضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَ الْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِؕ وَ اللهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳۴﴾﴾ (پ۴، آل عمران: ۱۳۴)

1 ......الحديقة الندية، الخلق الثامن عشر ـــــ الخ، ج ١، ص ٦٢٣ ماخوذاً۔

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "वोह जो **अल्लाह** की राह में ख़र्च करते हैं ख़ुशी में और रन्ज में और ग़ुस्सा पीने वाले और लोगों से दरगुज़र करने वाले और नेक लोग **अल्लाह** के मह़बूब हैं।"

ह़दीसे मुबारका : ग़ुस्सा न किया करो :

एक शख़्स ने रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे कोई मुख़्तसर अ़मल बताइये ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ग़ुस्सा न किया करो।" उस ने दोबारा येही सुवाल किया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ग़ुस्सा न किया करो।"(1)

ग़ज़ब लिन्नफ़्स का हुक्म :

ग़ज़ब लिन्नफ़्स (नफ़्स के लिये ग़ुस्सा) मज़मूम है। मुत़लक़ ग़ुस्सा मज़मूम व बुरा नहीं बल्कि एक लाज़िमी अम्र है क्यूंकि इस के ज़रीए़ इन्सान की दुन्या व आख़िरत की ह़िफ़ाज़त होती है। मसलन ह़क़ के इज़्हार और बात़िल के मिटाने के लिये शुजाअ़त व बहादुरी होना येह अ़क़्लन, शरअ़न और उ़र्फ़न हर त़रह़ जाइज़ है। अलबत्ता ग़ैर शरई और अपने ज़ाती इन्तिक़ाम के लिये ग़ुस्से पर अ़मल करना ह़राम है।(2)

क्या ग़ुस्सा मुत़लक़ ह़राम है :

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **480** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बयानाते अ़त्तारिय्या**

---

1 ......بخاری، کتاب الادب، باب الحذر من الغضب، ج۴، ص ۱۳۱، حدیث: ۶۱۱۶۔

2 ......الحدیقۃ الندیۃ، التاسع عشر۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۶۲۳ ماخوذاً۔

www.dawateislami.net

(**हिस्सा दुवुम**)" में शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के तह़रीरी बयान "**गु़स्से का इलाज**" सफ़ह़ा 173 पर है : "अ़वाम में येह ग़लत़ मश्हूर है कि गु़स्सा ह़राम है। गु़स्सा एक ग़ैर इख़्तियारी अम्र है, इन्सान को आ ही जाता है, इस में इस का कु़सूर नहीं, हां गु़स्से का बेजा इस्ति'माल बुरा है, बा'ज़ सूरतों में गु़स्सा ज़रूरी भी है मसलन जिहाद के वक़्त अगर गु़स्सा नहीं आएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दुश्मनों से किस त़रह़ लड़ेंगे ? बहर ह़ाल गु़स्से का "इज़ाला" (या'नी इस का न आना) मुमकिन नहीं, "इमाला" होना चाहिये या'नी गु़स्से का रुख़ दूसरी त़रफ़ फिर जाना चाहिये। कोई दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले बुरी सोह़बत में था, गु़स्से की ह़ालत येह थी कि अगर किसी ने "हां" का "ना" कह दिया तो आपे से बाहर हो गया और गालियों की बोछाड़ कर दी, किसी ने बद तमीज़ी कर दी तो उठा कर थप्पड़ जड़ दिया। मत़लब कोई भी काम ख़िलाफ़े मिज़ाज हुवा, गु़स्सा आया तो सब्र करने के बजाए नाफ़िज़ कर दिया। जब इसे ख़ुश क़िस्मती से दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल मुयस्सर आ गया और दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तर्बिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की बरकतें ज़ाहिर होने लगीं और गु़स्सा इमाला हो गया या'नी रुख़ बदल गया या'नी अब भी गु़स्सा तो बाक़ी है मगर इस का रुख़ यूं तब्दील हुवा कि उसे अल्लाह व रसूल और सह़ाबा व औलिया عَزَّوَجَلَّ و صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم و عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के दुश्मनों से बुग़्ज़ हो गया मगर ख़ुद उस की अपनी ज़ात को कोई कितना ही बुरा

www.dawateislami.net

भला कहे या गुस्सा दिलाए मगर सब्र करता है, दूसरों पर बिफरने के बजाए खुद अपने नफ़्स पर गुस्सा नाफ़िज़ करता है कि तुझे गुनाह नहीं करने दूंगा। अल गरज़ गुस्सा तो है मगर अब इस का **इमाला** हो गया या'नी रुख़ बदल गया जो कि आख़िरत के लिये इन्तिहाई मुफ़ीद है।

हिकायत : नफ़्स की ख़ातिर गुस्सा करने का अन्जाम :

हज़रते सय्यिदुना मुबारक बिन फ़ुज़ाला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हज़रते सय्यिदुना हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं कि किसी अ़लाके में एक बहुत बड़ा दरख़्त था, लोग उस की पूजा किया करते थे और इस तरह उस अ़लाके में कुफ़्रो शिर्क की वबा बहुत तेज़ी से फैल रही थी। एक मुसलमान शख़्स का वहां से गुज़र हुवा तो उसे येह देख कर बहुत गुस्सा आया कि यहां गैरुल्लाह की इबादत की जा रही है? चुनान्चे, वोह जज़्बए तौहीद से मा'मूर बड़ी गज़बनाक हालत में कुल्हाड़ा ले कर उस दरख़्त को काटने चला, उस के ईमान ने येह गवारा न किया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी और की इबादत की जाए। इसी जज़्बे के तहत वोह दरख़्त काटने जा रहा था कि शैतान मर्दूद उस के सामने इन्सानी शक्ल में आया और कहने लगा : "तू इतनी गज़बनाक हालत में कहां जा रहा है?"

उस मुसलमान ने जवाब दिया : "मैं उस दरख़्त को काटने जा रहा हूं जिस की लोग इबादत करते हैं।" येह सुन कर शैतान मर्दूद ने कहा : "जब तू उस दरख़्त की इबादत नहीं करता तो दूसरों का उस दरख़्त की इबादत करना तुझे क्या नुक़्सान देता है? तू अपने इस इरादे से बाज़ रह और वापस चला जा।" उस मुसलमान ने कहा :

www.dawateislami.net

'मैं हरगिज़ वापस नहीं जाऊंगा।'' मुआमला बढ़ा और शैतान ने कहा : ''मैं तुझे वोह दरख़्त नहीं काटने दूंगा।'' चुनान्चे, दोनों में कुश्ती हो गई और उस मुसलमान ने शैतान को पछाड़ दिया, फिर शैतान ने उसे लालच देते हुवे कहा : ''अगर तू उस दरख़्त को काट भी देगा तो तुझे इस से क्या फ़ाइदा हासिल होगा ? मेरा मश्वरा है कि तू उस दरख़्त को न काट, अगर तू ऐसा करेगा तो रोज़ाना तुझे अपने तकये के नीचे से दो दीनार मिला करेंगे।'' वोह शख़्स कहने लगा : ''कौन मेरे लिये दो दीनार रखा करेगा ?'' शैतान ने कहा : ''मैं तुझ से वा'दा करता हूं कि रोज़ाना तुझे अपने तकये के नीचे से दो दीनार मिला करेंगे।'' वोह शख़्स शैतान की इन लालच भरी बातों में आ गया और दो दीनार की लालच में उस ने दरख़्त काटने का इरादा तर्क किया और वापस घर लौट आया।

फिर जब सुब्ह बेदार हुवा तो उस ने देखा कि तकये के नीचे दो दीनार मौजूद थे। दूसरी सुब्ह जब उस ने तकया उठाया तो वहां दीनार मौजूद न थे, उसे बड़ा ग़ुस्सा आया और कुल्हाड़ा उठा कर फिर दरख़्त काटने चला। शैतान फिर इन्सान की शक्ल में उस के पास आया और कहा : ''कहां का इरादा है ?'' वोह कहने लगा : ''मैं उस दरख़्त को काटने जा रहा हूं जिस की लोग इबादत करते हैं, मैं येह बरदाश्त नहीं कर सकता कि लोग ग़ैरे ख़ुदा की इबादत करें, लिहाज़ा मैं उस दरख़्त को काट कर ही दम लूंगा।'' शैतान ने कहा : ''तू झूट बोल रहा है, अब तू कभी भी उस दरख़्त को नहीं काट सकता।'' चुनान्चे, शैतान और उस शख़्स के दरमियान फिर से कुश्ती शुरूअ़

www.dawateislami.net

हो गई। इस मरतबा शैतान ने उस शख़्स को बुरी तरह पछाड़ दिया और उस का गला दबाने लगा, क़रीब था कि उस शख़्स की मौत वाक़ेअ़ हो जाती। उस ने शैतान से पूछा : "येह तो बता कि तू है कौन?" शैतान ने कहा : "मैं इब्लीस हूं और जब तू पहली मरतबा दरख़्त काटने चला था तो उस वक़्त भी मैं ने ही तुझे रोका था लेकिन उस वक़्त तू ने मुझे गिरा दिया था इस की वजह येह थी कि उस वक़्त तेरा गुस्सा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये था लेकिन इस मरतबा मैं तुझ पर ग़ालिब आ गया हूं क्यूंकि अब तेरा गुस्सा **अल्लाह** तआ़ला के लिये नहीं बल्कि दीनारों के न मिलने की वजह से है। लिहाज़ा अब तू कभी भी मेरा मुक़ाबला नहीं कर सकता।"(1)

अमीरे अहले सुन्नत के बयान कर्दा गुस्से के तेरह इलाज :

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के तह़रीरी बयान "**गुस्से का इलाज**" सफ़ह़ा 30 पर है : "जब गुस्सा आ जाए तो इन में से कोई भी एक या ज़रूरतन सारे इलाज फ़रमा लीजिये : (1) "اَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم" पढ़िये।" (2) وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه पढ़िये।" (3) "चुप हो जाइये।" (4) "वुज़ू कर लीजिये।" (5) "नाक में पानी चढ़ाइये।" (6) "खड़े हैं तो बैठ जाइये।" (7) "बैठे हैं तो लैट जाइये और ज़मीन से चिपट जाइये।" (8) "अपने ख़द (या'नी गाल) को ज़मीन से मिला दीजिये (वुज़ू हो तो सजदा कर

---

(1).....उ़यूनुल ह़िकायात, जि. 1 स. 203।

www.dawateislami.net

लीजिये) ताकि एह्सास हो कि मैं ख़ाक से बना हूं लिहाज़ा बन्दे पर गुस्सा करना मुझे ज़ैब नहीं देता।"(1) (9) "जिस पर गुस्सा आ रहा है उस के सामने से हट जाइये।" (10) "सोचिये कि अगर मैं गुस्सा करूंगा तो दूसरा भी गुस्सा करेगा और बदला लेगा और मुझे दुश्मन को कमज़ोर नहीं समझना चाहिये।" (11) "अगर किसी को गुस्से में झाड़ वग़ैरा दिया तो ख़ुसूसिय्यत के साथ सब के सामने हाथ जोड़ कर उस से मुआफ़ी मांगिये इस तरह नफ़्स ज़लील होगा और आयिन्दा गुस्सा नाफ़िज़ करते वक़्त अपनी ज़िल्लत याद आएगी और हो सकता है यूं करने से गुस्से से ख़लासी मिल जाए।" (12) येह ग़ौर कीजिये कि आज बन्दे की ख़ता पर मुझे गुस्सा चढ़ा है और मैं दरगुज़र करने के लिये तय्यार नहीं हालांकि मेरी बे शुमार ख़ताएं हैं अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ग़ज़बनाक हो गया और मुझे मुआफ़ी न दी तो मेरा क्या बनेगा ?" (13) "कोई अगर ज़ियादती करे या ख़ता कर बैठे और इस पर नफ़्स की ख़ातिर गुस्सा आने पर ज़ेह्न बनाए कि क्यूं न मैं मुआफ़ कर के सवाब का ह़क़दार बनूं और सवाब भी कैसा ज़बरदस्त कि क़ियामत के रोज़ ए'लान किया जाएगा जिस का अज्र अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए। पूछा जाएगा किस के लिये अज्र है ? वोह कहेगा : उन लोगों के लिये जो मुआफ़ करने वाले हैं।" तो हज़ारों आदमी खड़े होंगे और बिला ह़िसाब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।"(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ......احیاء العلوم، ج۳، ص ۳۸۸۔

2 ......معجم اوسط، من اسمہ احمد، ج ۱، ص ۵۴۲، حدیث: ۱۹۹۸۔

www.dawateislami.net

(40).....तसाहुल फ़िल्लाह

तसाहुल फ़िल्लाह की ता'रीफ़ :

अह्कामे इलाही की बजा आवरी में सुस्ती और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी में मश्ग़ूलिय्यत "**तसाहुल फ़िल्लाह**" है।

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۠ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۱۴﴾﴾ (پ۴،النساء: ۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"और जो अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़रमानी करे और उस की कुल हदों से बढ़ जाए अल्लाह उसे आग में दाख़िल करेगा जिस में हमेशा रहेगा और उस के लिये ख़्वारी का अ़ज़ाब है।"*

ह़दीसे मुबारका : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ढील :

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले मोह़्तशम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जब तुम किसी बन्दे को देखो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को अ़त़ा फ़रमाता है और वोह अपने गुनाह पर क़ाइम है तो येह उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ढील है। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयत तिलावत फ़रमाई :

﴿فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فَرِحُوْا بِمَاۤ اُوْتُوْۤا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ﴿۴۴﴾﴾ (پ۷،الانعام: ۴۴)

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"फिर जब उन्हों ने भुला दिया जो नसीहतें उन को की गई थीं हम ने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये यहां तक कि जब ख़ुश हुवे इस पर जो उन्हें मिला तो हम ने अचानक उन्हें पकड़ लिया अब वोह आस टूटे रह गए।"*(1)

तसाहुल फ़िल्लाह के बारे में तम्बीह :

अह़कामे इलाही की बजा आवरी में सुस्ती और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी में मश्ग़ूलिय्यत दुन्या व आख़िरत की बरबादी का सबब है लिहाज़ा हर मुसलमान को इस से बचना लाज़िम है।

ह़िकायत : बनी इस्राईल का एक गुनहगार :

बनी इस्राईल में एक गुनहगार शख़्स था। जूं जूं उस के गुनाहों और नाफ़रमानियों का सिलसिला बढ़ता जाता अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर अपना रिज़्क़ और एह़सान भी बढ़ाता जाता। जब उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से गुनाहों और बुराइयों में मुलव्विस रहने वाले के लिये अ़ज़ाब का बयान सुना तो कहने लगा : "ऐ मूसा (عَلَیْهِ السَّلَام) मेरा रब عَزَّوَجَلَّ क्या चाहता है? क्यूंकि मैं जब भी गुनाहों में ज़ियादती करता हूं तो वोह मुझे अपना मज़ीद फ़ज़्ल व ने'मत अ़ता फ़रमाता है।" उस की इस बात से आप عَلَیْهِ السَّلَام बहुत हैरान हुवे। जब आप عَلَیْهِ السَّلَام कोहे तूर पर मुनाजात के लिये ह़ाज़िर हुवे तो अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू जानता है जो तेरे नाफ़रमान बन्दे ने कहा है कि जब भी वोह गुनाह करता है तो तू उस पर मज़ीद एह़सान फ़रमाता है।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने

---

1 ......مسند احمد، عقبۃ بن عامر الجھنی، ج۶، ص ۱۲۲، حدیث: ۱۷۳۱۳۔

www.dawateislami.net

इरशाद फ़रमाया : "ऐ मूसा ! मैं उस को अ़ज़ाब देता हूं लेकिन वोह जानता नहीं ।" हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "मौला ! तू उसे कैसे अ़ज़ाब देता है ह़ालांकि तू उस के रिज़्क़ को कुशादा करता और उसे ढील दे देता है ।" फ़रमाया : "मैं उसे अपनी बारगाह से दूरी और अपने फ़ज़्लो करम से मह़रूमी का अ़ज़ाब देता हूं, अपनी इत़ाअ़त से ग़ाफ़िल कर देता हूं, अपने हुज़ूर मुनाजात की लज़्ज़त से सुलाए रखता हूं और सह़री में अपने इताब और अपने दिल नवाज़ ख़िताब की लज़्ज़त से मह़रूम कर देता हूं । मेरे इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं उसे ज़रूर अपना दर्दनाक अ़ज़ाब चखाऊंगा और अपने इन्आ़मो इकराम की ज़ियादती से मह़रूम कर दूंगा ।"(1)

तसाहुल फ़िल्लाह के चार अस्बाब और इन के इलाज :

(1)....**तसाहुल फ़िल्लाह** का पहला सबब **जहालत** है कि बन्दा जब गुनाहों, इन के मिलने वाले अ़ज़ाबात का इ़ल्म ह़ासिल नहीं करता तो **तसाहुल फ़िल्लाह** जैसे मोहलिक मरज़ में मुब्तला हो जाता है । इस का **इलाज** येह है कि बन्दा गुनाहों और इन पर मिलने वाले अ़ज़ाबात का इ़ल्म ह़ासिल करे, इन से बचने के त़रीक़े सीखे, नेक लोगों की सोह़बत इख़्तियार करे, नेकियों में रग़बत पैदा करे । मुख़्तलिफ़ गुनाहों और इन पर मिलने वाले अ़ज़ाबात की तफ़्सील के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ किताब "**जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल**" का मुत़ालआ़ कीजिये ।

---

1 .....ह़िकायतें और नसीह़तें, स. 441 ।

www.dawateislami.net

(2)....**तसाहुल फ़िल्लाह** का दूसरा और सब से बड़ा सबब **बातिनी अमराज़** हैं क्यूंकि येह बातिनी अमराज़ "अहकामे इलाही" पर अ़मल में रुकावट और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी में मश्गूलिय्यत का सबब बनते हैं। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा बातिनी गुनाहों के अस्बाब व **इलाज** के हवाले से मा'लूमात हासिल करे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस मोहलिक मरज़ से शिफ़ा के लिये दुआ़ भी करे।

(3)....**तसाहुल फ़िल्लाह** का तीसरा सबब **बारगाहे इलाही में दुआ़ न करना** है कि दुआ़ मोमिन का हथयार है, शैतान हमारा खुल्लम खुल्ला दुश्मन है इस की हर वक़्त येह कोशिश है कि हमें किसी तरह **तसाहुल फ़िल्लाह** जैसे मरज़ में मुब्तला कर दे, लिहाज़ा इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपने हथयार या'नी दुआ़ को शैतान के खिलाफ़ इस्ति'माल करे और बारगाहे इलाही में यूं दुआ़ करे : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे शैतान मर्दूद के मक्रो फ़रेब से महफ़ूज़ फ़रमा, मुझे **तसाहुल फ़िल्लाह** जैसे मरज़ से नजात अ़ता फ़रमा, मुझे नेकियों में रग़बत और गुनाहों से नफ़रत अ़ता फ़रमा, मुझे नेक परहेज़गार, अपने मां बाप का फ़रमां बरदार और सच्चा पक्का आ़शिके रसूल बना, ईमान की सलामती अ़ता फ़रमा।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(4)....**तसाहुल फ़िल्लाह** का चौथा सबब **बुरी सोहबत** है कि बन्दा जब बुरी सोहबत इख़्तियार करता है तो वोह **तसाहुल फ़िल्लाह** जैसे मरज़ में मुब्तला हो जाता है क्यूंकि अच्छों की सोहबत

www.dawateislami.net

अच्छा और बुरों की सोहबत बुरा बना देती है। लिहाज़ा इस का **इलाज** येही है कि बन्दा नेक लोगों की सोहबत इख़्तियार करे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** का मुश्कबार मदनी माहोल भी अच्छी सोहबत फ़राहम करता है, आप भी इस मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने अ़लाक़े में होने वाले **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़** में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमाइये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और नेकियों के लिये कुढ़ने का मदनी ज़ेहन बनेगा। हर इस्लामी भाई अपना येह मदनी ज़ेहन बनाए कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(41).....तकब्बुर

तकब्बुर की ता'रीफ़ :

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 96 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब "**तकब्बुर**" सफ़्हा 16 पर है : "ख़ुद को अफ़्ज़ल और दूसरों को ह़क़ीर जानने का नाम **तकब्बुर** है। चुनान्चे, रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "اَلْكِبْرُ بَطَرُ الْحَقِّ وَغَمْطُ النَّاسِ" या'नी तकब्बुर ह़क़ की

www.dawateislami.net

मुख़ालफ़त और लोगों को ह़क़ीर जानने का नाम है।"[1]

इमाम राग़िब अस्फ़हानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی लिखते हैं : "**तकब्बुर** येह है कि इन्सान अपने आप को दूसरों से अफ़्ज़ल समझे।"[2] जिस के दिल में तकब्बुर पाया जाए उसे "**मुतकब्बिर**" और "**मग़रूर**" कहते हैं।

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِیْنَ ۝۲۳﴾ (پ۱۴، النحل: ۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"बेशक वोह मग़रूरों को पसन्द नहीं फ़रमाता।"*

एक और मक़ाम पर फ़रमाता है :

﴿وَ لَا تَمْشِ فِی الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَ لَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ۝۳۷﴾ (پ۱۵، بنی اسرائیل: ۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"और ज़मीन में इतराता न चल बेशक तू हरगिज़ ज़मीन न चीर डालेगा और हरगिज़ बुलन्दी में पहाड़ों को न पहुंचेगा।"*

काफ़िर मुतकब्बिरीन के बारे में इरशाद फ़रमाता है :

﴿فَادْخُلُوْۤا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِیْنَ ۝۲۹﴾ (پ۱۴، النحل: ۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"अब जहन्नम के दरवाज़ों में जाओ कि हमेशा इस में रहो तो क्या ही बुरा ठिकाना मग़रूरों का।"*

ह़दीसे मुबारका : मुतकब्बिरीन के लिये बरोज़े क़ियामत रुस्वाई :

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन मुतकब्बिरीन को इन्सानी शक्लों में

---

1 ......مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم الکبر وبیانہ، ص ۶۱، حدیث: ۱۴۷۔

2 ......مفردات الفاظ القرآن، کبر، ص ۶۹۷۔

www.dawateislami.net

च्यूंटियों की मानिन्द उठाया जाएगा, हर जानिब से उन पर ज़िल्लत तारी होगी, उन्हें जहन्नम के **बूलस** नामी क़ैदख़ाने की तरफ़ हांका जाएगा और बहुत बड़ी आग उन्हें अपनी लपेट में ले कर उन पर ग़ालिब आ जाएगी, उन्हें **तीनतुल ख़बाल** या'नी जहन्नमियों की पीप पिलाई जाएगी।''(1)

तकब्बुर की तीन क़िस्में और इन का हुक्म :

(1)....''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तकब्बुर।'' तकब्बुर की येह क़िस्म कुफ़्र है जैसे फ़िरऔन का कुफ़्र कि उस ने कहा था :

﴿اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ﴿۲۴﴾ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَ الْاُوْلٰى ﴿۲۵﴾﴾ (پ۳۰، النّزعٰت: ۲۴-۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *''मैं तुम्हारा सब से ऊंचा रब हूं तो अल्लाह ने उसे दुन्या व आख़िरत दोनों के अ़ज़ाब में पकड़ा।''*

फ़िरऔन की हिदायत के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह और हज़रते सय्यिदुना हारून عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِمَا الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام को भेजा मगर उस ने इन दोनों को झुटलाया तो रब عَزَّوَجَلَّ ने उसे और उस की क़ौम को दरयाए नील में ग़र्क़ कर दिया।(2)

मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़िरऔन को मरे हुवे बैल की तरह दरया के किनारे पर फेंक दिया ताकि वोह बाक़ी मांदा बनी इस्राईल और दीगर लोगों के लिये इब्रत का निशान बन जाए और उन पर येह बात वाज़ेह हो जाए कि जो शख़्स ज़ालिम हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की जनाब में तकब्बुर करता हो उस की पकड़ इस तरह होती है कि उसे ज़िल्लत

---

1 ......ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، ج۴، ص۲۲۱، حدیث: ۲۵۰۰۔

2 ......الحدیقۃ الندیۃ، البحث الثانی من المباحث۔۔۔الخ، ج۱، ص۵۴۹۔

www.dawateislami.net

व इहानत की पस्ती में फेंक दिया जाता है।''(1)

(2).....''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के रसूलों के मुक़ाबले में तकब्बुर।''** तकब्बुर की येह क़िस्म भी कुफ़्र है, इस की सूरत येह है कि तकब्बुर जहालत और बुग़्ज़ो अ़दावत की बिना पर रसूल की पैरवी न करना या'नी ख़ुद को इ़ज़्ज़त वाला और बुलन्द समझ कर यूं तसव्वुर करना कि आ़म लोगों जैसे एक इन्सान का हुक्म कैसे माना जाए ? जैसा कि बा'ज़ कुफ़्फ़ार ने हुज़ूर नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में ह़क़ारत से कहा था :

﴿اَهٰذَا الَّذِیْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا﴾ (پ۱۹، الفرقان: ۴۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *''क्या येह हैं जिन को **अल्लाह** ने रसूल बना कर भेजा।''*

और येह भी कहा था :

﴿لَوْ لَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْیَتَیْنِ عَظِیْمٍ﴾ (پ۲۵، الزخرف: ۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *''क्यूं न उतारा गया येह क़ुरआन उन दो शहरों के किसी बड़े आदमी पर।''*

(3).....''**बन्दों के मुक़ाबले में तकब्बुर।''** या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इलावा मख़्लूक़ में से किसी पर तकब्बुर करना, वोह इस त़रह़ कि अपने आप को बेहतर और दूसरे को ह़क़ीर जान कर इस पर बड़ाई चाहना और मसावात या'नी बाहम बराबरी को नापसन्द करना। येह सूरत अगर्चे पहली दो सूरतों से कम तर है मगर येह भी ह़राम है और इस का गुनाह भी बहुत बड़ा है क्यूंकि किब्रियाई और अ़ज़मत बादशाहे

---

(1) الزواجر، الباب الاول فی الکبائر۔۔۔الخ، ج۱، ص۱۰۷۔

www.dawateislami.net

हक़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ ही के लाइक़ है न कि आ़जिज़ और कमज़ोर बन्दे के।"(1)

ह़िकायत : तकब्बुर के सबब तमाम आ'माल ज़ाएअ़ हो गए :

बनी इस्राईल का एक शख़्स जो बहुत गुनहगार था, एक मरतबा बहुत बड़े आ़बिद या'नी इ़बादत गुज़ार के पास से गुज़रा जिस के सर पर बादल साया फ़िगन हुवा करते थे। उस गुनहगार शख़्स ने अपने दिल में सोचा : "मैं बनी इस्राईल का इन्तिहाई गुनहगार और येह बहुत बड़े इ़बादत गुज़ार हैं, अगर मैं इन के पास बैठूं तो उम्मीद है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ पर भी रह़्म फ़रमा दे।"

येह सोच कर वोह उस आ़बिद के पास बैठ गया। आ़बिद को उस का बैठना बहुत ना गवार गुज़रा, उस ने दिल में कहा : "कहां मुझ जैसा इ़बादत गुज़ार और कहां येह परले दरजे का गुनहगार ! येह मेरे पास कैसे बैठ सकता है ?" चुनान्चे, उस आ़बिद ने उस गुनहगार शख़्स को बड़ी ह़क़ारत से मुख़ात़ब किया और कहा : "यहां से उठ जाओ।" इस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस ज़माने के नबी عَلَيْهِ السَّلَام पर वह़ी भेजी कि "उन दोनों से फ़रमाइये कि वोह अपने अ़मल नए सिरे से शुरूअ़ करें। मैं ने उस गुनहगार को (उस के हुस्ने ज़न के सबब) बख़्श दिया और इ़बादत गुज़ार के अ़मल (उस के तकब्बुर के बाइ़स) ज़ाएअ़ कर दिये।"(2)

तकब्बुर के आठ अस्बाब व इ़लाज :

(1).....**तकब्बुर** का पहला सबब इ़ल्म है कि बा'ज़ अवक़ात इन्सान कसरते इ़ल्म की वजह से भी तकब्बुर की आफ़त

---

1 ......احیاء العلوم، کتاب ذم الکبر والعجب، بیان المتکبر۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۴۲۴ ملخصاً۔

2 ......احیاء العلوم، کتاب ذم الکبر والعجب، بیان مابه التکبر، ج ۳، ص ۴۲۹۔

www.dawateislami.net

में मुब्तला हो जाता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा **मुअ़ल्लिमुल मलकूत** के मन्सब तक पहुंचने वाले शैत़ान के अन्जाम को याद रखे कि उस ने **तकब्बुर** करते हुवे अपने आप को ह़ज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से अफ़्ज़ल क़रार दिया था मगर उसे इस तकब्बुर के नतीजे में **क़ियामत** तक की ज़िल्लतो रुस्वाई मिली और वोह **जहन्नम** का ह़क़दार ठहरा। कहीं येह तकब्बुर हमें भी तबाहो बरबाद न कर दे।

(2).....**तकब्बुर** का दूसरा सबब **इबादत व रियाज़त** है कि बन्दा कसीर इबादतो रियाज़त के सबब इस मरज़ में मुब्तला हो जाता है, इस का **इलाज** येह है कि बन्दा सोचे कि मैं अगर बहुत ज़ियादा इबादत करता हूं तो इस में मेरा क्या **कमाल** है? येह तो उस रब عَزَّوَجَلَّ का करम है, नीज़ इबादत तो वोही मुफ़ीद होगी जिस में **निय्यत** दुरुस्त हो, तमाम **शराइत़** पाई जाती हों। बन्दा अपने आप को यूं डराए कि क्या ख़बर येह इबादत जिस पर मैं घमन्ड कर रहा हूं वोह मेरे इस तकब्बुर के सबब रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में **मक़्बूल** होने के बजाए **मर्दूद** हो जाए और **जन्नत में दाख़िले** के बजाए **जहन्नम में दाख़िले** का सबब बन जाए।

(3).....**तकब्बुर** का तीसरा सबब **मालो दौलत** है कि जिस के पास कार, बंगला, बेंक बेलेन्स और काम काज के लिये नोकर चाकर हों वोह भी बसा अवक़ात **तकब्बुर** में मुब्तला हो जाता है इस का **इलाज** येह है कि बन्दा इस बात का यक़ीन रखे कि एक दिन ऐसा आएगा कि उसे येह सब कुछ यहीं छोड़ कर ख़ाली हाथ दुन्या से जाना पड़ेगा, कफ़न में **थैली** होती है न क़ब्र

www.dawateislami.net

में **तिजोरी**, फिर क़ब्र को नेकियों का नूर रोशन करेगा न कि सोने चांदी और मालो दौलत की चमक दमक। लिहाज़ा इस फ़ानी और साथ छोड़ जाने वाली शै की वजह से **तकब्बुर** में मुब्तला हो कर अपने रब عَزَّوَجَلَّ को क्यूं नाराज़ किया जाए ?

(4).....**तकब्बुर** का चौथा सबब **हसबो नसब** है कि बन्दा अपने आबाओ अजदाद के बल बूते पर अकड़ता और दूसरों को हक़ीर जानता है। इस का इलाज येह है कि बन्दा अपना येह मदनी ज़ेहन बनाए कि दूसरों के कारनामों पर घमन्ड करना **अक़्लमन्दी** नहीं बल्कि जहालत है और आबाओ अजदाद पर फ़ख़्र करने वालों के लिये **जहन्नम की वईद** है। चुनान्चे, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अपने फ़ौत शुदा आबाओ अजदाद पर फ़ख़्र करने वाली क़ौमों को बाज़ आ जाना चाहिये क्यूंकि वोही **जहन्नम का कोइला** हैं, या वोह क़ौमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक गन्दगी के उन कीड़ों से भी हक़ीर हो जाएंगी जो अपनी नाक से गन्दगी को कुरैदते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम से **जाहिलिय्यत का तकब्बुर** और उन का अपने आबा पर फ़ख़्र करना ख़त्म फ़रमा दिया है, अब आदमी मुत्तक़ी व मोमिन होगा या बद बख़्त व बदकार, सब लोग हज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) की अवलाद हैं और हज़रते आदम (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) को मिट्टी से पैदा किया गया है।"[(1)]

(5).....**तकब्बुर** का पांचवां सबब **ओहदा व मन्सब** है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपना येह ज़ेहन बनाए कि **फ़ानी पर फ़ख़्र नादानी है** क्यूंकि इज़्ज़तो मन्सब कब तक साथ देंगे ? जिस

1 ......ترمذی، کتاب المناقب، باب فی فضل الشام والیمن، ج۵، ص۴۹۷، حدیث: ۳۹۸۱۔

www.dawateislami.net

मन्सब के बल बूते पर आज अकड़ते हैं, कल को छिन गया तो उन्हीं लोगों से मुंह छुपाना पड़ेगा जिन से आज तह़क़ीर आमेज़ सुलूक करते हैं। आज जिन लोगों पर चीख़ चीख़ कर हुक्म चलाते हैं हो सकता है कल उन से ही कोई ऐसा काम पड़ जाए जो हमारे **तकब्बुर** को ख़ाक में मिला दे। इस लिये कैसा ही **मन्सब या ओ़हदा** मिल जाए पर अपनी **औक़ात** नहीं भूलनी चाहिये।

(6).....**तकब्बुर** का छटा सबब **कामयाबी व कामरानी** है कि जब किसी को पै दर पै **कामयाबियां** मिलती हैं तो वोह नाकाम होने वाले लोगों को ह़क़ीर समझना शुरूअ़ कर देता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा येह न भूले कि **वक़्त एक सा नहीं रहता,** बुलन्दियों पर पहुंचने वालों को अकसर वापस पस्ती में भी आना पड़ता है, **हर कमाल को ज़वाल है, कामयाबी पर** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करना चाहिये न कि इसे अपना कमाल तसव्वुर करते हुवे दूसरों को **ह़क़ारत की नज़र** से देखे। बन्दा येह भी ज़ेह्न बनाए कि जिसे मैं **कामयाबी** समझ रहा हूं वोह फ़क़त दुन्या की **कामयाबी** है जो एक न एक दिन ख़त्म हो जाएगी, अस्ल **कामयाबी** तो येह है कि मैं इस दुन्या से **ईमान** सलामत ले जाऊं, दुन्या में रहते हुवे **आख़िरत** की तय्यारी करूं, अपने रब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी कर लूं।

(7).....**तकब्बुर** का सातवां सबब **हुस्नो जमाल** है कि बन्दा अपने ज़ाहिरी **हुस्नो जमाल** के सबब **तकब्बुर** में मुब्तला हो जाता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपनी इब्तिदा व इन्तिहा पर ग़ौर करे कि मेरा आग़ाज़ नापाक नुत़्फ़े और अन्जाम सड़ा हुवा मुर्दा होना है, नीज़ उ़म्र के हर दौर में हुस्न यक्सां नहीं रहता बल्कि वक़्त गुज़रने के साथ

www.dawateislami.net

साथ वोह भी मांद पड़ जाता है, येह भी पेशे नज़र रखे कि मेरे इसी **हुस्नो जमाल** वाले बदन से रोज़ाना पेशाब, पाख़ाना, बदबूदार पसीना, मैल कुचेल और दीगर गन्द निकलता है, मैं अपने हाथों से पाख़ाना व पेशाब साफ़ करता हूं तो क्या इन चीज़ों के होते हुवे फ़क़त ज़ाहिरी **हुस्नो जमाल** पर तकब्बुर करना ज़ैब देता है? यक़ीनन नहीं।

(8).....**तकब्बुर** का आठवां सबब **ताक़तो कुव्वत** है कि जिस का क़द काठ अच्छा हो, खाता पीता और सीना चौड़ा हो तो वोह बसा अवक़ात कमज़ोर जिस्म वाले को ह़क़ीर समझना शुरूअ़ कर देता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपने नफ़्स का यूं मुह़ासबा करे कि ताक़तो कुव्वत और फुर्ती तो जानवरों में भी होती है बल्कि इन्सान से ज़ियादा होती है तो फिर अपने अन्दर और जानवरों में **मुश्तरका सिफ़त पर तकब्बुर** करना कैसा? ह़ालांकि हमारे जिस्म की ताक़तो कुव्वत का तो येह ह़ाल है कि थोड़ा सा बीमार हो जाएं तो ताक़त का सारा नशा उतर जाता है, मा'मूली सी गर्मी बरदाश्त नहीं होती, अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता इस **तकब्बुर** की वजह से कल बरोज़े क़ियामत रब عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हो गया और जहन्नम में शदीद आग का अ़ज़ाब दिया गया तो उसे कैसे बरदाश्त करेंगे?[1]

तकब्बुर जैसे मूज़ी मरज़ की मज़ीद तफ़्सीलात के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **96** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**तकब्बुर**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ......احیاء العلوم، کتاب ذم الکبر والعجب، بیان مابہ التکبر، ج ۳، ص ۴۲۶ ماخوذا۔

www.dawateislami.net

(42).....बद शुगूनी

बद शुगूनी की ता'रीफ़ :

तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 128 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बद शुगूनी**" सफ़ह़ा 10 पर है : शुगून का मा'ना है फ़ाल लेना या'नी किसी चीज़, शख़्स, अ़मल, आवाज़ या वक़्त को अपने ह़क़ में अच्छा या बुरा समझना। (इसी वजह से बुरा फ़ाल लेने को बद शुगूनी कहते हैं।)

शुगून की कि़स्में :

बुन्यादी त़ौर पर शुगून की दो कि़स्में हैं : (1) बुरा शुगून लेना (2) अच्छा शुगून लेना। अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन अह़मद अन्सारी कु़रतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى तफ़्सीरे कु़रतुबी में नक़्ल करते हैं : "अच्छा शुगून येह है कि जिस काम का इरादा किया हो उस के बारे में कोई कलाम सुन कर दलील पकड़ना, येह उस वक़्त है जब कलाम अच्छा हो, अगर बुरा हो तो बद शुगूनी है। शरीअ़त ने इस बात का हुक्म दिया है कि इन्सान अच्छा शुगून ले कर ख़ुश हो और अपना काम ख़ुशी ख़ुशी पायए तक्मील तक पहुंचाए और जब बुरा कलाम सुने तो उस की त़रफ़ तवज्जोह न करे और न ही उस के सबब अपने काम से रुके।"(1)

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कु़रआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

---

(1) جامع احکام القرآن، پ۲۶، الاحقاف، تحت الآیۃ:۴، الجزء:۱۶، ج۸، ص۱۳۲۔

www.dawateislami.net

﴿فَاِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَیِّئَةٌ یَّطَّیَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ؕ اَلَاۤ اِنَّمَا طٰٓىٕرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۱﴾﴾ (پ۹، الاعراف:۱۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"तो जब उन्हें भलाई मिलती कहते येह हमारे लिये है और जब बुराई पहुंचती तो मूसा और उस के साथ वालों से बद शुगूनी लेते। सुन लो उन के नसीबा की शामत तो* ***अल्लाह*** *के यहां है लेकिन उन में अकसर को ख़बर नहीं।"*

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस आयते मुबारका के तहत लिखते हैं : "जब फ़िरऔनियों पर कोई मुसीबत (क़हत़ साली वग़ैरा) आती थी तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام और उन के साथी मोअमिनीन से बद शुगूनी लेते थे, कहते थे कि जब से येह लोग हमारे मुल्क में ज़ाहिर हुवे हैं तब से हम पर मुसीबतें–बलाएं आने लगीं।" मुफ़्ती साहिब मज़ीद लिखते हैं : "इन्सान मुसीबतों, आफ़तों में फंस कर तौबा कर लेता है मगर वोह लोग ऐसे सरकश थे कि इन सब से उन की आंखें न खुलीं बल्कि उन का कुफ़्र व सरकशी और ज़ियादा हो गई कि जब कभी हम उन को आराम देते हैं, अरज़ानी, चीज़ों की फ़रावानी वग़ैरा तो वोह कहते कि येह आरामो राहत हमारी अपनी चीज़ें हैं हम इस के मुस्तहिक़ हैं नीज़ येह आराम हमारी अपनी कोशिशों से हैं।"(1)

हदीसे मुबारका : बद शुगूनी लेने वाला हम में से नहीं :

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने बद शुगूनी ली और जिस के लिये बद

---

(1)....तफ़्सीरे नईमी, पारह. 9, अल आ'राफ़, तहतल आयत : 131, जि. 9, स. 117।

www.dawateislami.net

शुगूनी ली गई वोह हम में से नहीं ।"(1)

बद शुगूनी का हुक्म :

हज़रते सय्यिदुना **इमाम मुहम्मद आफ़न्दी रूमी बरकली** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى लिखते हैं : "बद शुगूनी लेना हराम और नेक फ़ाल या अच्छा शुगून लेना मुस्तहब है ।"(2) मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "इस्लाम में नेक फ़ाल लेना जाइज़ है, बद फ़ाली (**बद शुगूनी**) लेना हराम है ।"(3)

एक अहम तरीन वज़ाहत :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! न चाहते हुवे भी बा'ज़ अवक़ात इन्सान के दिल में बुरे शुगून का ख़याल आ ही जाता है इस लिये किसी शख़्स के दिल में बद शुगूनी का ख़याल आते ही उसे **गुनहगार** क़रार नहीं दिया जाएगा क्यूंकि महज़ दिल में बुरा ख़याल आ जाने की बिना पर सज़ा का हक़दार ठहराने का मतलब किसी इन्सान पर उस की ताक़त से ज़ाइद बोझ डालना है और येह बात शरई तक़ाज़े के ख़िलाफ़ है क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا﴾ (پ۳، البقرۃ:۲۸۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"**अल्लाह** किसी जान पर बोझ नहीं डालता मगर उस की ताक़त भर ।"*

हज़रते अ़ल्लामा मुल्ला जीवन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस आयत के तहत **तफ़्सीराते अहमदिय्या** में लिखते हैं : "या'नी

---

1 ......معجم کبیر، حدیث عمران بن حصین، ج۱۸، ص۱۶۲، حدیث:۳۵۵۔

2 ......الطریقة المحمدیة، ج۲، ص۱۷، ۲۴۔

3 ....तफ़्सीरे नईमी, पारह. 9, अल आ'राफ़, तहतल आयत : 132, जि. 9, स. 119 ।

www.dawateislami.net

अल्लाह तआला हर जानदार को इस बात का मुकल्लफ़ (या'नी ज़िम्मेदार) बनाता है जो उस की वुस्अत व कुदरत में हो।"(1)

चुनान्चे, अगर किसी ने बद शुगूनी का ख़याल दिल में आते ही उसे झटक दिया तो उस पर कुछ इल्ज़ाम नहीं लेकिन अगर उस ने बद शुगूनी की तासीर का ए'तिक़ाद रखा और इसी ए'तिक़ाद की बिना पर उस काम से रुक गया तो गुनाहगार होगा, मसलन किसी चीज़ को मन्हूस समझ कर सफ़र या कारोबार करने से येह सोच कर रुक गया कि अब मुझे नुक्सान ही होगा तो अब गुनहगार होगा। शैख़ुल इस्लाम शहाबुद्दीन इमाम अह़मद बिन ह़जर मक्की हैतमी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى अपनी किताब اَلزَّوَاجِرُ عَنِ اقْتِرَافِ الْكَبَائِر में बद शुगूनी के बारे में दो ह़दीसें नक्ल करने के बा'द लिखते हैं : "पहली और दूसरी ह़दीसे पाक के ज़ाहिरी मा'ना की वजह से बद फ़ाली को गुनाहे कबीरा शुमार किया जाता है और मुनासिब भी येही है कि येह हुक्म उस शख़्स के बारे में हो जो बद फ़ाली की तासीर का ए'तिक़ाद रखता हो जब कि ऐसे लोगों के इस्लाम (या'नी मुसलमान होने न होने) में कलाम है।"(2)

ह़िकायत : बद शुगूनी लेना मेरा वहम था :

तफ़्सीरे रूहुल बयान में है, एक शख़्स का बयान है कि एक मरतबा मैं इतना तंगदस्त हो गया कि भूक मिटाने के लिये मिट्टी खानी पड़ी मगर फिर भी भूक सताती रही। मैं ने सोचा काश ! कोई ऐसा शख़्स मिल जाए जो मुझे खाना खिला दे।

---

1 ......تفسیرات احمدیہ، ص ۱۸۹۔

2 ......الزواجر، الباب الثانی فی۔۔۔الخ، باب السفر، ج ۱، ص ۳۲۶۔

www.dawateislami.net

चुनान्चे, मैं ऐसे शख़्स की तलाश में ईरान के शहर अहवाज़ की त़रफ़ रवाना हुवा ह़ालांकि वहां मेरा कोई वाक़िफ़ न था। जब मैं दरया के किनारे पहुंचा तो वहां कोई कश्ती मौजूद नहीं थी, मैं ने इसे बद फ़ाली पर मह़मूल किया। फिर मुझे एक कश्ती नज़र आई मगर उस में सूराख़ था, येह दूसरी बद फ़ाली हुई। मैं ने कश्ती के मल्लाह़ का नाम पूछा तो उस ने "देवज़ादा" बताया (जिसे अ़रबी में शैत़ान कहा जाता है) येह तीसरी बद फ़ाली थी। बहर ह़ाल मैं उस कश्ती पर सुवार हो गया, जब दरया के दूसरे किनारे पर पहुंचा तो मैं ने आवाज़ लगाई : "ऐ बोझ उठाने वाले मज़दूर ! मेरा सामान ले चलो।" उस वक़्त मेरे पास एक पुराना लिह़ाफ़ और कुछ ज़रूरी सामान था। जिस मज़दूर ने मुझे जवाब दिया वोह एक आंख वाला (या'नी काना) था, मैं ने कहा : "येह चौथी बद फ़ाली है।" मेरे जी में आया कि यहां से वापस लौट जाने में ही आ़फ़िय्यत है लेकिन फिर अपनी ह़ाजत को याद कर के वापसी का इरादा तर्क कर दिया। जब मैं सराए (मुसाफ़िर ख़ाने) पहुंचा और अभी येह सोच रहा था कि क्या करूं कि इतने में किसी ने दरवाज़ा खट-खटाया। मैं ने पूछा : "कौन ?" तो जवाब मिला कि मैं आप से ही मिलना चाहता हूं। मैं ने पूछा : "क्या तुम जानते हो कि मैं कौन हूं ?" उस ने कहा : "हां।" मैं ने दिल में कहा : "या तो येह दुश्मन है या फिर बादशाह का क़ासिद।" मैं ने कुछ देर सोचने के बा'द दरवाज़ा खोल दिया। उस शख़्स ने कहा : "मुझे फ़ुलां शख़्स ने आप के पास भेजा है और येह पैग़ाम दिया है कि अगर्चे मेरे आप से इख़्तिलाफ़ात हैं लेकिन अख़्लाक़ी

www.dawateislami.net

हुकूक़ की अदाएगी ज़रूरी है, मैं ने आप के हालात सुने हैं इस लिये मुझ पर लाज़िम है कि आप की ज़रूरियात की कफ़ालत करूं। अगर आप एक या दो माह तक हमारे यहां क़ियाम करें तो आप की ज़िन्दगी भर की कफ़ालत की तरकीब हो जाएगी और अगर आप यहां से जाना चाहते हैं तो येह तीस 30 दीनार हैं इन्हें अपनी ज़रूरियात पर ख़र्च कर लीजिये और तशरीफ़ ले जाइये हम आप की मजबूरी समझते हैं।" उस शख़्स का बयान है कि इस से पहले मैं कभी तीस 30 दीनार का मालिक नहीं हुवा था, नीज़ मुझ पर येह बात भी ज़ाहिर हो गई कि **बद शुगूनी** की कोई हक़ीक़त नहीं।(1)

बद शुगूनी के पांच अस्बाब व इलाज :

(1).....**बद शुगूनी** का पहला सबब **इस्लामी अक़ाइद से ला इल्मी** है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा तक़्दीर पर इन मा'नों में ए'तिक़ाद रखे कि हर भलाई, बुराई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इल्मे अज़ली के मुवाफ़िक़ मुक़द्दर फ़रमा दी है, जैसा होने वाला था और जो जैसा करने वाला था, अपने इल्म से जाना और वोही लिख दिया। तो बद शुगूनी दिल में जगह ही नहीं बना सकेगी क्यूंकि जब भी इन्सान को कोई नुक़्सान पहुंचेगा तो वोह येह ज़ेहन बना लेगा कि येह मेरी तक़्दीर में लिखा था न कि किसी चीज़ की नुहूसत की वजह से ऐसा हुवा है।

(2).....**बद शुगूनी** का दूसरा सबब **तवक्कुल की कमी** है। इस का **इलाज** येह है कि जब भी कोई बद शुगूनी दिल में खटके तो रब عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल कीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बद शुगूनी का ख़याल दिल से जाता रहेगा।

---

1 ......روح البیان، پ۲، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۱۸۹، ج۱، ص ۳۰۴ ملخصاً

www.dawateislami.net

(3).....**बद शुगूनी** का तीसरा सबब **बद फ़ाली की वजह से काम से रुक जाना** है। इस का **इलाज** येह है कि जब किसी काम में बद फ़ाली निकले तो उसे कर गुज़रिये और अपने दिल में इस ख़याल को जगह मत दीजिये कि इस बद फ़ाली के सबब मुझे इस काम में कोई ख़सारा वग़ैरा होगा।

(4).....**बद शुगूनी** का चौथा सबब इस की **हलाकत ख़ैज़ियों और नुक़्सानात से बे ख़बरी** है कि बन्दा जब किसी चीज़ के नुक़्सान से ही बा ख़बर नहीं है तो इस से बचेगा कैसे? इस का **इलाज** येह है कि बन्दा **बद शुगूनी** की हलाकत ख़ैज़ियों और नुक़्सानात को पढ़े, इन पर ग़ौर करे और इन से बचने की कोशिश करे। **बद शुगूनी** के चन्द **नुक़्सानात** येह हैं : **बद शुगूनी** इन्सान के लिये दीनी व दुन्यवी दोनों ए'तिबार से बहुत ज़ियादा ख़त़रनाक है। येह इन्सान को वस्वसों की दल दल में उतार देती है चुनान्चे, वोह हर छोटी बड़ी चीज़ से डरने लगता है यहां तक कि वोह अपनी परछाई (या'नी साए) से भी ख़ौफ़ खाता है। वोह इस वहम में मुब्तला हो जाता है कि दुन्या की सारी बद बख़्ती व बद नसीबी उसी के गिर्द जम्अ़ हो चुकी है और दूसरे लोग पुर सुकून ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। ऐसा शख़्स अपने प्यारों को भी वहमी निगाह से देखता है जिस से दिलों में कदूरत (या'नी दुश्मनी) पैदा होती है। **बद शुगूनी** की बातिनी बीमारी में मुब्तला इन्सान ज़ेहनी व क़ल्बी त़ौर पर मफ़्लूज (या'नी नाकारा) हो कर रह जाता है और कोई काम ढंग से नहीं कर सकता।

बद शुगूनी की चन्द **हलाकत ख़ैज़ियां** येह हैं : ✻ **बद शुगूनी** का शिकार होने वालों का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिमाद और तवक्कुल कमज़ोर हो जाता है। ✻ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बारे में बद

www.dawateislami.net

गुमानी पैदा होती है। ✻ तक़्दीर पर ईमान कमज़ोर होने लगता है। ✻ शैतानी वस्वसों का दरवाज़ा खुलता है। ✻ बद फ़ाली से आदमी के अन्दर तवह्हुम परस्ती, बुज़दिली, डर और ख़ौफ़, पस्त हिम्मती और तंग दिली पैदा हो जाती है। ✻ नाकामी की बहुत सी वुजूहात हो सकती हैं मसलन काम करने का त़रीक़ा दुरुस्त न होना, ग़लत़ वक़्त और ग़लत़ जगह पर काम करना और ना तजरिबा कारी लेकिन बद शुगूनी का आदी शख़्स अपनी नाकामी का सबब नुहूसत को क़रार देने की वजह से भी अपनी इस्लाह़ से भी मह़रूम रह जाता है। ✻ बद शुगूनी की वजह से अगर रिश्ते नाते तोड़े जाएं तो आपस की नाचाक़िया जनम लेती हैं। ✻ जो लोग अपने ऊपर बद फ़ाली का दरवाज़ा खोल लेते हैं उन्हें हर चीज़ मन्हूस नज़र आने लगती है, किसी काम के लिये घर से निकले और काली बिल्ली ने रास्ता काट लिया तो येह ज़ेह्न बना लेते हैं कि अब हमारा काम नहीं होगा और वापस घर आ गए, एक शख़्स सुब्ह़ सवेरे अपनी दुकान खोलने जाता है और रास्ते में कोई ह़ादिसा पेश आया तो समझ लेता है कि आज का दिन मेरे लिये मन्हूस है लिहाज़ा आज मुझे नुक़्सान होगा यूं उन का निज़ामे ज़िन्दगी दरहम बरहम हो कर रह जाता है। ✻ किसी के घर पर उल्लू की आवाज़ सुन ली तो ए'लान कर दिया कि इस घर का कोई फ़र्द मरने वाला है या ख़ानदान में झगड़ा होने वाला है, जिस के नतीजे में उस घर वालों के लिये मुसीबत खड़ी हो जाती है। ✻ नया मुलाज़िम अगर कारोबारी डील न कर पाए और ऑर्डर हाथ से निकल जाए तो फ़ेक्ट्री मालिक उसे मन्हूस क़रार दे कर नोकरी से निकाल देता है। ✻ नई दुल्हन के हाथों अगर कोई चीज़ गिर कर टूट फूट जाए तो उस को मन्हूस समझा जाता है और बात बात पर उस की दिल आज़ारी भी की जाती है।

www.dawateislami.net

(5)....**बद शुगूनी** का पांचवां सबब **रोज़ मर्रा के मा'मूलात में वज़ाइफ़ शामिल न होना है।** इस का इलाज आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن कुछ यूं इरशाद फ़रमाते हैं : "इस क़िस्म (या'नी बद शुगूनी वग़ैरा) के ख़त़रे (वस्वसे) जब कभी पैदा हों उन के वासिते़ क़ुरआने करीम व ह़दीस शरीफ़ से चन्द मुख़्तसर व बे शुमार नाफ़ेअ़ (फ़ाइदा देने वाली) दुआ़एं लिखता हूं इन्हें एक एक बार ख़्वाह ज़ाइद (या'नी एक से ज़ियादा मरतबा) आप और आप के घर वाले पढ़ लें। अगर दिल पुख़्ता हो जाए और वोह वहम जाता रहे तो बेहतर वरना जब वोह वस्वसा पैदा हो तो एक एक दफ़्आ़ पढ़ लीजिये और यक़ीन कीजिये कि **अल्लाह** व रसूल के वा'दे सच्चे हैं और शैतान मलऊ़न का डराना झूटा। चन्द बार में **بِعَوْنِهٖ تَعَالٰی** (या'नी **अल्लाह** तआ़ला की मदद से) वोह वहम बिल्कुल ज़ाइल (या'नी ख़त्म) हो जाएगा और अस्लन कभी किसी त़रह़ उस से कोई नुक़्सान न पहुंचेगा। वोह दुआ़एं येह हैं :

لَنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا هُوَ مَوْلٰنَا وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ

★ या'नी हमें कोई तक्लीफ़ वग़ैरा नहीं पहुंचेगी सिवाए उस के जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमारे लिये मुक़द्दर फ़रमा दी, वोही हमारा मौला है और तवक्कुल करने वाले उसी पर तवक्कुल करते हैं।" (پ۱۰، التوبة : ۵۱)

"حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ (پ۴، آل عمران: ۱۷۳)

★ या'नी **अल्लाह** हमें काफ़ी है और क्या अच्छा बनाने वाला।

اَللّٰهُمَّ لَا يَاْتِيْ بِالْحَسَنَاتِ اِلَّا اَنْتَ وَلَا يَذْهَبُ بِالسَّيِّئَاتِ اِلَّا اَنْتَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِكَ

www.dawateislami.net

या'नी इलाही ! अच्छी बातें तेरे सिवा कोई नहीं लाता और बुरी बातें तेरे सिवा कोई दूर नहीं करता और कोई ज़ोर ताक़त नहीं मगर तेरी तरफ़ से ।"

اَللّٰھُمَّ لَا طَیْرَ اِلَّا طَیْرُكَ وَلَا خَیْرَ اِلَّا خَیْرُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَیْرُكَ

★ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरी फ़ाल फ़ाल है और तेरी ही ख़ैर ख़ैर है और तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं ।"(1)

बद शुगूनी के हवाले से तफ़्सीली मा'लूमात के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **128** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बद शुगूनी**" का मुत़ालआ़ कीजिये ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(43).....शमातत

शमातत की ता'रीफ़ :

अपने किसी भी नसबी या मुसलमान भाई के नुक़्सान या उस को मिलने वाली मुसीबत व बला को देख कर ख़ुश होने को शमातत कहते हैं ।(2)

आयते मुबारका :

(1)...अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۫ وَ اِنْ تُصِبْكُمْ سَیِّئَةٌ یَّفْرَحُوْا بِهَا ؕ وَ اِنْ تَصْبِرُوْا وَ تَتَّقُوْا لَا یَضُرُّكُمْ كَیْدُهُمْ شَیْــٴًـا ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا یَعْمَلُوْنَ مُحِیْطٌ ﴿۱۲۰﴾﴾ (پ۴، آل عمران: ۱۲۰)

1....फ़तावा रज़विय्या, जि. 29, स. 645 ।

2......الحدیقة الندیة، المقالة الثانیة فی غوائل الحقد، ج ۱، ص ۶۲۳۔

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तुम्हें कोई भलाई पहुंचे तो उन्हें बुरा लगे और तुम को बुराई पहुंचे तो इस पर ख़ुश हों और अगर तुम सब्र और परहेज़गारी किये रहो तो उन का दाऊं तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा बेशक उन के सब काम ख़ुदा के घेरे में हैं।"

हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा हाफ़िज़ मुर्तज़ा ज़ुबैदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "इस आयत में भलाई से मुराद ने'मत और बुराई से मुराद मा'सिय्यत है, भलाई पहुंचने पर उन्हें बुरा लगना ह़सद है और बुराई पहुंचने पर उन का ख़ुश होना **शमातत** है, नीज़ इस आयते मुबारका में इस बात पर तम्बीह भी की गई है कि जिस के साथ ह़सद किया जाए या **शमातत** की जाए येह दोनों चीज़ें उसे उस वक़्त तक नुक़्सान नहीं पहुंचा सकतीं जब तक वोह तक़्वा व सब्र इख़्तियार करे, ह़सद और **शमातत** एक दूसरे को लाज़िम हैं (कि जहां ह़सद पाया जाएगा वहां **शमातत** ज़रूर होगी) और शमातत ह़सद के ऊपर एक इज़ाफ़ी गुनाह है।(1)

(2)....एक और मक़ाम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰۤى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِیْ مِنْۢ بَعْدِیْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَ اَلْقَى الْاَلْوَاحَ وَ اَخَذَ بِرَاْسِ اَخِیْهِ یَجُرُّهٗۤ اِلَیْهِ ؕ قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِیْ وَ كَادُوْا یَقْتُلُوْنَنِیْ ۖ٘ فَلَا تُشْمِتْ بِیَ الْاَعْدَآءَ وَ لَا تَجْعَلْنِیْ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۵۰﴾﴾ (پ۹، الاعراف: ۱۵۰)

1 ......اتحاف السادة المتقين، كتاب ذم الغضب۔۔۔الخ، بيان حقيقة الحسد۔۔۔الخ، ج ۹، ص ۴۹۴۔

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"और जब मूसा अपनी क़ौम की त़रफ़ पलटा गुस्से में भरा झुंजलाया हुवा, कहा तुम ने क्या बुरी मेरी जानशीनी की मेरे बा'द क्या तुम ने अपने रब के हुक्म से जल्दी की और तख़्तियां डाल दीं और अपने भाई के सर के बाल पकड़ कर अपनी त़रफ़ खींचने लगा कहा ऐ मेरे मां जाए क़ौम ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि मुझे मार डालें तो मुझ पर दुश्मनों को न हंसा और मुझे ज़ालिमों में न मिला।"*

तफ़्सीरे ख़ाज़िन में मज़्कूरा आयते मुबारका के इस हिस्से : "فَلَا تُشْمِتْ بِیَ الْاَعْدَآءَ" तो मुझ पर दुश्मनों को न हंसा।" के तह़्त लिखा है : "**शमातत** की अस्ल येह है कि जिस से तू दुश्मनी रखता है या जो तुझ से दुश्मनी रखता है जब भी किसी मुसीबत में मुब्तला हो तो तू उस पर खुश हो। जैसे कहा जाता है कि फ़ुलां शख़्स ने फ़ुलां के साथ **शमातत** की या'नी जब उसे कोई मुसीबत या नापसन्दीदा बात पहुंची तो वोह इस पर खुश हुवा। इस आयते मुबारका में भी येही मा'ना मुराद हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना हारून عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से कहा कि आप मेरे साथ ऐसा सुलूक न करें कि जिसे देख कर दुश्मन शमातत करें यानी मेरी तक्लीफ़ पर वोह खुश हों।"(1)

ह़दीसे मुबारका : अपने भाई की शमातत न कर :

ह़ज़रते सय्यिदुना वासिला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अपने भाई की **शमातत** न कर या'नी उस की मुसीबत पर इज़्हारे मुसर्रत न कर कि **अल्लाह** तआ़ला उस पर रह़म करेगा और तुझे उस में मुब्तला कर देगा।"(2)

---

1 ......خازن، پ۹، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۵۰، ج۲، ص۱۴۲۔

2 ......ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ۔۔۔الخ، ج۴، ص۲۲۷، حدیث: ۲۵۱۴۔

www.dawateislami.net

एक और हदीसे मुबारका में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **शमातत** से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगा करते और फ़रमाते : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं क़र्ज़ के ग़लबे और दुश्मनों की **शमातत** से तेरी पनाह मांगता हूं।"(1)

शमातत का हुक्म :

शमातत या'नी किसी भी मुसलमान भाई की मुसीबत पर खुश होना निहायत ही मज़्मूम और हलाकत में डालने वाला अम्र है। ख़ास तौर पर इस सूरत में कि जब वोह इस मुसीबत को अपनी करामत या दुआ का नतीजा समझे।(2)

ह़िकायत : उ़म्र भर के लिये तिजारत छोड़ दी :

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की बाज़ार में दुकान थी, एक दफ़्आ उस बाज़ार में आग लग गई, पूरा बाज़ार जल गया लेकिन आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की दुकान बच गई। जब आप को इस बात की ख़बर दी गई तो बे साख़्ता आप के मुंह से निकला : "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ।" मगर फ़ौरन ही अपने नफ़्स को मलामत करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "फ़क़त़ अपना माल बच जाने पर मैं ने कैसे اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कह दिया?" चुनान्चे, आप ने तिजारत को ख़ैरबाद कह दिया और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहने पर तौबा व मुआफ़ी की ख़ातिर उ़म्र भर के लिये दुकान छोड़ दी।(3)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! देखा आप ने कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن कैसी मदनी सोच रखते थे, अपने फ़ाइदे पर

---

1 ......نسائی، کتاب الاستعاذۃ، الاستعاذۃ من شماتۃ الاعداء، ص ۸۷۱، حدیث: ۵۴۹۸۔

2 ......الحدیقۃ الندیۃ، الخلق السابع عشر۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۶۳۱۔

3 ......احیاء العلوم، کتاب المحبۃ والشوق۔۔۔الخ، بیان حقیقۃ الرضا۔۔۔الخ، ج ۵، ص ۶۷۔

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करने पर इस लिये नदामत इख़्तियार की, कि अगर्चे मेरा फ़ाइदा हुवा लेकिन इस के साथ दीगर मुसलमानों का नुक़्सान भी हुवा है, मेरा शुक्र अदा करना कहीं **शमातत** (या'नी अपने मुसलमान भाइयों के नुक़्सान पर ख़ुशी का इज़्हार करना) न बन जाए, इस ख़दशे पर न सिर्फ़ अपने नफ़्स को मलामत किया बल्कि ज़िन्दगी भर के लिये तिजारत और दुकान छोड़ दी। वाक़ेई जो लोग अपने नफ़्स का मुहासबा करने में कामयाब हो जाते हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से उन्हें दिगर गुनाहों समेत **शमातत** से भी बचने का मदनी ज़ेहन मिल जाता है, कल तक जो लोगों को मुसीबत में मुब्तला देख कर ख़ुश होते थे आज वोह लोगों की मुसीबतें दूर करने में मुआवनत करते नज़र आते हैं। तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है :

शमातत व दीगर गुनाहों से नजात मिल गई :

बाबुल मदीना (कराची) के मुक़ीम एक इस्लामी भाई अपनी इस्लाह के अह़वाल कुछ यूं बयान फ़रमाते हैं : लोगों के दिलों में **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की मह़ब्बत, ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़श्क़ की शम्अ़ फ़रोज़ां करने वाली तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की मुश्कबार फ़ज़ाओं में आने से क़ब्ल मैं बद आ'मालियों की हलाकत से यक्सर ग़ाफ़िल था। हर एक के साथ बद कलामी करना, बद तमीज़ी से पेश आना, गाली गलोच करना और लोगों को त़रह़ त़रह़ की तकालीफ़ और मुसीबतें दे कर उन के दिल दुखाना और फिर इस पर शमातत (या'नी उन को मुसीबत में मुब्तला देख कर ख़ुश

www.dawateislami.net

होने) जैसे मूज़ी गुनाह से अपने नामए आ'माल को सियाह करना, नीज़ फ़िल्में डिरामे देखने में अपना क़ीमती वक़्त ज़ाएअ़ करना मेरे मा'मूलाते ज़िन्दगी में शामिल था। मेरी ज़िन्दगी में नेकियों की सुब्हे बहारां आने का सबब कुछ यूं बना कि ख़ुश क़िस्मती से मक्तबतुल मदीना का शाएअ़ कर्दा शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रिसाला **"मैं सुधरना चाहता हूं"** किसी त़रह़ मेरे हाथ लग गया। न जाने इस रिसाले के नाम में ऐसी क्या कशिश थी कि मैं ने इस रिसाले को जैसे ही पढ़ना शुरूअ़ किया तो पढ़ता ही चला गया यहां तक कि अव्वल ता आख़िर पूरा ही पढ़ डाला। गोया इस रिसाले की एक एक सत़्र ने मेरे मुर्दा ज़मीर को झनझोड़ कर रख दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से अपने तमाम गुनाहों से तौबा की और सुन्नत के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने का पुख़्ता इरादा कर लिया।

इसी माह़ोल ने अदना को आ'ला कर दिया देखो
अन्धेरा ही अन्धेरा था उजाला कर दिया देखो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शमातत के छे अस्बाब व इलाज :

(1).....**शमातत** का पहला सबब **बद ख़्वाही** की आ़दत है। किसी का नुक़्सान चाहना और नुक़्सान हो जाने की सूरत में इस पर ख़ुशी का इज़्हार करने के मनाज़िर कारोबारी ह़ज़रात में ब ख़ूबी देखे जा सकते हैं। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपने अन्दर मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा पैदा करे, येह मदनी ज़ेह्न बनाए कि येह

www.dawateislami.net

मेरा मुसलमान भाई है, आज इस का नुक़्सान हुवा है और मैं इस के नुक़्सान पर ख़ुश हो रहा हूं ऐसा न हो कि कल येही मुआ़मला मेरे साथ भी हो, मुझे भी किसी आफ़त में मुब्तला कर दिया जाए और लोग मेरी मुसीबत पर भी ख़ुश हों ।

(2).....**शमातत** का दूसरा सबब **बुग़्ज़ो कीना** है । कीना परवर अपने मुख़ालिफ़ को मुसीबत में देख कर क़ल्बी सुकून मह़सूस करता है और येह ही इस की ख़ुशी बन जाता है । इस का **इ़लाज** येह है कि बन्दा अपने सीने को मुसलमानों के **कीने** की गन्दी ग़लाज़त से पाको साफ़ करे और येह मदनी ज़ेहन बनाए कि मुसलमानों के लिये दिल में **कीना** रखना दुन्या व आख़िरत दोनों में तबाही व बरबादी का सबब बन सकता है, येह भी ज़ेहन बनाए कि ह़क़ीक़ी मुसलमान कभी किसी मुसलमान भाई का **कीना** अपने दिल में नहीं रखता । नीज़ **बुग़्ज़ो कीना** से मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात भी ह़ासिल करता रहे, इस के अस्बाब और बचने के त़रीक़े जाने और इस मूज़ी मरज़ से बचने की भरपूर कोशिश करे । अपने सीने को मुसलमानों के **कीने** की ग़लाज़त से पाको साफ़ करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब "**बुग़्ज़ो कीना**" का मुत़ालआ़ कीजिये ।

(3).....**शमातत** का तीसरा सबब **ह़सद** है । येही वजह है कि बन्दा जिस से ह़सद करता है उस से ने'मत छिन जाने पर ख़ुशी मह़सूस करता है । इस का **इ़लाज** येह है कि बन्दा **ह़सद** की तबाह कारियों पर ग़ौर करे कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की

www.dawateislami.net

नाराज़ी का सबब है, **ह़सद** ईमान की दौलत छिन जाने का भी एक सबब है, **ह़सद** से नेकियां ज़ाएअ़ हो जाती हैं, **ह़सद** से बन्दा मुख़्तलिफ़ गुनाहों में मुब्तला हो जाता है, **ह़सद** के सबब बन्दा नेकियों के सवाब से मह़रूम रहता है, **ह़सद** से दुआ़ क़बूल नहीं होती, बन्दा नुस्रते इलाही से मह़रूम हो जाता है, **ह़ासिद** को ज़िल्लतो रुस्वाई का सामना करना पड़ता है वग़ैरा वग़ैरा। **ह़सद** जैसे मोहलिक मरज़ से छुटकारा ह़ासिल करने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब "**ह़सद**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

(4).....शमातत का चौथा सबब **एह़सासे कमतरी** है, मद्दे मुक़ाबिल की बरतरी और अपनी मुसलसल नाकामी बन्दे को एह़सासे कमतरी में मुब्तला कर देती है फिर इसी एह़सासे कमतरी से **शमातत** पैदा होती है यूं मद्दे मुक़ाबिल की हर तक्लीफ़ आ़रिज़ी तस्कीन का सबब बन जाती है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपनी एह़सासे कमतरी का इज़ाला करे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मते कामिला पर नज़र रखे, हर नेक और जाइज़ काम से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें करे ताकि काम हो या न हो सवाब का ख़ज़ाना तो हाथ आ जाए, अपनी कामयाबियों के लिये रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ भी करता रहे, अपनी नाकामियों के अस्बाब पर ग़ौर करे और फिर इन को दूर करे।

(5).....**शमातत** का पांचवां सबब **हुब्बे जाह** है। जब बन्दा मह़सूस करता है कि "फ़ुलां की वजह से मेरी वाह वाह में कमी आ रही है।" तो वोह उस के नुक़्सान का ख़्वाहिश मन्द हो जाता है और जैसे ही उसे कोई नुक़्सान पहुंचता है तो वोह अपनी देरीना आरज़ू के

www.dawateislami.net

पूरा होने पर ख़ुशी महसूस करता है। इस का इलाज येह है कि बन्दा हुब्बे जाह से अपने आप को बचाए, येह भी अपना मदनी ज़ेहन बनाए कि अगर मुझे कोई मन्सब या ओहदा नहीं मिला तो हो सकता है कि मेरे हक़ में येही बेहतर हो, मुझे येह ओहदा न दे कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कई मुसीबतों और परेशानियों से नजात अता फ़रमा दी हो। लिहाज़ा मैं अपने भाई को इस का कुसूर वार क्यूं ठहराऊं और इस से शमातत या'नी इस को मुसीबत पहुंचने पर क्यूं ख़ुशी का इज़्हार करूं ?

(6).....**शमातत** का छटा सबब **बद गुमान** होना है। जब बन्दा किसी से बद ज़न हो जाता है तो ख़्वाह कितना ही नेकूकार हो लेकिन बद गुमानी की रस्सी उसे बुलन्दियों से खींच कर पस्तियों की तरफ़ धकेल देती है, जैसे ही उस के भाई को कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तो फ़ौरन ख़ुश हो जाता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा मुसलमानों से बद गुमान और बद ज़न होने के बजाए उन के बारे में अच्छा गुमान रखे, ख़्वाह मख़्वाह अपने दिमाग़ में मुसलमानों के मुतअ़ल्लिक़ वस्वसों को हरगिज़ जगह न दे, बल्कि इस तरह के वस्वसों से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगे, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आहिस्ता आहिस्ता इस मूज़ी मरज़ से भी नजात मिल ही जाएगी। बद गुमानी जैसे मोहलिक और मूज़ी मरज़ से नजात के लिये मक्तबतुल मदीना की मतबूआ किताब "**बद गुमानी**" का मुतालआ कीजिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(44)....इस्राफ़

इस्राफ़ की ता'रीफ़ :

जिस जगह शरअ़न, आ़दतन या मुरव्वतन ख़र्च करना मन्अ़ हो वहां ख़र्च करना मसलन फ़िस्क़ो फ़ुजूर व गुनाह वाली जगहों पर ख़र्च करना, अजनबी लोगों पर इस त़रह़ ख़र्च करना कि अपने अहलो इ़याल को बे यारो मददगार छोड़ देना **इस्राफ़** कहलाता है।(1)

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَلَا تُسْرِفُوْا ؕ اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُسْرِفِیْنَ ﴿۱۴۱﴾ۙ﴾ (پ۸، الانعام: ۱۴۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"बेजा न ख़र्चो बेशक बेजा ख़र्चने वाले उसे पसन्द नहीं।"*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती **मुह़म्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ (या'नी आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه) ने इस्राफ़ का तर्जमा **बेजा ख़र्च** करना फ़रमाया, निहायत ही **नफ़ीस** तर्जमा है। अगर कुल माल ख़र्च कर डाला और अपने इ़याल को कुछ न दिया और ख़ुद फ़क़ीर बन बैठा तो सुद्दी का क़ौल है कि येह ख़र्च बेजा है और अगर सदक़ा देने ही से हाथ रोक लिया तो येह भी बेजा और दाख़िले इस्राफ़ है जैसा कि सईद बिन मुसय्यिब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : सुफ़्यान का क़ौल है कि **अल्लाह** की त़ाअ़त के सिवा और काम में जो माल ख़र्च किया जावे वोह क़लील भी हो तो इस्राफ़ है। ज़ोहरी का क़ौल है कि इस के मा'ना येह हैं कि

1 ......الحدیقة الندیة، الخلق السابع والعشرون ــــ الخ، ج۲، ص۲۸۔

www.dawateislami.net

मा'सिय्यत में ख़र्च न करो। मुजाहिद ने कहा कि ह़क़्क़ुल्लाह में कोताही करना **इस्राफ़** है और अगर अबू क़ुबैस पहाड़ सोना हो और इस तमाम को राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दो तो इस्राफ़ न हो और एक दिरहम मा'सिय्यत में ख़र्च करो तो इस्राफ़।"

एक और मक़ाम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿كُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۳۱﴾﴾ (پ۸، الاعراف: ۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"खाओ और पियो और ह़द से न बढ़ो बेशक ह़द से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं।"*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "शाने नुज़ूल : कल्बी का क़ौल है कि बनी आ़मिर ज़मानए ह़ज में अपनी ख़ूराक बहुत ही कम कर देते थे और गोश्त और चिकनाई तो बिल्कुल खाते ही न थे और इस को ह़ज की ता'ज़ीम जानते थे, मुसलमानों ने उन्हें देख कर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह हमें ऐसा करने का ज़ियादा ह़क़ है, इस पर येह नाज़िल हुवा कि खाओ और पियो गोश्त हो ख़्वाह चिकनाई हो और इस्राफ़ न करो और वोह येह है कि सैर हो चुकने के बा'द भी खाते रहो या ह़राम की परवाह न करो और येह भी इस्राफ़ है कि जो चीज़ **अल्लाह** तआ़ला ने ह़राम नहीं की उस को ह़राम कर लो। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : खा जो चाहे और पहन जो चाहे इस्राफ़ और तकब्बुर से बचता रह। मस्अला : आयत में दलील है कि खाने और पीने की तमाम चीज़ें ह़लाल हैं सिवाए उन के जिन पर शरीअ़त में दलीले हुरमत क़ाइम हो क्यूंकि येह क़ाइदा मुक़र्ररा

www.dawateislami.net

मुसल्लमा है कि अस्ल तमाम अश्या में इबाहत है मगर जिस पर शारेअ़ ने मुमानअ़त फ़रमाई हो और उस की हुरमत दलीले मुस्तक़िल से साबित हो।"

इस्राफ़ की मुख़्तलिफ़ सूरतें :

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की माया नाज़ तस्नीफ़ "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" सफ़ह़ा 256 पर है : **मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان तफ़्सीरे नईमी, जि. 8, स. 390 पर फ़रमाते हैं : "**इस्राफ़** की बहुत तफ़्सीरें हैं : (1) ह़लाल चीज़ों को ह़राम जानना (2) ह़राम चीज़ों को इस्ति'माल करना (3) ज़रूरत से ज़ियादा खाना पीना या पहनना (4) जो दिल चाहे वोह खा पी लेना पहन लेना (5) दिन रात में बार बार खाते पीते रहना जिस से मे'दा ख़राब हो जाए, बीमार पड़ जाए (6) मुज़िर और नुक़्सान देह चीज़ें खाना पीना (7) हर वक़्त खाने पीने पहनने के ख़याल में रहना कि अब क्या खाऊंगा ? आयिन्दा क्या पियूंगा ?[1] (8) ग़फ़्लत के लिये खाना (9) गुनाह करने के लिये खाना (10) अच्छे खाने पीने, आ'ला पहनने का आ़दी बन जाना कि कभी मा'मूली चीज़ खा पी न सके (11) आ'ला गिज़ाओं को अपने कमाल का नतीजा जानना। ग़रज़ येह कि इस एक लफ़्ज़ में बहुत से अह़काम दाख़िल हैं।"

---

1 ......روح البیان، پ۸، الاعراف، تحت الآیة: ۳۱، ج۳، ص۱۵۴۔

www.dawateislami.net

इस्राफ़ से मुतअ़ल्लिक़ एक अहम वज़ाहत :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यहां येह वाज़ेह़ करना भी बहुत ज़रूरी है कि जिस त़रह़ لَاخَيْرَفِي الْاِسْرَافِ या'नी इस्राफ़ (फ़ुज़ूल ख़र्ची) में कोई भलाई व ख़ैर नहीं है। इसी त़रह़ لَا اِسْرَافَ فِي الْخَيْرِ या'नी नेकी और भलाई के कामों में कोई इस्राफ़ (फ़ुज़ूल ख़र्ची) नहीं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ रबीउ़ल अव्वल के मुबारक महीने में हर साल लाखों मुसलमान अपने आक़ा व मौला, हुज़ूर नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जश्ने विलादत के मौक़अ़ पर ख़ुशियां मनाते हैं, अपने घरों, दुकानों, मह़ल्लों और गलियों को सजाते हैं, सब्ज़ सब्ज़ परचम लगाते और लहराते हैं, रंग बिरंगे बल्ब और दिये रोशन करते हैं सदक़ा व ख़ैरात करते हैं, लंगर व नियाज़ का एहतिमाम करते हैं, मह़ाफ़िले ज़िक्रो ना'त मुन्अ़क़िद करते हैं, उ़लमाए किराम को बुलाते और इन से ज़िक्रे विलादत शरीफ़ सुनते हैं, इसी त़रह़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان, अहले बैते उ़ज़्ज़ाम, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के आ'रास पर उन के ईसाले सवाब के लिये बड़ा एहतिमाम करते हैं, यक़ीनन येह तमाम भलाई के काम हैं और भलाइयों के कामों में कोई इस्राफ़ नहीं।

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **561** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**" (मुकम्मल) सफ़ह़ा **174** पर है। आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से पूछा गया : "मीलाद शरीफ़ में झाड़ (या'नी पांच शाख़ों वाली मश्अ़ल), फ़ानूस, फ़रूश वग़ैरा से ज़ैबो ज़ीनत इस्राफ़ है या नहीं ?" तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "उ़लमा फ़रमाते हैं : لَاخَيْرَ فِي الْاِسْرَافِ وَلَا اِسْرَافَ فِي الْخَيْرِ

www.dawateislami.net

(या'नी इस्राफ़ में कोई भलाई नहीं और भलाई के कामों में ख़र्च करने में कोई इस्राफ़ नहीं) तो जिस शै से ता'ज़ीमे ज़िक्र शरीफ़ मक़्सूद हो, हरगिज़ ममनूअ़ नहीं हो सकती। इमाम ग़ज़ाली (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى) ने इह़याउल उ़लूम शरीफ़ में सय्यिद अबू अ़ली रूज़बारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى से नक़्ल किया कि एक बन्दए सालेह़ (नेक शख़्स) ने मजलिसे ज़िक्र शरीफ़ तरतीब दी और उस में एक हज़ार शम्एं रोशन कीं। एक शख़्स ज़ाहिर बीन पहुंचे और येह कैफ़िय्यत देख कर वापस जाने लगे। (कि इतनी शम्एं जलाना तो इस्राफ़ है।) बानिये मजलिस ने हाथ पकड़ा और अन्दर ले जा कर फ़रमाया कि जो शम्अ़ मैं ने ग़ैरे ख़ुदा के लिये रोशन की हो वोह बुझा दीजिये। कोशिशें की जाती थीं और कोई शम्अ़ ठन्डी न होती।(1)

लहराओ सब्ज़ परचम ऐ आक़ा के आ़शिक़ो !
घर घर करो चराग़ां कि सरकार आ गए
न क्यूं आज झूमें कि सरकार आए
ख़ुदा की ख़ुदाई के मुख़्तार आए
निसार तेरी चहल पहल पर हज़ार ईदें रबीउ़ल अव्वल
सिवाए इब्लीस के जहां में सभी तो ख़ुशियां मना रहे हैं

ह़दीसे मुबारका : बहती नह्र पर भी इस्राफ़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के पास से गुज़रे जब वोह वुज़ू

(1) احیاء العلوم، کتاب آداب الاکل، فصل یجمع آدابا۔۔۔الخ، ج۲، ص۲۶۔

www.dawateislami.net

कर रहे थे तो इरशाद फ़रमाया : "ऐ सा'द ! येह इस्राफ़ कैसा ?" अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या वुज़ू में भी इस्राफ़ है ?" फ़रमाया : "हां ! अगर्चे तुम बहती नह्र पर हो ।"(1) एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : "हर उस चीज़ को खा लेना जिस का दिल करे येह इस्राफ़ है ।"(2)

इस्राफ़ का हुक्म :

इस्राफ़ और फ़ुज़ूल ख़र्ची ख़िलाफ़े शरअ़ हो तो ह़राम और ख़िलाफ़े मुरुव्वत हो तो मकरूहे तन्ज़ीही है ।(3)

ह़िकायत : अमीरे अहले सुन्नत का मोह़तात़ अन्दाज़ :

जब शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़िदमत में सह़राए मदीना (बाबुल मदीना कराची) में फ़ैज़ाने मदीना का संगे बुन्याद रखने के लिये अ़र्ज़ की गई तो आप ने फ़रमाया कि "संगे बुन्याद में उ़मूमन खोदे हुवे गढ़े में किसी शख़्सिय्यत के हाथों से सीमेन्ट का गारा डलवा दिया जाता है, बा'ज़ जगह साथ में ईंट भी रखवा ली जाती है लेकिन येह सब रस्मी होता है, बा'द में वोह सीमेन्ट वग़ैरा काम नहीं आती । मुझे तो येह इस्राफ़ नज़र आता है और अगर मस्जिद के नाम पर किये हुवे चन्दे की रक़म से इस त़रह़ का इस्राफ़ किया जाए तो तौबा के साथ साथ तावान या'नी जो कुछ माली नुक़्सान हुवा वोह भी अदा करना पड़ेगा ।" अ़र्ज़ की गई : "एक यादगारी तख़्ती बनवा लेते हैं, आप उस की पर्दा कुशाई फ़रमा

1 ......ابن ماجة، كتاب الطهارة وسننها، باب ماجاء فى القصد۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۲۵۴، حديث: ۴۲۵۔

2 ......ابن ماجة، كتاب الاطعمة، باب من الاسراف۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۴۹، حديث: ۳۳۵۲۔

3 ......الحديقة الندية، الخلق السابع والعشرون۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۲۸۔

www.dawateislami.net

दीजियेगा।" तो फ़रमाया : "पर्दा कुशाई करने और संगे बुन्याद रखने में फ़र्क़ है। फिर चूंकि अभी मैदान ही है इस लिये शायद वोह तख़्ती भी ज़ाएअ़ हो जाएगी।"

बिल आख़िर अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ ने फ़रमाया : कि "जहां वाक़ेई सुतून बनाना है उस जगह पर हथोड़े मार कर खोदने की रस्म अदा कर ली जाए और इस को **"संगे बुन्याद रखना"** कहने के बजाए **"ता'मीर का आग़ाज़"** कहा जाए।" चुनान्चे, 22 रबीउ़न्नूर शरीफ़ 1426 हिजरी ब मुताबिक़ यकुम मई 2005 ईसवी बरोज़ इतवार आप की सादाते किराम से महब्बत में डूबी हुई ख़्वाहिश के मुताबिक़ 25 सय्यिद मदनी मुन्नों ने अपने हाथों से मख़्सूस जगह पर हथोड़े चलाए, आप खुद भी इस में शरीक हुवे और इस निराली शान से फ़ैज़ाने मदीना (सहराए मदीना, टोल प्लाज़ा, सुपर हाईवे बाबुल मदीना कराची) के ता'मीरी काम का आग़ाज़ हुवा।[1]

इस्राफ़ के अस्बाब व इलाज :

(1).....**इस्राफ़** का पहला सबब **ला इल्मी और जहालत** है। बन्दा शरई मा'लूमात के बिग़ैर जब किसी काम में माल ख़र्च करता है तो इस में इस्राफ़ के कई पहलू होते हैं लेकिन उसे अपनी जहालत की वजह से एहसास तक नहीं होता। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा किसी भी काम में माल ख़र्च करने से पहले उ़लमाए किराम और मुफ़्तियाने किराम से शरई रहनुमाई हासिल कर ले, इस सिलसिले में **दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत** से राबिता करना भी बहुत मुफ़ीद है।

(2).....**इस्राफ़** का दूसरा सबब **गुरूर व तकब्बुर** है बसा अवक़ात दूसरों पर अपनी बरतरी साबित करने के लिये बेजा दौलत

1.....तआ़रूफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 49।

www.dawateislami.net

ख़र्च की जाती है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा गुरूर व तकब्बुर के नुक़्सानात पर ग़ौरो फ़िक्र करे और इस से बचने की कोशिश करे, मुतकब्बिर शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को नापसन्द है, खुद रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुतकब्बिर के लिये नापसन्दीदगी का इज़्हार फ़रमाया, अह़ादीस में मुतकब्बिर को बदतरीन शख़्स क़रार दिया गया है, मुतकब्बिर को कल बरोज़े क़ियामत ज़िल्लतो रुस्वाई का सामना करना पड़ेगा, जिस के दिल में थोड़ा सा भी तकब्बुर होगा वोह जन्नत में दाख़िल न हो सकेगा। तकब्बुर की तबाह कारियां जानने और मज़ीद मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब "**तकब्बुर**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

(3).....**इस्राफ़** का तीसरा सबब **अपनी वाह वाह की ख़्वाहिश** है। दूसरों से दाद वुसूल करने के लिये पैसे का बेजा इस्ति'माल हमारे मुआ़शरे में आ़म है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा लोगों से ता'रीफ़ी कलिमात सुनने की ख़्वाहिश को अपनी ज़ात से ख़त्म करे और येह मदनी ज़ेह्न बनाए कि लोगों में मुअ़ज़्ज़ज़ होना कोई मा'ना नहीं रखता बल्कि सब से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोही है जो सब से ज़ियादा मुत्तक़ी व परहेज़गार है। नीज़ बन्दा हुब्बे जाह के अस्बाब व इलाज का मुत़ालआ़ करे।

(4).....इस्राफ़ का चौथा सबब **शोहरत की ख़्वाहिश** है। बे ह़याई पर मुश्तमिल फंक्शन और इस त़रह़ की दीगर ख़ुराफ़ात में ख़र्च की जाने वाली रक़म का अस्ल सबब **शोहरत की त़लब** ही है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा कर्दा दौलत को नेकी के कामों में ख़र्च करने की आ़दत बनाए और इख़्लास अपनाने की कोशिश करता रहे, वक़्ती शोहरत के बदले बरोज़े मह़शर मिलने वाली दाइमी ज़िल्लतो रुस्वाई को पेशे नज़र

www.dawateislami.net

रखे, नीज़ येह मदनी ज़ेहन बनाए कि मुझे मालो दौलत ख़र्च कर के लोगों की नज़र में मश्हूर होने के बजाए नेक आ'माल कर के रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सुर्ख़रू होना है ।

(5).....**इस्राफ़** का पांचवां सबब **ग़फ़्लत और लापरवाही** है । इन्सान को येह तो मा'लूम होता है कि फ़ुलां काम में ख़र्च करना **इस्राफ़** है लेकिन बा'ज़ अवक़ात अपनी ग़फ़्लत और लापरवाही की बिना पर **इस्राफ़** में मुब्तला हो जाता है । जैसे वुज़ू का पानी इस्ति'माल करने में नल खुला छोड़ देना, घर, ऑफ़िस वग़ैरा में बिजली पर चलने वाली अश्या को सुस्ती की वजह से खुला छोड़ देना भी इसी सबब का नतीजा हैं । इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपने अन्दर एह्सास पैदा करे, दुन्या में ग़फ़्लत व लापरवाही की बिना पर होने वाले गुनाहों पर आख़िरत के मुआख़ज़े को पेशे नज़र रखे और अपनी इस ग़फ़्लत व ला परवाही को दूर करे, नीज़ अपने दिल में रब عَزَّوَجَلَّ की अ़ता कर्दा ने'मतों पर शुक्र का एह्सास पैदा करे, नीज़ अपना येह मदनी ज़ेहन बनाए कि आज अगर मैं ने ने'मतों की नाशुक्री की तो हो सकता है कि मुझ से येह ने'मतें छीन ली जाएं, लिहाज़ा मैं इन ने'मतों पर इस्राफ़ से बचते हुवे शुक्र करूंगा ताकि इन में मज़ीद इज़ाफ़ा हो ।

खाने के इस्राफ़ से तौबा कीजिये :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल हर एक बे बरकती और तंगदस्ती का रोना रो रहा है । क्या बईद कि रोटी का एह्तिराम न करने की येह सज़ा हो । आज शायद ही कोई मुसलमान ऐसा हो, जो रोटी ज़ाएअ़ न करता हो । हर त़रफ़ खाने की बे हुरमती के दिल सोज़

www.dawateislami.net

नज़्ज़ारे हैं, शादी की तक़रीबात हों या बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن की नियाज़ के तबर्रुकात। अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! दस्तरख़्वानों और दरियों पर बे दर्दी के साथ खाना गिराया जाता है, खाने के दौरान हड्डियों के साथ बोटी और मसालहा बराबर साफ़ नहीं किया जाता, गर्म मसालहे के साथ भी खाने के कसीर अज्ज़ा ज़ाएअ कर दिये जाते हैं, थालों में बचा हुवा थोड़ा सा खाना और पियालों, पतीलों में बचा हुवा शोरबा दोबारा इस्ति'माल करने का अकसर लोगों का ज़ेहन नहीं, इस त़रह का बहुत सारा बचा हुवा खाना उ़मूमन कचरा कूंडी की नज़्र कर दिया जाता है। अब तक जितना भी इस्राफ़ किया है बराए मेहरबानी ! उस से तौबा कर लीजिये। आयिन्दा खाने के एक भी दाने और शोरबे के एक भी क़त़रे का इस्राफ़ न हो इस का अ़हद कर लीजिये। وَاللّٰهِ الْعَظِيم क़ियामत में ज़र्रे ज़र्रे का ह़िसाब होना है, यक़ीनन कोई भी क़ियामत के ह़िसाब की ताब नहीं रखता, तौबा सच्ची तौबा कर लीजिये। दुरूदे पाक पढ़ कर अ़र्ज़ कीजिये। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आज तक मैं ने जितना भी इस्राफ़ किया उस से और तमाम सग़ीरा व कबीरा गुनाहों से तौबा करता हूं और तेरी अ़त़ा कर्दा तौफ़ीक़ से आयिन्दा गुनाहों से बचने की भरपूर कोशिश करूंगा, या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ मेरी तौबा क़बूल फ़रमा और मुझे बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلّم

सदक़ा प्यारे की ह़या का कि न ले मुझ से ह़िसाब
बख़्श बे पूछे, लजाए को लजाना क्या है?

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(45).....ग़मे दुन्या

"ग़मे दुन्या" की ता'रीफ़ :

किसी दुन्यवी चीज़ से महरूमी के सबब रन्जो ग़म और अफ़्सोस का इस तरह इज़्हार करना कि उस में सब्र और क़ज़ाए इलाही पर रिज़ा और सवाब की उम्मीद बाक़ी न रहे **"ग़मे दुन्या"** कहलाता है और येह मज़्मूम है।

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿لِّكَيْلَا تَأْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَاۤ اٰتٰىكُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ۙ﴾ (پ۲۷، الحدید: ۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"इस लिये कि ग़म न खाओ उस पर जो हाथ से जाए और ख़ुश न हो उस पर जो तुम को दिया और **अल्लाह** को नहीं भाता कोई उतरूना (मुतकब्बिर) बड़ाई मारने वाला।"*

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुफ़्ती मुहम्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "येह समझ लो कि जो **अल्लाह** तआला ने मुक़द्दर फ़रमाया है ज़रूर होना है न ग़म करने से कोई ज़ाएअ़ शुदा चीज़ वापस मिल सकती हैं, न फ़ना होने वाली चीज़ इतराने के लाइक़ है तो चाहिये कि ख़ुशी की जगह शुक्र और ग़म की जगह सब्र इख़्तियार करो। ग़म से मुराद यहां इन्सान की वोह हालत है जिस में सब्र और रिज़ा ब क़ज़ाए इलाही और उम्मीदे सवाब बाक़ी न रहे। और ख़ुशी से वोह इतराना मुराद है जिस में मस्त हो

www.dawateislami.net

कर आदमी शुक्र से ग़ाफ़िल हो जाए। और वोह ग़म व रन्ज जिस में बन्दा अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ मुतवज्जेह हो और उस की रिज़ा पर राज़ी हो ऐसे ही वोह खुशी जिस पर ह़क़ तआ़ला का शुक्र गुज़ार हो ममनूअ़ नहीं । ह़ज़रते इमाम जा'फ़र सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ऐ फ़रज़न्दे आदम किसी चीज़ के फ़ुक़्दान पर क्यूं ग़म करता है ? येह इस को तेरे पास वापस न लाएगा और किसी मौजूद चीज़ पर क्यूं इतराता है ? मौत इस को तेरे हाथ में न छोड़ेगी ।"

ह़दीसे मुबारका : दुन्यवी ग़मों से फ़राग़त पा लो :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस क़दर हो सके दुन्यवी ग़मों से फ़राग़त पा लो क्यूंकि जिसे सब से ज़ियादा ग़म दुन्या का होगा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के पेशे को शोहरत देगा और उस का फ़क़्र उस पर ज़ाहिर फ़रमा देगा और जिसे आख़िरत का ग़म सब से ज़ियादा होगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के काम जम्अ़ फ़रमा देगा और उस के दिल को ग़ना से भर देगा और जो बन्दा अपने दिल से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह होता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मोअमिनीन के दिलों को उस के लिये मह़ब्बत और रह़मत के जज़्बे से सरशार फ़रमा कर उस के पास भेजता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे हर भलाई जल्द अ़त़ा फ़रमाता है।"(1)

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : "दो ख़स्लतें ऐसी हैं

1 ......مجمع الزوائد، کتاب الزھد، باب فیمن احب الدنیا۔۔۔الخ، ج ۱۰، ص ۴۳۲، حدیث:۱۷۸۱۶۔

www.dawateislami.net

कि जिस में भी होंगी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे साबिरो शाकिर लिख देगा और जिस में नहीं होंगी न उसे शाकिर लिखेगा और न ही साबिर। वोह दो ख़स्लतें येह हैं : (1) जो अपने दीन में अपने से ऊपर वाले को देख कर उस की पैरवी करे और दुन्यवी मुआमले में अपने से नीचे वाले को देखे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे उस शख़्स पर जो फ़ज़ीलत दी है इस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे साबिरो शाकिर लिख लेता है। (2) जो दीन में अपने से नीचे वाले को देखे और दुन्यवी मुआमले में ऊपर वाले को देखे फिर अपनी महरूमी पर अफ़्सोस करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ न उसे साबिर लिखता है और न ही शाकिर।''(1)

ग़मे दुन्या के बारे में तम्बीह :

किसी भी दुन्यवी मुआमले पर चाहे वोह माली नुक़्सान की सूरत में हो, किसी तक्लीफ़ की सूरत में हो या किसी और सूरत में हो ग़मगीन होना एक फ़ित्री अमल है, लेकिन किसी भी दुन्यवी मुआमले पर ग़ैर शरई वावेला करना, मातम करना, दीगर मुसलमानों को कोसना या इस मुसीबत का ज़िम्मेदार ठहराना, या इस पर बद शुगूनी, ग़ीबत, तोहमत, बद गुमानी भरा कलाम करना, या इस तरह अपने ग़म का इज़्हार करना जिस से सब्र का दामन छूट जाए, सवाब की उम्मीद ख़त्म हो जाए या क़ज़ाए इलाही पर अ़दमे रिज़ा का इज़्हार हो येह तमाम सूरतें ग़ैर शरई, नाजाइज़ और ममनूअ़ हैं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 ......ترمذی، ابواب صفة القیامة، ج۴، ص۲۲۹، حدیث: ۲۵۲۰۔

www.dawateislami.net

हिकायत : ने'मत पर ग़मगीन और मुसीबत पर ख़ुश होने वाली औरत :

हज़रते सय्यिदुना इब्ने यसार मुस्लिम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُنْعِم फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मैं तिजारत की ग़रज़ से बहरैन की त़रफ़ गया, वहां मैं ने देखा कि एक घर की त़रफ़ बहुत से लोग आ जा रहे हैं, मैं भी उस त़रफ़ चल दिया। वहां जा कर देखा कि एक औ़रत निहायत अफ़्सुर्दा और ग़मगीन फटे पुराने कपड़े पहने मुसल्ले पर बैठी है और उस के इर्द गिर्द ग़ुलामों और लौंडियों की कसरत है, उस के कई बेटे और बेटीयां हैं तिजारत का बहुत सारा साज़ो सामान उस की मिल्किय्यत में है, ख़रीदारों का हुजूम लगा हुवा है, वोह औ़रत हर त़रह़ की ने'मतों के बावुजूद निहायत ही ग़मगीन थी न किसी से बात करती, न ही हंसती थी। मैं वहां से वापस लौट आया और अपने कामों से फ़ारिग़ होने के बा'द दोबारा उसी घर की त़रफ़ चल दिया। वहां जा कर मैं ने उस औ़रत को सलाम किया। उस ने जवाब दिया और कहने लगी : "अगर कभी दोबारा यहां आना हो और कोई काम हो तो हमारे पास ज़रूर आना।" फिर मैं वापस अपने शहर चला आया। कुछ अ़र्से बा'द मुझे दोबारा किसी काम के लिये उसी औ़रत के शहर में जाना पड़ा। जब मैं उस के घर गया तो देखा कि अब वहां पहले की त़रह़ चहल पहल नहीं थी, न तिजारती सामान है, न ख़ुद्दाम व लौंडियां नज़र आ रही हैं और न ही उस औ़रत के लड़के मौजूद हैं। हर त़रफ़ वीरानी छाई हुई है। मैं बड़ा ह़ैरान हुवा और मैं ने दरवाज़ा खटखटाया तो अन्दर से किसी के हंसने और बातें करने की आवाज़ आने लगी। जब दरवाज़ा खोला गया और मैं अन्दर दाख़िल हुवा तो देखा कि वोही औ़रत अब निहायत क़ीमती और ख़ुश रंग लिबास में मलबूस

www.dawateislami.net

बड़ी ख़ुश व ख़ुर्रम नज़र आ रही थी और उस के साथ सिर्फ़ एक औरत घर में मौजूद थी कोई और न था। मुझे बड़ा तअज्जुब हुवा और मैं ने उस औरत से पूछा : "जब मैं पिछली मरतबा तुम्हारे पास आया था तो तुम कसीर ने'मतों के बा वुजूद **ग़मगीन** और **निहायत अफ़्सुर्दा** थी लेकिन अब ख़ादिमों, लौंडियों और दौलत की अदम मौजूदगी में भी बहुत ख़ुश और मुत़्मइन नज़र आ रही हो ! इस में क्या राज़ है ?"

तो वोह औरत कहने लगी : "तुम तअज्जुब न करो, बात दर अस्ल येह है कि जब पिछली मरतबा तुम मुझ से मिले तो मेरे पास दुन्यावी ने'मतों की बोहतात थी, मेरे पास मालो दौलत और अवलाद की कसरत थी, इस हालत में मुझे येह ख़ौफ़ हुवा कि शायद ! मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मुझ से नाराज़ है, इस वजह से मुझे कोई मुसीबत और ग़म नहीं पहुंचता वरना उस के पसन्दीदा बन्दे तो आज़्माइशों और मुसीबतों में मुब्तला रहते हैं। उस वक़्त येही सोच कर मैं परेशान व ग़मगीन थी और मैं ने अपनी हालत ऐसी बनाई हुई थी। इस के बा'द मेरे माल और मेरी अवलाद पर मुसलसल मुसीबतें टूटती रहीं, मेरा सारा असासा ज़ाएअ हो गया, मेरे तमाम बेटों और बेटियों का इन्तिक़ाल हो गया, ख़ुद्दाम व लौंडियां सब जाती रहीं और मेरी तमाम दुन्यवी ने'मतें मुझ से छिन गईं। अब मैं बहुत ख़ुश हूं कि मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मुझ से ख़ुश है इसी वजह से तो उस ने मुझे आज़्माइश में मुब्तला किया है। पस मैं इस हालत में अपने आप को बहुत ख़ुश नसीब समझ रही हूं, इसी लिये मैं ने अच्छा लिबास पहना हुवा है।"

हज़रते सय्यिदुना इब्ने यसार मुस्लिम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُنْعِم फ़रमाते हैं कि इस के बा'द मैं वहां से चला आया और मैं ने हज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا को उस औ़रत के मुतअ़ल्लिक़ बताया तो वोह फ़रमाने लगे : "उस औ़रत का ह़ाल तो ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रह़ है और मेरा तो येह ह़ाल है कि एक मरतबा मेरी चादर फट गई तो मैं ने उसे ठीक करवाया लेकिन वोह मेरी मरज़ी के मुत़ाबिक़ ठीक न हुई तो मुझे उस बात ने काफ़ी दिन ग़मगीन रखा।"(1)

ग़मे दुन्या के तीन अस्बाब व इलाज :

(1)....ग़मे दुन्या का पहला सबब हुब्बे दुन्या है। दुन्या की मह़ब्बत दिल में रच बस जाने की वजह से मा'मूली से दुन्यावी नुक़्सान पर भी दिल ग़मगीन हो जाता है जिस की वजह से अफ़्सोस का इज़्हार किया जाता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा दुन्या की मह़ब्बत को अपने दिल से निकालने की कोशिश करे और अपने ज़ाहिरो बात़िन को नेकियों में मश्ग़ूल रखे। नीज़ अपना येह मदनी ज़ेह्न बनाए कि दुन्या फ़ानी है और फ़ानी चीज़ ने कभी न कभी फ़ना होना ही है लिहाज़ा ऐसी चीज़ पर अफ़्सोस करने का क्या फ़ाइदा ? अगर अफ़्सोस करना ही है तो मैं इस बात पर अफ़्सोस करूं कि मैं ने फ़ुलां लम्ह़ा रब عَزَّوَجَلَّ की याद से क्यूं ग़ाफ़िल हो कर गुज़ारा ?

(2)....**ग़मे दुन्या** का दूसरा सबब **बे सब्री** की आ़दत है। जिस इन्सान में सब्र और बरदाश्त का माद्दा कम होता है उसे उमूरे दुन्या का ग़म जल्द लाह़िक़ हो जाता है जो उस के रोशन मुस्तक़्बिल को तारीक करने के लिये काफ़ी होता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा मुसीबतों और आज़्माइशों का मुक़ाबला करने के लिये अपने अन्दर सब्र और बरदाश्त पैदा करे ताकि कोई अन्होनी बात और

---

1 ......उ़यूनुल ह़िकायात, जि. 1, स. 94।

www.dawateislami.net

मुसीबत उस के आ'साब पर असर अन्दाज़ न हो सके। नीज़ अपना येह मदनी ज़ेहन बनाए कि बे सब्री का मुज़ाहरा कर के मैं अ़ज़ीम अज्रो सवाब से महरूम कर दिया जाऊंगा जब कि सब्र करूंगा तो अज्रो सवाब का ख़ज़ाना मुझे अ़ता किया जाएगा। लिहाज़ा समझदारी इसी में है कि बे सब्री के बजाए तक़्दीरे इलाही पर राज़ी रहते हुवे सब्रो शुक्र का मुज़ाहरा किया जाए।

(3)....**ग़मे दुन्या** का तीसरा सबब **नाशुक्री** की आ़दत है। हज़ारहा ने'मतों के बा वुजूद बन्दा शुक्र नहीं करता येही वजह है कि जब उसे कोई मुसीबत या तक्लीफ़ पहुंचती है तो इस पर शुक्र के बजाए ग़मज़दा (ग़मगीन) हो कर नाशुक्री कर बैठता है। इस का इलाज येह है कि बन्दा अपने अन्दर सब्रो शुक्र की आ़दत डाले और ख़ुशी हो या ग़म अपनी ज़बान को हर वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के शुक्र से तर बतर रखे। नीज़ येह भी मदनी ज़ेहन बनाए कि अगर मैं शुक्र करूंगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे मज़ीद ने'मतों से सरफ़राज़ फ़रमाएगा। इस मदनी ज़ेहन से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्यावी ग़मों से छुटकारा भी नसीब हो जाएगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(46)....तजस्सुस

तजस्सुस की ता'रीफ़ :

लोगों की ख़ुफ़्या बातें और ऐब जानने की कोशिश करना **तजस्सुस** कहलाता है।[1]

[1]......احیاء العلوم، ج۲،ص ۲۴۳، ج۳،ص ۵۹ ماخوذا۔

www.dawateislami.net

आयते मुबारका :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿لَا تَجَسَّسُوْا﴾ (پ۲۶، الحجرات:۱۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "ऐब न ढूंडो।"

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद **मुह़म्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : "या'नी मुसलमानों की ऐब जूई न करो और उन के छुपे ह़ाल की जुस्त्जू में न रहो जिसे अल्लाह तआ़ला ने अपनी सत्तारी से छुपाया। ह़दीस शरीफ़ में है : गुमान से बचो गुमान बड़ी झूटी बात है और मुसलमान की ऐब जूई न करो, उन के साथ ह़िर्स व ह़सद, बुग़्ज़, बे मुरुव्वती न करो, ऐ अल्लाह तआ़ला के बन्दो ! भाई बने रहो जैसा तुम्हें हुक्म दिया गया, मुसलमान मुसलमान का भाई है, उस पर ज़ुल्म न करे, उस को रुस्वा न करे, उस की तह़क़ीर न करे, तक़्वा यहां है, तक़्वा यहां है, तक़्वा यहां है। (और यहां के लफ़्ज़ से अपने सीने की त़रफ़ इशारा फ़रमाया) आदमी के लिये येह बुराई बहुत है कि अपने मुसलमान भाई को ह़क़ीर देखे, हर मुसलमान मुसलमान पर ह़राम है उस का ख़ून भी, उस की आबरू भी, उस का माल भी, अल्लाह तआ़ला तुम्हारे जिस्मों और सूरतों और अ़मलों पर नज़र नहीं फ़रमाता लेकिन तुम्हारे दिलों पर नज़र फ़रमाता है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

ह़दीस : जो बन्दा दुन्या में दूसरे की पर्दा पोशी करता है अल्लाह तआ़ला रोज़े क़ियामत उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

हदीसे मुबारका : महशर की रुस्वाई का सबब :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ वोह लोगो ! जो ज़बानों से तो ईमान ले आए हो मगर तुम्हारे दिल में अभी तक ईमान दाख़िल नहीं हुवा ! मुसलमानों को ईज़ा मत दो और न उन के उ़यूब को तलाश करो क्यूंकि जो अपने मुसलमान भाई का ऐब तलाश करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का ऐब ज़ाहिर फ़रमा देगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस का ऐब ज़ाहिर फ़रमा दे तो उसे रुस्वा कर देता है अगर्चे वोह अपने घर के तह ख़ाने में हो ।"(1)

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : "ग़ीबत करने वालों, चुग़ल ख़ोरों और पाकबाज़ लोगों के ऐब तलाश करने वालों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (क़ियामत के दिन) कुत्तों की शक्ल में उठाएगा ।(2)

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते **मुफ़्ती अहमद यार ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "ख़याल रहे कि तमाम इन्सान क़ब्रों से ब शक्ले इन्सानी उठेंगे फिर महशर में पहुंच कर बा'ज़ की सूरतें मस्ख़ हो जाएंगी ।"(3) (या'नी बिगड़ जाएंगी मसलन मुख़्तलिफ़ जानवरों जैसी हो जाएंगी ।)

तजस्सुस के बारे में तम्बीह :

तजस्सुस या'नी अपने किसी भी मुसलमान भाई के ख़ुफ़्या उ़यूब को तलाश करना या उस के लिये सई करना शरअ़न ममनूअ़ है ।

---

1 ......شعب الایمان، باب فی تحریم اعراض الناس، ج۵، ص۲۹۶، حدیث: ۶۷۰۴ بتغیر۔

2 ......التّوبيخ والتّنبيه لابی الشيخ الاصبهانی، ص۹۷، رقم ۲۲۰، الترغیب والترهیب، ج۳، ص۳۲۵، حدیث ۱۰۔

3 ......مراٰۃ المناجیح، ج۶، ص۶۶۰۔

www.dawateislami.net

तजस्सुस की मुख़्तलिफ़ सूरतें :

हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "किसी शख़्स के लिये मुनासिब नहीं कि वोह दूसरे के घर में कान लगाए ताकि वहां से बाजों की आवाज़ सुने या नाक को इस लिये साफ़ करे ताकि शराब की बू सूंघ सके और न ही कपड़े में छुपी हुई शै को इस निय्यत से टटोले कि बाजे वग़ैरा की पहचान हो और न उस के पड़ोसियों से उस के घर में होने वाले मुआमलात दरयाफ़्त करे। लेकिन अगर पूछे बिग़ैर खुद ही दो आदिल शख़्स उसे बता दें कि फ़ुलां शख़्स अपने घर में शराब पी रहा है या फ़ुलां के घर में शराब है जो उस ने पीने के लिये रखी है तो उस वक़्त वोह घर में दाख़िल हो सकता है और इजाज़त लेना भी लाज़िम नहीं होगा क्यूंकि बुराई को ख़त्म करने के लिये दूसरे की मिल्क में दाख़िल हो कर चलना ऐसा ही है जैसे बुराई से मन्अ़ करते हुवे ज़रूरत पड़ने पर किसी का सर फाड़ देना। अलबत्ता ! जिन लोगों की ख़बर तो क़बूल की जाती है लेकिन शहादत नहीं, उन के बताने पर किसी के घर में दाख़िल हो जाना महल्ले नज़र है। बेहतर तो येह है कि इस से बाज़ रहे क्यूंकि साहिबे ख़ाना इस का हक़ रखता है कि बिग़ैर उस की इजाज़त के कोई उस के घर में दाख़िल न हो और मुसलमान को साबित शुदा हक़ उस वक़्त तक साक़ित नहीं होता जब तक उस के ख़िलाफ़ दो आदिल शख़्स गवाही न दें।"(1)

---

(1) ......احیاء العلوم، ج۲، ص۱۱۶۸۔

www.dawateislami.net

हिकायत : तजस्सुस के सबब वापस आ गए :

हज़रते सय्यिदुना आमिर शा'बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अपने एक हम मजलिस भाई को न पाया तो उन की तलाश में हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ के साथ निकल खड़े हुवे। आप ने सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से फ़रमाया : "आओ ! हम फ़ुलां शख़्स के घर जा कर देखते हैं।" जब दोनों उस घर के क़रीब पहुंचे तो देखा कि उस का दरवाज़ा खुला हुवा है और उन का वोह साथी उस घर में मौजूद है, नीज़ उस के साथ एक ख़ातून भी है जिस ने उसे कुछ बरतन में डाल कर दिया और वोह खाने लगा। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से फ़रमाया : "अच्छा तो येह वोह काम है जिस की वजह से येह हम से दूर है।" सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! आप को क्या मा'लूम कि इस बरतन में क्या है ?" येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने ख़ौफ़े ख़ुदा से डरते हुवे इरशाद फ़रमाया : "हमें डरना चाहिये कि कहीं येह तजस्सुस के ज़ुमरे में न आता हो।" सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! येह तजस्सुस ही है।" फ़रमाया : "फिर इस की तौबा क्या है ?" अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! आप पर तो इस का वोह मुआ़मला ज़ाहिर हुवा है जो आप जानते ही न थे और दूसरा येह कि

www.dawateislami.net

आप के दिल में तो इस के लिये अच्छा ही इरादा था।" (या'नी इस सूरत में येह गुनाह ही नहीं है तो फिर इस की तौबा कैसी ?) चुनान्चे, येह दोनों हज़रात वहां से वापस तशरीफ़ ले आए।(1)

बरह्ना करने से बढ़ कर गुनाह :

हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने हवारियों से इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम अपने भाई को इस हाल में सोता पाओ कि हवा ने उस (के जिस्म) से कपड़ा हटा दिया है (जिस की वजह से उस का सित्र ज़ाहिर हो चुका हो तो ऐसी सूरत में) तो तुम क्या करोगे ?" उन्हों ने अर्ज़ की : "उस की सित्र पोशी करेंगे और उसे ढांप देंगे।" तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : "बल्कि तुम उस का सित्र खोल दोगे ?" हवारियों ने तअज्जुब करते हुवे कहा : "سُبْحٰنَ اللہ येह कौन करेगा ?" तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : "तुम में से कोई अपने भाई के (उयूब वग़ैरा के) बारे में कुछ सुनता है तो उसे बढ़ा चढ़ा कर बयान करता है और येह उसे बरह्ना करने से भी ज़ियादा बड़ा गुनाह है।"(2)

तजस्सुस के सात अस्बाब व इलाज :

(1).....**तजस्सुस** का पहला सबब **बुग़्ज़ो कीना और ज़ाती दुश्मनी** है। जब किसी मुसलमान का बुग़्ज़ो कीना दिल में आ जाता है तो उस का सीधा काम भी उलटा दिखाई देता है यूं नज़रें उस के उयूब तलाश करने में लगी रहती हैं। इस का **इलाज** येह है कि

---

1 ......درمنثور، پ٢٦، الحجرات، تحت الآية: ١٢، ج٧، ص٥٦٧۔

2 ......احیاء العلوم، ج٢، ص٢٤٤۔

www.dawateislami.net

बन्दा अपने दिल को मुसलमानों के बुग़्ज़ो कीना से पाको साफ़ करे, अपने दिल में मुसलमानों की महब्बत पैदा करने के लिये इस फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पेशे नज़र रखे : "जो कोई अपने मुसलमान भाई की तरफ़ महब्बत भरी नज़र से देखे और उस के दिल या सीने में अदावत न हो तो निगाह लौटने से पहले दोनों के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।"(1) इस तरह मुसलमानों की महब्बत दिल में पैदा होगी और उन के **उ़यूब तलाश** करने से भी नजात नसीब होगी।

(2).....**तजस्सुस** का दूसरा सबब **ह़सद** है क्यूंकि ह़ासिद किसी भी क़ीमत पर मह़सूद (या'नी जिस से ह़सद किया जाए उस) की इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई की ख़्वाहिश नहीं करता, बल्कि हर वक़्त उस की ने'मत छिन जाने की ख़्वाहिश रखता है। लिहाज़ा ह़ासिद ऐ़ब तलाश कर के मह़सूद को बदनाम करने की कोशिश में लगा रहता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा ह़सद से छुटकारा ह़ासिल करे ह़सद की तबाहकारियों पर ग़ौर करे कि ह़सद एक ऐसा गुनाह है जो नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जिस त़रह़ आग लकड़ी को, ह़सद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी का सबब है। नीज़ ह़ासिदीन के इ़ब्रतनाक अन्जाम पर भी ग़ौर करता रहे।

(3).....**तजस्सुस** का तीसरा सबब **चुग़ुल ख़ोरी की आ़दत है।** मह़ब्बतों के चोर **चुग़ुल ख़ोर** को किसी न किसी मन्फ़ी पहलू की ज़रूरत होती है इसी लिये वोह हर वक़्त मुसलमानों के पोशीदा उ़यूब

1 ......شعب الایمان، باب فی الحث علی ترک الغل والحسد، ج۵، ص ۲۷۱، حدیث: ۶۶۲۴ ملتقطاً

www.dawateislami.net

की तलाश में लगा रहता है, फिर येह ऐब इधर उधर बयान कर के फ़ितने का बाइस बनता है। इस का इलाज येह है कि चुग़ुल ख़ोरी की वईदों को पेशे नज़र रखे और इन से बचने की कोशिश करे। चुनान्चे, फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : (1) "चुग़ुल ख़ोर जन्नत में हरगिज़ दाख़िल न होगा।"[1] (2) "चुग़ुल ख़ोर को आख़िरत से पहले इस की क़ब्र में अ़ज़ाब दिया जाएगा।"[2]

(4).....**तजस्सुस** का चौथा सबब चापलूसी की आ़दत है। बा'ज़ अफ़राद अपने हम मन्सब के उ़यूब बिला ज़रूरते शरई अपने अफ़्सर या निगरान वग़ैरा तक पहुंचा कर अपना ए'तिमाद क़ाइम करते और ज़ाती मफ़ादात भी ह़ासिल कर लेते हैं, ऐसे लोगों की तरक़्क़ी का तमाम तर दारोमदार "**चापलूसी**" पर होता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा कामयाबी ह़ासिल करने के लिये अपनी ख़ुदादाद सलाह़िय्यतों को ब रूए कार लाए और मुसलमानों की चापलूसी से बचे। नीज़ येह मदनी ज़ेह्न बनाए कि किसी दूसरे मुसलमान की चापलूसी कर के जो मुझे तरक़्क़ी और इ़ज़्ज़त मिलेगी वोह किस काम की ? यक़ीनन ऐसी इ़ज़्ज़त किसी न किसी दिन ख़ाक में मिल जाएगी। ऐसी इ़ज़्ज़त का क्या फ़ाइदा ?

(5).....**तजस्सुस** का पांचवां सबब निफ़ाक़ है इसी लिये इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "मोमिन हमेशा अपने दोस्त की ख़ूबियों को सामने रखता है ताकि उस के दिल में इ़ज़्ज़त,

1 ......بخاری، کتاب الادب، باب مایقرأمن النمیمہ، ج۴، ص۱۱۵، حدیث:۶۰۵۶۔

2 ......بخاری، کتاب الوضوء باب من الکبائر۔۔۔الخ، ج۱، ص۹۵، حدیث:۲۱۶مفھوماً۔

www.dawateislami.net

मह़ब्बत और एह़तिराम पैदा हो जब कि मुनाफ़िक़ हमेशा बुराइयां और उ़यूब देखता है।"[1] इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपनी ज़ात से निफ़ाक़ को दूर करने की अ़मली कोशिश करे।

(6)....**तजस्सुस** का छटा सबब **शोहरत और मालो दौलत की हवस** है। दूसरों के ऐ़ब वाज़ेह़ कर के शोहरत ह़ासिल करना आज कल एक मुनाफ़अ़ बख़्श कारोबार बन चुका है, आज कल लोगों ने कई ऐसे ज़राएअ़ इख़्तियार किये हुवे हैं जिन में पहले तो मुसलमानों के उ़यूब तलाश किये जाते हैं फिर दीगर ज़राएअ़ से इस की तशहीर कर के सस्ती शोहरत और माली नफ़्अ़ ह़ासिल किया जाता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा अपना यूं मदनी ज़ेह्न बनाए कि मुसलमानों की दिल शिकनी और ह़क़ तलफ़ी مَعَاذَاللہ वोह मूज़ी मरज़ है कि जो आ'माले सालेह़ा के पूरे जिस्म को बेकार कर देता है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन ह़र्ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "कई लोग नेकियों की कसीर दौलत लिये दुन्या से मालदार रुख़्सत होंगे मगर बन्दों की ह़क़ तलफ़ियों के बाइस क़ियामत के दिन अपनी सारी नेकियां खो बैठेंगे और यूं ग़रीब व नादार हो जाएंगे।"[2] बा'ज़ उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने ईज़ाए मुस्लिम को बुरे ख़ातिमे के अस्बाब में शुमार किया है।[3] लिहाज़ा मुसलमानों के उ़यूब तलाश करने से बन्दा अपने आप को बचाए कि इस में सिवाए नुक़्सान के कुछ ह़ासिल नहीं।

---

1 ......احیاء العلوم، ج۲، ص۲۴۰۔

2 ......تنبیہ المغترین، من اخلاقھم کثرت خوفھم۔۔۔الخ، ص۴۷۔

3 ......شرح الصدور، ص۲۷۔

www.dawateislami.net

(7).....**तजस्सुस** का सातवां सबब "**मन्फ़ी सोच**" है कि जब कोई शख़्स मन्फ़ी सोच का ह़ामिल बन जाता है तो फिर वोह तजस्सुस जैसी बीमारी में मुब्तला हो जाता है, हर वक़्त लोगों के उ़यूब को तलाश करना उस का वत़ीरा बन जाता है। इस का **इलाज** येही है कि बन्दा हमेशा अपनी सोच को मुसबत रखे, बिला ज़रूरत तजस्सुस और लोगों के उ़यूब तलाश करने के बजाए उन की ख़ूबियों पर नज़र रखे। नीज़ येह भी मदनी ज़ेह्न बनाए कि हम सब का ख़ालिक़ो मालिक عَزَّوَجَلَّ जो हमारे तमाम आ'माल से वाक़िफ़ है जब वोह हमारे उ़यूब को किसी पर ज़ाहिर नहीं होने देता तो हम तो उस के आ़जिज़ बन्दे हैं, हमें क्या ह़क़ पहुंचता है कि उस की मख़्लूक़ के उ़यूब को तलाश करते फिरें ? किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

ऐबों को ढूंडती है ऐब जू की नज़र
जो ख़ुश नज़र हैं वोह हुनर व कमाल देखते हैं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(47).....मायूसी

मायूसी की ता'रीफ़ :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और उस के फ़ज़्लो एह़सान से ख़ुद को मह़रूम समझना "**मायूसी**" है।

आयते मुबारका :

۞ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿قُلْ یٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤی اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِیْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ﴿۵۳﴾﴾ (پ۲۴، الزمر: ۵۳)

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की **अल्लाह** की रह़मत से ना उम्मीद न हो बेशक **अल्लाह** सब गुनाह बख़्श देता है बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है।"*

❁ एक और मक़ाम पर इरशाद होता है :

﴿مَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖۤ اِلَّا الضَّآلُّوْنَ﴾(پ۱۴، الحجر:۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"अपने रब की रह़मत से कौन ना उम्मीद हो मगर वोही जो गुमराह हुवे।"*

❁ एक और मक़ाम पर इरशाद होता है :

﴿لَا تَايْــٴَـسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يَايْــٴَـسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ﴾

(پ۱۳، یوسف:۸۷) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *"**अल्लाह** की रह़मत से ना उम्मीद न हो बेशक **अल्लाह** की रह़मत से ना उम्मीद नहीं होते मगर काफ़िर लोग।"*

ह़दीसे मुबारका : मायूसी कबीरा गुनाह है :

हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया गया : "कबीरा गुनाह कौन से हैं ?" तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक करना, उस की रह़मत से मायूस होना और उस की खुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ रहना और येही सब से बड़ा गुनाह है।"(1)

मायूसी का हुक्म :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस हो कर गुनाहों में मश्ग़ूल हो जाना नाजाइज़ व ह़राम और कबीरा गुनाह है, रह़मते

(1)......الزواجر، مقدمة فی تعریف الکبیرة، ج۱، ص۲۲۔

www.dawateislami.net

इलाही से मायूसी बा'ज़ सूरतों में कुफ़्र भी है। चुनान्चे, शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी **रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मायानाज़ तस्नीफ़ "**कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब**" सफ़ह़ा **483** पर फ़रमाते हैं : "बा'ज़ अवक़ात मुख़्तलिफ़ आफ़ात, दुन्यावी मुआ़मलात या बीमारी के मुआ़लजात व अख़राजात वग़ैरा के सिलसिले में आदमी हिम्मत हार कर मायूस हो जाता है इस तरह़ की मायूसी कुफ़्र नहीं। रह़मत से मायूसी के कुफ़्र होने की सूरतें येह हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को क़ादिर न समझे या **अल्लाह** तआ़ला को आ़लिम न समझे या **अल्लाह** तआ़ला को बख़ील समझे।"

ह़िकायत : मायूसी की सज़ा :

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि पहली उम्मतों में एक शख़्स कसरते इबादत से अपने नफ़्स पर सख़्ती करता और लोगों को रह़मते इलाही से मायूस करता। जब उस का इन्तिक़ाल हुवा तो किसी ने ख़्वाब में देखा कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर है और अ़र्ज़ कर रहा है : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ मेरे लिये तेरी बारगाह में क्या (अज्र) है?" तो बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ से जवाब मिला : "आग।" उस ने अ़र्ज़ की : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी इबादतो रियाज़त कहां गई?" इरशाद फ़रमाया : "तू दुन्या में लोगों को मेरी रह़मत से मायूस करता था, आज मैं तुझे अपनी रह़मत से मायूस कर दूंगा।"(1)

1 ......مصنف عبدالرزاق، کتاب الجامع، باب الاقناط، ج۱۰، ص۲۶۱، حدیث:۲۰۷۲۸۔

www.dawateislami.net

मायूसी के तीन अस्बाब व इलाज :

(1)....**मायूसी** का पहला सबब जहालत है कि बन्दा अपनी जहालत और कम इल्मी के सबब रह़मते इलाही से मायूसी जैसे मूज़ी गुनाह में मुब्तला हो जाता है। इस का इलाज येह है कि बन्दा दुन्यवी उ़लूम के साथ साथ दीनी उ़लूम भी ह़ासिल करे, कु़रआनो ह़दीस का इल्म ह़ासिल करे, जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल और इन पर मिलने वाले अ़ज़ाबात पर ग़ौरो फ़िक्र करे ताकि उस के दिल में ख़ौफ़े आख़िरत पैदा हो, जन्नत में ले जाने वाले आ'माल और इन पर मिलने वाले अ़ज़ीम अज्रो सवाब पर नज़र रखे ताकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मते कामिला पर उस का यक़ीन मज़ीद पुख़्ता हो जाए और मायूसी उस से दूर भाग जाए।

(2)....**मायूसी** का दूसरा सबब **बे सब्री** है। किसी आज़माइश या मुसीबत पर बे सब्री का मुज़ाहरा करते हुवे वावेला करने से रह़मते इलाही से मायूसी पैदा होती है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा मुसीबतों पर सब्र करने की आ़दत डाले क्यूंकि बे सब्री की वजह से निकलने वाले कलिमात बसा अवक़ात "कुफ़्रिय्यात" पर मुश्तमिल होते हैं जो ईमान को बरबाद करने का सबब बनते हैं। किसी भी तक्लीफ़ या मुसीबत पर बन्दा येह मदनी ज़ेहन बनाए कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे इस आज़माइश में मुब्तला किया है तो मैं इस पर बे सब्री का मुज़ाहरा कर के अज्रो सवाब क्यूं ज़ाएअ़ करूं? बल्कि मैं उस की रह़मते कामिला पर नज़र रखूं और इस मुसीबत या परेशानी से नजात के लिये उस की बारगाह में इल्तिजा करूं।

www.dawateislami.net

(3)....**मायूसी** का तीसरा सबब दूसरों की पुर आसाइश ज़िन्दगी पर नज़र रखना है। जब बन्दा किसी की पुर आसाइश ज़िन्दगी पर ग़ौरो फ़िक्र करता है तो उसे अपनी ज़िन्दगी पर सख़्त तश्वीश होती है यूं बन्दा रहमते इलाही से मायूस हो जाता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा दूसरों पर नज़र रखने के बजाए अपनी ज़िन्दगी पर ग़ौरो फ़िक्र करे, रब عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते हुवे क़नाअ़त इख़्तियार करे, येह मदनी ज़ेहन बनाए कि जिस रब عَزَّوَجَلَّ ने इसे पुर आसाइश ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाई है यक़ीनन वोह मुझे वैसी ही ज़िन्दगी अ़ता करने पर क़ादिर है लेकिन येह उस की मशिय्यत है और मैं उस की मशिय्यत पर राज़ी हूं। नीज़ बन्दा इस बात पर भी ग़ौर करे कि जो शख़्स दुन्या में जितनी भी पुर आसाइश ज़िन्दगी बसर करेगा हो सकता है कल बरोज़े क़ियामत उसे इतना ही सख़्त हिसाबो किताब भी देना पड़े, लिहाज़ा पुर आसाइश ज़िन्दगी की ख़्वाहिश करने के बजाए सादा तर्ज़े ज़िन्दगी अपनाने ही में आ़फ़िय्यत है।

(4)....**मायूसी** का चौथा सबब **बुरी सोह़बत** है। जब बन्दा ऐसे दुन्या दार लोगों की सोह़बत इख़्तियार करता है जो ख़ुद मायूसी का शिकार होते हैं तो उन की सोह़बत की वजह से येह भी मायूसी का शिकार हो जाता है। इस का **इलाज** येह है कि बन्दा सब से पहले ऐसे लोगों की सोह़बत तर्क कर के नेक परहेज़गार और मुत्तक़ी लोगों की सोह़बत इख़्तियार करे, अल्लाह वालों के पास बैठे ताकि मायूसी के सियाह बादल छट जाएं और रह़मते इलाही पर यक़ीन की बारिश नाज़िल हो। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी का मुश्कबार मदनी माह़ोल भी एक अच्छी सोह़बत फ़राहम करता है। हज़ारों लोग इस मदनी माह़ोल

www.dawateislami.net

से वाबस्ता हुवे, गुनाहों भरी ज़िन्दगी को तर्क किया और नेकियों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने लगे। आप भी इस मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने अ़लाक़े में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत कीजिये, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये, जदवल के मुताबिक़ मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी **रज़वी ज़ियाई** دامت برکاتہم العالیہ के अ़ता कर्दा इस मदनी मक़्सद के तह़त ज़िन्दगी गुज़ारिये कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللہ عزوجل" अपनी इस्लाह़ के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है اِنْ شَآءَاللہ عزوجل। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عزوجل दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर हज़ारों लोग गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर आज नेकियों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं, तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है :

बुरी संगत का वबाल :

बाबुल मदीना (कराची) के मुक़ीम एक नौजवान इस्लामी भाई के तह़रीरी बयान का ख़ुलासा है कि दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं गुनाहों भरी ज़िन्दगी बसर कर रहा था। हमा वक़्त दुन्या की आ़रिज़ी व फ़ानी लज़्ज़ात में मस्त रहना और अपनी ज़िन्दगी के क़ीमती अय्याम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाफ़रमानी में बरबाद करना मेरा मा'मूल बन चुका था। मैं यादे इलाही से इस क़दर दूर था कि नमाज़े पन्जगाना तो कुजा मैं जुमुअ़तुल मुबारका की नमाज़ भी कभी

www.dawateislami.net

कभार ही पढ़ता था। फ़िक्रे आख़िरत से यक्सर ग़ाफ़िल, बुरे दोस्तों की सोहबते बद का शिकार था। इसी वजह से दिन ब दिन मैं गुनाहों की दलदल में धंसता ही चला जा रहा था, नित नई बेहूदगियां सीख कर अपने नफ़्स को तस्कीन देता, सितम बालाए सितम येह कि मेरे दोस्त बदकारी भी करते थे और मुतअ़द्दिद बार मुझे भी इस गन्दे काम की रग़बत दिलाई गई मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से बचा रहा।

अल ग़रज़ मेरे अख़्लाक़ व किरदार इन्तिहाई दाग़दार हो चुके थे, हर वक़्त शैतानी ख़यालात के जाल में फंसा रहता और यादे ख़ुदा से ग़ाफ़िल हो कर मैं अपनी क़ीमती सांसों को बरबादिये आख़िरत में ज़ाएअ़ करता, दिन मुख़्तलिफ़ बुरे कामों की नज़्र हो जाता तो रात चौराहों पर लगी बुरे दोस्तों की मन्डलियों में कट जाती हमारा रोज़ाना का मा'मूल था कि हम शाम होते ही एक जगह जम्अ़ हो जाते और हंसी, मज़ाक़, तन्ज़ और दिल आज़ारी जैसे बुरे अफ़्आ़ल के साथ साथ मोबाइलों में मौजूद फ़ोह्श व उ़रयानी वाली गन्दी गन्दी फ़िल्में देख कर नफ़्सो शैतान को ख़ुश करते, रात गए तक येही सिलसिला रहता। जब गुनाह कर के थक जाते और लोग ख़्वाबे ख़रगोश के मज़े लूट रहे होते तो हमारी मन्डली इख़्तिताम पज़ीर होती और हम में से हर एक इस ह़ालत में घर में दाख़िल होता कि हमारे सरों पर एक गुनाहों की भारी भर कम गठड़ी होती। मेरे क़ल्ब पर एक अ़जब बे सुकूनी त़ारी होती, इसी ह़ालत में ग़फ़्लत की चादर ओढ़ कर सो जाता। आंख उस वक़्त खुलती जब सूरज बड़ी आबो ताब से चमक रहा होता था यूं सब से पहले नमाज़े फ़ज्र क़ज़ा करने का कबीरा गुनाह मेरे नामए आ'माल में दर्ज होता, न जाने अब तक कितनी नमाज़े

www.dawateislami.net

क़ज़ा करने का वबाल सर पर लिये हुवे था मगर मुझे कोई एहसास न था। आख़िर दुन्या में जितना भी जी लूं बिल आख़िर एक दिन मौत का जाम पीना पड़ेगा, अपने दोस्त अह़बाब को छोड़ कर अन्धेरी क़ब्र में उतरना पड़ेगा और अपने बुरे आ'माल की सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

क़िस्मत अच्छी थी जो इस पुर फ़ितन दौर में मुसलमानों की क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी का ज़ेह्न देने वाली तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी का मुश्कबार मदनी माह़ोल मयस्सर आ गया। मदनी माह़ोल में आने की सबील कुछ यूं बनी कि एक दिन ह़स्बे आ़दते बद गुनाहों के आ़दी दोस्त नुमा दुश्मनों के साथ बैठा हुवा था, दरीं असना नमाज़े मग़रिब की अज़ानें फ़ज़ा में गूंजने लगीं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दरबार से हर एक मुनादी उस पाक ज़ात की वह़दानिय्यत और उस के मह़बूब की रिसालत की गवाही देने के साथ साथ मुसलमानों को फ़लाह़ो कामरानी की दा'वत देने लगा। बहुत से मुसलमान हुक्मे इलाही की बजा आवरी के लिये जानिबे मस्जिद रवां दवां थे मगर हम तमाम दोस्त नमाज़ों से यक्सर ग़ाफ़िल हो कर अपनी मौज मस्ती में गुम थे। दरीं असना दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता एक आ़शिक़े रसूल इस्लामी भाई हमारे क़रीब से गुज़रते हुवे रुक गए और हमें नमाज़ से ग़ाफ़िल देख कर क़रीब तशरीफ़ लाए और इन्तिहाई मह़ब्बत भरे अन्दाज़ में सलाम करते हुवे कहने लगे : "नमाज़ का वक़्त हो गया है, आप भी नमाज़ अदा फ़रमा लें।" न जाने उन की दा'वत में ऐसा क्या असर था कि मैं इस क़दर मुतअस्सिर हुवा कि अकेला ही उन के साथ जानिबे मस्जिद बारगाहे इलाही में सर ब सुजूद होने के लिये लरज़ीदा लरज़ीदा क़दमों से चल दिया, सब दोस्त येह देख

www.dawateislami.net

कर बहुत हैरान हुवे मगर उन्हें मस्जिद में जाने की तौफ़ीक़ नसीब न हुई, मस्जिद में पहुंच कर मैं ने वुज़ू किया और उन इस्लामी भाई के साथ नमाज़ पढ़ने के लिये खड़ा हो गया, चूंकि मुझे नमाज़ पढ़ना नहीं आती थी इस लिये उन को देख देख कर नमाज़ अदा करने लगा, एक अ़र्से के बा'द बारगाहे इलाही में सर ब सुजूद होने की सआ़दत मिली थी, नमाज़ अदा करने के बा'द अपने गुनाहों से लिथड़े हुवे काले काले हाथ बारगाहे इलाही में उठा दिये, दुन्या व आख़िरत की बेहतरी त़लब की, जब वापस जाने लगा तो मेरी नज़र मस्जिद में एक त़रफ़ बैठे हुवे चन्द आ़शिक़ाने रसूल पर पड़ी, क़रीब जा कर देखा कि एक सुन्नतों के पाबन्द इस्लामी भाई शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायानाज़ तालीफ़ "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" से इन्तिहाई प्यारे अन्दाज़ में दर्स दे रहे हैं और कई इस्लामी भाई बा अदब बैठ कर दर्स सुनने में मह़्व हैं येह प्यारा मन्ज़र देख कर बहुत अच्छा लगा और मैं भी इ़ल्मे दीन के इस गुलशन में खिलने वाले ख़ुशनूमा फूलों से अपने दिल के गुलदस्ते को सजाने बैठ गया, जूं जूं एक वलिय्ये कामिल की आ़म फ़हम और पुर असर तह़रीर सुनता गया मेरे अन्दर की कैफ़िय्यत बदलती गई, दिल की क़सावत (सख़्ती) नर्मी में बदलने लगी और मैं अपनी बद आ'मालियों के बारे में सोच कर ख़ौफ़ ज़दा हो गया। बे साख़्ता मेरी आंखों से आंसूओं की बरसात शुरूअ़ हो गई जिन से दिल की बन्जर ज़मीन सैराब होने लगी।

दर्स के इख़्तिताम पर मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने बड़े ही प्यारे अन्दाज़ में ढेरों ढेर नेकियां कमाने के लिये दा'वते इस्लामी के

www.dawateislami.net

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में जाने की तरग़ीब कुछ ऐसे अन्दाज़ में दिलाई कि मैं ने हाथों हाथ जाने की निय्यत कर ली चुनान्चे, दुआ़ के बा'द मैं इजतिमाअ़ में जाने के लिये मस्जिद ही में रुक गया और दीगर इस्लामी भाई इजतिमाअ़ में जाने की तय्यारी में मश्ग़ूल हो गए कोई गाडी के लिये राबित़ा कर रहा है तो कोई खाने की तरकीब बना रहा है और कोई घर घर जा कर इजतिमाअ़ की दा'वत दे कर लोगों को ला रहा है तो कोई मदनी क़ाफ़िले की अ़ज़ीम निय्यत से अपना ज़ादे राह का बेग उठाए हुवे है येह अ़जब मन्ज़र देख कर मैं बहुत ह़ैरान हुवा कि येह भी तो मेरी त़रह़ नौजवान हैं जिन्हें अपनी क़ब्रो आख़िरत की इस क़दर फ़िक्र है और एक मैं हूं कि अपनी ज़िन्दगी गुनाहों में बरबाद कर रहा हूं थोड़ी ही देर में तमाम आ़शिक़ाने रसूल जम्अ़ हो गए और सब गाड़ी पर सुवार होने लगे मैं भी उन के पीछे पीछे सुवार हो गया एक अपनाइय्यत भरा माह़ोल था ।

हर एक दूसरे से निहायत ही प्यारे अन्दाज़ में ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त कर रहा था जब सब इस्लामी भाई गाड़ी में सुवार हो गए तो गाड़ी फ़ैज़ाने मदीना की जानिब रवाना हुई एक आ़शिक़े रसूल ने बुलन्द आवाज़ से सलातो सलाम और सफ़र की दुआ़ पढ़ाना शुरूअ़ की उन के साथ दीगर इस्लामी भाई भी बुलन्द आवाज़ से पढ़ने लगे । थोड़ी देर बा'द गाड़ी एक जगह रुक गई । तमाम आ़शिक़ाने रसूल उतरने लगे, मैं भी उन के साथ उतर गया और उन के पीछे पीछे आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना की पुर कैफ़ फ़ज़ाओं में पहुंच गया, जूंही मैं फ़ैज़ाने मदीना में दाख़िल हुवा कसीर बा इमामा आ़शिक़ाने रसूल को देख कर बहुत अच्छा लगा, मैं क़ल्बी सुकून मह़सूस करने लगा । चुनान्चे, मैं भी होने वाले पुर सोज़ बयान की

www.dawateislami.net

बरकतें समेटने के लिये आ़शिक़ाने रसूल के क़रीब में जा बैठा और तवज्जोह से बयान सुनने में मह्व हो गया। बयान के बा'द तमाम आ़शिक़ाने रसूल यक ज़बान हो कर अपने रब عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़मत व किब्रियाई की सदाएं बुलन्द करने लगे। मैं भी ज़िक्रे इलाही की लज़्ज़त से माला माल होने लगा, फिर दुआ़ के आदाब बयान किये गए और एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने ऐसी पुर सोज़ दुआ़ कराई कि मजमअ़ पर रिक़्क़त त़ारी हो गई।

हर एक अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से रह़मत व मग़्फ़िरत की भीक ह़ासिल करने के लिये दस्त दराज़ किये बैठा था बहुत सी आंखें ख़ौफ़े ख़ुदा के बाइ़स अश्क बहा रही थीं और फ़ज़ा ख़ाइफ़ीन के रोने की आवाज़ों से गूंज रही थी। ख़ौफ़े ख़ुदा में रोने वाले आ़शिक़ाने रसूल की पुर सोज़ सदाओं ने मुझ पर ऐसी रिक़्क़त त़ारी की, कि मेरी ह़ालत भी ग़ैर हो गई, रोते रोते मेरी हिचकियां बन्ध गई, आंसू थे कि थमने का नाम नहीं ले रहे थे। मैं ने ज़िन्दगी की बक़िय्या सांसों को ग़नीमत जानते हुवे अपने साबिक़ा गुनाहों से सच्ची तौबा की और गुनाहों भरी ज़िन्दगी छोड़ कर दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल से रिश्ता जोड़ने का अ़ज़्मे मुसम्मम कर लिया। इख़्तितामे दुआ़ पर मैं अपने आप को हल्का फुल्का मह़सूस कर रहा था गोया एक बहुत भारी वज़्न मेरे दिलो दिमाग़ से उतर गया हो। एक अ़जीब कैफ़ो सुरूर की कैफ़िय्यत मुझ पर त़ारी थी, नेकियों से मह़ब्बत मेरे दिल में पैदा हो चुकी थी। चुनान्चे, मैं ने इजतिमाअ़ से वापसी पर नमाज़ों की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी और नेकी की दा'वत की भी धूमें मचाने लगा। मेरे अन्दर बरपा होने वाले मदनी इन्क़िलाब

www.dawateislami.net

ने हर आंख को हैरत में डाल दिया था लेकिन येह ह़क़ीक़त थी कि मैं सुधरने के लिये कमरबस्ता हो चुका था और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा **मदनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है"** को अपना नस्बुल ऐ़न बना लिया था। सुन्नतों पर अ़मल के साथ साथ दूसरों को सुन्नतों पर अ़मल की तरग़ीब देने लगा। दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल की बरकत से मेरे अख़्लाक़ व किरदार अच्छे हो गए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अब हर एक से अच्छे अख़्लाक़ से पेश आना, बड़ों का अदब करना और छोटों पर शफ़्क़त करना मेरा मा'मूल बन गया है। मुझ में पैदा होने वाली इस नुमायां तब्दीली के बाइ़स लोग दा'वते इस्लामी को दुआ़एं देते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मदनी माह़ोल इख़्तियार करने की बरकत से मुआ़शरे में इ़ज़्ज़त की निगाह से देखा जाने लगा हूं। वोह लोग जो कल तक ह़क़ारत से देखा करते थे अब रश्क भरी नज़रों से देखने लगे हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर अ़लाक़ाई मुशावरत ख़ादिम (निगरान) होने के साथ साथ अ़लाक़े की जामेअ़ मस्जिद में इमामत व ख़ित़ाबत के फ़राइज़ सर अन्जाम दे रहा हूं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे मोह़सिन इस्लामी भाई को ख़ूब ख़ूब बरकतें अ़त़ा फ़रमाए और मुझे ता दमे मर्ग ग़ुलामिये अमीरे अहले सुन्नत और मदनी माह़ोल में इस्तिक़ामत मरह़मत फ़रमाए।(1)

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1).....बुरी संगत का वबाल, स. 1।

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने, दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल और अच्छी सोहबत की बरकत से कई गुनाहों से नजात मिल गई। अगर आप भी बातिनी गुनाहों और हलाकत में डालने वाले आ'माल से बचना चाहते हैं तो नेक परहेज़गार लोगों की सोहबत इख़्तियार कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन लोगों की सोहबत की बरकत से एक न एक दिन मोहलिकात से नजात मिल ही जाएगी। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारी, हमारे मां बाप की और सारी उम्मत की मग़फ़िरत फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी तमाम ग़लतियां और सारे ज़ाहिरी व बातिनी गुनाह मुआफ़ फ़रमा, नेक अमल का जज़्बा दे, हमें परहेज़गार और मां बाप का फ़रमां बरदार बना। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपना और अपने मदनी हबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुख़्लिस आशिक़ बना। हमें गुनाहों की बीमारियों से शिफ़ा अता फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में इस्तिक़ामत अता फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा जल्वए महबूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मदनी हबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मदीने की ख़ुश्बूदार ठन्डी ठन्डी हवाओं का वासिता हमारी जाइज़ दुआएं क़बूल फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

मज़ामिन	सफ़्हा	मज़ामिन	सफ़्हा
इजमाली फ़ेहरिस्त	6	(3)..... हसद	43
अल मदीनतुल इल्मिय्या	7	हसद की ता'रीफ़	43
बातिनी गुनाहों की तबाहकारियां (पेश लफ़्ज़)	9	आयते मुबारका	43
47 बातिनी मोहलिकात की ता'रीफ़ात	17	हदीसे मुबारका : हसद नेकियों को खा जाता है	44
बातिनी मोहलिकात	23	हसद का हुक्म	44
सेंतालीस (47) बातिनी मोहलिकात के नाम	24	हिकायत : हासिद का इब्रतनाक अन्जाम	44
बातिनी मोहलिकात से बचाव के जुम्ला इलाज	25	हसद के चौदह इलाज	50
(1)....रियाकारी	27	(4)..... बुग़्ज़ो कीना	53
"रियाकारी" की ता'रीफ़	27	बुग़्ज़ो कीना की ता'रीफ़	53
आयते मुबारका	28	आयते मुबारका	53
हदीसे मुबारका : रिया शिर्के असग़र है	29	हदीसे मुबारका : बुग़्ज़ रखने वालों से बचो	54
रियाकार हाफ़िज़, आलिम, शहीद और सदक़ा करने		बुग़्ज़ो कीना का हुक्म	54
वाले का अन्जाम	29	हिकायत : क़ब्र काले सांपों से भर गई	54
रियाकारी का हुक्म	31	बुग़्ज़ो कीना के छे इलाज	55
हिकायत : ऐ मालिक तुझे अब तौबा करनी चाहिये	31	(5)..... हुब्बे मद्ह	57
रियाकारी के दस इलाज	33	हुब्बे मद्ह की ता'रीफ़	57
(2).....उज्ब या'नी ख़ुद पसन्दी	36	आयते मुबारका	57
उज्ब या'नी ख़ुद पसन्दी की ता'रीफ़	36	हदीसे मुबारका : हुब्बे मद्ह बरबादिये आ'माल का सबब	58
आयते मुबारका :	37	हुब्बे मद्ह का हुक्म	58
हदीसे मुबारका : ख़ुद पसन्दी का नुक़्सान	38	हिकायत : हुब्बे मद्ह से बचाव का अनोखा अन्दाज़	60
उज्ब या'नी ख़ुद पसन्दी का हुक्म	38	हुब्बे मद्ह के अस्बाब व इलाज :	61
ख़ुद पसन्दी की अहम वज़ाहत	38	(6)..... हुब्बे जाह	62
हिकायत : ख़ुद पसन्दी में मुब्तला मुरीद की इस्लाह	39	हुब्बे जाह की ता'रीफ़	62
ख़ुद पसन्दी का एक मुजर्रब इलाज	41	आयते मुबारका	63
ख़ुद पसन्दी के आठ अस्बाब व इलाज	42	हदीसे मुबारका : बुरा होने के लिये इतना ही काफ़ी है	63

www.dawateislami.net

हुब्बे जाह का हुक्म	64	तलबे शोहरत का हुक्म	86
हिकायत : अजीब अन्दाज़ में नफ़्स की गिरिफ़्त	65	शोहरत व नामवरी कब क़ाबिले मज़म्मत नहीं ?	87
हुब्बे जाह की लज़्ज़त इबादत की मशक़्क़त आसान कर देती है	65	हिकायत, शोहरत के लिये आ'माल करने की आफ़तें	87
		तलबे शोहरत के छे अस्बाब व इलाज	91
हुब्बे जाह के मुतअ़ल्लिक़ अहम तरीन मदनी फूल	67	**(9)....ता'ज़ीमे उमरा**	92
(7)....महब्बते दुन्या	71	ता'ज़ीमे उमरा की ता'रीफ़	92
महब्बते दुन्या की ता'रीफ़	71	आयते मुबारका	92
आयते मुबारका	71	हदीसे मुबारका : जहन्नम की ख़तरनाक वादी से पनाह	93
हदीसे मुबारका : दुन्या से महब्बत करने वालों की मज़म्मत	71	ता'ज़ीमे उमरा के बारे में तम्बीह	94
महब्बते दुन्या के बारे में तम्बीह	72	हिकायत : दुन्यादार की दा'वत कैसे क़बूल करूं ?	94
हिकायत : दुन्या से महब्बत का अन्जाम	72	ता'ज़ीमे उमरा के चार अस्बाब और इन का इलाज	95
दुन्या का मा'ना	75	**(10)....तह़क़ीरे मसाकीन**	97
दुन्या क्या है ?	76	तह़क़ीरे मसाकीन की ता'रीफ़	97
कौन सी दुन्या अच्छी, कौन सी क़ाबिले मज़म्मत	76	आयते मुबारका	97
दुन्या का कौन सा काम अल्लाह तआ़ला के लिये है और कौन सा नहीं ?	77	हदीसे मुबारका : मुसलमान भाई को ह़क़ारत से न देखो	98
		तह़क़ीरे मसाकीन के बारे में तम्बीह	98
दुन्यादार की ता'रीफ़	78	हिकायत : ग़रीबों से महब्बत का इन्आ़म	98
दुन्यावी अश्या की लज़्ज़तों की हैरत अंगेज़ हक़ीक़त	78	तह़क़ीरे मसाकीन के चार अस्बाब व इलाज	99
इब्लीस की बेटी	78	**(11)....इत्तिबाए शहवात**	101
नीली आंखों वाली बद सूरत बुढ़िया	79	इत्तिबाए शहवात की ता'रीफ़	101
दुन्या मीठी सर सब्ज़ है	80	आयते मुबारका	101
दुन्या के तीन बेहतरीन काम	80	हदीसे मुबारका : हलाकत में डालने वाली चीजें	102
चार चीज़ों के इलावा दुन्या मलऊ़न है	81	इत्तिबाए शहवात के बारे में तम्बीह	102
दुन्या मच्छर के पर से भी बढ़ कर ज़लील है	82	हिकायत : जाइज़ ख़्वाहिश पूरी करने पर अनोखी सज़ा	102
महब्बते दुन्या का इलाज	83	इत्तिबाए शहवात के सात अस्बाब व इलाज	104
(8)....तलबे शोहरत	85	**(12)....मुदाहनत**	107
तलबे शोहरत की ता'रीफ़	85	मुदाहनत की ता'रीफ़	107
आयते मुबारका	85	आयते मुबारका	107
हदीसे मुबारका : तालिबे शोहरत के लिये रुस्वाई	86		

www.dawateislami.net

हदीसे मुबारका : मुदाहनत करने वाले की मिसाल	108	आयते मुबारका	128
मुदाहनत का हुक्म	109	हदीसे मुबारका : बुख़्ल हलाकत का सबब है	129
हिकायत : एक आलिम बाप का इब्रतनाक अन्जाम	109	बुख़्ल के बारे में तम्बीह	130
मुदाहनत के तीन अस्बाब व इलाज	110	हिकायत : बख़ील या'नी कन्जूस औरत का अन्जाम	130
(13)..... कुफ़्राने नेअ़म	112	बुख़्ल के पांच अस्बाब और इन का इलाज	131
कुफ़्राने नेअ़म की ता'रीफ़	112	(16).....तूले अमल	133
आयते मुबारका	113	तूले अमल की ता'रीफ़	133
हदीसे मुबारका : ने'मतों का इज़्हार न करना		आयते मुबारका	133
कुफ़्राने ने'मत है	113	हदीसे मुबारका : लम्बी लम्बी उम्मीदें दुन्या	
कुफ़्राने ने'म के बारे में तम्बीह	113	की महब्बत का सबब	133
हिकायत : तंगदस्ती में भी शुक्र	114	तूले अमल का हुक्म	134
कुफ़्राने नेअ़म के तीन अस्बाब व इलाज	114	हिकायत : बादशाह की तौबा	135
(14).....हिर्स	116	तूले अमल के अस्बाब व इलाज	138
हिर्स की ता'रीफ़	116	(17).....सूए ज़न (बद गुमानी) य	140
आयते मुबारका	116	सूए ज़न या'नी बद गुमानी की ता'रीफ़	140
हदीसे मुबारका : इब्ने आदम की हिर्स	117	आयते मुबारका	141
हिर्स का हुक्म	118	हदीसे मुबारका : मोमिन की बद गुमानी अल्लाह से बद गुमानी	142
हर हिर्स बुरी नहीं होती	118	बद गुमानी का हुक्म	142
(1) कौन सी हिर्स महमूद है ?	119	बद गुमानी के हराम होने की दो सूरतें	143
(2) किन चीज़ों की हिर्स मज़्मूम है ?	119	बद गुमानी क्यूं हराम है ?	145
(3) कौन सी हिर्स महज़ मुबाह है ?	119	हिकायत : बद गुमानी करने वाले सौदागर की तौबा	146
हिर्से मुबाह कब हिर्से महमूद बनेगी और कब मज़्मूम ?	120	बद गुमानी के सात इलाज	148
मुबाह हिर्स के महमूद या मज़्मूम बनने की एक मिसाल	121	(18).....इनादे हक़	153
हिकायत : सोने का अन्डा देने वाली नागन	122	इनादे हक़ की ता'रीफ़	153
नेकियों की हिर्स बढ़ाइये	125	आयते मुबारका	153
गुनाहों की हिर्स मज़्मूम है	126	हदीसे मुबारका : दो आंखों वाली जहन्नमी गर्दन	153
गुनाहों की हिर्स से बचने के तीन इलाज	127	इनादे हक़ के बारे में तम्बीह	154
(15)....बुख़्ल	128	हिकायत : सब से पहले शैतान ने इनादे हक़ किया	154
बुख़्ल की ता'रीफ़	128	इनादे हक़ के पांच अस्बाब व इलाज	155

www.dawateislami.net

(19).....**इसरारे बातिल**	157	ख़ियानत के छे अस्बाब व इलाज	177
इसरारे बातिल की ता'रीफ़	157	(23).....**ग़फ़्लत**	179
आयते मुबारका	158	ग़फ़्लत की ता'रीफ़	179
हदीसे मुबारका : गुनाहों पर डटे रहने वाले की हलाकत	158	आयते मुबारका	180
इसरारे बातिल के बारे में तम्बीह	159	हदीसे मुबारका : मुझे तुम पर ग़फ़्लत का ख़ौफ़ है	180
हिकायत : बद बख़्ती की अनोखी मिसाल	159	ग़फ़्लत के बारे में तम्बीह	181
इसरारे बातिल के सात अस्बाब व इलाज	161	हिकायत : ग़ाफ़िल आबिद की ग़फ़्लत से तौबा का इन्आम	181
(20).....**मक्रो फ़रेब**	163	(24).....**क़स्वत**	183
मक्रो फ़रेब की ता'रीफ़	163	क़स्वत या'नी दिल की सख़्ती की ता'रीफ़	183
आयते मुबारका	163	आयते मुबारका	183
हदीसे मुबारका : मक्रो फ़रेब करने वाला मलऊन है	166	हदीसे मुबारका : दिल की सख़्ती अमल को ज़ाएअ करने का सबब	184
मक्रो फ़रेब का हुक्म	166	क़स्वत या'नी दिल की सख़्ती के बारे में तम्बीह	185
हिकायत : बाबा दिल देखता है	167	हिकायत : सख़्त दिल डाकू का इब्रतनाक अन्जाम	185
मक्र या'नी फ़रेब के चार अस्बाब व इलाज	169	क़सावते क़ल्बी के तीन अस्बाब व इलाज	186
(21).....**ग़दर (बद अहदी)**	170	(25).....**तमअ (लालच)**	190
बद अहदी की ता'रीफ़	170	तमअ (लालच) की ता'रीफ़	190
आयते मुबारका	170	आयते मुबारका	190
हदीसे मुबारका : बद अहदी करने वाला मलऊन है	172	हदीसे मुबारका, तमअ या'नी लालच से बचते रहो	190
ग़दर या'नी बद अहदी का हुक्म	172	तमअ (लालच) के बारे में तम्बीह	191
हिकायत : बद अहदी क़त्लो ग़ारत का सबब कैसे बनी?	172	हिकायत : मालो दौलत की तमअ का इब्रतनाक अन्जाम	191
ग़दर (बद अहदी) के चार अस्बाब व इलाज	173	(26).....**तमल्लुक़ (चापलूसी)**	193
(22).....**ख़ियानत**	175	तमल्लुक़ (चापलूसी) की ता'रीफ़	193
ख़ियानत की ता'रीफ़	175	आयते मुबारका	194
आयते मुबारका	175	हदीसे मुबारका : चापलूसी के सबब ग़ैरत और दीन जाता रहा	194
हदीसे मुबारका : ख़ियानत मुनाफ़क़त की अलामत है	176	तमल्लुक़ (चापलूसी) के बारे में तम्बीह	195
ख़ियानत का हुक्म	176	हिकायत : मैं मालदारों की चापलूसी क्यूं करूं ?	195
हिकायत : ख़ियानत करने वाले का इब्रतनाक अन्जाम	176	तमल्लुक़ (चापलूसी) के अस्बाब व इलाज	197

www.dawateislami.net

(27).....ए'तिमादे ख़ल्क़	199	ह़दीसे मुबारका : सरकश इन्सान की ज़िल्लतो ख़्वारी	214
ए'तिमादे ख़ल्क़ की ता'रीफ़	199	जुरअत अ़लल्लाह के बारे में तम्बीह	214
आयते मुबारका	199	ह़िकायत : सरकशी का इलाज एक वलिय्युल्लाह के हाथ	214
ह़दीसे मुबारका : जिस पर तवक्कुल उसी की किफ़ायत	199	जुरअत अ़लल्लाह के अस्बाब व इलाज	217
ए'तिमादे ख़ल्क़ के बारे में तम्बीह	200	(31).....निफ़ाक़ (मुनाफ़क़त)	219
ह़िकायत : मख़्लूक़ पर ए'तिमाद न करने का सिला	200	निफ़ाक़ (मुनाफ़क़त) की ता'रीफ़	219
ए'तिमादे ख़ल्क़ का सबब व इलाज	201	आयते मुबारका	219
(28).....निस्याने ख़ालिक़	202	ह़दीसे मुबारका : मुनाफ़िक़ की चार अ़लामतें	220
निस्याने ख़ालिक़ की ता'रीफ़	202	निफ़ाक़ (मुनाफ़क़त) के बारे में तम्बीह	220
आयते मुबारका	202	ह़िकायत : निफ़ाक़ से बचने का मदनी अन्दाज़	221
ह़दीसे मुबारका : ख़ालिक़ को भूल जाना उस		निफ़ाक़ के अस्बाब और इन का इलाज	221
की नाशुक्री है।	203	निफ़ाक़े ए'तिक़ादी के दो अस्बाब और इन का इलाज	221
ह़ुक़ूक़ुल्लाह में ग़फ़्लत करने वाले की मिसाल	204	निफ़ाक़े अ़मली के तीन अस्बाब और इन का इलाज	223
सब से बड़ा सख़ी और बख़ील	204	(32).....इत्तिबाए शैत़ान	224
निस्याने ख़ालिक़ के बारे में तम्बीह	205	इत्तिबाए शैत़ान की ता'रीफ़	224
ह़िकायत : ए'तिमादे ख़ालिक़ और निस्याने		आयते मुबारका	225
ख़ल्क़ की तारीख़ी मिसाल	205	ह़दीसे मुबारका : शैत़ान की इत्तिबाअ़ न करने	
निस्याने ख़ालिक़ के सात अस्बाब व इलाज	206	का इन्आ़म	225
(29).....निस्याने मौत	209	इत्तिबाए शैत़ान के बारे में तम्बीह	226
निस्याने मौत की ता'रीफ़	209	ह़िकायत : शैत़ान की इत्तिबाअ़ करने का इ़ब्रतनाक	
आयते मुबारका	209	अन्जाम	226
ह़दीसे मुबारका : सब से अ़क़्लमन्द मोमिन	209	इत्तिबाए शैत़ान के चार अस्बाब व इलाज	229
निस्याने मौत के बारे में तम्बीह	210	(33).....बन्दगिये नफ़्स	231
ह़िकायत : ऐ वीरान मह़ल ! तेरे मकीन		बन्दगिये नफ़्स की ता'रीफ़	231
कहां हैं ?	210	आयते मुबारका	232
निस्याने मौत के नव इलाज	211	ह़दीसे मुबारका : समझदार कौन....?	232
(30).....जुरअत अ़लल्लाह	213	बन्दगिये नफ़्स के बारे में तम्बीह	232
जुरअत अ़लल्लाह की ता'रीफ़	213	ह़िकायत : बन्दगिये नफ़्स का इ़ब्रतनाक अन्जाम	232
आयते मुबारका	213	बन्दगिये नफ़्स के सात अस्बाब व इलाज	235

www.dawateislami.net

(34).....रग़बते बत़ालत	237	जज़्अ़ के बारे में तम्बीह	257
रग़बते बत़ालत की ता'रीफ़	237	हिकायत : जज़्अ़ से बचने का इन्आ़म	257
आयते मुबारका	237	बे सब्री के 7 इलाज	259
ह़दीसे मुबारका : बद तरीन शख़्स	237	**(38).....अ़दमे ख़ुशूअ़**	260
रग़बते बत़ालत के बारे में तम्बीह	238	अ़दमे ख़ुशूअ़ की ता'रीफ़	260
हिकायत : बेहयाई की त़रफ़ मैलान का अन्जाम	238	आयते मुबारका	260
रग़बते बत़ालत के छे अस्बाब व इलाज	240	ह़दीसे मुबारका : मुनाफ़िक़ाना ख़ुशूअ़ से अल्लाह की पनाह	261
(35).....कराहते अ़मल	243	अ़दमे ख़ुशूअ़ के बारे में तम्बीह	261
कराहते अ़मल की ता'रीफ़	243	हिकायत : अ़दमे ख़ुशूअ़ शैत़ान का मोहलिक हथयार	262
आयते मुबारका	243	अ़दमे ख़ुशूअ़ के चार अस्बाब व इलाज	263
कराहते अ़मल के बारे में तम्बीह	244	**(39).....ग़ज़ब लिन्नफ़्स**	264
हिकायत : मरने से क़ब्ल नौजवान की दाढ़ी काट डाली	244	ग़ज़ब लिन्नफ़्स की ता'रीफ़	264
		आयते मुबारका	264
कराहते अ़मल के अस्बाब व इलाज	246	ह़दीसे मुबारका : ग़ुस्सा न किया करो	265
(36).....क़िल्लते ख़शिय्यत	248	ग़ज़ब लिन्नफ़्स का हुक्म	265
क़िल्लते ख़शिय्यत की ता'रीफ़	248	क्या ग़ुस्सा मुत़लक़ ह़राम है ?	265
आयते मुबारका	248	हिकायत : नफ़्स की ख़ात़िर ग़ुस्सा करने का अन्जाम	267
ह़दीसे मुबारका : ख़ौफ़े ख़ुदा रिज़्क़ और उ़म्र में इज़ाफ़े का सबब	248	अमीरे अहले सुन्नत के बयान कर्दा ग़ुस्से के तेरह इलाज	269
		(40).....तसाहुल फ़िल्लाह	271
क़िल्लते ख़शिय्यत के बारे में तम्बीह	249	तसाहुल फ़िल्लाह की ता'रीफ़	271
काश ! ख़ौफ़े ख़ुदा नसीब हो जाए	249	आयते मुबारका	271
ख़ौफ़े ख़ुदा से क्या मुराद है ?	250	ह़दीसे मुबारका : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ढील	271
सात सह़ाबा के रिक़्क़त अंगेज़ कलिमात	251	तसाहुल फ़िल्लाह के बारे में तम्बीह	272
हिकायत : ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब बेहोश हो गए	252	हिकायत : बनी इस्राईल का एक गुनहगार	272
क़िल्लते ख़शिय्यत के छे इलाज	253	तसाहुल फ़िल्लाह के चार अस्बाब व इलाज	273
(37).....जज़्अ़ (वावेला करना)	256	**(41).....तकब्बुर**	275
जज़्अ़ की ता'रीफ़	256	तकब्बुर की ता'रीफ़	275
आयते मुबारका	256	आयते मुबारका	276
ह़दीसे मुबारका : जज़्अ़ करने का वबाल	256	ह़दीसे मुबारका : मुतकब्बिरीन के लिये बरोज़े	

www.dawateislami.net

क़ियामत रुस्वाई	276	हिकायत : अमीरे अहले सुन्नत का मोहतात़ अन्दाज़	307
तकब्बुर की तीन क़िस्में और इन का हुक्म	277	इस्राफ़ के अस्बाब व इलाज	308
हिकायत : तकब्बुर के सबब तमाम आ'माल		(45).....ग़मे दुन्या	312
ज़ाएअ़ हो गए	279	"ग़मे दुन्या" की ता'रीफ़	312
तकब्बुर के आठ अस्बाब व इलाज	279	आयते मुबारका	312
(42).....बद शुगूनी	284	ह़दीसे मुबारका, दुन्यवी ग़मों से फ़रागत पा लो	313
बद शुगूनी की ता'रीफ़	284	ग़मे दुन्या के बारे में तम्बीह	314
शुगून की क़िस्में	284	हिकायत : ने'मत पर ग़मगीन और मुसीबत पर	
आयते मुबारका	284	ख़ुश होने वाली औरत	315
ह़दीसे मुबारका : बद शुगूनी लेने वाला हम में से नहीं	285	ग़मे दुन्या के तीन अस्बाब व इलाज	317
बद शुगूनी का हुक्म	286	(46).....तजस्सुस	318
एक अहम तरीन वज़ाहत	286	तजस्सुस की ता'रीफ़	318
हिकायत : बद शुगूनी लेना मेरा वहम था	287	आयते मुबारका	319
बद शुगूनी के पांच अस्बाब व इलाज	289	ह़दीसे मुबारका, महशर की रुस्वाई का सबब	320
(43).....शमातत	293	तजस्सुस के बारे में तम्बीह	320
शमातत की ता'रीफ़	293	तजस्सुस की मुख़्तलिफ़ सूरतें	321
आयते मुबारका	293	हिकायत : तजस्सुस के सबब वापस आ गए	322
ह़दीसे मुबारका : अपने भाई की शमातत न कर	295	बरहना करने से बढ़ कर गुनाह	323
शमातत का हुक्म	296	तजस्सुस के सात अस्बाब व इलाज	323
हिकायत : उम्र भर के लिये तिजारत छोड़ दी	296	(47).....मायूसी	327
शमातत व दीगर गुनाहों से नजात मिल गई	297	मायूसी की ता'रीफ़	327
शमातत के छे अस्बाब व इलाज	298	आयते मुबारका	327
(44).....इस्राफ़	302	ह़दीसे मुबारका : मायूसी कबीरा गुनाह है	328
इस्राफ़ की ता'रीफ़	302	मायूसी का हुक्म	328
आयते मुबारका	302	हिकायत : मायूसी की सज़ा	329
इस्राफ़ की मुख़्तलिफ़ सूरतें	304	मायूसी के तीन अस्बाब व इलाज	330
इस्राफ़ से मुतअ़ल्लिक़ एक अहम वज़ाहत	304	बुरी संगत का वबाल	332
ह़दीसे मुबारका : बहती नहर पर भी इस्राफ़	306	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	340
इस्राफ़ का हुक्म	307	माख़ज़ो मराजेअ़	347

www.dawateislami.net

ماخذ و مراجع

قرآن مجید	کلام الٰہی	---
نام کتاب	**مؤلف/مصنف/متوفی**	**مطبوعات**
کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ، کراچی
تفسیر طبری	ابوجعفر محمد بن جریر الطبری، متوفی ۳۱۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۰ھ
تفسیر خازن	علاء الدین علی بن محمد بغدادی، متوفی ۷۴۱ھ	المطبعۃ المیمنیہ مصر
الدر المنثور	امام جلال الدین بن ابوبکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت
روح البیان	مولی الروم شیخ اسماعیل حقی بروسی، متوفی ۱۱۳۷ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت
الصاوی علی الجلالین	امام احمد بن محمد صاوی، متوفی ۱۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۱ھ
روح المعانی	ابوالفضل شہاب الدین سید محمود آلوسی، متوفی ۱۲۷۰ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت
التفسیرات الاحمدیہ	شیخ احمد بن ابی سعید المعروف بملا جیون جونپوری متوفی ۱۱۳۰ھ	پشاور
خزائن العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
نور العرفان	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	پیر بھائی کمپنی کراچی
مفردات الفاظ القرآن	امام راغب اصفہانی، متوفی ۴۲۵ھ	دار القلم، دمشق
عجائب القرآن	مولانا عبد المصطفیٰ اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
مصنف عبد الرزاق	امام ابوبکر عبد الرزاق بن ہمام بن نافع صنعانی، متوفی ۲۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
مسند احمد	ابو عبد اللہ امام احمد بن محمد بن حنبل شیبانی، متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت
صحیح البخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
صحیح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار المغنی عرب شریف
سنن ابن ماجہ	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ	دار المعرفہ بیروت
سنن ابی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت
سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

صحیح ابن حبان	ابوحاتم محمد بن حبان تمیمی الداری، متوفی ۳۵۴ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
المعجم الصغیر	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
المعجم الکبیر	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت
المعجم الاوسط	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
حلیۃ الاولیاء	حافظ ابونعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
تاریخ ابن عساکر	امام علی بن حسن المعروف ابن عساکر، متوفی ۵۷۱ھ	دارالفکر بیروت
مجمع الزوائد	حافظ نورالدین علی بن ابی بکر ہیثمی، متوفی ۸۰۷ھ	دارالفکر بیروت
الجامع الصغیر	امام جلال الدین بن ابوبکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
کنز العمال	علامہ علی متقی بن حسام الدین ہندی برہان پوری، متوفی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
عمدۃ القاری	امام بدرالدین ابومحمد محمود بن احمد عینی، متوفی ۸۵۵ھ	دارالفکر بیروت
مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دارالفکر بیروت
فیض القدیر	علامہ محمد عبدالرءوف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
مرآۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
اشعۃ اللمعات	شیخ محقق عبدالحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	کوئٹہ پاکستان
ردالمحتار مع الدرالمختار	محمد امین ابن عابدین شامی، متوفی ۱۲۵۲ھ	دارالمعرفہ بیروت
فتاویٰ رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن لاہور
بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
الموسوعۃ لابن ابی الدنیا	عبد اللہ بن محمد بغدادی معروف بابن ابی الدنیا، متوفی ۲۸۱ھ	المکتبۃ العصریہ بیروت
قوت القلوب	شیخ ابوطالب محمد بن علی مکی، متوفی ۳۸۶ھ	مرکز اہلسنت ہند ۱۴۲۳ھ
الرسالۃ القشیریۃ	امام ابوالقاسم عبدالکریم بن ہوازن قشیری، متوفی ۴۶۵ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
کشف المحجوب	علی ہجویری المعروف داتا گنج بخش، متوفی ۵۰۰ھ	مرکز الاولیاء لاہور
مکاشفۃ القلوب	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت

www.dawateislami.net

احیاء علوم الدین	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار صادر بیروت
لباب الاحیاء	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
احیاء العلوم	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
منہاج العابدین	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
کیمیائے سعادت	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	انتشارات گنجینہ تہران
منہاج العابدین	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
عیون الحکایات	امام ابو الفرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
عیون الحکایات	امام ابو الفرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
تلبیس ابلیس	امام ابو الفرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتاب العربی بیروت ۱۴۲۳ھ
نزھۃ المجالس	علامہ عبد الرحمن بن عبد السلام صفوری شافعی، متوفی ۸۹۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
الروض الفائق	الشیخ شعیب حریفیش، متوفی ۸۱۰ھ	کوئٹہ پاکستان
حکایتیں اور نصیحتیں	الشیخ شعیب حریفیش، متوفی ۸۱۰ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
المنبہات	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	پشاور پاکستان
شرح الصدور	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند
تنبیہ المغترین	امام عبد الوہاب بن احمد شعرانی، متوفی ۹۷۳ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۵ھ
الزواجر عن اقتراف الکبائر	ابو العباس احمد بن محمد بن محمد بن علی بن حجر ہیتمی متوفی ۹۷۴ھ	دار المعرفہ بیروت
جہنم میں لے جانے والے اعمال	ابو العباس احمد بن محمد بن محمد بن علی بن حجر ہیتمی متوفی ۹۷۴ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
الحدیقۃ الندیۃ	عبد الغنی بن اسماعیل نابلسی، متوفی ۱۱۴۳ھ	پشاور پاکستان
اصلاح اعمال	عبد الغنی بن اسماعیل نابلسی، متوفی ۱۱۴۳ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
تذکرۃ الاولیاء	شیخ فرید الدین عطار، متوفی ۶۰۶/۶۲۶ھ	انتشارات گنجینہ تہران
اتحاف السادۃ المتقین	محمد بن محمد بن عبد الرزاق معروف بمرتضی زبیدی، متوفی ۱۲۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
التوبیخ والتنبیہ	امام عبد اللہ بن محمد بن جعفر بن حیان، متوفی ۳۶۹ھ	مکتبۃ الفرقان
بریقہ محمودیہ شرح طریقہ محمدیہ	مولانا ابو سعید الخادمی	شرکت صحافیہ عثمانیہ ۱۳۱۶ھ

www.dawateislami.net

الزھد وقصر العمل	الشیخ اسعد محمد سعید الصاغرجی	مکتبۃ الغزالی دمشق
نیکی کی دعوت	امیرِ اہلسنت بانیٔ دعوتِ اسلامی مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
جہنم کے خطرات	مولانا عبد المصطفٰے اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
آدابِ مرشدِ کامل	المدینۃ العلمیۃ (شعبہ اصلاحی کتب)	مکتبۃ المدینہ کراچی
کتاب التوابین	امام موفق الدین عبد اللہ بن احمد بن قدامہ المقدسی، متوفی ۶۲۰	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۰۷ھ
بدگمانی	المدینۃ العلمیۃ (شعبہ اصلاحی کتب)	مکتبۃ المدینہ کراچی
حرص	المدینۃ العلمیۃ (شعبہ اصلاحی کتب)	مکتبۃ المدینہ کراچی
خوفِ خدا	المدینۃ العلمیۃ (شعبہ اصلاحی کتب)	مکتبۃ المدینہ کراچی
روض الریاحین	امام عبد اللہ بن اسعد الیافعی، متوفی ۷۶۸ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۱ھ
مدارج النبوۃ	شیخ عبد الحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	نوریہ رضویہ لاہور ۱۹۹۷ء
تذکرہ محدث اعظم پاکستان	مفتی جلال الدین قادری	ضیاء القرآن لاہور ۲۰۰۵ء
ظلم کا انجام	امیرِ اہلسنت بانیٔ دعوتِ اسلامی مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
وسائلِ بخشش	امیرِ اہلسنت بانیٔ دعوتِ اسلامی مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
تعارفِ امیرِ اہلسنت	المدینۃ العلمیۃ (شعبہ اصلاحی کتب)	مکتبۃ المدینہ کراچی
بیاناتِ عطاریہ (حصہ دوم)	امیرِ اہلسنت بانیٔ دعوتِ اسلامی مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
کفریہ کلمات کے بارے میں سوال جواب	امیرِ اہلسنت بانیٔ دعوتِ اسلامی مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
عاشقانِ رسول کی 130 حکایات	امیرِ اہلسنت بانیٔ دعوتِ اسلامی مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
بری سنگت کا وبال	المدینۃ العلمیۃ (شعبہ مدنی بہاریں)	مکتبۃ المدینہ کراچی
جنتی زیور	مولانا عبد المصطفٰے اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت	مولانا مصطفٰے رضا خان، متوفی ۱۴۰۲ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात मग़रिब की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

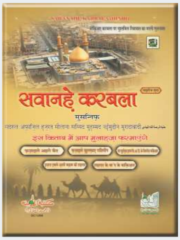

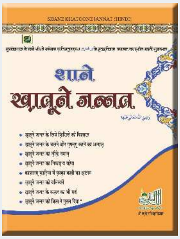

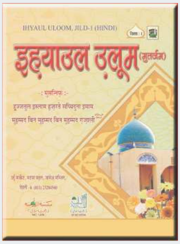

ISBN 978-969-631-407-0
0101956

MC 1286

MAKTABATUL MADINA

❀ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, तीकोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात ☎ 9327168200

❀ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, पहला मन्ज़िला, 50 टनटन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई-400009, महाराष्ट्र ☎ 09022177997

❀ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तिलंगाना ☎ (040) 24572786

421, URDU MARKET, MATIA MAHAL, JAMA MASJID, DELHI - 110006 ☎ (011) 23284560

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, web : www.dawateislami.net